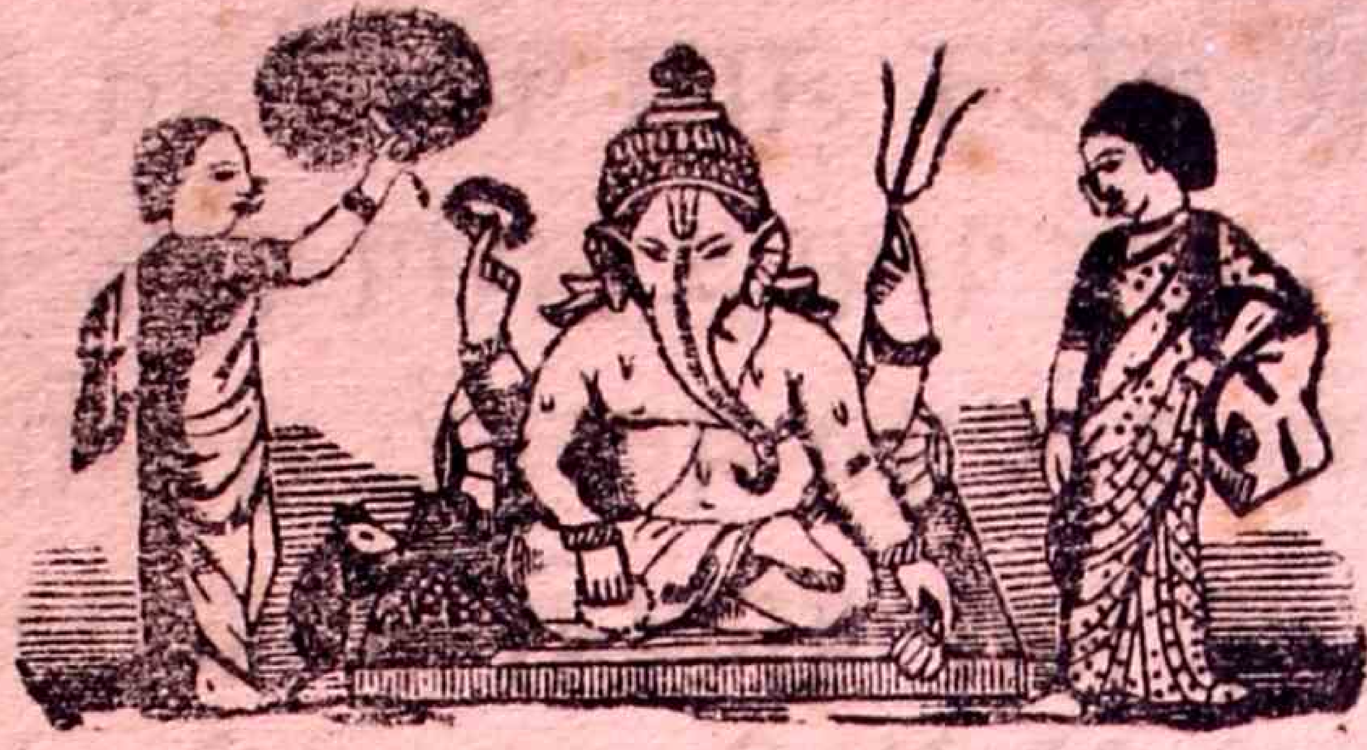
विषय-सूची

भाषा कर्णपर्व का सूचीपत्र





अथ महाभारत भाषा कर्णपर्व

मङ्गलाचरण

श्लोक

नव्याम्भोधरवृन्दवन्दितरुचिं पीताम्बरालंकृतं प्रत्यग्रस्फुटपुण्डरीक-नयनं सान्द्रप्रमोदास्पदम् ॥ गोपीचित्तचकोरशीतकिरणं पापाटवीपावकं स्वाराग्रमस्तकमाल्यलालितपदं वन्दामहे केशवम् १ या भाति वीणामिव वादयन्ती महाकवीनां वदनारविन्दे ॥ सा शारदा शारदचन्द्रबिम्बा ध्येय-प्रभा नः प्रतिभां व्यनक्तु २ पाण्डवानां यशोवर्ष्म सकृष्णमपि निर्मलम् ॥ व्यधायि भारतं येन तं वन्दे बादरायणम् ३ विद्याविदग्रेसरभूषणेन विभूष्यते भूतलमद्य येन ॥ तं शारदालब्धवरप्रसादं वन्दे गुरुं श्रीसरयू-प्रसादम् ४ विप्राग्रणीगोकुलचन्द्रपुत्रः साविज्ञकालीचरणाभिधानः ॥ कथानुगं मञ्जुलकर्णपर्व भाषानुवादं विदधाति सम्यक् ॥ ५ ॥

पहला अध्याय

वैशम्पायन बोले कि हे राजन् ! इसके अनन्तर द्रोणाचार्य के मरने से अत्यन्त व्याकुलचित्त दुर्योधनादिक राजा लोग अश्वत्थामाजी के पास गये १ । २ फिर द्रोणाचार्य के शोच करनेवाले मूर्च्छावान् महा-घायल पराक्रमों से थके हुए शोक से पीड़ित होकर वह सब राजा लोग अश्वत्थामाजी के चारों ओर बैठ गये ३ फिर एक मुहूर्त तक शास्त्र के

अनुसार अनेक हेतुओं से अश्वत्थामाजी को समाश्वासन करके सब राजा लोग सायङ्काल के समय अपने-अपने डेरों को गये ४ हे कौरव्य! फिर दुःख शोक में भरे कठिन नाश को शोचते हुए उन राजाओं ने डेरों में भी जाकर सुख नहीं पाया ५ विशेष करके कर्ण वा राजा दुर्योधन वा दुश्शासन और सौबल के पुत्र महाबली शकुनी ने महा खेद किया ६ यह सब राजा लोग महात्मा पाण्डवों के कष्टों की चिन्ता करते हुए रात्रि को दुर्योधन के ही डेरे में निवास करनेवाले हुए ७ जो द्रौपदी को द्यूत में कष्ट दिया गया और सभा में भी लाई गई उसको स्मरण करते और शोचते हुए अत्यन्त व्याकुलचित्त हुए ८ हे राजन्! इस प्रकार द्यूत में प्रत्यक्ष होनेवाले उन दुःखों की चिन्ता करनेवाले उन लोगों की रात्रि सैकड़ों वर्ष के समान व्यतीत हुई ६ उसके पीछे निर्मल प्रभात के होते ही वेदोक्तरीति के अनुसार आवश्यक नित्यकर्मों को करके दैव की आज्ञा में नियत हुए १० अर्थात् आवश्यक कर्मों से निवृत्त होकर बड़ी सावधानी से सेना को तैयार हो जाने की आज्ञा दी और युद्ध करने के निमित्त बाहर निकले ११ मङ्गल कौतुक करनेवाले कर्ण को अपना सेनापति करके दधिपात्र घृत आदि पदार्थों से १२ और सुवर्णमालायुक्त उत्तम वस्त्रादिकों से उत्तम-उत्तम ब्राह्मणों को पूजन करते हुए सूत, मागध, बन्दीजन आदि से भी स्तूयमान हुए १३ और हे राजन्! इसी प्रकार से प्रातःकाल के कर्म करनेवाले युद्ध में निश्चय करनेवाले पाण्डव लोग भी शीघ्र अपने डेरों से तैयार होकर बाहर निकले १४ इसके पीछे परस्पर में विजयाभिलाषी कौरव और पाण्डवों का महारोमहर्षण युद्ध प्रारम्भ हुआ १५ हे राजन्! कर्ण के सेनापति होने से उन कौरवीय और पाण्डवीय सेनाओं का देखने के योग्य दो दिन तक अपूर्व युद्ध हुआ १६ इसके पीछे हज़ारों शत्रुओं को मारकर कर्ण धृतराष्ट्र के पुत्रों के देखते ही देखते अर्जुन के हाथ से मारा गया १७ फिर शीघ्र ही हस्तिनापुर जाकर यह सब वृत्तान्त लोगों ने धृतराष्ट्र से कहा। वह वृत्तान्त कौरव जाङ्गल देशों में प्रसिद्ध हुआ १८ जनमेजय बोले कि श्रीगङ्गाजी के पुत्र भीष्मपितामह को और महारथी

द्रोणाचार्यजी को भी मृतक हुआ सुनकर अम्बिका के पुत्र वृद्ध राजा धृतराष्ट्र ने बड़ा खेद किया १६ हे ब्राह्मण ! फिर उस दुःखी धृतराष्ट्र ने दुर्योधन के हितकारी कर्ण को भी मरा हुआ सुनकर कैसे अपने प्राणों को धारण किया २० जिसने कि अपने पुत्रों के विजय की इसी कर्ण में आशा निश्चय करके कर रक्खी थी ऐसे कर्ण के मरने पर इस कौरव ने कैसे अपने जीवन को रक्खा २१ ऐसे स्थान में कर्ण को मृतक सुनकर जो राजा ने अपने प्राणों का त्याग नहीं किया इससे मैं निश्चय जानता हूँ कि दुःख में वर्तमान मनुष्य बड़ी कठिनता से मरता है २२ हे राजन् ! इसी प्रकार वृद्ध भीष्म, बाह्लीक, द्रोणाचार्य, सोमदत्त और भूरिश्रवा को २३ और अन्य मित्रों समेत गिराये हुए पुत्र और पौत्रों को भी सुनकर जो प्राणों का त्याग नहीं किया इसी से हे ब्राह्मण ! मैं उसको महाकठिन मानता हूँ २४ हे महामुने ! इस सब वृत्तान्त को आप मूलसमेत वर्णन कीजिये। मैं अपने प्राचीन वृद्ध लोगों के चरित्रों के सुनने से तृप्त नहीं होता हूँ॥२५॥

इति श्रीमहाभारते कर्णपर्वणि प्रथमोऽध्यायः॥ १ ॥

दूसरा अध्याय

वैशम्पायन बोले कि हे महाराज ! कर्ण के मृतक होने से महादुःखी सञ्जय सायङ्काल के समय वायु के समान शीघ्रगामी घोड़ों की सवारी से हस्तिनापुर को गया १ और बड़ी व्याकुलता से हस्तिनापुर में पहुँच-कर उस धृतराष्ट्र के स्थान को गया जो बान्धवों का नाशकारी था २ वहाँ मूर्च्छा से शोभाहीन राजा को देखकर बड़ी नम्रतापूर्वक हाथ जोड़ मस्तक से चरणों में दण्डवत् करके ३ न्याय के द्वारा राजा धृतराष्ट्र को पूजके हाय बड़ा खेद है ऐसा वचन कहकर वार्तालाप करना प्रारम्भ किया ४ और कहने लगा कि हे राजन् ! मैं सञ्जय हूँ क्या आप प्रसन्नता से हैं और आपत्ति पाकर अपने अपराधों से आप विस्मरण तो नहीं होते हो ५ विदुर, द्रोणाचार्य, भीष्मपितामह और केशवजी के महा-उपकारी वा हितकारी वचनों को जो तुमने अङ्गीकार नहीं किया उनको स्मरण कर-कर तो आप पीड़ित नहीं होते हो ६ सभा के मध्य में परशुराम,

नारद और कण्वादिक मुनियों के हितकारी वचनों को भी स्वीकार नहीं किया उसको स्मरण करके तो तुम दुःखी नहीं होते हो ७ आपके हित करने में प्रवृत्त भीष्म, द्रोणाचार्य आदि मित्रों को युद्ध में शत्रुओं के हाथ से मरे हुए स्मरण करके तो खेद नहीं करते हो ८ तब तो दुःख से महा-पीड़ित राजा धृतराष्ट्र बहुत लम्बी श्वास ले लेकर इस प्रकार से कहने-वाले सञ्जय से बोले ९ कि हे सञ्जय! दिव्य अस्त्रों के ज्ञाता भीष्मपितामह और बड़े बाणप्रहारी द्रोणाचार्य के मरने पर मेरा चित्त अत्यन्त पीड़ित है १० और वसु देवताओं के अंश से उत्पन्न होनेवाले महातेजस्वी पितामह ने प्रतिदिन दशहज़ार शस्त्रधारी रथियों को मारा ११ पाण्डव अर्जुन से रक्षित द्रुपद के पुत्र शिखण्डी के हाथ से मरे हुए उस भीष्म-पितामह को सुनकर मेरा चित्त पीड्यमान हुआ १२ जिसके लिये भार्गव परशुरामजी ने महायुद्ध में परम अस्त्र दिया और बाल्यावस्था में उन्हीं साक्षात् परशुरामजी ने अपने शिष्य करने के लिये अङ्गीकार किया १३ और जिसकी कृपा से महारथी राजपुत्र पाण्डवों ने और अन्य राजाओं ने महारथीपने को पाया १४ उस सत्यसङ्कल्प महाधनुर्बाणधारी द्रोणा-चार्य को धृष्टद्युम्न के हाथ से मरा हुआ सुनकर मेरा चित्त अत्यन्त पीड़ित हो रहा है १५ इस लोक में चारों प्रकार की विद्या और अस्त्रविद्या भीष्म और द्रोणाचार्य के सिवाय और किसी में नहीं है उन दोनों महात्माओं के मरने से मैं महाखेदित हूँ १६ तीनों लोकों में अस्त्रविद्या का ज्ञाता जिसके समान कोई नहीं ऐसे महात्मा द्रोणाचार्य को मृतक सुनकर मेरे पुत्रों ने क्या-क्या किया १७ महात्मा अर्जुन ने पराक्रम करके संसप्तकों की सेना को मारकर यमलोक में पहुँचाया १८ बुद्धिमान् अश्वत्थामा के नारायणास्त्र के निष्फल होने और सेना के भागने पर मेरे पुत्रों ने क्या-क्या काम किया १९ मैं द्रोणाचार्य के मरने पर सबको भगा हुआ वा शोकसमुद्र में डूबा हुआ जीवन की आशा से ऐसा चेष्टा करनेवाला देखता हूँ जैसे कि समुद्र में नौका के टूट जाने पर उसपर चढ़े हुए मनुष्यों की चेष्टा होती है २० हे सञ्जय! सेना के भाग जाने पर दुर्योधन, कर्ण, भोजवंशीय कृतवर्मा, मद्रदेश का राजा शल्य, द्रोणाचार्य, कृपाचार्य और

मेरे शेष बचे हुए पुत्रादि और समेत अन्य लोगों के मुख का वर्ण कैसा हो गया २१। २२ हे सञ्जय! इस वृत्तान्त को और पाण्डव वा मेरे पुत्रों के पराक्रम को यथार्थ जैसा हुआ वैसा मुझसे वर्णन करो २३ सञ्जय बोले हे श्रेष्ठ! कौरव लोगों में आपके अपराध से जो देखने में आया उसको सुनकर तुम खेद मत करो क्योंकि बुद्धिमान् मनुष्य होनहार विषय में दुःखी नहीं होते हैं २४ जैसा कि मनुष्य में सुखदुःखसम्बन्धी प्रयोजन होता है उसकी प्राप्ति वा अप्राप्ति में कोई बुद्धिमान् दुःखी नहीं होता है २५ धृतराष्ट्र ने कहा कि हे सञ्जय! इससे अधिक मुझको कोई पीड़ा नहीं है मैं उसको प्राचीन होनहार मानता हूँ इससे तुम अपनी इच्छा के अनुसार वर्णन करो ॥ २६ ॥

इति श्रीमहाभारते कर्णपर्वणि द्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

तीसरा अध्याय

सञ्जय बोले कि बड़े बाणप्रहारी महातेजस्वी द्रोणाचार्य के मरने पर आपके महारथी पुत्रों के मुख शोभा से रहित हुए और चित्त से व्याकुल होकर वह सब अचेत भी हो गये १ हे राजन्! उस समय सब नीचा मुख करनेवाले शोचग्रस्त महापीड़ित उन शस्त्रधारियों ने परस्पर में वार्तालाप भी नहीं करी २ अनेक प्रकार से दुःख से पीड़ित आपकी सेनाओं को और उन लोगों को व्याकुलचित्त देखकर सबने स्वर्ग जाने का ही विचार किया ३ हे राजेन्द्र! फिर युद्ध में द्रोणाचार्य को मरा हुआ देखकर इन सब लोगों के रुधिर से भरे हुए शस्त्र हाथों से गिर पड़े ४ उस समय वह बँधे लटके और गिरे हुए शस्त्र ऐसे देखने में आये जैसे कि आकाश में नक्षत्र दिखाई देते हैं ५ इसके पीछे उस आपकी सेना को हटा हुआ पराक्रमहीन देखकर राजा दुर्योधन बोला ६ कि मैंने आप लोगों के पराक्रम में रक्षित होकर पाण्डवों से युद्ध करना प्रारम्भ किया ७ अब द्रोणाचार्य के मरने से वह सब सेना व्याकुल हुई सी दिखाई देती है और युद्ध में युद्धकर्ता लोग सब प्रकार से मरते हैं ८ युद्ध में युद्ध करनेवाले की विजय और पराजय दोनों होती हैं इसमें क्या आश्चर्य

है आप लोग सब ओर को मुख करके युद्ध करो ९ बाणविद्या में अद्वितीय दिव्य अस्त्रों के ज्ञाता महाबली सूर्य के पुत्र महात्मा कर्ण को देखो १० कि युद्ध में जिसके पराक्रम को देखकर कुन्ती का पुत्र अल्पबुद्धि अर्जुन ऐसे भाग जाता है जैसे कि सिंह को देख छोटा मृग भग जाता है ११ जिसने दशहज़ार हाथी के समान बली भीमसेन को मानुषी युद्ध करके परास्त किया १२ और उसी कर्ण ने दिव्य अस्त्रों के जाननेवाले शूर मायावी भयानक गर्जना करनेवाले घटोत्कच को अपनी अमोघ शक्ति से युद्ध में मारा १३ अब युद्ध में उस दुर्जय पराक्रमी सत्यसंकल्पी महाबुद्धिमान् के भुजाओं के बल को देखोगे १४ विष्णु के वा इन्द्र के समान अश्वत्थामा और कर्ण इन दोनों के पराक्रम को पाण्डव लोग देखेंगे १५ तुम सब लोग युद्ध में सब सेनासमेत पाण्डवों के मारने को समर्थ हो फिर सब के साथ मिलकर कैसे समर्थ न होगे अब पराक्रमी और अस्त्रज्ञ तुम लोग परस्पर में देखोगे १६ सञ्जय बोले कि हे निष्पाप! आपके महाबली पुत्र ने अपने भाइयों को इस प्रकार से समझाकर कर्ण को सेनापति बनाया १७ हे राजन्! युद्धदुर्मद महाबली कर्ण ने सेनापति होकर बड़े शब्द से सिंहनादों को कर करके युद्ध करना प्रारम्भ किया १८ और सब सृञ्जय, पाञ्चाल, विदेह और केकय लोगों को विध्वंस करके युद्ध में अपने धनुष से ऐसी बाणों की वर्षा करी कि सबको व्याकुल कर दिया १९।२० फिर वह वेगवान् पाण्डव और पाञ्चाल लोगों को पीड़ित करता युद्ध में अर्जुन के हाथ से मारा गया ॥ २१ ॥

इति श्रीमहाभारते कर्णपर्वणि सञ्जयवाक्यवर्णने तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

चौथा अध्याय

वैशम्पायन बोले कि हे महाराज! अम्बिका का पुत्र धृतराष्ट्र यह सुनकर दुर्योधन को मृतक के ही समान मानता हुआ १ महाव्याकुलता से अचेत होकर हाथी के समान पृथ्वी पर गिर पड़ा उस राजा को अचेत होकर पृथ्वी पर गिरने से २ रनिवास में से स्त्रियों का बड़ा शोककारी

शब्द हुआ उस शब्द से सम्पूर्ण पृथ्वी व्याप्त हो गई ३ दुःख शोक से पीड़ित अत्यन्त व्याकुलचित्त भरतवंशियों की स्त्रियाँ महाघोर शोक-सागर में डूबकर रुदन करने लगीं ४ । ५ इसके पीछे सञ्जय ने उन शोक से मूर्च्छित नेत्रों से अश्रुपात डालनेवाली स्त्रियों को विश्वास देकर समझाया ६ जैसे कि केले के वृक्ष चारों ओर की वायु से कम्पायमान होते हैं इसी प्रकार वारंवार कँपती हुई वह सब स्त्रियाँ विश्वासयुक्त हुईं ७ तब जल से कौरवों के सींचनेवाले विदुरजी ने भी उस बुद्धिरूपी नेत्र रखनेवाले राजा धृतराष्ट्र को विश्वास कराया ८ हे राजेन्द्र ! उनके वचनों से वह राजा धृतराष्ट्र बड़े धीरेपने से सचेत होकर उन स्त्रियों को देखके उन्मत्त के समान फिर मौन हो गया ९ फिर वारंवार श्वास लेते हुए धृतराष्ट्र ने बहुत समय तक ध्यान करके अपने पुत्रों की निन्दा करी और पाण्डवों की प्रशंसा करी १० फिर अपने और सौबल के पुत्र शकुनी की बुद्धि की निन्दा करता हुआ वारंवार काँपकर ध्यान को करके ११ मन को थांभकर धैर्यता से धृतराष्ट्र ने सञ्जय से पूछा कि १२ हे सञ्जय ! तुमने जो वचन कहा वह तो मैंने सुना परन्तु यह तो बताओ कि दुर्योधन तो यमपुर नहीं गया १३ सदैव विजयाभिलाषी मेरा पुत्र विजय से निराश हो गया है हे सञ्जय ! इस कही हुई कथा को फिर भी मुख्यता से वर्णन करो १४ हे जनमेजय ! धृतराष्ट्र के इस वचन को सुनकर सञ्जय बोले कि हे राजन् ! सूर्य का पुत्र महारथी कर्ण बड़े बाणप्रहारी शरीर के त्यागनेवाले सूत का पुत्र अपने सब भाइयों समेत मारा गया और यशस्वी पाण्डव के हाथ से आपका पुत्र दुश्शासन भी मारा गया और उसी युद्ध में भीमसेन ने उसके रुधिर को भी पान किया ॥ १५ । १६ ॥

इति श्रीमहाभारते कर्णपर्वणि धृतराष्ट्रशोकवर्णने चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

पाँचवाँ अध्याय

वैशम्पायन बोले कि हे जनमेजय ! शोक से महाव्याकुल अम्बिका का पुत्र धृतराष्ट्र इस बात को सुनकर सञ्जय से बोला १ हे तात ! थोड़े

जीवनवाले मेरे पुत्र की दुर्बुद्धि से कर्ण के मरण को सुनकर मेरा प्रबल शोक मेरे अङ्गों को काटे डालता है सो हे सूत ! मुझ दुःख से पार होने के इच्छावान् के सन्देहों को निवृत्त करो २ अब कौरव और सृञ्जयों में कौन-कौन जीवते बाकी हैं और कौन-कौन मर गये ३ सञ्जय बोले कि हे राजन् ! महाप्रतापी अजेय भीष्मजी दश दिन में पाण्डवों के एक अरब शूरवीरों को मारकर मारे गये ४ इसी प्रकार बड़े धनुर्धारी दुराधर्ष सुवर्ण के रथ पर चढ़नेवाले द्रोणाचार्य युद्ध में पाञ्चालों के असंख्य रथसमूहों को मारकर आप भी मारे गये ५ महात्मा भीष्म और द्रोणाचार्य के मरने से शेष बची हुई सेना के अर्ध भाग को मारकर सूर्य का पुत्र कर्ण भी मारा गया ६ और महाबली राजपुत्र विविंशति भी आनर्तदेशीय सैकड़ों शूरवीरों को मारकर युद्ध में मारा गया ७ इसी प्रकार आपका पुत्र महाबली विकर्ण भी घोड़े और शस्त्रों के नाश हो जाने से क्षत्रियवर्ण को स्मरण करता शत्रुओं के सम्मुख नियत हुआ ८ दुर्योधन के किये हुए घोर रूप अनेक क्लेशों को और अपनी प्रतिज्ञा के स्मरण करनेवाले भीमसेन को स्मरण करता हुआ उसी भीमसेन के हाथ से युद्ध में मारा गया ९ और अवन्तिदेश के राजा राजकुमार बिन्द, अनुबिन्द बड़े-बड़े कठिन कर्मों को करके यमलोक को गये १० सिन्धु के देशों में बड़े उत्तम जो दशदेश वीर जयद्रथ के स्वाधीन हैं और वह जयद्रथ आपके अधीन होकर आपका आज्ञावर्ती था ११ वह महापराक्रमी जयद्रथ अर्जुन के हाथ से विजय हुआ। तीक्ष्ण बाणों से ग्यारह अक्षौहिणी सेनाओं को विजय करके और इसी प्रकार दुर्योधन का पुत्र महावेगवान् युद्ध में वीरों का मर्दन करनेवाला और पिनाकीशास्त्र का ज्ञाता राजकुमार लक्ष्मण अभिमन्यु के हाथ से मारा गया १२। १३ इसी प्रकार दुश्शासन का पुत्र बाहुशाली रण में उसी उत्कृष्ट अभिमन्यु के साथ लड़कर मृत्यु के वश हुआ १४ सागर और अनूपदेशवासी किरातों का राजा धर्मात्मा देवराज इन्द्र का प्यारा और अङ्गीकार किया हुआ मित्र १५ सदैव क्षत्रियधर्म में प्रीति रखनेवाला राजा भगदत्त अर्जुन के पराक्रम से यमलोक में पहुँचाया गया १६ हे राजन् ! इसी प्रकार

कौरववंशीय बड़ा यशी शूरवीर भूरिश्रवा युद्ध में सात्यकी के हाथ से मारा गया १७ और क्षत्रियों के भार के धारण करनेवाले श्रुतायु और अम्बष्ठ भी युद्ध में निर्भयता से घूमते हुए अर्जुन के हाथ से मारे गये १८ हे महाराज! सदैव क्रोधरूप अस्त्रज्ञ युद्ध में दुर्मद आपका पुत्र दुश्शासन भीमसेन के हाथ से मारा गया १९ और जिसकी हाथियों की सेना अपूर्व और असंख्य थी वह सुदक्षिण खड्ग के युद्ध में अर्जुन के हाथ से मारा गया २० कोशलदेशियों का राजा बड़े-बड़े अङ्गीकृत शत्रुओं को मारकर अभिमन्यु से महापराक्रम करने के द्वारा यमलोकवासी हुआ २१ शत्रुओं के भय को बढ़ानेवाला महाशूर जयद्रथ का पुत्र पृथ्वी पर ढाल तरवार का रखनेवाला श्रीमान् अर्जुन के हाथ से मारा गया २२ और आपका पुत्र चित्रसेन महारथी भीमसेन से अच्छी रीति से युद्ध को करके उसी के हाथ से मारा गया २३ युद्ध में कर्ण के समान बड़ा तेजस्वी अस्त्रों को शीघ्रता से चलानेवाला दृढ़ पराक्रमी वृषसेन २४ बड़ा पराक्रम करके अर्जुन के हाथ से कालवश हुआ। अभिमन्यु के वध को सुनकर अपनी प्रतिज्ञा को करके जो राजा सदैव पाण्डवों से शत्रुता करता था वह श्रुतायु शत्रुता को सुनाकर अर्जुन के हाथ से मारा गया २५ हे श्रेष्ठ, राजन्, धृतराष्ट्र! सहदेव ने अपने मामा शल्य के पुत्र पराक्रमी भाई रुक्मरथ नाम को युद्ध में मारा २६। २७ वृद्ध राजा भगीरथ और बृहच्छत्र केकय यह दोनों बड़े बली महाप्रतापी भी मारे गये २८ हे राजन्! बड़ा पराक्रमी बुद्धिमान् भगदत्त का पुत्र युद्ध में बाज के समान घूमनेवाले नकुल के हाथ से मारा गया २९ इसी प्रकार महाबली शस्त्रधारी आपके पितामह बाह्लीक अपने बाह्लीक लोगों समेत भीमसेन के हाथ से मृत्युवश हुए ३० और जरासन्ध का पुत्र महाबली जयत्सेन मगध का राजा युद्ध में महात्मा अभिमन्यु के हाथ से मारा गया ३१ हे राजन्! आपके पुत्र महारथी दुर्मुख और दुस्सह शूरों में प्रशंसनीय भीमसेन की गदा से मारे गये ३२ और महारथी दुर्मर्षण, दुर्विष और महारथी दुर्जय यह तीनों कठिन कर्मों को करके यम के स्थान को गये ३३ और युद्ध में दुर्मद कलिङ्ग और वृषक दोनों भाई

कठिन कर्मी होकर यमलोक को सिधारे ३४ आपका शूरवीर पराक्रमी मन्त्री वृषवर्मा भीमसेन के हाथ से काल के वशीभूत हुआ ३५ इसी प्रकार दश हज़ार हाथी के समान पराक्रमी महाराज पौरव युद्ध में बड़े पराक्रमी अर्जुन के हाथ से मारा गया ३६ और प्रहार करनेवाले दो हज़ार बशातय और पराक्रमी शूरसेन यह सब युद्ध में मारे गये ३७ कवचधारी प्रहार करनेवाले युद्ध में उद्भट महारथी अभीषाह, शिवय यह दोनों कलिङ्गदेशियों समेत मारे गये ३८ जो कि गोकुल में सदैव बढ़े हुए युद्ध में महाक्रुद्धरूप युद्ध से मुख न मोड़नेवाले वीर थे वह भी अर्जुन के हाथ से मारे गये ३९ हज़ारों संसप्तकों समेत घूमनेवाले जो गोपाल थे वह सब भी अर्जुन के हाथ से यमलोक को गये ४० हे महाराज ! आपके निमित्त बड़ा पराक्रम करनेवाले आपके साले वृषक और अचल भी अर्जुन के हाथ से मारे गये ४१ इसी रीति से नाम और कर्म से उग्रकर्मी बड़ा धनुर्धारी महाबाहु राजा शाल्व भीमसेन के हाथ से मारा गया ४२ हे राजन् ! मित्र के निमित्त युद्ध में पराक्रम करनेवाले ओघवान् और बृहन्त दोनों एक साथ ही यमलोक को गये ४३ इसी रीति से महाधनुर्धर रथियों में श्रेष्ठ क्षेमधूर्ति भी युद्ध में भीमसेन के हाथ की गदा से मारे गये ४४ ऐसे ही बड़ा धनुषधारी महाबली जलसिन्धु युद्ध में कठिन कर्मों को करके बड़े शब्दों को करता हुआ सात्यकी के हाथ से मारा गया ४५ गधों का रथ रखनेवाला राक्षसों का राजा अलम्बुष पराक्रम करके घटोत्कच के हाथ से यमलोक को पहुँचा ४६ कर्ण के पुत्र और भाई महारथी और सब केकय लोग भी अर्जुन के हाथ से मारे गये ४७ बड़े कठिन कर्मी मालव, मद्रक और द्रविड़, यौधेय, ललित्थ, क्षुद्रक, उशीनर ४८ मावेल्लक, तुण्डिकेर, सावित्री के पुत्र और पश्चिमोत्तरीय वा पूर्वीय, दक्षिणीय राजा लोग ४९ पत्तियों के और घोड़ों के लाखों समूह रथ-हाथियों के झुण्डों समेत मार डाले गये ५० ध्वजा, शस्त्र, कवच और वस्त्रों से अलंकृत शूरवीर जो बहुत काल से बुद्धिमान् लोगों के द्वारा सब बातों में कुशल और पोषण किये गये ५१ वह सुगमकर्मी युद्ध में अर्जुन के हाथ से मारे गये। इसी प्रकार अन्य सेना

के लोग जो परस्पर मारने की इच्छा रखते थे मारे गये ५२ हे राजन्! इनके विशेष बहुत से अन्य हज़ारों राजा लोग अपनी सेनाओं समेत युद्ध में मारे गये ५३ इस रीति से कर्ण और अर्जुन की सम्मुखता में यह ऐसा घोर नाश हुआ जैसे कि इन्द्र के हाथ वृत्रासुर और श्रीरामचन्द्रजी के हाथ से रावण मारा गया ५४ और जैसे श्रीकृष्णजी के हाथ से नरक और मुरनाम दैत्य युद्ध में मारे गये और जैसे श्रीभार्गव परशुरामजी के हाथ से राजा कार्त्तवीर्य अर्थात् सहस्राबाहु मारा गया ५५ इसी प्रकार वह युद्ध में दुर्मद शूर वीर कर्ण अपनी जाति और बान्धवों समेत युद्ध में तीनों लोकों के मोहन करनेवाले महाघोर संग्राम को करके मारा गया ५६ जैसे स्वामिकार्त्तिकजी ने महिष को, रुद्रजी ने अन्धक को मारा था उसी प्रकार युद्ध में दुर्मद प्रहार करनेवालों में श्रेष्ठ द्वैरथकर्ण अर्जुन के साथ युद्ध करके मन्त्री और बान्धवों समेत मारा गया जिससे धृतराष्ट्र के पुत्रों की विजय की आशा और शत्रुता का मुख उत्पन्न हुआ था ५७। ५८ हे राजन्! पाण्डव लोग उस दोष से निवृत्त हुए जो पूर्व समय में भलाई चाहनेवाले बान्धवों के समझाने से तुम नहीं समझे ५९ इसी कारण राज्य के चाहनेवाले, पुत्रों की वृद्धि के चाहनेवाले तुमने बड़ा नाशकारी यह महाघोर दुःख पाया और जो दुष्कर्म किये उनका यह योग्य फल पाया ॥ ६० ॥

इति श्रीमहाभारते कर्णपर्वणि पंचमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

छठवाँ अध्याय

धृतराष्ट्र बोले कि, हे तात, सञ्जय! युद्ध में पाण्डवों के हाथ से मारे हुए मेरे शूरवीर लोग और हमारे वर्णन किये हुए शूरवीरों के हाथ से मरे हुए पाण्डवों के शूरवीरों का वर्णन करो १ सञ्जय बोले युद्ध में बड़े पराक्रमी बलवान् कुन्तदेशीय मन्त्री और बान्धवों समेत श्रीगाङ्गेय भीष्मजी के हाथ से मारे गये २ और नारायण वा बालभद्रनाम अन्य शूरवीर लोग जो बड़े भगवद्भक्त थे युद्ध में वह सब भी वीर भीष्म के हाथ से मारे गये ३ और वह सत्यजित् जो कि बड़ा बली युद्ध में सत्य-

सङ्कल्प अर्जुन के समान था लड़ाई में द्रोणाचार्य के हाथ से मारा गया ४ और युद्ध में कुशल बड़े धनुषधारी सब पाञ्चालदेशीय लोग युद्ध में सम्मुख होकर द्रोणाचार्य के हाथ से यमलोक को गये ५ इसी प्रकार मित्र के लिए पराक्रम करनेवाले राजा विराट और द्रुपद दोनों वृद्ध भी युद्ध में द्रोणाचार्य के हाथ से मारे गये ६ हे समर्थ, धृतराष्ट्र! जो अर्जुन, केशवजी और बलदेवजी से भी अजेय महारथियों में श्रेष्ठ मन्द मुसकान करनेवाला बालक अभिमन्यु शत्रुओं के बड़े भारी नाश को करके मुख्य उत्तमरथी जो अर्जुन के पराजय करने में असमर्थ थे उन छः महारथियों ने घेर कर मार डाला। हे महाराज! क्षत्रिय-धर्म में वर्तमान रथ से हीन शत्रुहन्ता वीर अभिमन्यु को युद्ध में दुश्शासन के पुत्र ने मारा। शत्रु हननेवाली सेनासंयुक्त राजा अम्बष्ट का पुत्र श्रीमान् मित्र के निमित्त पराक्रम करता हुआ युद्ध में दुर्योधन के पुत्र वीर लक्ष्मण को पाकर ७। ११ और बड़े भारी नाश को करके यमलोक को गया। बड़ा धनुषधारी अस्त्रज्ञ युद्ध में दुर्मद बृहन्त दुश्शासन के साथ पराक्रम करके यमलोक को सिधारा और युद्ध में दुर्मद राजा मणिमान् और दण्डधार १२ यह दोनों मित्र के निमित्त पराक्रम करनेवाले युद्ध में द्रोणाचार्य के हाथ से मारे गये और महारथी अंशुमान् और भोजराज सेनासमेत १३। १४ पराक्रम करके द्रोणाचार्य के हाथ से कालवश हुए और पुत्रसमेत १५ सामुद्र और चित्रसेन समुद्रसेन के पराक्रम से यमलोक को पहुँचाया गया। अनूपवासी राजा नील और पराक्रमी व्याघ्रदत्त १६ यह दोनों अश्वत्थामा और विकर्ण के हाथ से यमपुर को गये। चित्रायुध, चित्रयोधी यह दोनों भी बड़े नाश को करके १७ और चित्रमार्ग से पराक्रम करते हुए युद्ध में कर्ण के हाथ से मारे गये। युद्ध में भीमसेन के समान और केकय देशीय शूरवीरों से संयुक्त १८ महापराक्रम करके अपने भाई कैकेय के हाथ से मारा गया। हे महाराज! गदा से युद्ध करनेवाला पर्वत-निवासी महाप्रतापवान् तेजस्वी १९ आपके पुत्र दुर्मुख के हाथ से मारा गया। ग्रहों के समान प्रकाशित नरोत्तम रोचमान नाम दोनों भाई २० एक बार में द्रोणाचार्य के बाणों से स्वर्ग को पठाये गये। हे राजन्!

सम्मुख युद्ध करनेवाले पराक्रमी राजा लोग २१ कठिन कर्म को करके यम के लोकों को सिधारे। हे राजन्! सम्मुख युद्ध करनेवाले सव्यसाची, अर्जुन के मामा पुरजित और कुन्तभोज युद्ध में पराजय होकर द्रोणाचार्य के बाणों से यम के लोकों को प्राप्त हुए २२ अभिभूनाम काशी का राजा काशी के अनेक शूरवीरों समेत युद्ध में वसुदान के पुत्र के हाथ से मारा गया और बड़ा तेजस्वी युधामन्यु और महापराक्रमी उत्तमौजा २३। २४ युद्ध में सैकड़ों शूरवीरों को मारकर हमारे वीरों के हाथ से मारे गये और पाञ्चालदेशीय मित्रबर्मा और क्षत्रवर्मा यह दोनों महाधनुषधारी द्रोणाचार्य के हाथ से यमलोक को भेजे गये २५। २६ शूरवीरों में प्रधान शिखण्डी का पुत्र क्षत्रदेव आपके पौत्र लक्ष्मण के हाथ से मारा गया। चित्रवर्मा और सुचित्र महारथी महाबली दोनों पिता-पुत्र युद्ध में घूमते हुए महावीर द्रोणाचार्य के हाथ से मारे गये २७ हे महाराज! जैसे कि पर्व में समुद्र शान्ति को पाता है उसी प्रकार वार्धक्षेमी ने शस्त्रों के नाश होने पर परमशान्ति को पाया २८ हे राजन्! शस्त्रधारी युद्ध में श्रेष्ठ सेनाबिन्दु का पुत्र कौरवेन्द्र बाह्लीक के हाथ से मारा गया और चन्देरी देशियों में अत्यन्त उत्तम रथी धृष्टकेतु २९। ३० कठिन कर्म को करके यमलोक को गया। इसी प्रकार बड़ा वीर सत्यधृती युद्ध में बहुतों को नष्ट करके ३१ पाण्डवों के निमित्त पराक्रम करनेवाला यम के लोक को गया। वह कौरवों में श्रेष्ठ सेनाबिन्दु भी युद्ध में अनेकों को मारकर कालवश हुआ ३२ फिर शिशुपाल का पुत्र राजा सुकेतु युद्ध में कठिन कर्मी होकर द्रोणाचार्य के हाथ से मारा गया ३३ इस रीति से पराक्रमी सत्यधृती वीर मदिराश्व और महाबली सूर्यदत्त द्रोणाचार्य के शायकों से मारे गये ३४ और युद्धकर्ता पराक्रमी श्रेणिमान् कठिन कर्म करके मारा गया ३५ इसी प्रकार युद्ध में पराक्रमी परमअस्त्रज्ञ राजा मगध भी भीष्मजी के हाथ से मारा गया और वह शत्रुहन्ता अब पड़ा हुआ सोता है ३६ और विराट के पुत्र महारथी शङ्ख और उत्तर दोनों बड़े कर्म को करके यमलोक को सिधारे ३७ और वसुवान् युद्ध में कठिन कर्म को करता हुआ पराक्रम करके द्रोणाचार्य के

हाथ से मारा गया ३८ हे राजन्! जिसको तुम पूछते हो उस द्रोणाचार्य ने पराक्रम करके पाण्डवों के अनेक महारथी मारे ॥ ३९ ॥

इति श्रीमहाभारते कर्णपर्वणि षष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥

सातवाँ अध्याय

धृतराष्ट्र बोले कि, हे सञ्जय! प्रधान पुरुषों का नाश हो जाने से उस मरने से शेष बची हुई अपनी सेना को नहीं देखता हूँ १ मेरे प्रयोजन से मरनेवाले उन दोनों महाधनुषधारी अतुलपराक्रमी कौरवों में श्रेष्ठ भीष्म और द्रोणाचार्य को सुनकर जीवन को मैं नहीं चाहता हूँ २ मैं युद्ध को शोभित करनेवाले मरे हुए कर्ण को नहीं शोचता हूँ जिसकी भुजाओं का पराक्रम दश हज़ार हाथी का था ३ हे सञ्जय! इस हेतु से जैसे कि मेरी सेना के मरे हुओं का तुमने वर्णन किया वैसे ही यह भी कहो कि मेरी सेना में कौन कौन जीवता है ४ अब आपके वर्णन किये हुए इन बड़े बड़े शूरवीरों के मर जाने से शेष बचे हुए भी मरों के सदृश मुझको जान पड़ते हैं ५ सञ्जय बोले कि हे राजन्! ब्राह्मणों में श्रेष्ठ द्रोणाचार्य ने जिसको अपने उत्तम दिव्य अस्त्र समर्पण कर दिये ६ वह महारथी कर्मकर्ता हस्तलाघव करनेवाला दृढ़ धनुष बाणों से युक्त पराक्रमी वेगवान् तेरे निमित्त युद्धाभिलाषी अश्वत्थामा अचल होकर विद्यमान है ७ यह आनर्त देशवासी हार्दिक्य का पुत्र यादवों में श्रेष्ठ महारथी भोजवंशीय कृतवर्मा आपके ही निमित्त युद्ध की इच्छा करनेवाला अभी विद्यमान है ८ युद्ध में दुराधर्ष आपके पुत्रों का पूर्व सेनापति शल्य जो अपना वचन सत्य करने को अपने भानजे पाण्डवों को त्यागकर ९ जिसने युधिष्ठिर के आगे युद्ध में कर्ण के पराक्रम के नाश करने की प्रतिज्ञा को पूर्ण किया वह अजेय इन्द्र के समान पराक्रमी आपके निमित्त लड़ने की इच्छा करनेवाला नियत है १० और अपने कुलसमेत राजा गान्धार, आजानेय, सिन्धुदेशीय, पर्वतीय, काम्बोजदेशीय, सिंधी, वनायुज, नदीज इत्यादि ११ अनेक प्रकार के घोड़ों समेत तेरे लिये युद्धाकांक्षी वर्तमान हैं १२ हे कौरवेन्द्र! राजा कैकेय का पुत्र महारथी

उत्तम घोड़ों समेत पताकायुक्त रथ पर चढ़कर आपके निमित्त युद्ध का अभिलाषी अभी वर्तमान है १३ इसी प्रकार कौरवों में बड़ा वीर पुरमित्र नाम आपका पुत्र अग्नि और सूर्य के वर्ण रथ पर सवार होकर ऐसा वर्तमान है जैसे कि बादलों से रहित स्वच्छ आकाश में सूर्य प्रकाशमान होता है १४ भाइयों में नियत दुर्योधन सिंह के समान स्वभाववाला युद्धाभिलाषी सुवर्णजटित रथ की सवारी में नियत है १५ वह पुरुषों में बड़ा वीर सुवर्णजटित कवचधारी कमल के समान प्रकाशित निर्धूम अग्नि के समान तुल्य राजाओं में ऐसा शोभायमान हुआ १६ जैसे कि बादलों में सूर्य का प्रकाश होता है। इसी प्रकार प्रसन्नचित्त युद्धाभिलाषी ढाल, तलवार धारण किये आपके पुत्र सुषेण, चित्रसेन और सत्यसेन यह तीनों नियत हैं १७ हे भरतर्षभ ! शीलवान् उग्रशस्त्रधारी शीघ्रभोजी राजकुमार जरासन्ध का प्रथम पुत्र अदृढ़ चित्रायुध, श्रुतवर्मा, जय, शल्य, सत्यव्रत, दुःशल यह सब नरोत्तम सेना समेत नियत हैं १८ और प्रत्येक युद्ध में शत्रुओं का हन्ता शूरों में प्रतिष्ठित कैतवों का राजा राजकुमार रथ घुड़चढ़े हाथी और पत्तियों समेत चढ़ाई करनेवाले १९ और आपके निमित्त युद्धाभिलाषी वीर श्रुतायु, धृतायु, चित्राङ्गद और चित्रसेन भी अभी युद्ध में नियत हैं २० यह सब युद्धाभिलाषी प्रहारकर्ता प्रतिष्ठावान् सत्यप्रतिज्ञ नरोत्तम नियत हैं और कर्ण का पुत्र सत्यप्रतिज्ञ युद्ध करने का उत्सुक भी अभी नियत है २१ और कर्ण के दूसरे दो पुत्र उत्तम शस्त्रधारी हस्त लाघवीय महाबली हैं वह आपके निमित्त युद्धाभिलाषी वीरों के बँधे हुए व्यूह में वर्तमान हैं वह भी साधारण अल्प पराक्रमियों से कठिनतापूर्वक विजय होनेवाले हैं २२ हे राजन् ! इन अनेक असंख्य प्रभाववाले मुख्य मुख्य वीरों से संयुक्त कौरवों का राजा दुर्योधन हाथियों के समूहों के बीच महेन्द्र के समान विजय करने के निमित्त उपस्थित है २३ धृतराष्ट्र बोले कि, हमारे और पाण्डवों के जो शूरवीर शेष बचे हुए जीवते हैं उनका तुमने वर्णन किया इसको सुनकर मुझको बड़ा शोक होता है परन्तु जो होनहार है वह मिट नहीं सकती २४ वैशम्पायनजी बोले कि इस रीति

से वचनों को कहता हुआ अम्बिका का पुत्र धृतराष्ट्र अपनी उस सेना को जिसके बड़े बड़े वीर मारे गये और नाश को प्राप्त हुए उसमें से कुछ शेष बचे हुए सुनकर २५ दुःख से व्याकुल होकर महामोह के वशीभूत हुआ और मोहित होकर बोला कि हे सञ्जय! एक मुहूर्त ठहरो २६ हे तात! इस बड़ी अप्रिय वार्ता को सुनकर मेरा चित्त व्याकुल है और मैं अङ्गों से भी शिथिल हो गया हूँ २७ वह अम्बिकासुत धृतराष्ट्र ऐसे बचन को कहकर भ्रान्ति से युक्त हो गया ॥ २८ ॥

इति श्रीमहाभारते कर्णपर्वणि सप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥

आठवाँ अध्याय

हे ब्राह्मणों में श्रेष्ठ, वैशम्पायनजी! युद्ध में कर्ण को मृतक और पुत्रों को नियत वर्तमान सुनकर उस महाव्याकुल राजा धृतराष्ट्र ने क्या कहा १ पुत्र की आपत्तियों से उत्पन्न होनेवाले महाकष्ट को प्राप्त होकर जो जो वर्णन किया उसको मुझसे ब्यौरेवार कहिये २ वैशम्पायन बोले हे महाराज! उस कर्ण के मरने को सुनकर जो कि श्रद्धा के अयोग्य और जीवों के अपूर्व मोह का करनेवाला महाभयानक था जिस प्रकार कि मेरुपर्वत का चलायमान होना ३ और जैसे भार्गव परशुरामजी का अनुचित मोह और जैसे कि शत्रुओं के भयकारी इन्द्रदेवता की पराजय ४ और जैसे महातेजस्वी सूर्य का स्वर्ग से पृथ्वी पर गिरना और जैसे अविनाशी समुद्र का जल सूख जाना बुद्धि से बाहर अर्थात् असम्भव है ५ और जैसे पृथ्वी और आकाश की नाशकारक अपूर्ववायु और जैसे शुभाशुभ दोनों कर्मों की निष्फलता होय ६ उसी प्रकार राजा धृतराष्ट्र युद्ध में कर्ण के मर जाने को बुद्धि से विचार कर और सेना नहीं है यह निश्चय करके ७ दूसरे जीवों का भी नाश होगा यह सोचकर शोकाग्नि से जलता हुआ ८ चित्त से कम्पायमान ढीले अङ्ग महादुःखी लम्बी दुःख की श्वासें लेनेवाला होकर हाय-हाय शब्द को कहता विलाप करने लगा ९ धृतराष्ट्र बोले हे सञ्जय! सिंह और हाथी के समान पराक्रमी वृषभ के से स्कन्धवाला शीघ्रगामी महातेजस्वी

शूरवीर कर्ण घूमने लगा १० जो उत्तमवज्र के समान दृढ़देह महातरुण अपने शत्रु महेन्द्र के भी युद्ध में बली बर्द के समान नहीं लौटता ११ और युद्ध में जिसके धनुष की टंकोर को सुनकर और बाणों की वर्षा को देखकर युद्ध में रथ घोड़े हाथी और मनुष्य नहीं ठहर सकते थे १२ और दुर्योधन ने शत्रुओं के विजय की इच्छा से जिस महाबाहु की शरण लेकर पाण्डवों से शत्रुता करी १३ वह असह्य पराक्रमी रथियों में श्रेष्ठ पुरुषोत्तम कर्ण युद्ध में अर्जुन के हाथ से कैसे मारा गया १४ जिस अहङ्कारी ने अपने ही भुजबल से श्रीकृष्ण अर्जुन वा यादव और अन्य किसी क्षत्रिय को ध्यान नहीं किया अर्थात् किसी को कुछ माल नहीं जाना १५ अर्थात् यही कहता था कि मैं अकेला ही युद्ध में उन अजेय शार्ङ्गधन्वा और गाण्डीव धनुषधारी को एक साथ ही उनको दिव्य रथ से गिराऊँगा यह अपनी प्रतिज्ञा उस लोभ से विस्मरण चिन्ता से अधोमुख राज्य के लोभी रोगग्रस्त दुर्योधन से वारंवार वर्णन करी १६ । १७ और उस कर्ण ने पूर्व समय में काम्बोजदेशीय, अवन्त-देशीय, कैकयदेशीय, गान्धार, मद्रक, मत्स्य, त्रिगर्ततगण १८ शक, पाञ्चाल, विदेह, काशी, कोशल, सुम्हल, अङ्ग, बङ्ग, निषाद, पुण्ड-चारक १९ वत्स, कलिङ्ग, तरलअश्मक और ऋषिक देशियों को भी युद्ध में जीतकर बलिभृत् अर्थात् कर देनेवाला कर दिया २० वह रथियों में श्रेष्ठ दिव्य अस्त्रों का ज्ञाता महातेजस्वी धर्मरूप परम अस्त्रज्ञ अत्यन्त तीक्ष्णधार कङ्कपक्ष से युक्त सैकड़ों बाणों की वर्षा से दुर्योधन की वृद्धि के लिये सेना का रक्षक सूर्य का पुत्र कर्ण कैसे-कैसे युद्धों को करके पाण्डव अर्जुन के हाथ से मारा गया २१ । २२ और जैसे कि देवताओं में इन्द्र वर्षा करनेवाला है उसी प्रकार कर्ण भी धन की वृष्टि से मनुष्यों पर वर्षा करनेवाला है इन दोनों के सिवाय लोक में किसी तीसरे वर्षा करनेवाले को नहीं सुनते हैं जैसे घोड़ों में उच्चैःश्रवा राजाओं में कुबेर २३ । २४ देवताओं में महेन्द्र उत्तम हैं इसी प्रकार शस्त्रप्रहार करने में पृथ्वी पर कर्ण सबसे उत्तम है ऐसे समर्थ पराक्रम से शोभित शूरवीर राजाओं से अजेय कर्ण ने २५ दुर्योधन की वृद्धि के लिये

सम्पूर्ण पृथ्वी को विजय किया २६ और जिसको प्राप्त होकर मगध के राजा जरासन्ध ने यादव और कौरवों के सिवाय अन्य सब राजाओं को आधीन कर लिया उस कर्ण को द्वैरथ युद्ध में अर्जुन के हाथ से मरा हुआ सुनकर मैं शोकसमुद्र में ऐसे डूब रहा हूँ जैसे कि समुद्र में टूटी नौका डूबती है २७ उस धन की वृष्टि करनेवाले और रथियों में श्रेष्ठ कर्ण को द्वैरथ युद्ध में मरा हुआ सुनकर २८ मैं शोक समुद्र में ऐसे डूबने को हो रहा हूँ जैसे कि समुद्र में विना नौका के मनुष्य होता है हे सञ्जय ! जो मैं ऐसे-ऐसे दुःखों से भी नहीं मरूँगा २९ तो निश्चय करके मेरा हृदय वज्र से भी कठोर शोक चिन्ता से फट जाने के योग्य है और हे सूत, सञ्जय ! ज्ञातिवाले और मित्रों की इस पराजय को सुनकर ३० मेरे सिवाय कौनसा पुरुष है जो प्राणों को नहीं त्याग करे। मैं विष खाना अग्नि में प्रवेश होना वा पर्वत के ऊपर से गिरना चाहता हूँ परन्तु मैं इन कठिन दुःखों के सहने को समर्थ नहीं हो सकता॥ ३१ ॥

इति श्रीमहाभारते कर्णपर्वणि धृतराष्ट्रवाक्येऽष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥

नवाँ अध्याय

सञ्जय बोले कि अब सन्त लोग तुमको लक्ष्मी से, कुल से, यश से, तप से और शास्त्रज्ञता से नहुष के पुत्र ययाति के समान मानते हैं १ हे राजन् ! शास्त्र में तुम महर्षि के समान कृतकृत्य हो आप अपने को सावधान करो और व्याकुलता को त्यागो २ धृतराष्ट्र बोले मैं दैव को श्रेष्ठ मानता हूँ निरर्थक उपाय करने को धिक्कार है जहाँ कि शालवृक्ष के समान उन्नत महाबली कर्ण युद्ध में मारा गया ३ वह महारथी युधिष्ठिर की सेना और पाञ्चालों के रथ समूहों को मारकर और बाणों की वर्षा से सब दिशाओं को सन्तप्त करता हुआ ४ जैसे कि वज्रधारी इन्द्र असुरों को मोहित करता है उसी प्रकार युद्ध में पाण्डवों को मोहित करके इस प्रकार से मृतक होकर सोता है जैसे कि वायु से टूटा हुआ वृक्ष पृथ्वी पर पड़ा होता है ५ मैं शोक समुद्र के अन्त को नहीं देखता हूँ मेरी चिन्ता की

वृद्धि और मरने की इच्छा भी उत्पन्न होती है ६ हे सञ्जय ! मैं कर्ण के मरने को और अर्जुन की विजय को सुनकर कर्ण के मारे जाने को श्रद्धा विश्वास से अयोग्य जानता हूँ ७ निश्चय करके मेरा हृदय वज्र के समान दुःख से फटनेवाला है। जो पुरुषोत्तम कर्ण को मृतक सुनकर भी नहीं फटता है ८ पूर्व समय में देवताओं ने मेरी आयु बहुत बड़ी विचार करी है इस हेतु से कि कर्ण को भी मृतक सुनकर अभी पृथ्वी पर महादुःखी जीवता हुआ वर्तमान हूँ ९ हे सञ्जय ! मुझ सुहृद्जनों से रहित के इस जीवन को धिक्कार है जिससे कि मैंने इस दुर्दशा को पाया १० मैं निर्बुद्धि सबके शोच के योग्य होकर दुःखी रहूँगा और पूर्वकाल में सब लोक में मान्य होकर ११ शत्रुओं से तुच्छ किया हुआ मैं कैसे जीवन को समर्थ हूँगा हे सूत, सञ्जय ! मैंने भीष्म द्रोणाचार्य के मरण से उत्पन्न होनेवाले शोक से महादुःखदायी आपत्ति को पाया है १२ युद्ध में कर्ण के मरने पर भीष्म द्रोणाचार्य और महात्मा कर्ण के मरने से मैं शेष बची हुई सेना को नहीं देखता हूँ १३ क्योंकि वह शूरवीर कर्ण मेरे पुत्रों को युद्धरूपी नदी में नौकारूप होकर वीरों की लड़ाई में अनेक शायकों को बरसाता हुआ मारा गया १४ उस पुरुषोत्तम के विना मेरा जीवन वृथा है निश्चय करके शायकों से पीड़ित होकर अतिरथी कर्ण रथ से ऐसे गिर पड़ा १५ जैसे कि वज्र के पात से पर्वत का टूटा हुआ शिखर पृथ्वी पर गिरता है निश्चय करके वह रुधिर में भरा हुआ पृथ्वी को शोभित करके ऐसा सोता है जैसे कि मतवाले हाथी से गिराया हुआ हाथी होता है यही धृतराष्ट्र के पुत्र का बल था जिससे कि पाण्डवों को बड़ा भय था १६ । १७ वह धनुषधारियों का ध्वजारूप कर्ण अर्जुन के हाथ से मारा गया हाय वह धनुषधारी मित्रों का निर्भय करनेवाला वीर कर्ण मरा हुआ ऐसा सोता है १८ जैसे कि देवताओं के इन्द्र का घात किया हुआ पर्वत होता है जैसे कि पंगु मनुष्य का मार्ग चलना और कङ्गाल निर्धन को धन की इच्छा करना वृथा है १९ इसी प्रकार दुर्योधन के मन की इच्छा कठिनता से प्राप्त होने के योग्य है जैसे कि जल के अम्बुकण श्वास के दुःख से उल्लंघन

के योग्य है अहङ्कारी नीच दुःखी मन और पराक्रमहीन २० । २१ क्या मेरा पुत्र दुश्शासन भी मारा गया हे तात! क्या उसने युद्ध में भयकारी कर्मों को नहीं किया २२ जैसे कि अन्य क्षत्रिय मारे गये उसी प्रकार कहीं शूरवीर दुर्योधन तो नहीं मारा गया। युधिष्ठिर सदैव कहता रहा कि युद्ध मत करो २३ परन्तु दुर्योधन ने उसको ऐसे नहीं स्वीकार किया जैसे कि अज्ञान मनुष्य नीरोग करनेवाली ओषधि को नहीं अङ्गीकार करता है। बाणशय्या पर सोनेवाले महात्मा भीष्मजी ने जल की इच्छा करी २४ तब उस अर्जुन ने पृथ्वी के तल को तोड़ा उस अर्जुन के हाथ से उत्पन्न हुई जलधारा को देखकर २५ उस महाबाहु ने कहा कि हे तात! पाण्डवों के साथ सन्धि कर निश्चय करके सन्धि से सुख होगा और तुम्हारा युद्ध मेरे ही अन्त तक होय २६ तुम सजातियों समेत प्रीतिपूर्वक पृथ्वी को भोगो परन्तु उसने न माना और उसके वचन को शोचता है २७ हे सञ्जय! वह दूरंदेशीय वचन अब आगे दिखाई देते हैं और मैं मन्त्री वा पुत्रों से रहित हुआ २८ और द्यूत खेलने से ऐसे बन्धन में पड़ा जैसे कि परकैंच पक्षी होता है हे सञ्जय! जैसे कि अत्यन्त प्रसन्न बालक पक्षी को पकड़कर पक्ष काटकर २९ मारते हुए छोड़ देते हैं और वह अपने पक्ष टूट जाने से चल नहीं सकता है ३० इसी प्रकार सब मनोरथों से रहित और बान्धव आदि से पृथक् मैं भी टूटे पक्षवाले पक्षी के समान वर्तमान हूँ ३१ महादुःखी शत्रु के आधीन होकर मैं किस दशा को पहुँचूँगा ॥ ३२ ॥

इति श्रीमन्महाभारते कर्णपर्वणि धृतराष्ट्रशोके नवमोऽध्यायः ॥ ९ ॥

दशवाँ अध्याय

वैशम्पायन बोले कि, इस रीति से महादुःखी व्याकुलचित्त धृतराष्ट्र विलाप करके फिर सञ्जय से कहने लगे १ कि जिसने सब काम्बोज, अम्बष्ठ, गान्धार और विदेहों को कैकेयलोगों समेत विजय किया और युद्ध में प्रयोजन के निमित्त विजय कराके २ जिसने दुर्योधन के लिये पृथ्वी को विजय किया वह बाहुशाली शूरवीर शल्य युद्ध में पाण्डवों

के हाथ से विजय किया गया ३ हे सञ्जय ! जैसे बड़े धनुष सन्तोष ही के अर्थ होते हैं उसी प्रकार दूसरे प्रकार से विचार किया हुआ कर्म और ही प्रकार से होता है। दैव बड़ा बलवान् है और कालधारी कर्ण के मरने के पीछे युद्ध में कौन-कौन से वीर सम्मुख हुए वह मुझसे कहो ४ कहीं अकेला ही युद्ध करता हुआ पाण्डवों के हाथ से तो नहीं मारा गया। हे तात ! जैसे वह वीर मारा गया उसका वृत्तान्त तुमने प्रथम ही कहा। सब शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ शिखण्डी ने अपने सम्मुख न होनेवाले भीष्मपितामह को युद्ध में उत्तम-उत्तम बाणों से मारा ५। ६ इसी प्रकार धृष्टद्युम्न ने युद्ध में शस्त्र त्यागनेवाले महाधनुषधारी योगाभ्यास में नियत द्रोणाचार्य को बहुत बाणों से घायल किया ७ हे सञ्जय ! वह द्रोणाचार्य खड्ग के द्वारा धृष्टद्युम्न के हाथ से मारे गये, यह दोनों वीर समय पाकर छल से ही मारे गये ८ मैंने इन गिराये हुए भीष्म को सुना। मैं निश्चय जानता हूँ कि आप वज्रधारी इन्द्र भी युद्ध में भीष्म और द्रोणाचार्य को नहीं मार सकता था। जब कि यह दोनों न्याय के अनुसार युद्ध करें। मैं इस बात को सत्य-सत्य कहता हूँ कि युद्ध में बड़े दिव्य अस्त्रों के छोड़नेवाले इन्द्र के समान वीर कर्ण को कैसे बहुतों ने पकड़ा। इन्द्र ने बिजली के समान प्रकाशित दिव्य सुवर्ण से अलंकृत ६। ११ शत्रुओं के मारनेवाली शक्ति जिसको कुण्डलों के बदले में दी और जिसका बाण सर्पमुख दिव्य और सुवर्ण से जटित १२ शत्रुओं का मारनेवाला था वह चन्दन से चर्चित होकर पृथ्वी पर सोता है। जिसने भीष्म, द्रोणाचार्य आदि बड़े-बड़े वीर महारथियों का भी अपमान किया और श्रीपरशुरामजी से महाघोर ब्रह्मास्त्र को सीखा और जिस महाबाहु ने द्रोणाचार्य आदि को मुख मुड़ा हुआ बाणों से पीड़ित देखकर १३। १४ अभिमन्यु के धनुष को अपने तीक्ष्ण बाणों से काटा और जिस प्रकार दशहज़ार हाथी के १५ समानबली वज्र के समान वेगवान् दुराधर्ष भीमसेन को अकस्मात् रथ से विरथ करके हँसता हुआ गुप्तग्रन्थीवाले बाणों से सहदेव को विजय करके १६ धर्म और कृपालुता के ध्यान से विरथ करके नहीं मारा जिसने विजयाभिलाषी महामायावी १७

राक्षसों के राजा घटोत्कच को इन्द्र की शक्ति से मारा। इतने दिन तक उससे भयभीत अर्जुन ने १८ युद्ध में जिसके द्वैरथ संग्राम को प्राप्त नहीं किया वह वीर पुरुष कैसे युद्ध में मारा गया। जिसका न रथ टूटा न धनुष टूटा और अस्त्रों का भी नाश न हुआ वह कर्ण शत्रुओं के हाथ से कैसे मारा गया। उस बड़े धनुष के चढ़ानेवाले घोर बाण और दिव्य अस्त्रों को युद्ध में छोड़नेवाले सिंह के समान वेगवान् पुरुषोत्तम कर्ण के विजय करने को कौन समर्थ है १६। २१ उसका धनुष अवश्य टूटा वा रथ पृथ्वी पर गिरा अथवा शस्त्रों का नाश हो गया था जिससे कि उसको मरा हुआ मुझ से वर्णन करता है २२ उसके नाश होने से मैं अन्य सबको भी नाशवान् देखता हूँ। उसका प्रण था कि जब तक अर्जुन को नहीं मार लूँगा तब तक न तो अपने चरणों को धोऊँगा न युद्ध में पैदल होकर चलूँगा जिस महात्मा का यह महाघोर प्रण था कि जिसके भय से भयभीत धर्मराज पुरुषोत्तम युधिष्ठिर ने २३। २४ तेरह वर्ष तक सदैव आनन्द से जीवन को नहीं पाया, जिस पराक्रमी महात्मा के पराक्रम में मेरे पुत्र ने आश्रय लेकर पाण्डवों की स्त्री द्रौपदी को बड़े बल से सभा में बुलाया, वहाँ भी सभा के मध्य में पाण्डवों के देखते हुए २५। २६ कौरवों के सम्मुख द्रौपदी से बोला हे दास की भार्या, कृष्णे ! तेरे पति नहीं हैं किन्तु सबके सब षण्डतिल अर्थात् थोथे तिल के समान हैं २७ हे सुन्दरि ! तू दूसरे पति के पास वर्तमान हो। जिस कर्ण ने सभा के मध्य में ऐसे-ऐसे असभ्य और रूखे दुर्वचन द्रौपदी से कहे, वह शत्रुओं के हाथ से कैसे मारा गया २८ उसने यह भी कहा था कि हे दुर्योधन ! जो युद्ध में प्रशंसनीय भीष्म और युद्ध दुर्मद द्रोणाचार्य पक्षपात करके कुन्ती के पुत्रों को नहीं मारेंगे तो मैं सबको मार डालूँगा। तू अपने मन की चिन्ता को दूर कर दे २६। ३० गाण्डीव धनुष और अविनाशी दोनों तूणीर इस उत्तम चन्दन से लिप्त सम्मुख दौड़नेवाले मेरे बाण का क्या कर सकते हैं ३१ वह महादोषयुक्त कर्ण निश्चय करके अर्जुन के हाथ से कैसे मारा गया। गाण्डीव धनुष से छूटे हुए बाणों के उदग्रस्पर्श की चिन्ता रहित द्रौपदी से यह कहते हुए कि

हे कृष्णे ! तू विना पति की है जिस कर्ण ने पाण्डवों को देखा और अपने भुजों का आश्रय लेकर जिसको श्रीसमेत सपुत्र पाण्डवों से जरा भी भय नहीं हुआ हे सञ्जय ! उसका मारना देवताओं समेत इन्द्र से भी कठिन था ३२। ३४ हे तात ! उसको सम्मुख दौड़नेवाले पाण्डव लोग कैसे मार सकते हैं धनुषज्या के स्पर्श करनेवाले अथवा हस्तत्राण के द्वारा पकड़नेवाले कोई धनुषधारी मनुष्य कर्ण के सम्मुख होने को समर्थ नहीं हैं पृथ्वी चन्द्र और सूर्य चाहे अपनी किरणों से रहित हो जायँ ३५। ३६ परन्तु युद्ध में मुख न मोड़नेवाले पुरुषोत्तम का मरण नहीं है जिसके कारण प्रारब्धहीन दुर्बुद्धि दुर्योधन ने सदैव भाई दुश्शासन समेत ३७ वासुदेवजी के उत्तर ही को अङ्गीकार किया मैं यह जानता हूँ कि वह मेरा पुत्र दुर्योधन बड़े दोषयुक्त कर्ण को पराजय और दुश्शासन को मरा हुआ ३८ देखकर शोच को करता है हे सञ्जय ! द्वैरथ युद्ध में अर्जुन के हाथ से कर्ण को मरा हुआ सुनकर ३९ और विजय करनेवाले पाण्डवों को देखकर दुर्योधन ने क्या कहा वा दुर्मर्षण और वृषसेन को युद्ध में मृतक देखकर ४० और अपनी सेना को महारथियों से घायल होकर भागती हुई देखकर और भागने की इच्छावान् मुख मोड़नेवाले राजाओं और रथियों को घायल देखकर शोच करता है ४१ अथवा दुर्योधन ने उस शासना के अयोग्य पलायमान इन्द्रियों के वशीभूत ४२ सेना को उत्साह से रहित देखकर क्या कहा और जिनके बहुत मनुष्य मारे गये उन राजाओं से घिरे हुए आप शत्रुता करनेवाले दुर्योधन ने क्या कहा और युद्ध में रुधिर पीनेवाले भीमसेन के हाथ से मरे हुए भाई दुश्शासन को देखकर क्या कहा और सभा में जो राजा गान्धार के सम्मुख कहा था कि कर्ण युद्ध में अर्जुन को अवश्य मारेगा उस कर्ण के मरने पर क्या कहा ४३। ४५ पूर्व समय में सौबल के पुत्र शकुनी ने द्यूत रचकर पाण्डवों को ठगकर ४६ कर्ण के मरने पर क्या कहा यादवों में महारथी हार्दिक्य के पुत्र बड़े धनुषधारी कृतवर्मा ने ४७ कर्ण को मृतक देखकर क्या कहा क्षात्रय वैश्य धनुर्वेद के जानने के आकांक्षी जिस बुद्धिमान् अश्वत्थामा की शिक्षा को प्राप्त करते हैं उस बड़े प्रतापी

यशस्वी तरुण वयवाले धनुर्धारी अश्वत्थामा ने कर्ण के मरने पर क्या कहा ४८। ४९ जो गौतम के पुत्र महाधनुर्धारी धनुर्वेद के आचार्य कृपाचार्य हैं हे तात! उन्होंने कर्ण के मरने पर क्या कहा और रथियों में श्रेष्ठ मद्रदेशाधिपति पराक्रमी युद्ध में शोभायमान राजा शल्य ने अपने सारथीपने में कर्ण को मृतक देखकर क्या कहा ५०। ५२ इनके सिवाय और सब दुराधर्ष धनुषधारी राजाओं ने युद्ध में कर्ण को मरा देखकर क्या कहा और जो-जो इस पृथ्वी के राजा यहाँ युद्ध करने को आये उन सबों ने ५३ कर्ण को मरा हुआ देखकर कौन-कौन से वचन कहे हे सञ्जय! उस रथियों में श्रेष्ठ नरोत्तम वीर कर्ण के मरने पर ५४ कौन-कौन सेना के सेनाध्यक्ष हुए और रथियों में श्रेष्ठ मद्रदेश का राजा शल्य कर्ण के सारथ्यकर्म में कैसे नियत किया गया यह सब वृत्तान्त मुझसे ब्योरे समेत वर्णन करो ५५ युद्ध करनेवाले कर्ण के दाहिने रथ के चक्र की किसने रक्षा करी और बायें चक्र की और पृष्ठभाग की किस-किसने रक्षा करी ५६ किसने कर्ण का सङ्ग न छोड़ा और कौन से नीच भाग गये और तुम्हारे भाग जाने से महारथी कर्ण कैसे मारा गया ५७ और जिस प्रकार बादलों से जल की धारा गिरती हैं उसी प्रकार बाणों की वर्षा करते हुए महारथी शूरवीर पाण्डव कैसे सम्मुख हुए ५८ हे सञ्जय! उस युद्ध में बाणों में श्रेष्ठ कर्ण का वह दिव्यबाण कैसे निष्फल हुआ उसको मुझसे कहो ५९ प्रधान पुरुष के न होने से मैं अपनी शेष बची हुई सेना को नहीं देखता हूँ ६० उन वीर धनुर्धारी मेरे लिये जीवन के त्यागनेवाले भीष्म और द्रोणाचार्य को मृतक देखकर अब मेरा जीवना निरर्थक है ६१ मैं पाण्डवों के हाथ से मरे हुए कर्ण को वारंवार स्मरण करके शान्ति को नहीं पाता हूँ जिसकी कि भुजाओं का बल दश हज़ार हाथियों के समान था ६२ हे सञ्जय! द्रोणाचार्य के मरने पर युद्ध में शत्रुओं के हाथ से नरोत्तम कौरवों का जो वृत्तान्त हुआ वह मुझसे कहो ६३ और जैसे कर्ण कुन्ती के पुत्रों से युद्ध करने को प्रवृत्त हुआ और युद्ध में जैसे मारा गया उसको भी ठीक-ठीक कहो ॥६४॥

इति श्रीमहाभारते कर्णपर्वणि धृतराष्ट्रप्रश्ने दशमोऽध्यायः ॥ १० ॥

ग्यारहवाँ अध्याय

सञ्जय बोले कि, हे भरतवंशिन्, महाराज ! उस दिन बड़े धनुर्धारी द्रोणाचार्य के मरने और महारथी अश्वत्थामा के निष्फल सङ्कल्प करने १ और कौरवों की समुद्ररूपी सेना के भागने पर अर्जुन अपनी सेना को व्यूहित करके भाइयों समेत युद्ध में नियत हुआ २ उस समय आपके पुत्र ने उस सम्मुख नियत होनेवाले अर्जुन को जानकर अपनी भागती हुई सेना को भागने से रोंका ३ और अपने भुजबल से सेना को रोंककर दुर्योधन पाण्डवों के साथ विलम्ब तक युद्ध करके ४ सन्ध्या समय जानकर विजयी और विलम्ब तक विचारनेवाले शत्रुओं समेत अपनी सेना को विश्राम कराया ५ सेना के विश्राम को कर अपने डेरे में पहुँचकर कौरवों ने परस्पर की निर्विघ्नता का विचार किया ६ बहुमूल्य आस्तरण वा शय्या और आसनों पर बैठे हुए उन लोगों ने ऐसे सलाह करी जैसे कि देवता लोग सुखशय्याओं पर ७ बैठे हुए सलाहों को करते हैं इसके पीछे राजा दुर्योधन प्यार और मृदुभाषण से उन धनुषधारियों के सम्मुख होकर समय के अनुसार इन वचनों को बोला कि, हे बुद्धिमानों में श्रेष्ठ ! तुम सब अपनी-अपनी राय को शीघ्रता से कहो, विलम्ब मत करो। हे राजा लोगो ! ऐसी दशा में क्या करना उचित है और कौनसी बात अवश्य करने के योग्य है ८। ९ सञ्जय ने कहा कि इस प्रकार महाराज दुर्योधन के कहने पर सिंहासनों पर वर्तमान युद्धाभिलाषी नरोत्तमों ने अनेक प्रकार की चेष्टाओं को किया १० युद्ध में प्राणों के होम करने के अभिलाषी उन लोगों की चेष्टाओं को देखकर और बालसूर्य के समान तेजस्वी राजा के स्वरूप को देखकर ११ शास्त्रों के ज्ञाता बुद्धि के स्वामी वार्तालाप के जाननेवाले अश्वत्थामाजी ने वर्णन करना प्रारम्भ किया कि स्वामी की भक्ति और देश काल का पहिंचानना और बल वा नीति से प्रयोजन की सिद्धि करनेवाले १२ उपाय पण्डितों ने कहे हैं वह उपाय दैव के आधीन हैं हमारे जो महारथी वीर देवताओं के समान १३ नीतिमान् भक्तिमान् और सावधानता में

योग्य थे वह तो मारे गये परन्तु हम लोगों को विजय से निराश होना भी न चाहिये १४ इस लोक में अच्छी रीति से किये हुए नीति आदि सब अर्थों से दैव भी अनुकूल किया जाता है। हे राजन्! वह लोग हम सबों में अत्यन्त श्रेष्ठ गुणों से भरे हुए १५ कर्ण को ही सेनापति के अधिकार पर अभिषेक करावेंगे और कर्ण को सेनापति करके शत्रुओं को मारेंगे १६ निश्चय करके यह बड़ा पराक्रमी शूरवीर अस्त्रज्ञ युद्ध में दुर्मद यमराज के समान असह्य लड़ाई में शत्रुओं के विजय करने को इन्द्र के ही समान है १७ हे राजन्! अश्वत्थामा के इस वचन को सुनकर आपके पुत्र ने कर्ण में यह बड़ा भरोसा किया १८ कि भीष्म और द्रोणाचार्य के मरने पर यही पाण्डवों को मारेगा इस आशा को हृदय में धारण करके बड़ा विश्वासयुक्त होकर १९ प्रसन्नचित्त दुर्योधन उस प्रीति सत्कार से युक्त प्रियतम अपनी वृद्धि करनेवाले वचन को सुनकर २० अपने मन को अच्छी रीति से दृढ़ करके अपनी भुजाओं के बल में रक्षित होकर कर्ण से यह वचन बोला २१ कि हे कर्ण! मैं तेरे पराक्रम को और अपने ऊपर जो तेरी प्रीति है उसको अच्छी रीति से जानता हूँ हे महाबाहो! मैं भी तुमसे सुन्दर फलयुक्त वचन कहूँगा २२ मेरे सेना-पति अतिरथी भीष्म और द्रोणाचार्य मारे गये उनसे भी अधिक आप पराक्रमी होकर सेनापति हूजिये २३। २४ वह दोनों वृद्ध महाधनुष-धारी अर्जुन से मेल रखते थे हे कर्ण! मैंने तेरे कहने से दोनों की बड़ी प्रतिष्ठा करी थी २५ हे तात! भीष्मजी ने अपने को बाबा समझकर बड़े युद्ध में दशों दिन तक पाण्डवों की रक्षा करी २६ आपके शस्त्र-रहित होने पर शिखण्डी को आगे करके अर्जुन के हाथ से भीष्म-पितामह मारे गये २७ हे पुरुषोत्तम! उस पुरुषसिंह के मरने और शरशय्या पर विराजमान होने पर तेरे कहने से द्रोणाचार्य संग्राम में सम्मुख हुए २८ उन्होंने भी अपना शिष्य जानकर पाण्डवों की रक्षा करी वह वृद्ध भी शीघ्रता से ही धृष्टद्युम्न के हाथ से मारे गये २९ इन दोनों प्रधान पुरुषों के मरने से चिन्तायुक्त होकर मैं तुझ बड़े पराक्रमी के समान किसी शूरवीर को नहीं देखता हूँ हम लोगों के बीच में आपही

आदि मध्य और अन्त में विजय करने को समर्थ हो और जिस रीति से आपने सदैव मेरा हित किया है ३०। ३१ उसी प्रकार आप बैल के समान धुरके उठाने के योग्य हो मैं आपको सेनापति के अधिकार पर अभिषेक करूँगा ३२ जैसे कि देवताओं के सेनापति प्रभु अविनाशी स्वामिकार्त्तिकजी हैं उसी प्रकार आप मेरी सेना की रक्षा करो ३३ जैसे कि महेन्द्र युद्ध में दानवों को मारता है उसी प्रकार आप भी हमारे शत्रुओं को मारिये तुमको सम्मुख देखकर महारथी पाण्डव और पाञ्चाल लोग ऐसे युद्ध में से भागेंगे जैसे कि विष्णुजी को देखकर दानव भागते हैं। इस हेतु से हे पुरुषोत्तम! तुम इस बड़ी सेना को अपनी रक्षा में करो ३४। ३५ आपको युद्ध में उपाय करता हुआ देखकर मन्त्रियों समेत पाण्डव सृञ्जय और पाञ्चालदेशीय यह सब भागेंगे ३६ जैसे उदय हुआ सूर्य अपने तेज से तपाता हुआ महाघोर अन्धकार को विध्वंस करता है, उसी प्रकार तुम भी शत्रुओं को तपाओ ३७ सञ्जय बोले हे राजन्! आपके पुत्र की यही आशा प्रबल हुई कि भीष्म और द्रोण के मरने पर यह कर्ण पाण्डवों को अवश्य मारेगा ३८ इस आशा को हृदय में धरकर इस प्रकार कर्ण से बोला कि हे कर्ण! वह अर्जुन तेरे सम्मुख युद्ध करने की इच्छा नहीं करता है ३९ कर्ण बोला कि हे गान्धारी के पुत्र! मैंने प्रथम ही यह तुझसे कहा है कि मैं पुत्र पौत्र और श्रीकृष्णजी समेत सब पाण्डवों को विजय करूँगा ४० मैं निस्सन्देह तेरा सेनापति बनूँगा। हे महाराज! आप तैयार हूजिये और पाण्डवों को विजय किया जानो ४१ सञ्जय बोले कि हे महाराज! इस बात के सुनते ही राजा दुर्योधन अपने राजाओं समेत ऐसा उठा जिस प्रकार देवताओं समेत इन्द्र उठता है ४२ अर्थात् सेनापति बनाने के लिये कर्ण के सत्कार करने को ऐसा उठा जैसे कि स्वामिकार्त्तिक के अभिषेक कराने को देवताओं समेत इन्द्र उठा था इसके पीछे विजयाभिलाषी उन सब राजाओं ने जिनका अग्रगामी दुर्योधन था सुवर्ण के कलश और अभिमन्त्रित मृन्मयपात्र हाथी के दाँत के पात्र गैंड़े के सींग के पात्र वा अन्य यज्ञपशुओं के दाँतों के पात्र मणि मोतियों से आच्छादित वा बहुत सी सुगन्धित द्रव्यों से युक्त जल-

पूरित पात्र और गन्धाक्षत आदि अभिषेक की वस्तुओं से वेदोक्त मन्त्रों के द्वारा कर्ण का अभिषेक कराया ४३ । ४५ ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और अङ्गीकार किये हुए शूद्रों ने भी उस महात्मा कर्ण को प्रसन्न किया जो कि शास्त्रोक्त बुद्धि की श्रेष्ठ रीति से इकट्ठे किये हुए सामानों समेत स्नान किये हुए रेशमी वस्त्रों के बिछौनों से युक्त ताँबे के उत्तम आसन पर विराजमान था ४६ । ४७ हे राजेन्द्र! फिर अभिषेक हो जाने पर शत्रुहन्ता कर्ण ने निष्क और गोधन देकर ब्राह्मणों से स्वस्तिवाचन कराया ४८ उस समय वन्दीजन और ब्राह्मणों ने उस पुरुषोत्तम से यह कहा कि तुम गोविन्दजी आदि सब साथियों समेत पाण्डवों को विजय करो ४९ हे कर्ण! तुम हमारी विजय के निमित्त पाञ्चालों समेत सब पाण्डवों को ऐसे मारो जैसे कि सदैव होनेवाला सूर्य बड़े अन्धकार को दूर करता है ५० आपके बाणों को केशवजी समेत पाण्डव लोग देखने को भी ऐसे समर्थ न होंगे जैसे कि सूर्य की प्रकाशित किरणों के देखने को उलूक पक्षी नहीं समर्थ हो सकता है ५१ युद्ध में तुझ शस्त्रधारी के सम्मुख पाण्डव नियत होने को ऐसे समर्थ नहीं हैं जैसे कि महेन्द्र के सम्मुख दैत्य दानव नियत नहीं हो सकते ५२ अभिषेक किया हुआ वह कर्ण बड़े तेज से दूसरे सूर्य के समान प्रकाशमान हुआ ५३ तब काल से प्रेरित आपके पुत्र ने कर्ण को सेनापति के अधिकार पर अभिषेक कराके अपने को सिद्धमनोरथ समझा ५४ हे राजन्! विजयी कर्ण ने भी सेनापति होकर सूर्योदय के समय सेना के तैयार होने की आज्ञा दी ५५ फिर वहाँ आपके पुत्रों समेत वह कर्ण ऐसा शोभित हुआ जैसे कि तारकासुर के युद्ध में देवताओं समेत स्वामिकार्त्तिकजी सुशोभित हुए थे ॥ ५६ ॥

इति श्रीमहाभारते कर्णपर्वणि कर्णाभिषेकैकादशोऽध्यायः ॥ ११ ॥

बारहवाँ अध्याय

धृतराष्ट्र बोले कि, जब सूर्य के पुत्र कर्ण ने सेनापति पदवी को पाकर राजा दुर्योधन से भाई के समान मृदुभाषण को सुनके १ सूर्योदय के

समय असंख्य सेना की तैयारी के लिये आज्ञा देकर क्या काम किया? हे सञ्जय! उसको मुझे समझाके कहो २ सञ्जय बोले कि हे भरतर्षभ! आपके पुत्रों ने कर्ण के अभिप्राय को जानकर सेना की तैयारी के लिये आज्ञा करी जिसमें आनन्दमङ्गल सूचक बाजे आगे चले ३ और पिछली रात्रि में अकस्मात् आपकी सेना में तैयारी करने का शब्द आधिक्यता से हुआ ४ इसके पीछे अलंकृत उत्तम हाथी, रथ, मनुष्य, पदाती, घोड़े ५ और शीघ्रता करनेवाले और परस्पर में बोलनेवाले शूरवीरों के महाकठिन शब्द आकाश तक व्याप्त हुए ६ इसके पीछे श्वेत पताका और हंस के वर्ण घोड़े सुवर्णपृष्ठी धनुष नागकक्षी ध्वजा ७ सैकड़ों तूणीरों से युक्त बाजूबन्द और कवचों को धारण करनेवाले शतघ्नी, किङ्किणी, शक्ति, शूल और तोमरों से भरे हुए धनुषों से युक्त निर्मल सूर्य के समान प्रकाशमान वायु के विपरीत होने से सम्मुख पताकावाले रथ की सवारियों से ८। ६ और स्वर्णमयी जालों से अलंकृत शङ्ख को बजाता स्वर्णमयी धनुष को हिलाता हुआ कर्ण चला। हे श्रेष्ठ, नरोत्तम! वहाँ कौरवों ने उस बड़े धनुषधारी रथारूढ़ सूर्य के समान प्रकाशित असह्य तेज से अन्धकार को दूर करते हुए १०। ११ कर्ण को देखकर किसी ने भी भीष्म, द्रोणाचार्य और अन्य-अन्य वीरों के दुःखों को नहीं माना १२ इसके पीछे शङ्खध्वनि के द्वारा शूरवीरों को चैतन्य करते हुए कर्ण ने कौरवों की बड़ी सेना को आकर्षण किया १३ इस रीति से महाधनुषधारी शत्रुसन्तापी कर्ण मकरव्यूह को रचकर पाण्डवों के विजय की इच्छा से सम्मुख चला १४ हे राजन्! उस मकरव्यूह के मुख पर तो कर्ण नियत हुआ, नेत्रों के समीप महारथी शकुनी और शूरवीर उलूक नियत हुए शिर पर अश्वत्थामा और ग्रीवा पर सब सगे भाई और कटिभाग पर बड़ी सेनासमेत आप राजा दुर्योधन नियत हुआ १५। १६ और वामपाद पर नारायण और गोपालनाम सेना से युक्त दुर्मद कृतवर्मा नियत हुआ और बड़े धनुषधारी त्रिगर्तदेशीय सत्यपराक्रमी कृपाचार्यजी दक्षिण चरण के समीप नियत हुए १७। १८ और मद्रदेशीय बड़ी सेनासमेत राजा शल्य बायें चरण के पीछे और हज़ार रथ और तीन सौ हाथियों समेत सत्य-

संकल्प सुषेण दक्षिण चरण के पीछे हुआ १६। २० बड़ी सेना समेत बड़े पराक्रमी दोनों भाई राजा चित्र और चित्रसेन पुच्छ पर नियत हुए २१ हे राजेन्द्र! इस रीति से नरोत्तम कर्ण के चलने पर धर्मराज युधिष्ठिर अर्जुन की ओर देखकर यह बोले २२ कि हे वीर, अर्जुन! देखो जैसे-जैसे इस युद्ध में शूरवीर महारथियों से रक्षित दुर्योधन की सेना कर्ण ने अलंकृत करी २३ वह दुर्योधन की बड़ी सेना वही है जिसके बड़े-बड़े वीर मारे गये। हे महाबाहो! यह शेष बची हुई है। आशय यह है कि यह सेना मेरी बुद्धि से तृणों के समान है २४ इस सेना भर में अकेला धनुषधारी कर्ण ही प्रकाशित है यह रथियों में श्रेष्ठ कर्ण देवता, असुर, किन्नर, गन्धर्व, नाग, पिशाच और २५ तीनों लोकों के स्थावर जङ्गमों से महादुर्जय है हे महाबाहो, अर्जुन! अब इसके ही मारने पर तेरी पूर्ण विजय है २६ इसके मरने पर बारह वर्ष का मेरा कण्टक उखड़ जायगा। हे महाबाहो! ऐसा जान और समझकर व्यूह को जैसा चाहो वैसा तैयार करो २७ पाण्डव अर्जुन ने भाई के उस वचन को सुनकर अपनी सेना को अर्धचन्द्र व्यूह से अलंकृत किया २८ उसके वाम भाग पर भीमसेन और दाहिने भाग पर बड़ा धनुषधारी धृष्टद्युम्न वर्तमान हुआ २९ और व्यूह के मध्य में राजा युधिष्ठिर और अर्जुन नियत हुए और धर्मराज के पीछे नकुल सहदेव हुए ३० और पाञ्चालदेशीय उत्तमौजा और युधामन्यु रथ के पहियों के रक्षक हुए अर्जुन से रक्षित उन दोनों ने भी युद्ध में अर्जुन को नहीं त्यागा ३१ हे राजन्! शेष शूरवीर राजा लोग शस्त्रादि से अलंकृत अपनी-अपनी युक्ति के अनुसार व्यूह में नियत हुए ३२ पाण्डव और अन्य शूरवीरों ने इस रीति से अपने व्यूह को रचकर तैयार किया हे राजन्! इस रीति से पाण्डव और आपके पुत्रों ने अपने-अपने व्यूह को रचकर युद्ध करने को उत्साह किया ३३ दुर्योधन ने कर्ण की रचित की हुई अपनी सेना को युद्ध में देखकर भाई बन्धुओं समेत पाण्डवों को मृतकरूप जाना ३४ उसी प्रकार राजा युधिष्ठिर ने भी अपनी पाण्डवीय सेना को अलंकृत देखकर कर्ण समेत धृतराष्ट्र के पुत्रों को मृतकरूप माना ३५ इसके पीछे शङ्ख, भेरी, ढोल,

दुन्दुभी, डिमडिम आदि बाजे भी चारों ओर से बजे ३६ हे राजन्! उस समय दोनों सेनाओं में बड़े शब्दायमान बाजे गाजे बजे और युद्धाभिलाषी शत्रुहन्ता शूरवीरों के भी महासिंहनाद हुए ३७ हे राजन्! घोड़ों के हींसने और हाथियों के चिग्घाड़ने के और रथ की नेमियों के महाकठोर शब्द उत्पन्न हुए ३८ फिर व्यूह के मुख पर नियत बड़े धनुषधारी कर्ण को देखकर किसी ने भी द्रोणाचार्य के दुःख को नहीं जाना ३९ उस समय अत्यन्त उत्तम मनुष्यों से भरी हुई युद्धाभिलाषी दोनों सेना पराक्रम से परस्पर मारने को नियत हुईं ४० वहाँ पर सावधान और क्रोध से भरे हुए एक दूसरे को नियत देखकर कर्ण और पाण्डव अर्जुन सेना के मध्य में फिरने लगे फिर वह दोनों सेना नाचती हुई सी परस्पर में भिड़ गईं उनके भाग वा विभाग कोणों से युद्धाभिलाषी लोग सेना से बाहर निकले इसके अनन्तर परस्पर में युद्धकर्ता लोग हाथी घोड़े और रथों के साथ युद्ध में प्रवृत्त हुए ॥ ४१-४३ ॥

इति श्रीमहाभारते कर्णपर्वणि व्यूहनिर्माणे द्वादशोऽध्यायः ॥ १२ ॥

तेरहवाँ अध्याय

सञ्जय बोले कि, अत्यन्त प्रसन्नचित्त घोड़े हाथी और मनुष्योंवाली उन दोनों सेनाओं ने जोकि देवता और असुरों की सेना के समान प्रकाशमान थीं परस्पर में एक ने एक को सम्मुख पाकर अत्यन्त प्रहार किये १ इसके पीछे बड़े पराक्रमी मनुष्य, रथ, घोड़े, हाथी और सेना के पतियों ने शरीर और प्राणों के नाश करनेवाले अनेक प्रहार किये २ और चन्द्रमा सूर्य और कमलों के समान प्रकाशमान सुगन्धि से भरे नृसिंहों के शिरों से पृथ्वी को आच्छादित कर दिया ३ अर्धचन्द्र, भल्ल, क्षुरप्र, खड्ग, पट्टिश और परश्वधों से युद्ध करनेवालों के शिरों को काटा ४ तब लम्बी स्थूल बाजूआदि से अलंकृत शस्त्रधारी भुजाओं से बड़े-बड़े दीर्घ भुजवाले शूरवीरों की भुजा पृथ्वी पर पड़ी हुई शोभायमान हुईं ५ रक्तअंगुष्ठ और हथेली समेत फड़कती हुई उन भुजाओं से पृथ्वी ऐसी शोभायमान हुई जैसे कि गरुड़जी के छोड़े हुए उग्र पञ्च-

मुखवाले सर्पों से शोभित होती है ६ शत्रुओं के हाथ से मारे हुए वीर हाथी घोड़े और रथों से ऐसे गिरे जैसे कि क्षीणपुण्य होने से स्वर्गवासी जीव अपने-अपने विमानों से गिरते हैं ७ युद्ध में बड़े-बड़े वीरों की भारी गदा परिघ और मूसलों से भी मारे हुए अन्य हज़ारों वीर पृथ्वी पर गिरे ८ रथी रथियों से मतवाले हाथी मतवाले हाथियों से अश्वारूढ़ अश्वारूढ़ों से उस कठिन युद्ध में मर्दित किये गये ९ रथों से मनुष्य और हाथियों से रथ वा पतियों से रथी और हाथियों से रथपति घोड़े और सवार और हाथी दोनों रथों से मथे गये १०। ११ मनुष्य घोड़े हाथी और रथियों ने हाथ पाँव शस्त्र और रथों से रथ, घोड़े, हाथी और मनुष्यों का बड़ा विनाश किया १२ इस रीति से शूरवीरों के हाथ से सेना के घायल और मारे जाने से वह पाण्डव जिनमें अग्रगामी भीमसेन था हमारे सम्मुख आये १३ धृष्टद्युम्न, शिखण्डी, द्रौपदी के पुत्र, प्रभद्रक नाम क्षत्रिय, सात्यकी, चेकितान, द्रविड़ देशीय सेना समेत १४ बड़े व्यूह से युक्त और बड़े वक्षःस्थल लम्बी भुजा दीर्घनेत्री वेगवान् आभूषणों से अलंकृत १५ रक्तदन्त मतवाले हाथी के समान पराक्रमी नाना प्रकार के रङ्गों की पोशाकों से भूषित चन्दनादि से चर्चित देहवाले खड्ग, भिन्दिपालों को हाथ में लिये हाथियों के हटानेवाले एक सी मृत्युवाले पाण्ड्य चौल और केरल लोगों ने परस्पर में त्याग नहीं किया १६–१७ तूणीर, धनुष, भिन्दिपाल हाथ में लिये लम्बेकेश रखनेवाले प्रियभाषी घोर पराक्रमवाले अन्य पति और अश्वारूढ़ों ने भी परस्पर में त्याग नहीं किया। इसके पीछे दूसरे शूर चन्देर, पाञ्चाल, केकय, कारूष, कौशल, काञ्च्य और मगधशूरवीर, सम्मुख दौड़े १८। १९ उन्हों के रथ घोड़े हाथी और अत्यन्त भयानक पतिलोग नाना प्रकार के बाजे बजानेवालों के साथ में बड़े प्रसन्नचित्त हँसते नाचते और गाते थे २० अत्यन्त उत्तम रथों से युक्त हाथी के कन्धों पर सवार भीमसेन बड़ी सेना के मध्य में आपके शूरवीरों के सम्मुख गये २१ अत्यन्त उत्तम महाभयानक बुद्धि के अनुसार अलंकृत किया हुआ वह हाथी ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि सूर्योदयवाला उदयाचल का भवन शोभायमान होता है २२

उसका लोहमयी रत्नों से जटित किया हुआ कवच इस प्रकार का प्रकाशमान था जैसे कि नक्षत्रों समेत शरदृऋतु का आकाश शोभित होता है तोमरसंयुक्त चपलभुज और सुन्दर मुकुट धारण किये हुए महाअलंकृत सूर्य के समान प्रकाशमान वह भीमसेन अपने तेज से शत्रुओं को भस्म करता हुआ युद्ध में नियत हुआ २३।२४ वहाँ हाथी पर चढ़ा हुआ क्षेमधूर्ति दूर से उस हाथी पर सवार बड़े साहसी भीमसेन को देखकर पुकारता और बुलाता हुआ सम्मुख गया २५ प्रथम तो इन दोनों के हाथियों में ही परस्पर ऐसा युद्ध हुआ जैसे कि दैवइच्छा से वृक्षों समेत दो पर्वतों का युद्ध होता है २६ उन हाथियों के बड़े युद्ध होने के पीछे वह दोनों वीर सूर्य की किरणरूप तोमरों से परस्पर एक-एक को घायल करते हुए बड़े वेग से गर्जे २७ फिर वह दोनों हाथियों के द्वारा हट करके मण्डलों में घूमे और धनुषों को पकड़कर परस्पर में एक ने दूसरे को घायल किया २८ फिर उन दोनों ने भुजा और बाणों के शब्दों से मनुष्यों को प्रसन्न करके बड़े-बड़े सिंहनादों को किया २९ और फिर वह दोनों महाबली ऊँची सूँड़वाले हाथियों और वायु से उड़ती हुई पताकाओं समेत युद्ध करने लगे ३० उन दोनों ने परस्पर में एक ने दूसरे के धनुष को काटकर शक्ति और तोमरों की वर्षा से परस्पर में ऐसे घायल किया ३१ जैसे कि वर्षाऋतु में बादल जलों से व्यथित करते हैं। उस समय महागर्जना करते हुए क्षेमधूर्ति ने अत्यन्त वेगवान् दूसरे छः तोमरों से भीमसेन को छाती पर घायल किया ३२ क्रोध से भरा हुआ भीमसेन शरीर में लगे हुए तोमरों से ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि बादलों से सूर्य शोभित होता है ३३ इसके अनन्तर उपाय करनेवाले भीमसेन ने सूर्य के समान प्रकाशित सीधा चलनेवाला लोहे का तोमर उस शत्रु के ऊपर फेंका ३४ फिर राजा कुलूत ने धनुष को नवाकर दश बाणों से तोमर को काटकर भीमसेन को घायल किया ३५ इसके अनन्तर गर्जना करते भीमसेन ने बादल के समान शब्दायमान धनुष को लेकर बाणों से शत्रु के हाथी को घायल और पीड़ित किया ३६ युद्ध में भीमसेन के बाणों से वह हाथी पीड़ित होकर थँभा हुआ भी ऐसे नहीं

ठहर सका जैसे कि वायु से उड़ा हुआ बादल नहीं ठहर सकता है ३७ और भीमसेन का गजराज हाथी उस हाथी पर ऐसा दौड़ा जैसे कि वायु से उड़ा हुआ बादल बड़ी वायु से उड़े हुए बादल के पीछे दौड़ता है ३८ फिर प्रतापी क्षेमधूर्ति ने अपने हाथी को अच्छी रीति से रोककर शीघ्र ही अपने बाणों से भीमसेन के हाथी को घायल किया इसके पीछे अच्छे प्रकार से छोड़े हुए टेढ़े पक्षवाले क्षुरप्र से शत्रु के धनुष को काट-कर प्रतिपक्षवाले शत्रु को पीड्यमान किया ३९।४० इसके अनन्तर क्रोधयुक्त क्षेमधूर्ति ने भीमसेन को घायल करके उसके हाथी को सब मर्मों में अपने नाराचों से घायल किया ४१ हे भरतवंशिन् ! उस घायल करने से वह भीमसेन का हाथी पृथ्वी पर गिर पड़ा और भीमसेन हाथी के गिरने से पूर्व ही हाथी से कूदकर पृथ्वी पर नियत हुआ ४२ फिर भीमसेन ने भी उसके हाथी को गदा से मारा तब उस गदा से मथे हुए हाथी से उतरे हुए ४३ और शस्त्र उठाकर आनेवाले क्षेमधूर्ति को भीमसेन ने गदा से मारा और गदा के लगते ही मृतक होकर खड्ग समेत पृथ्वी पर ऐसे गिर पड़ा ४४ जैसे कि वज्र से टूटा हुआ पर्वत वा वज्र से मारा हुआ सिंह पृथ्वी पर गिरता है हे भरतर्षभ ! उस कुलूतों के यशस्वी राजा को मृतक हुआ देखकर आपकी सेना भयभीत और पीड़ित होकर भागी ॥४५।४६॥

इति श्रीमहाभारते कर्णपर्वणि क्षेमधूर्तिवधे त्रयोदशोऽध्यायः ॥ १३ ॥

चौदहवाँ अध्याय

सञ्जय बोले कि, इसके पीछे बड़े धनुषधारी शूरवीर कर्ण ने टेढ़े पक्ष-वाले बाणों से युद्ध में पाण्डवों की सेना को मारा १ हे राजन् ! उसी प्रकार क्रोधयुक्त उन पाण्डवों के महारथियों ने कर्ण के देखते हुए आपके पुत्र की सेना को मारा २ हे राजन् ! फिर कर्ण ने भी सूर्य की किरण के समान प्रकाशित चतुर कारीगरों के साफ़ किये हुए नाराचों से उस युद्ध में पाण्डवीय सेना को मारा ३ तब तो कर्ण के नाराचों से घायल हुए हाथी चिग्घारें मारने लगे और महापीड़ित होकर दशों दिशाओं में घूमने लगे ४ हे श्रेष्ठ ! कर्ण के हाथ से उस सेना के घायल होने पर

शीघ्र ही नकुल उस युद्ध में कर्ण के सम्मुख गया ५ उसी प्रकार भीमसेन ने कठिन कर्म करनेवाले अश्वत्थामा को और सात्यकी ने बिन्द अनुबिन्द नाम कैकेयों को रोका ६ और राजा चित्रसेन ने आते हुए श्रुतकर्मा को और प्रतिविन्ध्य ने अपूर्व ध्वजाधारी राजा चित्र को रोका फिर राजा दुर्योधन ने धर्मपुत्र युधिष्ठिर को रोका और क्रोधयुक्त अर्जुन ने संसप्तकगणों को जा रोका ७। ८ उस उत्तम वीरों के नाश में धृष्टद्युम्न कृपाचार्य से लड़ने लगा और शिखण्डी के सम्मुख अजेय कृतवर्मा नियत हुआ ९ हे महाराज! इसी प्रकार श्रुतकीर्ति ने शल्य को और माद्री के पुत्र सहदेव ने आपके पुत्र दुश्शासन को रोका १० दोनों कैकेयों ने युद्ध में प्रकाशित बाणों की वर्षा से सात्यकी को आ घेरा सात्यकी ने बाणों से कैकेयों को ढक दिया ११ हे भरतवंशिन्! उन दोनों वीर भाइयों ने उसको हृदय पर ऐसा कठिन घायल किया जैसे कि वन में सम्मुख आनेवाले दो हाथी अकेले हाथी को अपने दाँतों से घायल करते हैं १२ हे राजन्! बाणों से टूटे हुए कवचवाले सात्यकी को दोनों भाइयों ने बड़ा घायल किया १३ फिर सात्यकी ने हँसते हुए बाणों की वर्षा करके उन दोनों को सब ओर से रोका १४ इसके पीछे सात्यकी के बाणों से रुके हुए उन दोनों ने शीघ्र ही बाणों से सात्यकी के रथ को ढक दिया १५ फिर इस बड़े यशस्वी सूरवंशीय सात्यकी ने उन दोनों के छत्र और धनुषों को काटकर उन दोनों को अपने तीक्ष्ण शायकों से रोका १६ तब तो उन दोनों ने दूसरे छत्र और बाणों को लेकर सात्यकी को ढक दिया और बहुत शीघ्र ही शोभायुक्त होकर फिरने लगे १७ और कङ्क और मोरपक्षों से शोभित दोनों के छोड़े हुए प्रकाशित बाण सब ओर को गिरे १८ हे राजन्! उस महाभारी युद्ध में उन दोनों के बाणों से अन्धकार सा छा गया उस समय उन महारथियों ने परस्पर में एक ने दूसरे के धनुष को काटा १९ इसके पीछे क्रोधभरे युद्ध में दुर्मद सात्यकी ने दूसरे धनुष को लेकर और तैयारी करके युद्ध में बड़े तीक्ष्ण क्षुरप्र से अनुबिन्द के शिर को काटा। हे राजन्! वह कुण्डलों से अलंकृत महाभारी शिर २०। २१ बड़े युद्ध में मरे हुए शम्बर के शिर

के समान सब कैकेय लोगों को शोचता हुआ पृथ्वी पर गिरा २२ उस शूरवीर को मृतक देखकर उसके भाई महारथी ने दूसरे धनुष को तैयार करके सात्यकी को रोका २३ वह सुनहरी पुङ्ख और तीक्ष्ण धारवाले साठ बाणों से सात्यकी को घायल करके तिष्ठ-तिष्ठ वचन के साथ बड़े वेग से गर्जा २४ इसके पीछे कैकेयों के महारथी ने हज़ारों बाणों से बहुत शीघ्रतापूर्वक भुजा और छाती पर घायल किया २५ हे राजन्! बाणों से विदीर्ण सर्वाङ्ग सात्यकी युद्ध में ऐसा शोभित हुआ जैसे कि फूला हुआ किंशुक का वृक्ष होता है २६ युद्ध में महात्मा कैकेय के हाथ से घायल और हँसते हुए सात्यकी ने कैकेय को पच्चीस बाणों से घायल किया २७ वह रथियों में श्रेष्ठ युद्ध में एक दूसरे के शुभ धनुष को काट-कर बड़ी शीघ्रता से घोड़े और सारथियों को मारकर २८ रथ से उतरकर युद्ध में खड्गों से प्रहार करने के लिये सम्मुख हुए। वह सुन्दर भुजा और उत्तम खड्ग धारण करनेवाले दोनों शूरवीर चन्द्र सूर्य के चित्रवाली ढालों को लेकर उस महायुद्ध में ऐसे शोभायमान हुए जैसे कि देवासुर युद्ध में महाबली इन्द्र और जम्भ शोभित हुए थे २९।३० इसके पीछे युद्ध में मण्डलों को घूमते शीघ्र ही परस्पर में सम्मुख हुए ३१ और एक-एक ने दूसरे के मारने में बड़े-बड़े उपाय किये इसके पीछे सात्यकी ने कैकेय की ढाल के दो खण्ड किये ३२ इसी प्रकार वह राजा भी सात्यकी की सैकड़ों नक्षत्रों से चिह्नित ढाल को काटकर ३३ दाहिने और बायें मण्डलों से घूमा फिर सात्यकी ने उस बड़े युद्ध में शीघ्रता से घूमनेवाले कैकेय को तिरछे हाथ से मार डाला हे राजन्! वह कैकेय उस घोर युद्ध में कवच समेत दो खण्ड होकर ऐसे पृथ्वी में गिर पड़ा ३४।३५ जैसे कि वज्र से घायल पर्वत गिरता है इस रीति से रथियों में श्रेष्ठ शूरवीर सात्यकी ने उस युद्ध में उसको मारा ३६ फिर वह शत्रुहन्ता शीघ्र ही युधामन्यु के रथ पर सवार हुआ और थोड़े समय पीछे सात्यकी ने बुद्धि के अनु-सार अलंकृत दूसरे रथ पर सवार होकर बाणों से कैकेयों की बड़ी सेना को मारा। युद्ध में वह कैकेयों की बड़ी सेना महाघायल होकर उस सात्यकी को छोड़कर दशों दिशाओं को भागी ॥ ३७।३८ ॥

इति श्रीमहाभारते कर्णपर्वणि बिन्दअनुबिन्दवधो नाम चतुर्दशोऽध्यायः ॥ १४ ॥

पन्द्रहवाँ अध्याय

सञ्जय बोले कि, हे राजन् ! इसके पीछे युद्ध में क्रोधभरे श्रुतकर्मा ने राजा चित्रसेन को पचास बाणों से घायल किया १ फिर चित्रसेन ने टेढ़े पुङ्खवाले नौ बाणों से श्रुतकर्मा को घायल करके पाँच बाणों से उसके सारथी को घायल किया २ इसके अनन्तर सेनामुख पर क्रोधयुक्त श्रुतकर्मा ने चित्रसेन को अत्यन्त तीक्ष्ण बाणों से मर्मस्थल में घायल किया ३ हे महाराज ! उस महात्मा के नाराच से अत्यन्त घायल होकर वह वीर मूर्च्छायुक्त होकर निश्चेष्ट हो गया ४ इसी अन्तर में बड़े यशस्वी श्रुतकीर्ति ने नब्बे बाणों से इस राजा को भी ढक दिया ५ इसके पीछे महारथी चित्रसेन ने सावधान होकर भल्ल से उसके धनुष को काटकर सात बाणों से उसको घायल किया ६ फिर उसने वेग के नाश करनेवाले स्वर्ण से भूषित सोम धनुष को लेकर बाणों की तरङ्गों से चित्रसेन को विचित्ररूपधारी किया ७ वह युवावस्थायुक्त बाणों से वेधित होकर ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि गोशाला में अच्छा अलंकृत बड़ा बैल होता है ८ फिर उस शूर ने वेग से श्रुतकर्मा को नाराच से छाती पर विदीर्ण कर तिष्ठ-तिष्ठ शब्द उच्चारण किया ९ वहाँ नाराच से घायल होकर श्रुतकर्मा ने भी युद्ध में रुधिर को ऐसे गिराया जैसे कि पर्वतीय धातुओं से संयुक्त पर्वत रक्तवर्ण के जल को डालता है १० इसके पीछे वह रुधिर से भरे शोभाहीन शरीर से युद्ध में ऐसे शोभायमान हुआ जैसे कि फूला हुआ किंशुक का वृक्ष होता है ११ इसके पीछे शत्रु से आघात पानेवाले क्रोधयुक्त श्रुतकर्मा ने शत्रु के हटानेवाले धनुष के दश खण्ड किये १२ तदनन्तर हे राजन्! इस टूटे धनुषवाले को श्रुतकर्मा ने सुन्दर पक्षवाले तीन सौ नाराचों से घायल कर बड़े तीक्ष्ण धारवाले भल्ल से उसके शिर समेत धड़ को काटा १३ । १४ तब चित्रसेन का वह प्रकाशमान शिर पृथ्वी पर ऐसे गिरा मानों दैवेच्छा से स्वर्ग से पतित होकर चन्द्रमा गिरता है १५ हे श्रेष्ठ ! चित्रसेन की सेना के सब लोग उस अभयसार देश के राजा को मृतक देखकर बड़ी तीव्रता से सम्मुख

दौड़े १६ इसके पीछे वह क्रोधयुक्त महाधनुषधारी बाणों की वर्षा करता हुआ उस सेना पर ऐसे दौड़ा जैसे कि प्रलयकाल में सब जीवों पर क्रोध भरे यमराज दौड़ते हैं १७ अग्नि से भस्मीभूत वृक्षों के समान युद्ध में आपके पौत्र उस धनुषधारी से घायल होकर चारों ओर को भागे १८ शत्रु के जीतने में असाहसी और भागनेवाले उन लोगों को देखकर श्रुतकर्मा तीक्ष्ण बाणों से उनको भगाता हुआ अत्यन्त शोभायमान हुआ १९ इसके पीछे प्रतिविन्ध्य ने पाँच बाणों से चित्रसेन को तीन बाणों से सारथी को घायल करके एक बाण से ध्वजा को भी खण्डित कर दिया २० और चित्रसेन ने सुनहरेपक्ष तीक्ष्ण नोक कङ्क और मोर के पक्षों से जटित नौ भल्लों से उसकी दोनों भुजा और छाती पर घायल किया २१ हे भरतवंशिन् ! प्रतिविन्ध्य ने शायकों से उसके धनुष को काटकर उसको तीक्ष्ण पाँच बाणों से घायल किया २२ इसके पीछे सुनहरी घण्टे रखनेवाली महाअसह्य अग्नि की शिखा के समान प्रकाशमान शक्ति को आपके पोते पर फेंका २३ तब हँसते हुए प्रतिविन्ध्य ने उस उल्कारूप अकस्मात् आती हुई शक्ति को देखकर युद्ध में दो खण्ड किये २४ प्रतिविन्ध्य के तीक्ष्ण बाणों से टुकड़े-टुकड़े होकर वह शक्ति ऐसे गिर पड़ी जैसे प्रलय के समय सब जीवों को भय की करनेवाली अशिवनी होती है २५ चित्रसेन ने उस शक्ति को कटी हुई देख बड़ी गदा लेकर प्रतिविन्ध्य के ऊपर फेंका २६ उस गदा के आघात से उसके सारथी समेत घोड़े मारे गये और बड़ी तीव्रता से रथ को मर्दन करके पृथ्वी पर गिर पड़े २७ हे भरतवंशिन् ! उस समय उसने रथ से उतरकर सुनहरी दण्डवाली सुनहरी शक्ति को चित्रसेन के ऊपर फेंका २८ फिर उस महासाहसी चित्रसेन ने उस आती हुई शक्ति को पकड़ लिया और उसी शक्ति को प्रतिविन्ध्य के ऊपर फेंका २९ वह बड़ी प्रकाशमान शक्ति युद्ध में शूर प्रतिविन्ध्य को पाके दक्षिण भुजा को घायल करके पृथ्वी पर गिर पड़ी ३० अशिवनी के समान गिरी हुई उस शक्ति ने उस स्थान को प्रकाशित किया इसके पीछे अत्यन्त क्रोधयुक्त प्रतिविन्ध्य ने ३१ सुवर्ण से मण्डित तोमर को चित्रसेन के मारने को चलाया वह तोमर

उसके कवच और हृदय को छेदकर ३२ पृथ्वी में ऐसे समा गया जैसे बड़ा भारी सर्प बिल में समा जाता है उस तोमर से घायल वह राजा ३३ परिघ के समान बड़ी और मोटी भुजाओं को फैलाकर पृथ्वी में गिर पड़ा तब चित्रसेन को मरा हुआ देखकर आपकी शोभायमान सेना वेग से प्रतिविन्ध्य के चारों ओर सम्मुखता के लिये गई ३४ और वहाँ जाकर नाना प्रकार के बाण और शक्तियों की वर्षा से प्रतिविन्ध्य को ऐसा ढक दिया जैसे कि बादलों के समूह सूर्य को ढक लेते हैं ३५ फिर उस महाबाहु ने बाणों से उन सबको पृथक्-पृथक् करके आपकी सेना को ऐसे भगाया जैसे कि वज्रधारी इन्द्र असुरों की सेना को भगाता है ३६ हे राजन् ! युद्ध में पाण्डवों के हाथ से घायल शूरवीर अकस्मात् ऐसे छिन्न-भिन्न हो गये जैसे कि हवा से हटाये हुए बादल तिर्रबिर्र हो जाते हैं ३७ उस सेना को चारों ओर से घायल होकर भाग जाने पर अकेले अश्वत्थामाजी शीघ्र ही महाबली भीमसेन के सम्मुख गये ३८ इसके पीछे अकस्मात् उन दोनों का परस्पर में भिड़ना ऐसा महाभयकारी हुआ जैसा कि देवासुरों के युद्ध में वृत्रासुर और इन्द्र का हुआ था ॥ ३९ ॥

इति श्रीमहाभारते कर्णपर्वणि चित्रसेनवधे पंचदशोऽध्यायः ॥ १५ ॥

सोलहवाँ अध्याय

सञ्जय बोले कि, हे राजन्! इसके पीछे बड़ी शीघ्रतायुक्त अस्त्रों की तीव्रता दिखाते हुए अश्वत्थामा ने बाण से भीमसेन को घायल किया १ फिर मर्मज्ञ हस्तलाघवीय अश्वत्थामा ने सब मर्मों को जानकर तीक्ष्ण धारवाले नब्बे बाणों से भीमसेन को घायल किया २ हे राजन् ! अश्वत्थामा के तीक्ष्ण धारवाले बाणों से छिदा हुआ भीमसेन युद्ध में अंशुमान् सूर्य के समान शोभायमान हुआ ३ इसके पीछे भीमसेन ने अच्छी रीति से फेंके हुए हज़ार बाणों से अश्वत्थामा को ढककर बड़ा भारी सिंहनाद किया ४ इसके अनन्तर मन्द मुसकान करते हुए अश्वत्थामा ने बाणों को रोककर भीमसेन को नाराचों से ललाट पर घायल किया ५ तब भीमसेन ने ललाट पर वर्तमान बाणों को ऐसे धारण किया जैसे कि गण्डक नाम

अहङ्कारी पशु सिंह को धारण करता है ६ फिर मन्द मुसकान करते पराक्रमी भीमसेन ने युद्ध में उपाय करनेवाले अश्वत्थामा को तीन नाराचों से ललाट पर बेधा ७ तब यह ब्राह्मण ललाट पर नियत हुए बाणों से ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि जल से सींचा हुआ तीन शिखर रखनेवाला उत्तम पर्वत होता है ८ इसके पीछे अश्वत्थामा ने सैकड़ों बाणों से भीमसेन को पीड़ित किया परन्तु उसको ऐसे कम्पायमान न कर सका जैसे कि वायु को पर्वत नहीं कँपा सकती ९ फिर अत्यन्त प्रसन्न पाण्डुनन्दन भीमसेन ने भी इसको ऐसे कम्पायमान नहीं किया जैसे कि जल का समूह पर्वत को कम्पायमान नहीं कर सकता १० परस्पर घोर बाणों से ढकते हुए उत्तम रथों पर सवार पराक्रम से मतवाले वह दोनों महारथी शूरवीर महाशोभायमान हुए ११ फिर वह दोनों सूर्य के समान प्रकाशित लोक के नाशक अपने तेजों समेत उत्तम-उत्तम बाणों से परस्पर सन्तप्त करनेवाले हुए १२ इसके पीछे वह दोनों युद्ध में अशङ्क के समान बदला लेने में उपाय करनेवाले हुए १३ वह दोनों नरोत्तम युद्ध में व्याघ्रों के समान भ्रमण करनेवाले हुए। बाण-रूप जिनकी डाढ़ें और भयानक धनुष ही जिनका मुख था १४ वह दोनों बाणों के जाल से सब ओर से ऐसे गुप्त होगये जैसे कि बादल के जालों से ढके हुए आकाश में चन्द्रमा और सूर्य होते हैं १५ इसके पीछे वह शत्रुहन्ता दोनों एक मुहूर्त में ही ऐसे प्रकाशमान हुए जैसे कि बादलों के जाल से निकले हुए मङ्गल और बुध होते हैं १६ इसके पीछे अत्यन्त भयकारी युद्ध जारी होने पर वहाँ अश्वत्थामा ने भीमसेन को सैकड़ों उग्र बाणों से ऐसे ढक दिया १७ जैसे कि धाराओं से बादल पर्वत को ढक देता है। फिर भीमसेन ने भी शत्रु के उस विजय के लक्षण को नहीं सहा १८ इसके पीछे पाण्डव ने भी दाहिने और बायें मण्डलों के भागों में जाना-आना किया १९ और दोनों पुरुषसिंहों में बड़ा तुमुल युद्ध हुआ २० फिर हर एक ने कान तक खैंचे हुए बाणों से परस्पर में एक ने दूसरे को घायल किया और एक ने दूसरे के मारने में बड़े-बड़े उत्तम उपाय किये २१ युद्ध में एक ने दूसरे को विरथ करना चाहा इसके

पीछे महारथी अश्वत्थामा ने युद्ध में महाअस्त्रों को प्रकट किया २२ पाण्डव ने उन अस्त्रों को अपने अस्त्रों से ही दूर किया इसके पीछे अस्त्रों का ऐसा घोर युद्ध जारी हुआ जैसे कि जीवों के प्रलय में ग्रहों का घोर युद्ध हुआ था २३ हे भरतवंशिन्! उन दोनों के छोड़े हुए वह बाण चारों ओर से सब दिशा और आपकी सेना को अच्छे प्रकार से प्रकाशित करने लगे और बाणसमूहों से व्याप्त आकाश महाभयानक रूप हुआ २४। २५ हे राजन्! जैसे जीवों के प्रलय में उल्कापातों से संयुक्त युद्ध हुआ था वैसे ही वहाँ बाणों के आघात से ऐसी अग्नि उत्पन्न हुई जैसे कि फुलिङ्ग रखनेवाली प्रकाशमान अग्नि की ज्वाला होती है २६ फिर अग्नि ने दोनों सेनाओं को भस्म किया तब वहाँ सिद्ध लोग आकर कहने लगे २७ कि सब युद्धों में यह भी युद्ध बड़ा है और सब युद्ध इस युद्ध के षोडशांश कला के भी समान नहीं हैं २८ ऐसा युद्ध फिर कभी न होगा। बड़ा आश्चर्य है कि यह ब्राह्मण और क्षत्रिय दोनों पूर्ण हैं २९ यह दोनों पराक्रमी अपनी-अपनी उग्र शूरताओं से संयुक्त हैं और भीमसेन भयानक पराक्रमी है और इसकी अस्त्रज्ञता भी पूर्ण है ३० इन दोनों की प्रतिष्ठा और बड़े-बड़े साहस अपूर्व हैं। यह काल और मृत्यु के समान दोनों युद्ध में नियत हैं ३१ यह दोनों रुद्र के समान प्रकट हुए, दोनों सूर्य के समान हैं अथवा दोनों पुरुषोत्तम घोर रूप यमराज के रूप हैं ३२ यह सिद्धों के वचन वारंवार सुने गये और भागनेवाले देवताओं के सिंहनाद प्रारम्भ हुए ३३ युद्ध में उन दोनों के अपूर्व बुद्धि से बाहर कर्म को देखकर सिद्ध और चारण लोगों के समूह को बड़ा आश्चर्य हुआ ३४ तब देवता सिद्ध और परम ऋषियों ने प्रशंसा करी कि, हे महाबाहो, अश्वत्थामन्! और हे महाबाहो, भीमसेन! तुम दोनों को धन्य है ३५ हे राजन्! परस्पर अपराध करनेवाले उन दोनों शूरों ने युद्ध में क्रोध से आँखों को फाड़कर परस्पर में देखा ३६ वह दोनों क्रोध से रक्तनेत्र हो क्रोध से ही ओठों के चाबनेवाले होकर दाँतों के किटकिटानेवाले हुए ३७ बाणरूप जलधारा और शस्त्ररूप बिजली से प्रकाश करनेवाले दोनों महारथियों ने बाणों की वर्षा से परस्पर में ढक दिया ३८

फिर उन दोनों ने परस्पर की ध्वजा और सारथी को बेधकर प्रत्येक ने दूसरे के घोड़ों को घायल करके परस्पर में घायल किया ३९ हे महाराज! इसके पीछे परस्पर मारने के इच्छावान् क्रोध भरे हुए उन दोनों ने युद्ध में बाण को लेकर शीघ्र ही एक ने दूसरे के ऊपर फेंका ४० उन वज्र के समान वेगवान् विजयी और सेनामुख पर प्रकाशमान दोनों ने सम्मुख पाकर परस्पर में शायकों से घायल किया ४१ तब परस्पर की तीव्रता और बाणों से घायल बड़े पराक्रमी वह दोनों रथों के बैठने के स्थानों में गिर पड़े ४२ इसके अनन्तर सारथी अश्वत्थामा को अचेत जानकर सब सेना के देखते हुए युद्ध से दूर ले गया ४३ हे राजन्! इसी प्रकार भीमसेन का सारथी भी उस वारंवार शत्रुओं के तपानेवाले पाण्डव भीमसेन को युद्ध में रथ के द्वारा दूर ले गया ॥ ४४ ॥

इति श्रीमहाभारते कर्णपर्वण्यश्वत्थामभीमसेनयुद्धे षोडशोऽध्यायः ॥ १६ ॥

सत्रहवाँ अध्याय

धृतराष्ट्र बोले कि, जिस प्रकार अर्जुन का युद्ध संसप्तक लोगों के साथ और अन्य राजाओं का युद्ध पाण्डवों के साथ हुआ उसको मुझसे कहो १ हे सञ्जय! अश्वत्थामा और अर्जुन का जो युद्ध है और पाण्डवों के साथ जो अन्य-अन्य राजाओं का युद्ध है वह सब मुझसे कहो २ सञ्जय बोले कि हे राजन्! मैं कहता हूँ आप सुनिये। जिस प्रकार प्राणों का नाशकारक शत्रुओं से वीरों का युद्ध जारी हुआ ३ शत्रुओं के मारनेवाले अर्जुन ने समुद्र के समान संसप्तकों की सेनाओं में घुसकर ऐसे छिन्नभिन्न कर दिया ४ जैसे कि तीव्र वायु समुद्र को उथल-पुथल कर देता है। अर्जुन ने अपने तीक्ष्ण भल्लों से पूर्ण चन्द्रमा से प्रकाशित ५ सुन्दर मुख, नेत्र, भृकुटी और दाँत रखनेवाले वीरों के शिरों को काटकर शीघ्रतापूर्वक ऐसे पृथ्वी को आच्छादित कर दिया ६ जैसे कि कमलनाल से कमलों को काटकर हाथी सरोवर को आच्छादित करता है। अर्जुन ने युद्ध में बड़े लम्बे मोटे चन्दन अगर से लिप्त शस्त्र और हस्तत्राणधारी पाँच मुखधारी सर्पों के समान शत्रुओं की भुजाओं को क्षुरप्रों से काटा ७

और घोड़े-घोड़े के सवार और सारथी लोगों के ध्वजा, धनुष, शायक और अँगूठी धारण किये वीरों के हाथों को भी वारंवार भल्लों से काटा ८ हे राजन्! इसी प्रकार से अर्जुन ने युद्ध में अपने हज़ारों बाणों से रथ, हाथी और घोड़ों को उनके सवारों समेत यमलोक में पहुँचाया ६ जैसे कि मद से मतवाले गर्जनेवाले बैल गौ के निमित्त सिंहों के सम्मुख जाकर प्रहार करें उसी प्रकार उन क्रोध से भरे बड़े-बड़े शूरवीरों ने उस क्रोधयुक्त और प्रहार करनेवाले को बाणों से घायल किया। उसका और सब लोगों का वह घोर युद्ध ऐसा रोमहर्षण करनेवाला हुआ १०।११ जैसे कि तीनों लोकों के विजय के लिये दैत्यों का युद्ध इन्द्र के साथ हुआ था उस अर्जुन ने अपने अस्त्रों से शत्रुओं के अस्त्रों को रोककर बहुत शीघ्र बाणों से विदीर्ण करके १२ प्राणों का हरण किया जिनके तूणीर, चक्र और रथ के अङ्ग टूट गये और सारथियों समेत घोड़े भी मारे गये १३ और धनुष वा ध्वजा टूटीं और रथ की बागडोरें टूटीं रथ से कूबर जुदे हुए १४ और स्यन्दनों के जुयें पहिये आदि भी गिर पड़े। उन रथों को खण्ड-खण्ड करता हुआ ऐसे चला जैसे कि बड़े-बड़े बादलों को खण्ड-खण्ड करता वायु चलता है १५ आश्चर्य उत्पन्न करानेवाले अर्जुन ने शत्रुओं को भय करनेवाले दर्शनीय हज़ारों महारथियों के समान बल किया १६ सिद्ध, देवर्षि और चारणलोगों ने भी इसकी प्रशंसा करी। देवताओं ने दुन्दुभी बजाकर पुष्पों की वर्षा करी १७ वह पुष्प श्रीकृष्ण और अर्जुन के मस्तक पर गिरे और आकाशवाणी ने सदैव चन्द्रमा, वायु, अग्नि और सूर्य की कान्ति और तेज को पुष्ट किया १८ वह ब्रह्मा और शिवजी के समान श्रीकृष्ण और अर्जुन एक रथ पर नियत सब जीवों में श्रेष्ठ दोनों नरनारायणरूप वीर हैं १६ हे भरतवंशिन्! इस बड़े आश्चर्य को देखकर बड़े सावधान अश्वत्थामाजी युद्ध में श्रीकृष्णजी के सम्मुख गये २० फिर जिनकी नोकें शत्रुओं के मारनेवाली थीं उन बाणों के चलानेवाले पाण्डव अर्जुन से बाण पकड़नेवाले हाथ के द्वारा बुलाकर २१ यह वचन बोले कि हे वीर! जो यहाँ वर्तमान मुझ अतिथि-रूप को पूजन के योग्य मानता है २२ तो तुम सब आत्मा से युद्धरूप

अतिथि मुझको जानो इस प्रकार युद्धाभिलाषी आचार्य के पुत्र से बुलाये हुए अर्जुन ने अपने को बहुत कुछ माना २३ और श्रीकृष्णजी से कहा कि मैं संसप्तकों को मार सकता हूँ और अश्वत्थामाजी मुझको बुलाते हैं २४ इस स्थान पर जो उचित होय वह आप मुझसे कहिये जो आप मानते हैं तो उठकर अतिथि कर्म कीजिये २५ ऐसे कहे हुए श्रीकृष्णजी ने बुद्धि के अनुसार बुलाये हुए अर्जुन को विजयी रथ की सवारी के द्वारा अश्वत्थामा के समीप ऐसे पहुँचाया जैसे कि वायु इन्द्र को यज्ञ में पहुँचाता है २६ केशवजी उस एकाचित्त अश्वत्थामा को सम्बोधन करके बोले कि, हे अश्वत्थामन्! शीघ्र नियत होकर घात करो और क्षमा करो २७ स्वामी के अर्थ नमकहलाली करने का यह समय है। ब्राह्मणों का संवाद बड़ा सूक्ष्म है और क्षत्रिय सम्बन्धी विजय और पराजय योग्य है २८ तुम अज्ञानता से अर्जुन के जिस दिव्य और उत्तम कर्म को चाहते हो अब उसके अभिलाषी होकर तुम नियत होकर पाण्डवों से युद्ध करो २६ श्रीकृष्णजी के इस प्रकार के वचनों को सुनकर अश्वत्थामाजी ने बहुत अच्छा कहकर आठ नाराचों से केशवजी को और तीन बाणों से अर्जुन को घायल किया ३० फिर अत्यन्त क्रोधयुक्त अर्जुन ने उसके धनुष को तीन बाणों से काटा ३१ तब अश्वत्थामा ने बड़े घोर दूसरे धनुष को लिया और क्षण भर में ही श्रीकृष्ण और अर्जुन को घायल किया। तीन सौ बाणों से वासुदेवजी को और हज़ार बाणों से अर्जुन को घायल किया ३२ इसके पीछे उपाय करनेवाले अश्वत्थामा ने युद्ध में अर्जुन को रोककर हज़ारों बाणों की वर्षा करी ३३ हे श्रेष्ठ! उस ब्रह्मवादी अश्वत्थामा के तूणीर, धनुष, कवच, ध्वजा, हाथ, छाती ३४ नाक, मुख, नेत्र, कान, शिर और अङ्ग, देह के रोम और रथ से बहुत से बाण निकले ३५ प्रसन्नचित्त वीर अश्वत्थामा बाणसमूहों से अर्जुन और श्रीकृष्णजी को घायल करके बड़े बादलों के समान शब्दों से गर्जा ३६ उसके शब्द को सुनकर अर्जुन श्रीकृष्णजी से बोले कि, हे माधवजी! गुरुपुत्र के आन्तरीय द्वेष को मेरे ऊपर देखो ३७ यह हम दोनों को बाणपञ्जर में प्रविष्ट करके मरा हुआ जानता है। मैं इसके बाणपञ्जर को

अपने पराक्रम से नाश करूँगा ३८ फिर उस भरतर्षभ ने अश्वत्थामा के चलाये हुए बाणों को छः-छः खण्ड करके इधर उधर कर दिया ३९ इसके पीछे अर्जुन ने उग्र बाणों से घोड़े, सारथी, रथ, हाथी, ध्वजा और पत्तियों समेत संसप्तकों को घायल किया ४० उस समय जिस-जिस रूप के जो-जो मनुष्य वहाँ दिखाई दिये वहाँ उन्होंने अपने को बाणों से घायल माना ४१ और युद्ध में गाण्डीव धनुष से छूटे हुए वह नाना प्रकार के बाण एक कोस से अधिक दूर पर वर्तमान हाथी और मनुष्यों को भी मारते थे ४२ मदोन्मत्त हाथियों की सूँड़ें भल्लों से कटकर ऐसे गिर पड़ीं जैसे कि फरसों से कटे हुए वन के बड़े-बड़े वृक्ष होते हैं ४३ इसके पीछे सवारों समेत वह हाथी ऐसे गिर पड़े जैसे कि इन्द्र के वज्र से कटे हुए पर्वतों के समूह गिर पड़ते हैं ४४ युद्ध में दुर्मद अर्जुन गन्धर्व नगर के समान अच्छे अलंकृत शीघ्रगामी सुशिक्षित घोड़ों से युक्त रथ पर नियत होकर ४५ बाणों की वर्षा करता हुआ शत्रुओं के सम्मुख गया। वहाँ जाकर अर्जुन ने अश्वारूढ़ों को और पत्तियों को मारा ४६ अर्जुनरूपी प्रलयकालीन सूर्य ने कठिनता से सूखनेवाले संसप्तकरूप समुद्र को अपने तीक्ष्ण बाणों से अत्यन्त शोषण किया। फिर बड़ी शीघ्रता करने-वाले ने अश्वत्थामा को बड़े वज्र के समान वेगवान् बाणों से घायल किया ४७। ४८ क्रोधयुक्त युद्धाभिलाषी आचार्य के पुत्र अश्वत्थामाजी बाणों के द्वारा घोड़े और सारथी समेत अर्जुन से लड़ने को आये। अर्जुन ने उनके बाणों को काटा ४९ इसके पीछे बड़े क्रोध से भरे अश्वत्थामा ने अर्जुन के ऊपर अस्त्रों को ऐसे छोड़ा जैसे कि अतिथि के लिये शिष्टाचारी करी जाय। फिर अर्जुन संसप्तकों को छोड़कर अश्वत्थामा के सम्मुख ऐसे गये जिस प्रकार दान करनेवाला मनुष्य पंक्ति के अयोग्य लोगों को छोड़कर पंक्ति के योग्य मनुष्यों के पास जाता है ॥ ५० । ५१ ॥

इति श्रीमहाभारते कर्णपर्वण्यश्वत्थामाऽर्जुनयुद्धे सप्तदशोऽध्यायः ॥ १७ ॥

अठारहवाँ अध्याय

सञ्जय बोले कि, इसके पीछे शुक्र और बृहस्पतिजी के समान तेजस्वी उन दोनों का युद्ध ऐसे अच्छे प्रकार से हुआ जैसे कि नक्षत्रमण्डल के पास आकाश में शुक्र और बृहस्पति का युद्ध हुआ था १ एक ने दूसरे को प्रकाशित बाणों की किरणों से अच्छी रीति से सन्तप्त किया और अपने मार्ग से हटकर चलनेवाले ग्रहों के समान लोकों का भय उत्पन्न करनेवाले हुए २ उसके पीछे अर्जुन ने नाराच से दोनों भृकुटियों के मध्य कठिन घायल किया। वह अश्वत्थामाजी उस घाव से ऐसे शोभायमान हुए जैसे कि ऊपर की ओर किरण रखनेवाला सूर्य होता है ३ इसके अनन्तर अश्वत्थामा के सैकड़ों बाणों से अत्यन्त पीड्यमान श्रीकृष्ण और अर्जुन भी ऐसे प्रकाशमान हुए जिस प्रकार अपनी किरणों से प्रकाशित प्रलयकाल के दो सूर्य होते हैं ४ तदनन्तर वासुदेवजी के व्याकुल होने से अर्जुन ने सब ओर से अस्त्रों की धाराओं को छोड़ा। वज्र अग्नि और यमराज के दण्ड के समान बाणों से अश्वत्थामा को घायल किया ५ उस बड़े तेजस्वी और भयानककर्मी अश्वत्थामाजी ने अच्छे प्रकार से चलाये महाकठोर और वेगवान् बाणों से अर्जुन और केशवजी को मर्मस्थलों पर घायल किया। वह ऐसे बाण थे जिनके मारे मृत्यु भी व्याकुल हो जाय ६ फिर अर्जुन उस उपाय करनेवाले अश्वत्थामा के उन बाणों को उससे द्विगुणित अपने बाणों से अच्छी रीति से रोककर उस बड़े मुख्य वीर को घोड़े सारथी और ध्वजासमेत अपने सुन्दर पुङ्खवाले दूने बाणों से ढककर संसप्तकों की सेना के सम्मुख गया ७ अर्जुन के अच्छी रीति से चलाये हुए बाणों से मुख न मोड़नेवाले सम्मुखता में नियत शत्रुओं के धनुष, बाण, तूणीर और कवच, हाथ, भुजा वा हस्तगत शस्त्र और अस्त्र, ध्वजा, घोड़े और रथ और अनेक वस्त्रादिक वस्तु माला भूषणों समेत मर्मस्थल और चित्तरोचक प्यारे कवच और अनेक प्रिय वस्तुओं समेत शिरों को काटा और उपाय करनेवाले नरोत्तमों समेत अच्छी रीति से रथ घोड़े और हाथियों समेत नियत और अलंकृत सैकड़ों शूरवीरों को

भी अर्जुन ने सैकड़ों बाणों से गिराया। तब उनके साथ बड़े-बड़े उत्तम मनुष्य भी गिर पड़े ८।१० कमल सूर्य और पूर्ण चन्द्रमा के समान विशाल मुख मुकुट माला और आभूषणों से प्रकाशमान शिर और भल्ल अर्धचन्द्र और क्षुरप्र नाम बाणों से घायल मनुष्यों के भी शिर बारंबार पृथ्वी पर गिरे ११ फिर कलिङ्ग, अङ्ग, बङ्गदेशीय निषाद जाति के असुरों के गर्वप्रहारी वीर लोग जो बड़े उग्ररूप अर्जुन के मारने के अभिलाषी थे उनके गज और असुरों के समान हाथियों के कवच, सूँड़, सारथी, ध्वजा और पताकाओं को काटा। इसके पीछे वह ऐसे गिर पड़े जैसे कि वज्र के प्रहार से पर्वतों के शिखर गिरते हैं १२।१३ उनके पराजय और छिन्न-भिन्न होने पर अर्जुन ने सूर्यवर्ण के बाणजालों से गुरु के पुत्र को ऐसा ढक दिया जैसे कि बड़े बादलों के जालों से वायु उदय हुए सूर्य को ढकता है १४ इसके पीछे अश्वत्थामाजी अपने बाणों से अर्जुन के बाणों को काटकर बड़े तीक्ष्ण बाणों से अर्जुन और श्रीकृष्णजी को ढक-कर ऐसे गर्जे जैसे कि वर्षाऋतु में चन्द्रमा और सूर्य को ढककर बादल गर्जता है १५ फिर अर्जुन ने भी अश्वत्थामाजी को और अन्य लोगों को ढककर शस्त्रों से घायल हुए ने समीप जाकर शीघ्र ही बाणों के अन्धकार को दूरकर सुन्दर पुङ्खवाले बाणों से सबको घायल किया १६ फिर अर्जुन रथ के ऊपर बाणों को लेता, चढ़ाता और मारता हुआ भी युद्ध में दृष्टि न पड़ा फिर बाणों से छिदे हुए रथ, हाथी, घोड़े और पदा-तियों को अर्जुन ने मृतक देखा १७ तब शीघ्रता करनेवाले अश्वत्थामा ने शीघ्र ही दश उत्तम नाराचों को चढ़ाकर एक ही के समान छोड़ा। उनमें से पाँच उत्तम बाणों ने श्रीकृष्णजी को और पाँच ने अर्जुन को घायल किया १८ अन्य मनुष्यों ने ऐसे धनुर्वेद के ज्ञाता अश्वत्थामा जी से पराजित और रुधिर डालनेवाले नरोत्तम इन्द्र के समान श्रीकृष्ण और अर्जुन को युद्ध में मृतक समझा १९ इसके पीछे श्रीकृष्णजी अर्जुन से बोले कि क्या भूल में पड़ा है इस युद्धकर्ता को मार नहीं तो यह वीर अपूर्व दोष को उत्पन्न करेगा और इसका बदला न लेनेवाला शूरवीर कठिन रोगी के समान होगा २० फिर सावधान अर्जुन ने श्रीकृष्णजी

से बहुत अच्छा यह शब्द कहकर बड़े उपाय के साथ अश्वत्थामा का घायल किया। चन्दन के सार से पीठ, भुजा, छाती, शिर और जङ्घावों को २१ क्रोधयुक्त अर्जुन ने गाण्डीव धनुष से छोड़े हुए विकर्ण नाम बाणों से घायल किया और बागडोरों को काटकर उसके घोड़ों को भी घायल किया। फिर वह घोड़े व्याकुल होकर उसको युद्ध से दूर ले गये २२ उन वायु के समान शीघ्रगामी घोड़ों से हटाये हुए और अर्जुन के बाणों से पराजित बुद्धिमान् अश्वत्थामाजी ने विचारकर फिर लौटकर अर्जुन के साथ लड़ना नहीं चाहा २३ अर्जुन और श्रीकृष्णजी की निश्चय विजय को जानते हुए वह वेगवान् उत्साह से भ्रष्ट नाशमान बाण और अस्त्र योगवाले अङ्गिरावंशियों में श्रेष्ठ अश्वत्थामाजी कर्ण की सेना में गये २४ अर्थात् वह अश्वत्थामाजी घोड़ों को स्वाधीन करके बहुत विश्वासित कर रथ, घोड़े और मनुष्यों से पूर्ण होकर कर्ण की सेना में जा पहुँचे २५ जैसे कि मन्त्र वा ओषधी वा कर्म के करने से रोग शरीर से जाता रहता है उसी प्रकार घोड़ों के द्वारा उस विरोधी अश्वत्थामा के हट जाने पर २६ अर्जुन और श्रीकृष्णजी वायु से उड़ाई हुई पताका और बादल के समान गर्जते हुए रथ की सवारी से संसप्तकों के सम्मुख गये ॥ २७ ॥

इति श्रीमहाभारते कर्णपर्वण्यश्वत्थामापराजयो नामाष्टादशोऽध्यायः॥ १८ ॥

उन्नीसवाँ अध्याय

सञ्जय बोले कि इसके पीछे पाण्डवों की सेना में उत्तर दिशा की ओर दण्डधार के हाथ से घायल रथी, हाथी, घोड़े और पत्तियों के शब्द उठे १ तब गरुड़ और वायु के समान शीघ्रगामी घोड़ों को चलाते केशवजी रथ को लौटाकर अर्जुन से बोले २ कि बल और शिक्षा में भगदत्त के समान मगधदेशीय दण्डधार भी नाश करनेवाले हाथी समेत कठिन युद्ध करनेवाला है ३ इसको मारकर तू फिर संसप्तकों को मारेगा श्रीकृष्णजी ने यह कहकर अर्जुन को दण्डधार के समीप पहुँचाया ४ वह मगधदेशियों के मध्य में अंकुश धारण हाथियों के युद्ध में ऐसा

अत्यन्त उत्तम और असह्य था जैसे कि ग्रहों के मध्य में धूम्रकेतु ग्रह होता है उस भयानकरूप ने शत्रु की सेना को ऐसा मर्दन किया जैसे कि धूम्रकेतु उपग्रह सम्पूर्ण पृथ्वी को मर्दन करता है ५ फिर वह राजा अच्छे प्रकार से अलंकृत गजासुर के समान बड़े बादल के समान शब्द करनेवाले शत्रुहन्ता हाथी पर सवार बाणों से हज़ारों हाथी, घोड़े और रथों के समूहों को मारता है ६ वह श्रेष्ठ हाथी, घोड़े, सारथी, मनुष्य और रथों को दबाकर चरणों से हाथियों को मलता सूंड़ से मारता हुआ चक्र के समान भ्रमण करने लगा ७ फिर उसने उस बली पराक्रमी उत्तम हाथी के द्वारा लोहे के कवचों से अलंकृत मनुष्यों को और पत्तियों समेत घोड़ों को भी गर्जनापूर्वक ऐसे शब्दायमान स्थूल नर्सल के समान गेरकर मारा ८ इसके पीछे अर्जुन धनुष की प्रत्यञ्चा के शब्द, मृदङ्ग, भेरी और बहुत से शङ्खों से शब्दायमान हज़ारों घोड़े, रथ और हाथियों से संकुलित युद्धभूमि में उत्तम रथ की सवारी से उत्तम हाथी के सम्मुख गये ९ वहाँ उस दण्डधार ने अर्जुन को दश उत्तम बाणों से और श्रीकृष्णजी को सोलह बाणों से व्यथित करके तीन-तीन बाणों से घोड़ों को घायल किया इनको घायल करके बड़े शब्द को करके वारंवार हँसा और गर्जा १० इसके पीछे अर्जुन ने भल्लों से प्रत्यञ्चा समेत उसके धनुष को काटकर उसकी अलंकृत भुजा को भी काटा फिर रक्षकों समेत सारथियों को मारा इस कारण वह महाक्रोधित हुआ इसके अनन्तर उस मतवाले घातक वायु के समान तेजस्वी हाथी के द्वारा अत्यन्त व्याकुल करने के अभिलाषी उस राजा ने तोमरों से अर्जुन और श्रीकृष्णजी को घायल किया ११ । १२ इसके पीछे इसकी हाथी की सूंड़ के समान भुजाओं को और पूर्णचन्द्रमा के समान मुख को तीन क्षुरप्र से एक बार में छेदा और सैकड़ों बाणों से हाथी को घायल किया १३ स्वर्णमयी अर्जुन के बाणों से संयुक्त वह स्वर्णमयी कवचधारी हाथी सायङ्काल के समय ऐसा प्रकाशमान हुआ जैसे कि दावानल अग्नि से ज्वलित औषधियों समेत वृक्षोंवाला पर्वत प्रकाशित होता है वह बादल के समान गर्जता चलता घूमता दुःख से पीड़ित चलते-चलते सवार समेत ऐसे

गिर पड़ा जैसे कि वज्र से टूटा हुआ पर्वत गिर पड़ता है १४ । १५ उसके मरने के पीछे उसका दूसरा भाई द्वन्द्वयुद्ध में भाई के मरने पर श्रीकृष्ण अर्जुन के मारने का अभिलाषी स्वर्णमयी मालाधारी हिमाचल के शिखर के समान हाथी की सवारी से सम्मुख आया १६ वह सूर्य की किरण के समान प्रकाशित तीक्ष्ण तीन तोमरों से श्रीकृष्णजी को और पांचसे अर्जुन को घायल करता हुआ गर्जा इसके अनन्तर अर्जुन ने उसकी भुजाओं को काटा १७ सुन्दर तोमर और बाजूबन्द रखनेवाले चन्दन से चर्चित और क्षुरप्रबाण से कटी हुई दोनों भुजा हाथी पर से गिरती हुई ऐसी शोभायमान हुईं जैसे कि अत्यन्त सुन्दर दो बड़े सर्प पर्वत से गिरते होयँ १८ इसी प्रकार अर्जुन के अर्धचन्द्र बाण से कटा हुआ दण्ड का शिर हाथी के ऊपर से पृथ्वी पर गिरते समय ऐसे शोभायमान हुआ जैसे कि सूर्य अस्ताचल से पश्चिम दिशा में गिरता है १९ इसके पीछे अर्जुन ने सूर्य की किरणरूप उत्तम बाणों से उसके श्वेत हाथी को भी छेदा वह भी शब्द करता हुआ ऐसे गिरा जैसे वज्र से टूटा हिमाचल का शिखर गिरता है २० उसके सिवाय उसी के समान अन्य उत्तम-उत्तम हाथी विजयाभिलाषी हुए और वह भी उसी प्रकार से अर्जुन के हाथ से मरे जैसे कि वह दोनों हाथी मारे गये थे इसके पीछे शत्रुओं की बड़ी भारी सेना छिन्न भिन्न हो गई २१ युद्ध में परस्पर मारनेवाले हाथी घोड़े और मनुष्यों के समूह चारों ओर से परस्पर में अत्यन्त घायल होकर गिर पड़े और बहुत से अत्यन्त बकनेवाले मनुष्य भी मारे गये २२ इसके पीछे पाण्डवीय सेना के मनुष्य अर्जुन को घेरकर ऐसे बोले जैसे कि देवताओं के समूह इन्द्र को घेरकर बोले थे कि हे वीर, अर्जुन ! हम लोग जिससे कि मृत्यु के समान भयभीत थे वह शत्रु प्रारब्ध से तुम्हारे हाथ से मारा गया २३ जो इस प्रकार पराक्रमी शत्रुओं से पीड्यमान इन मनुष्यों की तुम रक्षा नहीं करते तो शत्रुओं की वैसी ही प्रसन्नता होती जैसी कि हम लोगों को हुई है २४ इसके अनन्तर शुभचिन्तकों के इन वचनों को सुनकर वह प्रसन्नचित्त संसप्तकों का मारनेवाला अर्जुन प्रत्येक को उनकी योग्यता के अनुसार प्रसन्न करके चल दिया ॥ २५ ॥

इति श्रीमहाभारते कर्णपर्वणि दण्डधारवधयेकोनविंशोऽध्यायः ॥ १९ ॥

बीसवाँ अध्याय

सञ्जय बोले कि इसके पीछे अर्जुन ने वहाँ से लौटकर मङ्गल ग्रह के समान वक्र और अतिवक्र गतियों से हज़ारों संसप्तकों को मारा १ हे भरतवंशिन् ! अर्जुन के बाणों से घायल मनुष्य, घोड़े, रथ, हाथी सबके सब इधर-उधर को तितिरबितिर होकर घूमने लगे और घूम-घूमकर गिरे और मृतक होकर नष्ट हो गये २ युद्ध में सम्मुख लड़नेवाले वीरों के उत्तम घोड़े, रथ, हाथी, रथी, ध्वजा, धनुष, शायक, हाथ वा हाथ में लिये शस्त्र भुजा और शिरों को अर्जुन ने अपने भल्ल, क्षुरप्र, अर्धचन्द्र और वत्सदन्त नाम बाणों से काटा ३ । ४ जैसे कि गौ के निमित्त युद्धाभिलाषी अनेक बैल दूसरे बैल के सम्मुख जाते हैं उसी प्रकार हज़ारों शूरवीर अर्जुन के ऊपर गिरते थे ५ उन सब वीरों के साथ अर्जुन का युद्ध ऐसा बड़ा भयकारी रोमहर्षण करनेवाला हुआ जैसे कि तीनों लोकों की विजय के वास्ते दैत्यों का युद्ध इन्द्र के साथ में हुआ था ६ उग्रायुध के पुत्र ने सर्पों के समान तीन बाणों से उस अर्जुन को घायल किया और अर्जुन ने उसके शिर को धड़ से जुदा किया ७ फिर क्रोधित होकर उन लोगों ने सब ओर से अर्जुन के ऊपर नाना प्रकार के शस्त्रों की ऐसी वर्षा करी जैसे कि वर्षा ऋतु में मरुत् देवता के प्रेरित किये हुए बादल हिमालय पर जल की वृष्टि को करते हैं ८ अर्जुन ने शत्रुओं के अस्त्रों को सब ओर से अपने अस्त्रों से रोककर अच्छी रीति से चलाये हुए बाणों से अनेक शत्रुओं को मारा ९ और उनके रथों को भी बाणों से रथियों समेत ऐसी दशा का कर दिया कि जिनके घोड़े और सारथी मर जाने से हाथों से तरकस और ध्वजा पताका गिर पड़ीं बागडोर हाथ से छूट गईं पहिये टूटे दांतुये और जुये और शरीर के कवच भी टूटे १० । ११ वहाँ टूटे हुए बहुमूल्य रथ ऐसे शोभायमान हुए जैसे कि अग्नि वायु और जल से टूटे हुए धनी लोगों के घर होते हैं १२ फिर वज्र और बिजली के समान बाणों से टूटे हुए हाथियों के कवच ऐसे टूट पड़े जैसे वज्रपात और अग्नि से पर्वतशिखर गिर पड़ते हैं १३ फिर अर्जुन

के हाथ से घायल होकर घोड़े सवारों समेत गिर पड़े उन घोड़ों की जीभ और नेत्र निकल पड़े थे इस से वह पृथ्वी पर पड़े हुए रुधिरसे लिप्त देखने के अयोग्य मालूम होते थे १४ हे श्रेष्ठ, धृतराष्ट्र! अर्जुन के नाराचों से छिदे हुए मनुष्य घोड़े और हाथी गर्ज-गर्ज कर घूमते और मलिन मन हो-होकर पृथ्वी पर गिर पड़े १५ अर्जुन ने बड़े स्वच्छ बिजली और विष के समान बहुत से बाणों से उनको ऐसे मारा जैसे कि महेन्द्र दानवों को मारता है १६ अर्जुन के हाथ से मरे हुए जो वीर रथ और ध्वजाओं समेत पृथ्वी पर शयन करनेवाले हुए वह वीर बड़े मूल्य के कवच, भूषण और नाना प्रकार की पोशाकों समेत शस्त्रों के धारण करनेवाले थे १७ वह पवित्रकर्मी वा उत्तम कुलीन शास्त्रज्ञ युद्धकर्ता अर्जुन के बाणों से पराजय होकर पृथ्वी पर गिर पड़े और अपने उत्तम कर्म के द्वारा स्वर्ग को गये १८ इसके पीछे भिन्न-भिन्न देशों के स्वामी क्रोधयुक्त शूरवीर आपके युद्धकर्ता अपने समूहों समेत रथियों में श्रेष्ठ अर्जुन के सम्मुख गये १९ रथ, घोड़े और हाथियों पर सवार मारने के अभिलाषी वह पत्तिलोग भी नाना प्रकार के शस्त्रों को चलाते हुए शीघ्र सम्मुख दौड़े २० जिनको अर्जुनरूपी वायु ने शीघ्रतापूर्वक छोड़े हुए बाणों से उस शस्त्ररूपी बड़ी वर्षा को जोकि युद्धकर्तारूपी बड़े-बड़े बादलों से छोड़ी हुई थी पृथक्-पृथक् कर दिया था २१ वह घोड़े, हाथी और पत्तियों से युक्त बड़े-बड़े शस्त्रों से पूर्ण अर्जुन के शस्त्र और अस्त्ररूपी पुल से हटकर साथ में पार होने के अभिलाषी थे २२ इसके अनन्तर वासुदेवजी ने कहा कि, हे निष्पाप, अर्जुन! क्या खेल करता है इन संसप्तकों को मारकर फिर कर्ण के मारने का उपाय शीघ्रता से कर २३ तब अर्जुन ने श्रीकृष्णजी से बहुत अच्छा यह शब्द कहकर श्रेष्ठ संसप्तकों को तुच्छ करके शस्त्रों के बल से ऐसा मारा जैसे कि दैत्यों को इन्द्र मारता है २४ अर्जुन बाणों को लेता चढ़ाता और मारता हुआ किसी को दिखाई नहीं दिया और सावधान वीरों ने उसको शीघ्रता से बाणों को छोड़ता हुआ भी देखा २५ हे भरतवंशिन्! उन श्रीकृष्णजी ने बड़ा आश्चर्य किया कि हंसों के समान उज्ज्वल वह बाण सेना में ऐसे पहुँचे जैसे कि सरोवर में हंस

पत्ती पहुँचते हैं २६ इसके अनन्तर मनुष्यों की प्रलय वर्तमान होने पर युद्ध-भूमि को देखकर श्रीकृष्णजी अर्जुन से बोले २७ हे अर्जुन ! दुर्योधन के कारण से यह भरतवंशीय और अन्य राजाओं की प्रलय पृथ्वी पर वर्तमान है २८ हे भरतवंशिन् ! बड़े धनुषधारियों के सुवर्णपृष्ठवाले धनुष-धारियों को वा आभूषणों समेत तूणीरों को टूटा हुआ देखो २९ और टेढ़े पर्व और सुनहरी पुङ्खवाले तेल से सचिक्कण कांचली से छुटे सर्पों के समान नाराच नाम बाणों को देखो ३० हे भरतवंशिन् ! सुवर्ण से अलंकृत चित्रविचित्र तोमरों को भी देखो और धनुष से टूटे हुए सुवर्ण पुङ्खवाले बाणों को देखो ३१ सुवर्ण से अलंकृत बाण वा कञ्चन से शोभित शक्तियों को वा सुनहरी वस्त्रों से मढ़ी हुई गदाओं को देखो ३२ सुनहरी दुधारे खड्ग, पट्टिश और दण्डों समेत कटे हुए फरसों को देखो ३३ और बहुमूल्य के पड़े हुए परिघ, भिन्दिपाल, भुशुण्डी, कुणप और अपर-कुन्तों को देखो ३४ विजयाभिलाषी वेगवान् शूरवीर नाना प्रकार के शस्त्रों को लेकर निर्जीव होकर जीवते से दिखाई देते हैं ३५ गदाओं से मथित अङ्गवाले हाथी, घोड़े और रथों समेत मूसलों से कूटे हुए मस्तक-वाले हज़ारों युद्धकर्ताओं को देखो ३६ हे शत्रुहन्तः ! बाण, शक्ति, दुधारे खड्ग, तोमर, पट्टिश, प्रास, नखरल, गुड़ आदि अनेक शस्त्रों से अत्यन्त घायल मनुष्य, हाथी, घोड़ों के समूह रुधिर में भरे हुए निर्जीव देहों से पड़े युद्ध भूमि में वर्तमान हैं ३७ । ३८ और बाजूबंद आदि शुभ भूषण, हस्तत्राण और केयूर को धारण करनेवाली चन्दन से लिप्त भुजाओं से पृथ्वी शोभायमान है ३९ और वेगवान् शूरवीरों की टूटी हुई उत्तम भुजाओं से वा हाथी की सूंड़ के समान टूटी हुई जङ्घाओं से और उत्तम चूड़ा बाँधनेवाले कुण्डलधारी शिरों से युद्ध भूमि अत्यन्त शोभा दे रही है सुनहरी घण्टे रखनेवाले उत्तम रथों को भी अनेक प्रकार से टूटा हुआ देखो ४० । ४१ और रुधिर में भरे हुए बहुत से घोड़ों को देखो वा अनु-कर्ष उपासङ्ग पताका और नाना प्रकार की ध्वजाओं को देखो ४२ युद्ध-कर्ताओं के फैले हुए श्वेतरङ्ग के महाशङ्खों को और जिह्वा निकले पर्वत के समान पड़े सोते हुए हाथियों को देखो ४३ वैजयन्ती नाम विचित्र मालाओं

से और मरे हुए हाथियों के सवार और अनेक काले कम्बलों से युक्त परिस्तोमों से ४४ अच्छी कृष्ण और विचित्र अद्भुतरूप कुथाओं से और हाथियों से टूटकर गिरे हुए घण्टाओं के चूर्णों को देखो ४५ वैडूर्य मणि के डण्डेवाले पृथ्वी पर पड़े हुए अंकुशों को और घोड़ों के जुये पीठ और रत्नजटित छिद्रों को देखो ४६ सवारों की ध्वजाओं की नौका पर टूटे हुए सुवर्ण से चित्रित घण्टाओं को और विचित्र मणियों से जटित सुवर्ण अलंकृत ४७ पृथ्वी पर पड़े हुए मृगचर्म से बने हुए घोड़ों के ज़ीनपोशों को और राजाओं की चूड़ामणि और सुनहरी विचित्र मालाओं को देखो ४८ धनुष से छिदे हुए छत्र चामर और वैजयन्तियों को देखो चन्द्रमा और नक्षत्रों के समान प्रकाशित सुन्दर कुण्डलधारी ४९ अलङ्कार युक्त डाढ़ी मूछों से संयुक्त पूर्ण चन्द्रमा के समान मुखों से बिछी हुई पृथ्वी को देखो ५० इसी प्रकार कुमुद उत्पल नाम कमलों के समानरूपी राजाओं के मुखों से इस पृथ्वी को नक्षत्रसमूहों समेत निर्मल चन्द्रमा से शोभित आकाश के समान सदैव बाणरूप नक्षत्रों की मालाओं के रखनेवाली को देखो हे अर्जुन ! इस महायुद्ध में यह कर्म तेरे ही योग्य है ५१ । ५२ चाहै वह कर्म जो तुमने स्वर्ग के युद्ध में इन्द्र का किया इस रीति से वह युद्धभूमि अर्जुन को दिखाते ५३ और चलते हुए श्रीकृष्णजी ने दुर्योधन की सेना में शङ्ख, दुन्दुभी, भेरी और पणवों के बड़े शब्दों को सुना ५४ और रथ, घोड़े, हाथी और शस्त्रों के भयानक शब्दों को भी सुना फिर श्रीकृष्णजी ने वायु के समान घोड़ों के द्वारा उस सेना में प्रवेश करके ५५ राजा पाण्ड्य के हाथ से आपकी सेना को पीड़ित देखकर बड़ा आश्चर्य किया बाण और अस्त्रविद्या में अत्यन्त श्रेष्ठ उस पाण्ड्य ने युद्ध में अनेक प्रकार के बाणों से ५६ शत्रुओं के समूहों को ऐसे मारा जैसे कि मृत्यु निर्जीव मनुष्यों को मारती है घात करनेवालों में श्रेष्ठ पाण्ड्य ने तीक्ष्ण बाणों के द्वारा हाथी, घोड़े और मनुष्यों के शरीरों को ५७ छेदकर उन निर्जीवों को गिराया फिर पाण्डवों ने शत्रुओं के चलाये अस्त्र और नाना प्रकार के शस्त्रों को शायकों से काटकर उन शत्रुओं को ऐसे मारा जैसे कि इन्द्र असुरों को मारता है॥५८॥५९॥

इति श्रीमहाभारते कर्णपर्वणि संकुलयुद्धे विंशोऽध्यायः ॥ २० ॥

इक्कीसवाँ अध्याय

धृतराष्ट्र बोले कि, हे सञ्जय ! तुमने प्रथम ही लोक में विख्यात पाण्ड्य बड़ा वीर वर्णन किया परन्तु तुमने युद्ध में इसके कर्म को वर्णन नहीं किया १ अब उस बड़े वीर के पराक्रम और शिक्षा के प्रभाव बल बड़प्पन और अहङ्कार को ब्यौरेवार कहो २ सञ्जय बोले कि तुम भीष्म, द्रोणाचार्य, कृपाचार्य, अश्वत्थामा, कर्ण, अर्जुन और श्रीकृष्ण आदि जिन रथियों को सर्वविद्यासम्पन्न और धनुषविद्या में सबसे श्रेष्ठ मानते हो और जो इन सब महारथियों को भी अपने पराक्रम से तुच्छ समझता है जिसने अन्य किसी राजा को अपने समान नहीं माना ३ । ४ और जो भीष्म द्रोणाचार्य के साथ में अपनी समानता को भी नहीं सहता है और जिसने अपने को वासुदेवजी और अर्जुन से कम नहीं जाना ५ उस राजाओं में और सब शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ राजा पाण्ड्य ने अत्यन्त क्रोधयुक्त होकर यमराज के समान कर्ण की बड़ी सेना को मारा ६ बड़े रथ घोड़ों समेत अत्यन्त उत्तम पत्तियों से व्याप्त और पाण्ड्य के पराक्रम से घायल होकर वह सेना कुम्हार के चक्र के समान घूमती हुई इधर उधर फिरने लगी ७ पाण्ड्य ने घोड़े ध्वजा और सारथियों से रहित रथों को और कठिन युद्ध से मारे हुए हाथियों को अच्छी रीति से चलाये बाणों से ऐसे हटा दिया जैसे कि वायु बादलों को हटाता है ८ पताका ध्वजा और शस्त्रों से रहित हाथियों को हाथियों के सवारों समेत पीछे के रक्षकों को ऐसे मारा जैसे कि शत्रुहन्ता इन्द्र अपने वज्र से पर्वतों को विदीर्ण करता है ९ उसने शक्ति, प्रास और तूणीरों समेत अश्वारूढ़ और घोड़ों को भी मारकर पुलिन्द, खस, बाह्लीक, निषाद, अन्धक, कुन्तल १० दाक्षिणात्य और भोजों को और युद्ध में निर्दयी शूरों को बाणों के द्वारा शस्त्र और कवचों से रहित करके निर्जीव किया ११ युद्ध में बाणों से मारनेवाले रुधिर से उत्पन्न होनेवाले व्याकुलता से पृथक् पाण्ड्य को देखकर अश्वत्थामाजी भय से उत्पन्न होनेवाली व्याकुलता से रहित चतुरङ्गिणी सेना समेत उसके सम्मुख गये १२ वहाँ प्रहारकर्ताओं में श्रेष्ठ अश्वत्थामाजी ने

निर्भयता के समान इसको मीठे वचनों से समझाकर कहा १३ और बड़ी मन्द मुसकान समेत युद्ध के निमित्त बुलाया और कहा कि हे कमलदल लोचन, उत्तम कुलीन, शास्त्रज्ञ, वज्र के समान दृढ़ शरीर और बल में विख्यात, राजा पाण्ड्य ! १४ आपके धनुष की प्रत्यञ्चा पृष्ठ स्थान में चिपटी हुई दिखाई देती है और बड़े भुजदण्डों से बहुत बड़े धनुष को बड़े बादल के समान कठिन टङ्कोरते हुए दृष्टि पड़ते हो १५ बड़े वेगवान् बाणों की वर्षा से शत्रुओं के सम्मुख मुझ बाण वर्षा करनेवाले के सिवाय आपके सम्मुख होनेवाला शूरवीर युद्ध में नहीं देखता हूँ १६ तुम अकेले ही बहुत से हाथी, घोड़े, रथ और पत्ति लोगों को ऐसे मथते हो जैसे कि निर्भय और भयानकरूप पराक्रमी सिंह वन में मृगों के समूहों को मथन करता है १७ हे राजन् ! रथ के बड़े शब्द से पृथ्वी और आकाश को शब्दायमान करते हुए ऐसे दिखाई देते हो जैसे कि वर्षा के अन्त में खेती की हानि करनेवाला गर्जता हुआ बादल होता है १८ विषैले सर्प की समान तीक्ष्ण बाणों को तूणीर से निकाल निकालकर मुझ अकेले से ऐसे युद्ध करो जैसे कि अन्धक ने शिवजी के साथ युद्ध किया था १९ प्रहार करो ऐसे कहे हुए घायल हुए उस मलयध्वज पाण्ड्य ने बहुत अच्छा ऐसा शब्द कहकर करणी नाम बाण से अश्वत्थामा को घायल किया २० आचार्यों में श्रेष्ठ मन्द मुसकान करते अश्वत्थामा ने मर्मभेदी अत्यन्त उग्र अग्निशिखा के समान बाणों से पाण्ड्य को घायल किया इसके पीछे अश्वत्थामाजी ने अत्यन्त तीक्ष्ण मर्मभेदी अन्य नाराचों को भी फेंका २१ । २२ पाण्ड्य ने उन बाणों को अपने तीक्ष्ण धारवाले नौ बाणों से काटा और चार बाणों से घोड़ों को घायल किया और घायल होते ही वह शीघ्र मर गये २३ इसके पीछे सूर्य के समान तेजस्वी पाण्ड्य ने तीक्ष्ण धारवाले बाणों से अश्वत्थामा के उन बाणों को काटकर धनुष की बड़ी प्रत्यञ्चा को काटा २४ इसके पीछे शत्रुहन्ता ब्राह्मण अश्वत्थामाजी ने दिव्य धनुष को तैयार करके और शीघ्र ही रथ में जुटे हुए दूसरे उत्तम घोड़ों को देखकर २५ उसमें बैठे हज़ारों बाणों को चलाया आकाश और दिशाओं को बाणों से

व्याप्त कर दिया २६ इसके पीछे बाण फेंकनेवाले अश्वत्थामा के उन सब बाणों को अविनाशी जानकर उस पुरुषोत्तम पाण्ड्य ने उनको काट-कर गिराया २७ फिर पाण्ड्य ने अश्वत्थामाजी के उन बाणों को काटकर युद्ध में अपने तीक्ष्णधार बाणों से उनके दोनों चक्ररक्षकों को मारा २८ इसके पीछे शत्रु की हस्तलाघवता को देखकर धनुष को मण्डलरूप करनेवाले अश्वत्थामाजी ने ऐसे बाणों को छोड़ा जैसे कि पूषा का छोटा भाई पर्जन्य नाम जल की वर्षा को छोड़ता है २९ हे श्रेष्ठ! जिन शस्त्रों को आठ-आठ बैलवाले आठ छकड़े ले चलते हैं उनको अश्व-त्थामाजी ने आधी घड़ी में चलाया ३० उस यमराज के समान क्रोध-रूप और मृत्यु के सदृश अश्वत्थामाजी को जिन्होंने वहाँ देखा था उनमें से बहुधा तो अचेत हो गये ३१ जैसे कि वर्षाऋतु में बादलों के समूह पर्वत वृक्ष रखनेवाली पृथ्वी पर वर्षा करते हैं उसी प्रकार आचार्य के पुत्र अश्वत्थामा ने उस सम्पूर्ण सेना पर बाणों की वर्षा करी ३२ पाण्ड्यरूपी वायु ने उस अश्वत्थामारूप बादल से छोड़े हुए बड़े दुःख से सहने के योग्य उस बाणरूपी वर्षा को बड़ी प्रसन्नता से अपने वायुरूप अस्त्र से हटा-कर नाश कर दिया ३३ अश्वत्थामाजी ने उस गर्जनेवाले पाण्ड्य की ध्वजा को जो कि चन्दन अगर से चर्चित मलयाचल के स्वरूप थी काटकर चारों घोड़ों को मारा ३४ फिर एक बाण से सारथी को मारकर और अर्धचन्द्र से बड़े बादल के समान शब्दायमान धनुष को काटकर रथ को टुकड़े-टुकड़े कर दिया ३५ अश्वत्थामा ने अस्त्रों को अस्त्रों से रोककर और सब शस्त्रों को काटकर आधीन होनेवाले शत्रु को युद्धाभिलाषी होकर युद्ध में नहीं मारा ३६ इसी अन्तर में कर्ण हाथियों की सेना में गया और वहाँ उसने जाकर पाण्डवों की बड़ी सेना को भगाया ३७ हे भरतवंशिन्! उसने टेढ़े पर्ववाले बहुत से बाणों से रथियों को विरथ करके हाथी और घोड़ों को अचेत कर दिया ३८ इसके पीछे बड़े धनुषधारी अश्वत्थामा ने शत्रुहन्ता रथियों में श्रेष्ठ रथ से रहित पाण्ड्य को युद्ध की इच्छा करके नहीं मारा ३९ अच्छा अलंकृत शीघ्र-गामी शब्द पर चलनेवाला अश्वत्थामा के बाणों से घायल पराक्रमी

हाथी जिसका कि स्वामी मारा गया था वेग से हाथियों को मलता हुआ शीघ्र उस पाण्ड्य की ओर गया ४० हाथियों के युद्ध में कुशल मलयध्वज पाण्ड्य बड़ी शीघ्रता को करता हुआ उस पर्वत के शिखर के समान श्रेष्ठ हाथी पर ऐसे सवार हुआ जैसे कि गर्जता हुआ सिंह पर्वत के शिखर पर चढ़ता है ४१ उस मलयाचल के स्वामी गर्जते और अंकुश से हाथी को क्रोधयुक्त करवानेवाले पाण्ड्य ने पराक्रम और अस्त्र चलाने के उपाय जानने के अभिमान से शीघ्र ही सूर्य की किरण के समान तोमर को गुरु के पुत्र पर छोड़कर ४२ मारा है मारा है ऐसे आनन्दपूर्वक शब्दों को करता हुआ बड़े वेग से गर्जा और अश्वत्थामा के उस मुकुट को तोमर से तोड़ा जो कि मणियों से जटित उत्तम हीरों से और सुवर्ण से शोभित बहुमूल्य के वस्त्र और मालाओं से अलंकृत था ४३ सूर्य चन्द्रमा ग्रह और अग्नि के समान प्रकाशित वह मुकुट कठिन आघात से ऐसे चूर्ण होकर गिर पड़ा जैसे कि इन्द्र के वज्र से घात किया हुआ बड़े शब्द युक्त होकर पर्वत का शिखर पृथ्वी पर गिरे ४४ उसके पीछे अश्वत्थामाजी ने यमराजदण्ड के समान शत्रुओं के पीड़ा करनेवाले चौदह बाणों को हाथ में लिया ४५ तब उस उत्तम तेजस्वी ने हाथी के चारों पैर और सूँड़ पाँच बाणों से व राजा की दोनों भुजा और शिर को तीन बाणों से और राजा पाण्ड्य के पीछे चलनेवाले छः महारथियों को छः बाणों से मार डाला ४६ राजा की दोनों भुजा जो बहुत लम्बी चन्दन से चर्चित सुवर्ण, मुक्ता, हीरे और अन्य-अन्य मणियों से अलंकृत थीं पृथ्वी पर गिर पड़ीं और गरुड़ से व्याकुल सर्पों के समान फड़फड़ाने लगीं ४७ वह पूर्णचन्द्रमा के समान प्रकाशमान और क्रोध से बड़ी-बड़ी लाल आँखें रखनेवाला कुण्डलधारी शिर भी पृथ्वी पर गिरा हुआ ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि दोनों विशाखों के मध्य में चन्द्रमा वर्तमान होता है ४८ फिर वह हाथी पाँच उत्तम बाणों से छः भाग किया गया और राजा भी तीन बाणों से चार खण्ड किया गया उस सावधान युद्धकर्ता ने इस प्रकार से दश भाग किये जैसे कि दश देवताओं से सम्बन्ध रखनेवाला हव्य होता है ४९ वह पाण्ड्य घोड़े, हाथी और मनुष्यों को जो कि राक्षसों

के भोजन थे टुकड़े-टुकड़े कराके अश्वत्थामा के बाणों से ऐसे शान्त हो गया जैसे कि पितरों की प्रिय अग्नि मृतक देहरूप हव्य को पाकर जलप्रवाह से शान्त हो जाती है ५० फिर सुहृदजनों समेत आपके पुत्र राजा दुर्योधन ने उस युद्ध कर्म में विशारद और निवृत्त कर्म गुरु के पुत्र से मिलकर प्रसन्नता से ऐसे उनका धन्यवाद किया जैसे कि देवताओं के ईश्वर इन्द्र ने बलि के विजय होने पर विष्णु को धन्यवाद दिया था ५१॥

इति श्रीमहाभारते कर्णपर्वणि पाण्ड्यवधयेकविंशोऽध्यायः॥ २१ ॥

बाईसवाँ अध्याय

धृतराष्ट्र बोले कि, हे सञ्जय! पाण्ड्य के मरने और एक वीर कर्ण के हाथ से शत्रुओं के भागने पर अर्जुन ने युद्ध में क्या किया १ वह विद्या में पूर्ण पराक्रमी योग्य वीर अर्जुन महात्मा शङ्करजी से भी विजय नहीं किया गया २ उस शत्रुहन्ता अर्जुन से बड़ा भारी कठिन भय है उस अर्जुन ने जो-जो वहाँ कर्म किये हे सञ्जय! उन सबको मेरे आगे वर्णन करो ३ सञ्जय बोले कि पाण्ड्य के मर जाने पर शीघ्रता करनेवाले श्रीकृष्णजी ने अर्जुन से यह हितकारी वचन कहा कि मैं राजा युधिष्ठिर को और हटे हुए पाण्डवों को नहीं देखता हूँ ४ लौटे हुए पाण्डव से शत्रु की फिर बड़ी सेना पराजय हुई परन्तु अश्वत्थामा के संकल्प से कर्ण के हाथ से सञ्जय मारे गये ५ इस प्रकार से घोड़े हाथी और रथों के नाश करनेवाले बड़े वीर वासुदेवजी ने अर्जुन से सब वृत्तान्त कहा ६ भाई युधिष्ठिर के उस बड़े भय को देख और सुनकर पाण्डव अर्जुन ने श्रीकृष्णजी से कहा कि शीघ्र घोड़ों को चलाइये ७ इसके अनन्तर श्रीकृष्णजी रथ की सवारी के द्वारा उसके सम्मुख शीघ्र गये जिसका कि कोई सम्मुखता करनेवाला न था फिर बड़ी कठिन सम्मुखता हुई ८ तदनन्तर निर्भय कौरव पाण्डव अर्थात् कुन्ती के पुत्र भीमसेन आदि और कर्ण आदिक कौरव और हम सब लोग परस्पर में सम्मुख हुए हे राजाओं में श्रेष्ठ! इसके पीछे कर्ण और पाण्डवों का युद्ध यमराज के देश का बढ़ानेवाला फिर जारी हुआ ९। १०

धनुष, बाण, परिघ, खड्ग, पट्टिश, तोमर, मूसल, भुशुण्डी, शक्ति, दुधाराखड्ग, फरसा ११ गदा, प्रास, तीक्ष्ण कुन्त, भिन्दिपाल और बड़े-बड़े अंकुशों को हाथ में लेकर परस्पर मारने की इच्छा से चढ़ाई करनेवाले हुए १२ बाण और धनुषों की प्रत्यञ्चा के शब्दों से दिशा विदिशाओं समेत पृथ्वी और आकाश को शब्दायमान करते हुए शत्रुओं के सम्मुख गये १३ बड़े शब्दों से अत्यन्त प्रसन्न युद्ध से पार होने के अभिलाषी वीरों ने शत्रुओं के वीरों के साथ महाघोर युद्ध किया १४ तब धनुष की प्रत्यञ्चा के शब्द और चिङ्घाड़ते हाथी और गिरते हुए मनुष्यों का महाघोर शब्द हुआ १५ फिर वहाँ पर सेना के मनुष्य सम्मुख गर्जते हुए शूरवीरों के नाना प्रकारों के शब्दों को सुनकर अत्यन्त भयभीत और अचेत होकर गिर पड़े १६ उनके गर्जते और बाणों की वर्षा करते हुए वीर कर्ण ने पाञ्चालदेशीय वीरों के बीस रथियों को घोड़े, सारथी और ध्वजाओं समेत अपने बाणों से स्वर्ग को पठाया १७। १८ युद्ध में पाण्डवों के बड़े पराक्रमी उत्तम युद्धकर्ताओं ने शीघ्रतापूर्वक अस्त्रों के चलाने से आकाश को व्याप्त करके कर्ण को चारों ओर से घेर लिया १९ इसके पीछे कर्ण ने बाणों की वर्षा से शत्रुओं की सेना को छिन्न भिन्न करके ऐसा व्यथित किया जैसे कि पक्षियों से व्याप्त कमलों के वनों को गजराज मथन करता है २० कर्ण ने शत्रुओं में घिरकर उत्तम धनुष को ले तीक्ष्ण बाणों से उन शत्रुओं के शिरों को काटकर दूर गिराया २१ तब मृतक वीरों की टूटी हुई ढालें और कवच पृथ्वी पर गिर पड़ीं २२ धनुष से छोड़े हुए मर्मदेह और प्राणों के घातक बाणों से धनुषों की प्रत्यञ्चा और तूणीरों को ऐसा घायल किया जैसे कि चाबुक से घोड़ों को घायल करते हैं २३ कर्ण ने बाण के लक्ष्य में वर्तमान पाण्ड्य सृञ्जय और पाञ्चालों को बड़े वेग से ऐसे मर्दन किया जैसे कि मृगों के समूहों को सिंह मर्दन करता है २४ हे श्रेष्ठ! इसके पीछे पाञ्चाल और द्रौपदी के पुत्र नकुल और सहदेव सात्यकी समेत एक साथ ही कर्ण के सम्मुख गये २५ उन कौरव, पाञ्चाल और पाण्डवों के उपाय करने पर युद्ध में बड़े-बड़े युद्ध करनेवालों ने अपने प्रियप्राणों को त्याग करके परस्पर में

घायल किया २६ अच्छे अलंकृत कवचधारी आभूषणों से युक्त महाबली कालदण्ड के समान गदा, मूसल और परिघों को उठाये हुए गर्जते और एक-एक को पुकारते शीघ्र सम्मुख गये २७। २८ इसके पीछे एक ने एक को घायल किया और घायल हो होकर गिर पड़े और कोई शूरवीर अङ्गों से रुधिर गेरते मस्तक नेत्र और शस्त्रों से हीन होकर २९ शस्त्रों से युक्त और दाँतों से पूर्ण रुधिर में भरे हुए अनार के वृक्ष के समान मुखों से जीवते हुए से नियत हुए ३० इसी प्रकार दूसरों ने फरसा, पट्टिश, खड्ग, शक्ति, भिन्दिपाल, प्रास और तोमरों से ३१ काटा, छेदा और घायल करके फेंका, गिराया, मारा और क्रोधयुक्त वीरों ने युद्धरूपी महासमुद्र में घायल किया ३२ परस्पर में मारे हुए निर्जीव रुधिर से भरे हुए सुन्दर रथवाले रुधिर को गिराते हुए ऐसे गिर पड़े जैसे कि चन्दन के कटे हुए वृक्ष गिराये जाते हैं ३३ रथों से रथी मारे गये हाथियों से हाथी मारे गये मनुष्यों से मनुष्य और घोड़ों से मारे हुए हज़ारों घोड़े ३४ क्षुरप्र, भल्ल और अर्धचन्द्रों से कटे हुए भुज, शिर, छत्र और हाथियों की सूँड़ों समेत मनुष्यों की भुजा पृथ्वी पर गिर पड़ीं ३५ हाथियों ने रथों समेत घोड़े और मनुष्यों को मर्दन किया। अश्वारूढ़ों के हाथ से शूरवीर मारे गये ३६ और पताका ध्वजाओं समेत कटी हुई सूँड़ों समेत हाथी ऐसे गिरे जैसे टूटे हुए पर्वत गिरते हैं वह हाथी रथ पत्तियों के सम्मुख जाकर मरे और मरकर गिर पड़े ३७ और शीघ्रता करनेवाले अश्वसवार सम्मुख होकर पत्तियों के हाथ से मारे गये ३८ और युद्ध में अश्वसवारों के हाथ से मारे हुए पत्तियों के समूह ऐसे नष्ट हो गये जैसे कि मर्दन किया हुआ कमल और मुरझाई हुई माला होयँ ३९ इसी प्रकार उस बड़े युद्ध में मृतकों के मुख भङ्ग हो गये और मनुष्यों के अत्यन्त प्रकाशमान रूप और हाथियों ने ऐसे कुरूपता को पाया जैसे कि म्लानवस्त्र होते हैं॥ ४०॥

इति श्रीमहाभारते कर्णपर्वणि संकुलयुद्धे द्वाविंशोऽध्यायः॥ २२॥

तेईसवाँ अध्याय

सञ्जय बोले कि आपके पुत्र के कहने से हाथियों के सवार अपने हाथियों के द्वारा मारने के इच्छावान् पर्वत के पोते क्रोधयुक्त धृष्टद्युम्न के सम्मुख गये १ हे भरतवंशिन् ! अत्यन्त उत्तम हाथियों के सवार शूरवीर पूर्व दक्षिण के वासी अङ्ग, बङ्ग, पुण्ड्र, मागध, ताम्र, लिप्तक २ मेकल, कोशल, मद्र, दशार्ण, निषध, कलिङ्गों समेत गजयुद्ध में कुशल ३ बाण, तोमर और नाराचों से बादल के समान बाणवृष्टि करनेवाले उन सबने पाञ्चालदेशीय सेना को अपने बाणरूप वृष्टि से सींचा ४ एँड़ी, अंगुष्ठ और अंकुशों से अत्यन्त तेज किये हुए उन हाथियों को मर्दन करने का अभिलाषी धृष्टद्युम्न बाण और नाराचों से वर्षा करनेवाला हुआ ५ हे भरतवंशिन् ! उन पर्वताकार हर एक हाथी को फेंके हुए दश छः और आठ बाणों से घायल किया जैसे कि बादलों से सूर्य ढक जाता है उस रीति से धृष्टद्युम्न को हाथियों से घिरा हुआ देखकर तीक्ष्ण शस्त्रधारी पाण्डव और पाञ्चाल लोग गर्जते हुए गये ६ । ७ प्रत्यञ्चा के शब्दों से शब्दायमान बाणों से हाथियों के सम्मुख बाणवृष्टि करनेवाले नकुल और सहदेव और द्रौपदी के पुत्र वा प्रभद्रक ८ सात्यकी, शिखण्डी, चेकितान नाम पराक्रमी वीरों ने चारों ओर से ऐसे सींचा जैसे कि जल की धाराओं से बादल पर्वतों को सींचता है ९ बरछों से भिदे हुए उन अत्यन्त क्रोधयुक्त हाथियों ने मनुष्य घोड़े और रथों को भी सूंड़ों से पकड़-पकड़ पटक-पटककर पैरों से मर्दन किया और किसी-किसी को दाँतों की नोकों से घायलकर करके घुमाकर दूर फेंक दिया और दाँतों में चिपटे हुए अन्य भयानकरूप जीव भी गिर पड़े १० । ११ सात्यकी ने सम्मुख वर्तमान राजा अङ्ग के हाथी को उग्रवेगी नाराच से मर्मस्थलों में छेदकर गिरा दिया १२ फिर सात्यकी ने उन प्रहारों से बचे हुए शरीरवाले हाथी से उछलने के अभिलाषी राजा अङ्ग की छाती को नाराच से घायल किया तब वह पृथ्वी पर गिर पड़ा १३ सहदेव ने पुण्ड्र के राजा के हाथी को चलायमान पर्वत के समान आते हुए को बड़े उपाय से चलाये हुए तीन नाराचों से घायल

किया १४ सहदेव उस हाथी को पताका हाथीवान् कवच और ध्वजा समेत मारकर राजा अङ्ग के सम्मुख गया १५ फिर नकुल ने सहदेव को रोककर यमराज के दण्ड के समान तीन नाराचों से हाथी को और सौ से उस राजा अङ्ग को घायल करके व्यथित किया १६ फिर राजा अङ्ग ने सूर्य की किरणों के समान प्रकाशित आठ सौ तोमरों को नकुल के ऊपर फेंका तब नकुल ने प्रत्येक तोमर के तीन-तीन खण्ड कर दिये १७ और अर्धचन्द्र से उसके शिर को काटा तब वह मृतक होकर अपने हाथी समेत गिर पड़ा १८ फिर हाथी की शिक्षा में कुशल इस अङ्गदेशीय राजपुत्र के मरने पर अत्यन्त क्रोध में भरे हुए अङ्गदेशीय हाथी सवार अपने हाथियों समेत नकुल के सम्मुख गये १९ चलायमान सुन्दर मुख रखनेवाली पताका और सुवर्ण के कवचधारी हाथियों समेत नकुल के पीड़ा करने के अभिलाषी होकर अत्यन्त प्रकाशमान पर्वतों के समान उसके सम्मुख गये २० फिर वह मारने के आकांक्षी मेकल, उत्कल, कलिङ्ग, निषद, ताम्र, लिप्तक देशीय युद्धकर्ता बाण और तोमरों की वर्षा करते हुए सम्मुख गये २१ जैसे बादल से सूर्य ढक जाता है उसी प्रकार हाथियों से ढके हुए नकुलको देखकर अत्यन्त क्रोधयुक्त पाण्डव पाञ्चाल युद्ध करने को उपस्थित हुए २२ उसके पीछे हज़ारों तोमर और बाणों की वर्षा करनेवाले रथियों का वह युद्ध हाथियों के साथ हुआ २३ जिसमें अत्यन्त घायल हाथियों के कुम्भ और नाना मर्मांग वा दाँत वा आभूषणों को नाराचों से काटा २४ सहदेव ने उन हाथियों में से बहुत बड़े-बड़े हाथियों को मारा वह सब मरे हुए हाथी अपने-अपने सवारों समेत पृथ्वी पर गिर पड़े २५ फिर नकुल ने बड़े उपाय से उत्तम धनुष को चढ़ाकर सीधे चलनेवाले बाणों से हाथियों को मारा २६ इसके पीछे धृष्टद्युम्न द्रौपदी के पुत्र प्रभद्रक नाम क्षत्रिय और शिखण्डी ने बाणों की वर्षा से बड़े-बड़े हाथियों को व्यथित किया २७ वह शत्रुओं के पर्वताकार हाथी पाण्डवीय युद्धकर्तारूपी बादलों की बाणरूप वर्षा से ऐसे गिर पड़े जैसे कि वज्रों की वर्षा से पर्वत गिरते हैं २८ इस प्रकार से उन पाण्डवों के हाथी और रथियों ने आपके हाथियों को मारकर सेना को ऐसे भागता

देखा जैसे कि टूटा किनारा भागती हुई नदी को देखता है २६ पाण्डवों की सेना के मनुष्य उस सेना को छिन्न-भिन्न करके कर्ण के सम्मुख गये ॥ ३० ॥

इति श्रीमहाभारते कर्णपर्वण्यन्योन्ययुद्धे त्रयोविंशोऽध्यायः ॥ २३ ॥

चौबीसवाँ अध्याय

सञ्जय बोले कि, हे महाराज ! भाई दुश्शासन उस आपकी सेना के नाश करनेवाले क्रोधयुक्त भाई सहदेव के सम्मुख गया १ वहाँ महायुद्ध में भिड़े हुए उन दोनों को देखकर सिंहनाद किये और डुपट्टों को फिराया इसके पीछे क्रोधयुक्त आपके पुत्र के तीन बाणों से महाबली सहदेव छाती पर घायल हुआ २ । ३ हे राजन् ! तब तो क्रोध करके सहदेव ने नाराच से आपके पुत्र को छेदकर सत्तर बाणों से पीड्यमान किया ४ और तीन बाणों से सारथी को। हे राजन् ! इसके पीछे दुश्शासन ने उस बड़े युद्ध में धनुष को काटकर सहदेव की दोनों भुजाओं को तिहत्तर बाणों से छाती समेत घायल किया ५ फिर अत्यन्त क्रोधयुक्त सहदेव ने उस महायुद्ध में खड्ग को लेकर अत्यन्त शीघ्रता से घुमाकर आपके पुत्र के ऊपर छोड़ा ६ वह बड़ा खड्ग उसके प्रत्यञ्चा समेत धनुष को काटकर पृथ्वी पर ऐसे गिर पड़ा जैसे कि आकाश से सर्प गिरता है ७ उसके पीछे प्रतापवान् सहदेव ने दूसरे धनुष को लेकर फिर नाश करनेवाले बाण को दुश्शासन के ऊपर फेंका ८ तब उस कौरव दुश्शासन ने यमदण्ड के समान प्रकाशमान आते हुए बाण को अपने तीच्ण धारवाले खड्ग से दो टुकड़े कर दिया इसके पीछे शीघ्रता करनेवाले महापराक्रमी सहदेव ने उस तीच्ण धार खड्ग को घुमाकर और दूसरे धनुष को लेकर बाण को हाथ में लिया ९ । १० फिर युद्ध में हँसते हुए सहदेव ने उस अकस्मात् आते हुए खड्ग को तीच्ण बाणों से गिराया ११ हे भरतवंशिन् ! इसके पीछे उस महायुद्ध में आपके पुत्र ने शीघ्रही चौंसठ बाणों को सहदेव के रथ पर चलाया १२ उन वेग से आते हुए बाणों को देखकर सहदेव ने पाँच बाणों से काटा १३ फिर उसने आपके पुत्र के चलाये हुए वेगवान्

बाणों को हटाकर युद्ध में उसके ऊपर बहुत से बाणों की वर्षा करी १४ आपका पुत्र भी उन प्रत्येक बाण को तीन बाणों से काटकर पृथ्वी को फाड़ता हुआ बड़े शब्दों से गर्जा १५ हे राजन्! इसके पीछे दुश्शासन ने युद्ध में सहदेव को घायल करके उसके सारथी को नौ बाणों से घायल किया १६ हे महाराज! इसके पीछे क्रोधयुक्त प्रतापी सहदेव ने मृत्यु-काल और कालदण्ड के समान घोर बाण को हाथ में लिया १७ और अपने पराक्रम से धनुष को खैंचकर आपके पुत्र पर फेंका वह बाण उसको छेद के कवच को काटकर पृथ्वी में ऐसे समा गया १८ जैसे कि बामी में सर्प समा जाता है हे महाराज! इसके पीछे आपका महारथी पुत्र अचेत हो गया १९ अत्यन्त भयानक तीक्ष्ण बाण से घायल रथ को चलाता हुआ सारथी उसको अचेत जानकर शीघ्र ही दूर ले गया २० पाण्डुनन्दन ने इस कौरव को विजय करके और दुर्योधन की सेना को देखकर चारों ओर से मर्दन किया २१ हे भरतवंशिन्, राजन्, धृतराष्ट्र! जैसे कि मनुष्य क्रोधयुक्त होकर चींटियों की पंक्तियों को मर्दन करता है उसी प्रकार उसके हाथ वह कौरवीय सेना मर्दन करी गई ॥ २२ ॥

इति श्रीमहाभारते कर्णपर्वणि दुश्शासनयुद्धोनाम चतुर्विंशोऽध्यायः ॥ २४ ॥

पच्चीसवाँ अध्याय

सञ्जय बोले कि हे राजन्! सूर्य के पुत्र कर्ण ने क्रोध से युद्ध में सेना को भगानेवाले वेगवान् नकुल को रोका १ उसके पीछे हँसता हुआ नकुल कर्ण से यह बोला कि बड़े दुःख की बात है कि देवताओं ने बहुत काल के पीछे मुझको अपनी कृपादृष्टि से देखा हे पापिन्! युद्ध में नेत्रों के सम्मुख आये हुए मुझको देख २ तूही शत्रुता, उपद्रव और अनर्थों का मूल है ३ तेरे ही अपराध से कौरव परस्पर सम्मुख होकर नाशवान् हो गये अब मैं युद्ध में तुझको मारकर कृतकृत्य होकर तप से निवृत्त हूँ इस प्रकार के वचनों को सुनकर कर्ण ने नकुल को उत्तर दिया ४ कि अधिकतर धनुषधारी राजकुमार के योग्य है हे वीर! तू मुझ पर प्रहार कर मैं तेरी वीरता को देखूँगा हे शूर! प्रथम युद्ध में अपने

शूरतारूपी कर्म को करके फिर अपनी प्रशंसा करने को योग्य है ५। ६ हे तात ! शूर वीर युद्ध में कुछ न कहकर सामर्थ्य से लड़ते हैं तू अपनी सामर्थ्य से मेरे सङ्ग युद्ध कर मैं तेरे अभिमान को दूर करूँगा ७ कर्ण ने यह कहकर शीघ्र ही नकुल पर प्रहार किया अर्थात् युद्ध में इसको तिहत्तर बाणों से घायल किया ८ हे भरतवंशिन् ! इसके पीछे कर्ण के हाथ से घायल नकुल ने सर्प के समान अस्सी बाणों से सूर्य के पुत्र को छेदा ९ कर्ण ने सुनहरी पुङ्ख और तीक्ष्णधारवाले बाणों से उसके धनुष को काटकर तीस बाणों से नकुल को पीड़ित किया १० उन बाणों ने उसके कवच को काटकर रुधिर को ऐसे पान किया जैसे कि विषधर सर्प पृथ्वी को छेदकर जल को पीता है ११ इसके पीछे नकुल ने सुवर्णपृष्ठवाले असह्य दूसरे धनुष को लेकर कर्ण को सत्तर बाण से और सारथी को तीन बाण से घायल किया १२ फिर क्रोधयुक्त शत्रु के वीरों के मारनेवाले नकुल ने बड़े तीक्ष्ण क्षुरप्र से कर्ण के धनुष को काटा १३ फिर हँसते हुए वीर नकुल ने इस टूटे धनुषवाले सब लोक के महारथी कर्ण को तीन सौ शायकों से घायल किया १४ हे श्रेष्ठ ! तब तो नकुल के हाथ से पीड्यमान कर्ण को देखकर रथियों ने देवताओं समेत बड़ा भारी आश्चर्य किया १५ तब सूर्य के पुत्र कर्ण ने दूसरे धनुष को लेकर नकुल को पाँच बाणों से जत्रुस्थान पर घायल किया १६ वहाँ जत्रुस्थान में नियत होनेवाले बाणों से नकुल ऐसा शोभायमान हुआ १७ जैसे कि संसार में प्रकाश करता हुआ सूर्य अपनी किरणों से शोभायमान होता है हे श्रेष्ठ ! इसके पीछे नकुल ने शीघ्रगामी सात बाणों से कर्ण को छेदकर फिर उसके धनुष की कोटि को काटा १८ इसके पीछे उसने बड़े वेगवान् दूसरे धनुष को लेकर युद्ध में बाणों करके नकुल की दिशाओं को ढक दिया १९ अकस्मात् कर्ण के बाणों से घिरे हुए उस महारथी ने अपने बाणों से ही कर्ण के बाणों को काटा २० इसके पीछे आकाश में बाणों का जाल फैला हुआ ऐसा दिखाई दिया जिस प्रकार पटबीजनों के समूहों से व्याप्त आकाश होता है २१ हे राजन् ! उन छोड़े हुए सैकड़ों बाणों से नकुल ऐसा ढक गया

जैसे कि शलभाओं के समूहों से कोई ढक जाता है २२ वह सुवर्ण से चित्रित वारंवार गिरते हुए पंक्तिरूप बाण ऐसे शोभायमान हुए जैसे कि पंक्तिरूप क्रौञ्च नाम पक्षी होते हैं २३ बाणजाल से आकाश को व्याप्त हो जाने और सूर्य के ढक जाने से कोई अन्तरिक्षगामी जीव पृथ्वी पर नहीं गिरा २४ बाणों के समूहों से चारों ओर के मार्गों के रुक जाने पर दोनों महात्मा उदयमान काल सूर्य के समान शोभायमान हुए २५ हे राजेन्द्र! कर्ण के धनुष से गिरे हुए बाणों के समूहों से घायल दुःख से दुःखित और अत्यन्त पीड्यमान सब सोमक पृथक्-पृथक् हो गये २६ इसी प्रकार नकुल के बाणों से घायल आपकी सेना भी दिशाओं में ऐसे छिन्न-भिन्न हो गई जैसे कि वायु के वेग से बादलों के समूह तिर्रबिर्रे हो जाते हैं २७ तब उन दोनों के दिव्य और बड़े बाणों से घायल वह दोनों सेना बाणों की आधिक्यता को विचार कर चित्रलिखीसी खड़ी रह गईं २८ कर्ण और नकुल के बाणों से उन मनुष्यों के समूहों के हट जाने पर उन दोनों महात्माओं ने बाणों की वर्षा से परस्पर में घायल किया २९ परस्पर मारने के अभिलाषी वह दोनों अकस्मात् सेना के मस्तक पर दिव्य शस्त्रों के दिखानेवाले और सेनाओं के ढकनेवाले हुए ३० नकुल के छोड़े कङ्कपक्ष से जटित बाण कर्ण को ढककर आकाश में नियत हुए ३१ इसी प्रकार कर्ण के चलाये हुए बाण नकुल को ढककर आकाश में नियत हुए ३२ हे राजन्! बादलों से ढके हुए सूर्य और चन्द्रमा के समान बाण पञ्जर में प्रविष्ट होकर वह दोनों किसी को दिखाई नहीं दिये ३३ इसके पीछे युद्ध में क्रोधयुक्त कर्ण ने शरीर को बड़ा घोर करके ३४ बाणों की वर्षा से नकुल को चारों ओर से ढक दिया हे महाराज! कर्ण के बाणों से ढके हुए उस नकुल ने ऐसे पीड़ा को नहीं माना जैसे कि बादलों से ढका हुआ सूर्य पीड़ा को नहीं मानता है ३५ हे श्रेष्ठ, धृतराष्ट्र! इसके पीछे कर्ण ने हँसकर युद्ध में हज़ारों बाणजालों को उत्पन्न किया ३६ उस महात्मा के बाणों से सब संसार छायामान हुआ और गिरते हुए उत्तम बाणों से बादल के समान छाया उत्पन्न हो गई ३७ हे महाराज! इसके पीछे हँसते हुए कर्ण ने महात्मा नकुल के

धनुष को काटकर सारथी को रथ की नीड़ से गिरा दिया ३८ हे भरत-वंशिन्! इसके अनन्तर तीक्ष्ण धार चार बाणों से उसके चारों घोड़ों को शीघ्र ही मारकर यमपुर को भेजा ३९ इसके पीछे फिर तीक्ष्ण बाणों से इसके उस दिव्य रथ पताका और चक्र के रक्षकों समेत गदा और खड्ग को भी तिल के समान खण्ड-खण्ड कर दिया ४० और सूर्य चन्द्रमा के चित्रवाली ढाल और अन्य सब प्रकार के अस्त्र-शस्त्रों को भी काट डाला हे राजन्! वह रथ और कवच से विहीन शीघ्र ही रथ से उतरकर ४१ परिघ को लेकर नियत हुआ तब कर्ण ने उसके उठाये हुए उस महाघोर परिघ को ४२ अत्यन्त तीक्ष्ण भारवाहक बाणों से तोड़ डाला तब तो कर्ण ने उसको शस्त्रहीन देखकर टेढ़े पर्ववाले ४३ अनेक बाणों से घायल किया परन्तु इसको अधिक पीड्यमान नहीं किया युद्ध में उस शस्त्रज्ञ पराक्रमी कर्ण से घायल ४४ होकर महाव्याकुल नकुल अकस्मात् भागा तब तो वारंवार हँसते हुए कर्ण ने उसके पास जाकर ४५ अपनी प्रत्यञ्चा समेत धनुष को उसके कण्ठ में डाल दिया इसके पीछे वह नकुल कण्ठ में लगे हुए उस धनुष से ऐसा शोभायमान हुआ ४६ जैसे कि आकाश में चन्द्रमा अपने मण्डल से युक्त होता है व जैसे श्याममेघ इन्द्रधनुष से शोभित होता है ४७ इसके पीछे कर्ण ने कहा कि तुमने मिथ्या कहा था अब वारंवार घायल हुए प्रसन्न चित्त होकर फिर कहो ४८ हे पराक्रमिन्, पाण्डव! तुम कौरवों के साथ मत लड़ो हे तात! अपने समानवालों से लड़ो हे पाण्डव! लज्जा मत करो ४९ हे माद्री के पुत्र! घर को जावो अथवा जहाँ श्रीकृष्ण और अर्जुन हैं वहाँ जावो हे महाराज! ऐसा कहकर उसको छोड़ दिया ५० तब उस धर्मज्ञ शूरवीर ने मारने योग्य को नहीं मारा हे राजन्! कुन्ती के वचन को स्मरण करके उसको छोड़ दिया ५१ फिर धनुषधारी कर्ण से छोड़ा हुआ नकुल लज्जायुक्त शीघ्र ही युधिष्ठिर के रथ के पास गया ५२ कर्ण से अत्यन्त सन्तप्त किया हुआ घट में बन्द हुए सर्प के समान दुःख से दुःखी वारंवार श्वास लेता हुआ रथ के ऊपर सवार हुआ ५३ कर्ण भी उसको विजय करके शीघ्र ही बड़े पताकावाले चन्द्रवर्ण घोड़े रखनेवाले रथ की सवारी

से पाञ्चालों के सम्मुख गया ५४ वहाँ पाञ्चालों के रथसमूहों पर जाते हुए सेनापति को देखकर पाण्डवों में बड़ा शब्द हुआ ५५ हे महाराज ! महाचक्र के समान घूमते हुए कर्णने मध्याह्नके समय शूरवीरोंका नाशकिया ५६ उस समय हे श्रेष्ठ, धृतराष्ट्र ! वहाँ पर हमने टूटी हुई ध्वजा पताका फूटी आँख के मृतक घोड़े और सारथियों समेत कितने ही रथों से ५७ हटे हुए पाञ्चालों के रथसमूहों को देखा वहाँ भ्रान्तियुक्त हाथी और रथ जहाँ तहाँ ऐसे घूमते थे ५८ जैसे कि महावन में दावानल से जले हुए हाथी होते हैं टूटे हुए कुम्भ रुधिर से भरे खण्डित हाथ ५९ अङ्ग भङ्ग आदि और कोई पूँछ कटे हुए हाथी महात्मा के हाथ से घायल टूटे हुए बादलों के समान गिर पड़े ६० नाराचबाण और तोमरों से भयभीत हाथी उसके सम्मुख ऐसे गये जैसे कि शलभा नाम पक्षी अग्नि के सम्मुख जाते हैं ६१ जल डालनेवाले पर्वतों के समान अङ्गों से रुधिर की रक्षा करते हुए अन्य बड़े-बड़े हाथी शब्द करते हुए दृष्टि पड़े ६२ वहाँ हमने उरःछिदवाले बालबन्दों से वियुक्त घोड़ों को सुवर्ण चाँदी और कांसे के भूषणों से पृथक् ६३ और अन्य-अन्य भूषण और लगामों के विना चामर ज़ीनपोश और गिरे हुए तूणीर ६४ और युद्ध में शोभा देनेवाले शूरवीर सवारों सहित युद्ध भूमि में घूमते हुओं को देखा ६५ हे भरतवंशिन् ! हमने प्रास खड्ग और दुधारे खड्ग से रहित लोहे के कवच और दिस्तारों के धारण करनेवाले अश्वारूढ़ों को देखा ६६ और मरे वा मरनेवाले अथवा काँपते हुए नाना प्रकार के अङ्गों से रहित युद्ध करनेवालों को भी जहाँ तहाँ देखा ६७ हमने रथियों के मरने पर सुवर्ण से जटित शीघ्रगामी घोड़ों से युक्त शीघ्र घूमते हुए रथों को देखा ६८ हे भरतवंशिन् ! हमने अक्षकूबर और पायेवाले पताका ध्वजा से रहित कितने ही अन्य रथों को देखा ६९ वहाँ कर्ण के तीक्ष्ण बाणों से घायल मृतकरूप जहाँ तहाँ दौड़नेवाले रथियों को देखा ७० इसी प्रकार शस्त्रों से खाली बाण रखनेवाले बहुत से मृतकों को देखा और तारका जालों से ढके हुए उत्तम कण्ठों से शोभायमान ७१ नाना प्रकार की विचित्र पताकाओं से अलंकृत चारों ओर से दौड़नेवाले हाथियों को देखा ७२

इसी प्रकार चारों ओर को कर्ण के धनुष से निकले हुए बाणों से टूटे हुए शिर, भुजा और जङ्घाओं को देखा ७३ कर्ण के बाणों से घायल और तेज बाणों से लड़नेवाले युद्धकर्ताओं का बड़ा भयानक दुःख वर्तमान हुआ ७४ युद्ध में कर्ण के हाथ से घायल वह सृञ्जय उसके सम्मुख ऐसे जाते थे जैसे कि अग्नि के सम्मुख पतङ्ग जाते हैं ७५ प्रलयकाल की अग्नि के समान जहाँ तहाँ सेनाओं के भस्म करनेवाले उस महारथी कर्ण को क्षत्रियों ने त्याग किया ७६ जो पाञ्चालों के महारथी वीर लोग मरने से बाकी रहे थे उन शीघ्रगामी पृथक्-पृथक् होनेवाले महारथियों के पीछे से बाणों को छोड़ता हुआ कर्ण सम्मुख दौड़ा ७७ उस महाबली सूतपुत्र ने उन टूटे कवच ध्वजावाले दुःखी वीरों को बाणों से ऐसे सन्तप्त किया ७८ जैसे कि मध्याह्न के समय सूर्य जीवधारियों को तपाता है ॥ ७९ ॥

इति श्रीमहाभारते कर्णपर्वणि कर्णयुद्धे पंचविंशोऽध्यायः ॥ २५ ॥

छब्बीसवाँ अध्याय

सञ्जय बोले कि आपके पुत्र युयुत्सु की सेना के भगानेवाले उलूक के सम्मुख गया और तिष्ठ-तिष्ठ इस वचन को कहा १ हे राजन्! उसके पीछे युयुत्सु ने वज्र के समान तीक्ष्ण धारवाले बाणों से महाबली उलूक को घायल किया २ फिर क्रोधयुक्त उलूक ने युद्ध में आपके पुत्र के धनुष को क्षुरप्र से काटकर करणी नाम बाण से उसको घायल किया ३ फिर लाल नेत्र करनेवाले युयुत्सु ने उस टूटे धनुष को डालकर दूसरे बड़े वेगवान् उत्तम धनुष को हाथ में लिया ४ उसके पीछे शकुनी के पुत्र को सात बाणों से और तीन बाणों से सारथी को घायल करके वारंवार छेदा ५ फिर उलूक ने उसको सुवर्ण से चित्रित बीस बाणों से घायल करके महा क्रोध में भरकर उसकी सुनहरी ध्वजा को काटा ६ हे राजन्! वह टूटी हुई बड़ी भारी सुवर्ण की ध्वजा युयुत्सु के सम्मुख गिर पड़ी ७ फिर क्रोध से मूर्च्छित युयुत्सु ने ध्वजा को टूटी हुई देखकर पाँच बाणों से उलूक को छाती पर घायल किया हे श्रेष्ठ, राजन्! फिर उलूक ने युद्ध

में तेल से स्वच्छ किये हुए भल्लों से उसके सारथी के शिर को काटा ८।९ तब युयुत्सु के सारथी का वह कटा हुआ शिर पृथ्वी पर ऐसे गिरा जैसे अपूर्व तारा आकाश से पृथ्वी पर गिरता है १० चारों घोड़ों को मारा और उसको पाँच बाणों से भेदा फिर इस पराक्रमी के हाथ से घायल वह युयुत्सु दूसरे रथ पर चला गया ११ हे राजन्! युद्ध में उलूक उसको विजय करके शीघ्रता से तीक्ष्ण बाणों को फेंकता पाञ्चालों और सृञ्जयों को मारता हुआ सृञ्जयों के सम्मुख गया १२ हे महाराज! भय से उत्पन्न होनेवाली व्याकुलता से रहित आपके पुत्र श्रुतकर्मा ने अर्ध-निमेष मारने में ही शतानीक को घोड़े रथ और सारथी से रहित कर दिया १३ फिर मृतक घोड़ेवाले रथ पर नियत अत्यन्त क्रोधयुक्त शतानीक ने आपके पुत्र के ऊपर गदा को फेंका १४ वह गदा, रथ, घोड़े, सारथी समेत रथ को भस्म कर कवच को फाड़ती हुई शीघ्र पृथ्वी पर गिर पड़ी १५ रथ से विहीन परस्पर में देखनेवाले कौरवों की कीर्ति के बढ़ानेवाले दोनों वीर युद्ध में हट गये १६ फिर भय से उत्पन्न होनेवाली व्याकुलता से रहित आपका पुत्र रथ पर सवार हुआ और शीघ्रता करनेवाला शतानीक भी प्रतिविन्ध्य के रथ पर गया १७ फिर अत्यन्त क्रोधयुक्त शकुनी ने तीक्ष्ण धारवाले बाणों से सुतसोम को ऐसे कम्पायमान नहीं किया जैसे कि जल का समूह पर्वत को कम्पित नहीं कर सकता १८ हे भरतवंशिन्! सुतसोम ने पिता के बड़े शत्रु शकुनी को देखकर हज़ारों बाणों से ढक दिया १९ तेज अस्त्र और मित्र के अर्थ लड़नेवाले विजय से शोभायमान शकुनी ने शीघ्र ही दूसरे बाणों से उन बाणों को काटा २० और क्रोधयुक्त होकर युद्ध में उन बाणों को भी तीक्ष्ण धारवाले बाणों से रोककर तीन बाणों से सुतसोम को घायल किया २१ हे महाराज! आपके साले ने बाणों से उसके घोड़े ध्वजा और सारथी को तिल के समान खण्ड-खण्ड किया इस हेतु से सब मनुष्य बड़े शब्द से पुकारे २२ हे श्रेष्ठ, धृतराष्ट्र! वह मृतक घोड़े और टूटी ध्वजावाला रथ से रहित होकर उत्तम रथ को लेकर रथ से पृथ्वी पर खड़ा हुआ २३ सुनहरी पुङ्खवाले तीक्ष्ण धारवाले बाणों

को छोड़ता हुआ युद्ध में आपके साले के उस रथ को ढक दिया २४ वह महारथी शकुनी शलभनाम पक्षी के समूहों के समान रथ के समीप वर्तमान बाणों के समूहों को देखकर पीड्यमान नहीं हुआ २५ और बड़े यशस्वी ने अपने बाणों के समूहों से उसके बाणों को मथ डाला उस स्थान पर युद्ध करनेवाले आकाशवासी सिद्ध भी प्रसन्न हुए २६ सुतसोम के उस अद्भुत और श्रद्धा के योग्य कर्म को देखकर प्रसन्न हुए और बहुत से पदाती और रथ सवार शकुनी के साथ युद्ध करनेवाले हुए २७ हे राजन्! तीक्ष्ण वा बड़े वेगवान् टेढ़े पर्ववाले भल्लों से उसके धनुष और सब तूणीरों को तोड़ा २८ फिर वह टूटे धनुष रथ से विहीन वैडूर्य और नील कमल के वर्ण हाथीदाँत के मूठ रखनेवाले खड्ग को उठाकर बड़ी ध्वनि से गर्जा २९ उसके पीछे बुद्धिमान् सुतसोम के घुमाये हुए निर्मल आकाश के समान उस खड्ग को कालदण्ड के समान समझा ३० हे महाराज! वह शिक्षायुक्त पराक्रमी खड्गधारी एकाएकी हजारों प्रकार से चौदह मण्डलों को घूमा ३१ उनके नाम भ्रान्त, उद्भ्रान्त, आविद्ध, आप्लुत, विप्लुत, सृतसम्पात, समुदीर्ण इन मण्डलों को युद्ध में दिखाया यह सात मण्डल लोम विलोम के विभाग से द्विगुणित होकर चौदह हो जाते हैं ३२ फिर उसके पीछे पराक्रमी शकुनी ने बाणों को उसके ऊपर फेंका उसने उन आते हुए बाणों को उत्तम खड्ग से काटा ३३ हे महाराज! इसके अनन्तर क्रोधयुक्त शकुनी ने फिर भी सर्प के विष के समान बाणों को सुतसोम के ऊपर फेंका ३४ युद्ध में गरुड़जी के समान पराक्रमी सुतसोम ने अपनी हस्तलाघवता को दिखाते हुए खड्ग की शिक्षा के पराक्रम से उन बाणों को काटा ३५ हे राजन्! तब दायें बायें मण्डलों के घूमनेवाले उस सुतसोम के प्रकाशमान खड्ग को बड़े तीक्ष्ण क्षुरप्र से काटा और रुका हुआ खड्ग एक बार ही पृथ्वी पर पड़ा और उस श्रेष्ठ खड्ग का आधा भाग उसके हाथ में नियत रहा ३६ । ३७ महारथी सुतसोम ने खड्ग को टूटा जानकर और छः चरण हटकर फिर उस आधे खड्ग को प्रहार किया ३८ वह सुवर्ण और हीरों से अलंकृत खड्ग उस महात्मा के डोरी समेत धनुष को

काटकर शीघ्र ही पृथ्वी पर गिर पड़ा ३६ फिर सुतसोम श्रुतिकीर्ति के बड़े रथ पर चला गया और शकुनी भी बड़े कष्ट से विजय होनेवाले दूसरे घोर धनुष को लेकर ४० शत्रुओं के बहुत से समूहों को मारता हुआ पाण्डवीय सेना के सम्मुख गया हे राजन्! युद्ध में निर्भय के समान घूमनेवाले शकुनी को देखकर पाण्डवों के बड़े शब्द हुए महात्मा शकुनी के हाथ से वह अहङ्कारी शस्त्रों की धारण करनेवाली सेना भागती हुई दृष्टि पड़ी जैसे कि देवराज इन्द्र ने दैत्यों की सेना को मर्दन किया इसी प्रकार शकुनी ने भी पाण्डवों की सेना का नाश किया ४१।४३॥

इति श्रीमहाभारते कर्णपर्वणि सुतसोमसौबलयुद्धे षड्विंशोऽध्यायः ॥ २६ ॥

सत्ताईसवाँ अध्याय

सञ्जय बोले कि हे राजन्! कृपाचार्य ने युद्ध में धृष्टद्युम्न को ऐसे रोका जैसे कि वन में हाथी को सिंह रोकता है १ हे भरतवंशिन्! वहाँ उस पराक्रमी गौतम कृपाचार्यजी से रुका हुआ धृष्टद्युम्न एकचरण चलने को भी समर्थ नहीं हुआ २ कृपाचार्य के रथ को धृष्टद्युम्न के रथके समीप देखकर सब जीवमात्र भयभीत होकर नाश को मानने लगे ३ वहाँ पर चित्त से उदास होकर रथी और अश्वारूढ़ कहने लगे कि निश्चय करके द्रोणाचार्य के मरने से द्विपादों में श्रेष्ठ ४ बड़े तेजस्वी दिव्यास्त्रों के जाननेवाले बड़े बुद्धिमान् शार्दूलरूप कृपाचार्य अत्यन्त क्रोधयुक्त हैं अब कृपाचार्य के हाथ से धृष्टद्युम्न की कुशल ५ और इस सब सेना का भी भय से निवृत्त होना और हम सब भागनेवालों का भी इस ब्राह्मण से बचना कठिन विदित होता है ६ क्योंकि यह आचार्यरूप काल के समान दृष्टि पड़ता है ये कृपाचार्य अब द्रोणाचार्य के मार्ग पर चलेंगे ७ यह कृपाचार्य सदैव हस्तलाघव करके युद्ध में विजय का पानेवाला अस्त्रज्ञ पराक्रमी होकर क्रोधयुक्त है ८ अब धृष्टद्युम्न युद्ध में मुख को फेरनेवाला दिखाई देता हे महाराज! वहाँ उन दोनों के सम्मुख होने में आपके पुत्रों के नाना प्रकार के शब्द दूसरों के साथ में कहे हुए सुने गये ९ इसके पीछे शार्दूल कृपाचार्य ने क्रोध से बड़ी-बड़ी श्वासें लेकर १० सदैव

चेष्टा करनेवाले धृष्टद्युम्न को सब अङ्गों पर पीड्यमान किया फिर महात्मा कृपाचार्य से घायल होकर बड़े मोह में व्याकुल होके उसने युद्ध में ११ करने के योग्य कर्म को नहीं जाना इसके पीछे सारथी ने कहा हे धृष्टद्युम्न! कुशल है १२ मैंने कहीं तेरे ऐसे समय को नहीं देखा था दैवयोग से सब ओर से तेरे मर्मस्थलों को लक्ष्य करके इस उत्तम ब्राह्मण के फेंके हुए बाण तेरे मर्मों के छेदनेवाले मर्मों पर पड़े हैं जो तुम कहो तो रथ को शीघ्र ही ऐसे लौटाऊँ जैसे कि समुद्र से नदी के वेग को हटाते हैं १३।१४ मैं ब्राह्मण को अवध्य मानता हूँ इसी से तेरा पराक्रम नष्ट हो गया है हे राजन्! यह सारथी के वचन को सुनकर धृष्टद्युम्न बड़े धीरेपने से यह वचन बोला १५ हे तात! मेरा चित्त अचेत होता है और अङ्गों पर पसीना उत्पन्न होता है और शरीर में कम्प और रोमाञ्च खड़े हैं १६ युद्ध में ब्राह्मण को त्याग करके उधर को बड़े धीरे-धीरे चल जहाँ कि अर्जुन है हे सारथे! अब युद्ध में अर्जुन को या भीमसेन को पाकर १७ कुशल होगी यही मेरा दृढ़ विश्वास है हे महाराज! इसके पीछे वह सारथी घोड़ों को मारता हुआ १८ बड़ी शीघ्रता से वहाँ गया जहाँ बड़ा धनुर्धर भीमसेन आपकी सेना के मनुष्यों से युद्ध कर रहा था हे श्रेष्ठ! तब गौतम कृपाचार्य धृष्टद्युम्न के रथ को भागा हुआ देखकर १९ सैकड़ों बाणों को छोड़ते हुए उसके पीछे गये और शत्रु के विजय करनेवाले ने वारंवार शङ्ख को बजाया २० और धृष्टद्युम्न को ऐसे भयभीत किया जैसे कि इन्द्र ने नमुचि को भयभीत किया था फिर भीष्मजी के मृत्युरूप विजयी शिखण्डी को २१ वारंवार मन्द मुसकान करते हुए कृतवर्मा ने रोका तब तो शिखण्डी ने भी हार्दिक्यों के महारथी को पाकर तीक्ष्ण धारवाले पाँच बाणों से जत्रुस्थान पर घायल किया फिर हँसते हुए महारथी कृतवर्मा ने साठ बाणों से २२।२३ शिखण्डी को घायल करके एक बाण से उसके धनुष को काटा फिर पराक्रमी द्रुपद के पुत्र ने दूसरे धनुष को लेकर २४ अत्यन्त क्रोधयुक्त होकर कृतवर्मा से तिष्ठ-तिष्ठ ऐसा वचन कहा हे राजन्! इसके अनन्तर सुनहरी पुङ्खवाले नौ बाणों को उसके ऊपर चलाया २५ वह बाण उसके कवच पर

लगकर गिर पड़े उन निष्फल पृथ्वी पर गिरे हुए बाणों को देखकर २६ अत्यन्त तीक्ष्ण क्षुरप्र से धनुष को काटा फिर टूटे धनुषवाले कृतवर्मा को २७ शिखण्डी ने क्रोधयुक्त होकर अस्सी बाणों से छाती और भुजा पर घायल किया तब अत्यन्त क्रोधयुक्त कृतवर्मा ने अङ्गों से ऐसे रुधिर को डाला जैसे कि मटके से जल डाला जाता है फिर रुधिर से भरा हुआ कृतवर्मा ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि वर्षा से धातु रखने-वाला पर्वत होता है इसके पीछे प्रभु कृतवर्मा ने बाण समेत धनुष को लेकर २८। ३० बाणों के समूहों से शिखण्डी को स्कन्ध स्थान में घायल किया फिर शिखण्डी स्कन्ध पर लगे हुए बाणों से ऐसा शोभा-यमान हुआ जैसे कि छोटी बड़ी शाखाओं से बड़ा वृक्ष शोभित होता है ३१ वह दोनों परस्पर में अत्यन्त घायल और रुधिर में भरे हुए ऐसे शोभित हुए ३२ जैसे कि परस्पर सींगों से घायल दो बैल होते हैं परस्पर में मारने की इच्छा करनेवाले वह दोनों महारथी ३३ वहाँ हज़ारों मण्डलों को घूमे हे महाराज! कृतवर्मा ने शिखण्डी को ३४ तीक्ष्ण धार सुनहरी पुङ्खवाले सत्तर बाणों से घायल किया इसके पीछे शीघ्रता-युक्त युद्धकर्ताओं में श्रेष्ठ भोजवंशीय कृतवर्मा ने युद्ध में ३५ मृत्युकारी घोर बाण को उसके ऊपर छोड़ा हे राजन्! वह शिखण्डी उस बाण से घायल होकर शीघ्र मूर्च्छायुक्त हो गया ३६ और मूर्च्छा से अचेत होकर अकस्मात् ध्वजा की यष्टी का आश्रय लिया और सारथी इस महारथी को शीघ्र ही युद्ध से दूर ले गया ३७ इस शूरवीर शिखण्डी के परास्त होने पर कृतवर्मा के बाण से दुःखी वारंवार श्वास लेनेवाली चारों ओर से घायल वह पाण्डवीय सेना भागी ॥ ३८। ३९ ॥

इति श्रीमहाभारते कर्णपर्वणि सप्तविंशोऽध्यायः ॥ २७ ॥

अट्ठाईसवाँ अध्याय

सञ्जय बोले कि हे महाराज! इसके पीछे अर्जुन ने आपकी सेना को पाकर चारों ओर से छिन्न भिन्न ऐसा कर दिया जैसे कि वायु रुई को तिर्रे बिर्रे कर देता है १ तब त्रिगर्त, शिबि, शाल्व, संसप्तक और कौरवों की नारायणी

सेना उसके सम्मुख गई हे भरतवंशिन्! सत्यसेन, चन्द्रदेव, मित्रदेव, शत्रुञ्जय, सौश्रुति, चित्रसेन, मित्रवर्मा और बड़े धनुर्धारी अपने पुत्र भाइयों समेत राजा त्रिगर्त ने २ । ४ बाणों के समूहों को छोड़ा और युद्ध में अर्जुन पर एकाएकी बाणों की वर्षा करते हुए सम्मुख वर्तमान होकर ऐसे बिलायमान हो गये जैसे कि गरुड़ को देखकर सर्प विलायमान होते हैं ५ । ६ हे महाराज! युद्ध में घायल उन युद्धकर्ताओं ने पाण्डवों को ऐसे त्याग नहीं किया जैसे कि घायल हुए शलभ अग्नि को नहीं त्याग करते हैं ७ सुतसेन ने तीन बाण से मित्रदेव ने तिरसठ बाणों से चन्द्रसेन ने सात बाणों से युद्ध में पाण्डवों को घायल किया ८ मित्रवर्मा ने तिहत्तर बाणों से सौश्रुतिने सात बाणों से शत्रुञ्जय ने बीस बाणों से सुशर्मा ने नौ बाणों से ९ घायल किया बहुतों के हाथ से घायल उस अर्जुन ने इस क्रम से युद्ध में उन राजाओं को घायल किया कि सौश्रुति को सात बाणों से सुतसेन को तीन बाणों से शत्रुञ्जय को बीस बाणों से चन्द्रसेन को आठ बाणों से मित्रदेव को सौ बाणों से श्रुतिसेन को तीन बाणों से १० । ११ मित्रवर्मा को नौ बाणों से सुशर्मा को आठ बाणों से घायल किया और राजा शत्रुञ्जय को बाणों से मारकर १२ सौश्रुति के शिर को धड़ समेत शरीर से जुदा कर दिया और शीघ्र ही चन्द्रदेव को बाणों के द्वारा यमलोक में पहुँचाया १३ हे महाराज! इसी प्रकार उपाय करनेवाले अन्य महारथियों को भी पाँच-पाँच बाणों से रोका १४ फिर अत्यन्त क्रोधयुक्त श्रुतिसेन ने युद्ध में श्रीकृष्णजी को लक्ष्य कर उनके ऊपर बड़े तोमर को फेंक सिंहनाद से गर्जा वह सुवर्ण दण्डवाला लोहे का तोमर महात्मा माधवजी की वामभुजा को छेदकर पृथ्वी पर गिर पड़ा १५ । १६ उस समय उस बड़े युद्ध में घायल माधवजी के हाथ से चाबुक और घोड़ों की रस्सियाँ छूट गईं १७ हे राजन्! तब कुन्ती के पुत्र अर्जुन ने वासुदेवजी को अङ्ग से घायल देखकर बड़ा क्रोध किया और श्रीकृष्णजी से कहने लगा १८ हे महाबाहो, प्रभो! घोड़ों को सुतसेन के पास पहुँचाओ मैं उसको अपने तीक्ष्ण बाणों से यमलोक में पहुँचाऊँगा १९ फिर श्रीकृष्णजी ने पूर्व के समान दूसरे चाबुक और घोड़ों की डोरी को

पकड़ कर उन घोड़ों को सुतसेन के रथ पर चलाया २० कुन्ती के पुत्र महारथी अर्जुन ने श्रीकृष्ण को घायल देखकर तीक्ष्ण बाणों से सुतसेन को रोककर २१ सेना के मध्य में अत्यन्त तीक्ष्ण धारवाले भल्लों से उस राजा के कुण्डलों समेत बड़े शिर को देह से काटा २२ उसको मारकर तीक्ष्ण बाणों से मित्रवर्मा को और मत्स्यदन्त नाम तीक्ष्ण बाणों से उसके सारथी को मारा २३ हे श्रेष्ठ! इसके पीछे अत्यन्त क्रोधयुक्त पराक्रमी अर्जुन ने सैकड़ों बाणों से संसप्तकों के हज़ारों समूहों को गिराया २४ हे राजन्! उसके पीछे उस महारथी ने सुवर्ण पुङ्खवाले क्षुरप्र से महात्मा मित्रसेन के शिर को काटा २५ और अत्यन्त क्रोध से सुशर्मा को जत्रु-स्थान पर घायल किया इसके पीछे क्रोध में भरे दशों दिशाओं को शब्दायमान करनेवाले सब संसप्तकों ने अर्जुन को घेरकर शस्त्रों के समूहों से घायल किया इन्द्र के समान पराक्रमी बड़े साहसी संसप्तकों से पीड्यमान महारथी अर्जुन ने २६ । २७ ऐन्द्र अस्त्र को प्रकट किया हे राजन्! उस ऐन्द्रास्त्र से हज़ारों बाण प्रकट हुए हे श्रेष्ठ, राजन्, धृत-राष्ट्र! जहाँ तहाँ टूटी हुई ध्वजा धनुष और पताका समेत रथ बाजुओं के समेत तूणीरों के बड़े शब्द सुने गये २८ । २९ युद्ध में गिरनेवाले अक्ष, चक्र, बागडोर, योक्तर वरूथ और पार्षदों के शब्द सुने गये ३० गिरते हुए घोड़े, प्रास, दुधारा, खड्ग, गदा, परिघ, शक्ति, तोमर और पट्टिशों के भी बड़े-बड़े शब्द सुने गये ३१ चक्र, शतघ्नी और जङ्घाओं समेत भुजा, कण्ठसूत्र, बाजूबन्द समेत केयूरों के शब्द सुने गये ३२ हे भरतवंशिन्! हार, निष्क, कवच, छत्र, व्यजन और शिरों के मुकुटों समेत जहाँ तहाँ बड़ा भारी शब्द सुना गया सुन्दर कुण्डल नेत्रवाले पूर्णचन्द्रमा के समान मुखों से युक्त शिरों के समूह पृथ्वी में गिरे हुए ऐसे शोभायमान थे जैसे कि आकाशमण्डल में तारागण चमकते हैं सुन्दर माला वस्त्रालङ्कार आदि चन्दनों से लिप्त ३३ । ३५ मृतकों के शरीर पृथ्वी पर गिरे हुए दृष्टि पड़े तब युद्धभूमि गन्धर्व नगर के समान घोररूप हो गई ३६ वह सब पृथ्वी राजकुमार और महाबली क्षत्रिय और पड़े हुए हाथी घोड़ों से ३७ युद्ध में ऐसी दुर्गम हो गई जैसे कि

पर्वतों के गिरने से होती है, वहाँ महात्मा पाण्डव अर्जुन के रथ का मार्ग नहीं रहा ३८ इससे हे राजन् ! भल्लों से शत्रुओं को और घोड़े हाथियों को मारते हुए रथों के पाये बड़े पीड़ित होते थे ३९ उन रुधिर-रूप कीच रखनेवाले युद्ध में उस घूमनेवाले अर्जुन के पीड्यमान पायों को घोड़ों ने अच्छे प्रकार से चलाया ४० मन और वायु के समान सदैव शीघ्रगामी वह घोड़े बहुत थक गये फिर धनुषधारी अर्जुन के हाथ से घायल वह सब सेना ४१ बहुधा मुख फेरकर सम्मुख नियत नहीं हुई तब वह कुन्तीनन्दन अर्जुन युद्ध में संसप्तकों के बहुत समूहों को विजय करके निर्धूम अग्नि के समान प्रकाशमान होकर शोभायमान हुआ ॥ ४२ । ४३ ॥

इति श्रीमहाभारते कर्णपर्वणि महासंसप्तकयुद्धेऽष्टविंशोऽध्यायः ॥ २८ ॥

उन्तीसवाँ अध्याय

सञ्जय बोले कि, हे महाराज ! निर्भय होनेवाले के समान आप राजा दुर्योधन ने बहुत बाणों के छोड़नेवाले युधिष्ठिर को रोका १ धर्म-राज ने उस अकस्मात् आते हुए आपके पुत्र महारथी को शीघ्र घायल करके तिष्ठ-तिष्ठ इस वचन को कहा २ फिर उसने तीक्ष्ण धारवाले नौ बाणों से उसको घायल किया और अत्यन्त क्रोधयुक्त होकर उसने भल्ल से उसके सारथी को घायल किया ३ इसके पीछे युधिष्ठिर ने सुनहरी पुङ्खवाले तेरह बाणों को दुर्योधन के ऊपर फेंका ४ फिर महारथी ने चार बाणों से उसके चारों घोड़ों को मारकर पाँचवें बाण से उसके सारथी का शिर शरीर से जुदा कर दिया ५ फिर छठे बाण से राजा की ध्वजा को सातवें से धनुष को और आठवें से खड्ग को पृथ्वी पर गिराया फिर धर्म-राज ने पाँच बाणों से राजा को अत्यन्त पीड़ित किया ६ तब वह उस मरे सारथी और घोड़ेवाले रथ से कूदकर बड़ी आपत्तियों में फँसा हुआ आपका पुत्र पृथ्वी पर ही नियत हुआ फिर कर्ण अश्वत्थामा और कृपा-चार्य आदि उस आपत्ति में फँसे हुए राजा को देखकर ७ । ८ उसको चाहते हुए अकस्मात् सम्मुख आनकर वर्तमान हुए फिर सब लोगों ने

युधिष्ठिर को चारों ओर से घेरकर युद्ध में पीछे-पीछे चले हे राजन् ! इसके पीछे युद्ध जारी हुआ और उस महायुद्ध में हज़ारों बाजे बजे ६।१० और कलकला शब्द प्रकट हुआ जिस स्थान पर पाञ्चाल कौरवों से युद्ध कर रहे थे ११ वहाँ मनुष्य मनुष्य से, हाथी हाथी से, रथी रथियों से, घोड़े घोड़े से, अश्वसवार अश्वसवार से १२ हे महाराज ! उस युद्ध में देखने के योग्य बुद्धि से बाहर शस्त्रों से संयुक्त नाना प्रकार से उत्तम द्वन्द्वयुद्ध हुए १३ युद्ध में बड़े वेगवान् परस्पर मारने के इच्छावान् उन सब सवारों ने अपूर्व तीव्रतापूर्वक चित्तरोचक युद्ध किया १४ और युद्धकर्ताओं की वृत्ति में नियत होकर उन लोगों ने युद्ध में परस्पर शस्त्रों के प्रहार किये और किसी दशा में भी मुख को न मोड़ा १५ हे राजन् ! वह युद्ध एक मुहूर्त पर्यन्त देखने में बड़ा प्यारा हुआ इसके अनन्तर उन्मत्तों के समान बे मर्याद युद्ध वर्तमान हुआ १६ तीक्ष्ण धारवाले बाणों से चीरते हुए रथी ने हाथी को पाकर टेढ़े पर्ववाले बाणों से मारकर यमपुर को भेजा १७ युद्ध में बहुत से युद्धकर्ताओं को फेंकते हुए हाथियों ने जहाँ तहाँ घोड़ों को सम्मुख पाकर अत्यन्त भयकारक दशा से चीर डाला १८ बहुत से घोड़े रखनेवाले अश्वसवारों ने उत्तम घोड़ों को घेर कर इधर उधर दौड़कर तल के शब्द किये १९ इसके पीछे अश्वसवारों ने उस दौड़ते और भागते हुए हाथियों को बगल और पीठ की ओर से घायल किया २० हे राजन् ! मतवाले हाथी बहुत से घोड़ों को भगाकर किसी ने दाँतों से किसी ने पैरों से मलकर मारा २१ और क्रोधयुक्त होकर सवारों समेत घोड़ों को दाँतों से घायल किया फिर दूसरे पराक्रमियों ने अत्यन्त वेग से एक ने एक को पकड़कर फेंक दिया २२ पदातियों के हाथ से इन्द्रियों पर घायल हाथियों ने चारों ओर से पीड़ा के घोर शब्द किये और दशों दिशाओं को भागे २३ फिर उस महायुद्ध में एकाएकी छोड़कर भागनेवाले पदातियों के आभूषणों को झुककर उस युद्धभूमि में से उठा लिया २४ विजय के चिह्न पानेवाले बड़े-बड़े हाथियों के सवारों ने हाथी को झुकाकर अपूर्व-अपूर्व भूषणों को ले लिया और उनको छेदा २५ वहाँ उन बड़े वेगवान् पराक्रम से

मदोन्मत्त पदातियों ने उन युद्ध करनेवाले हाथियों के सवारों को घेरकर मारा २६ बड़े युद्ध में अच्छे शिक्षित हाथियों की सूँड़ों से आकाश को फेंके हुए अन्य युद्धकर्ता पृथ्वी पर गिरते हुए दाँतों की नोकों से अत्यन्त घायल हुए २७ कितने ही अकस्मात् पकड़कर दाँतों से मारे गये और कितने ही पदाती सेना के मध्य को पाकर २८ बड़े हाथियों से वारंवार उछाले हुए होकर घायल हुए और कितने ही युद्ध में पंखे के समान घुमा घुमाकर मारे गये २९ हे राजन्! कोई-कोई मनुष्य जो हाथियों के सम्मुख थे उनके शरीर उस युद्धभूमि में जहाँ तहाँ अत्यन्त घायल हुए ३० और कितने ही हाथी, प्रास, तोमर और शक्तियों से दोनों दाँतों के मध्य में कुम्भ और दन्तवेष्टों पर कठिन घायल हुए ३१ बगल में नियत बड़े भयानकरूप युद्धकर्ताओं के हाथ से घायल होकर कितने ही हाथी रथ और रथ के सवार वहाँ शरीर से घायल होकर गिर पड़े ३२ उस महायुद्ध में घोड़ों समेत सवारों ने ढाल बाँधनेवाले पदातियों को बड़ी शीघ्रता से अपने तोमरों से मर्दन किया ३३ हे श्रेष्ठ, राजन्, धृतराष्ट्र! जहाँ तहाँ हाथियों ने आभूषणों से अलंकृत कितने ही रथियों को पाकर और पकड़कर ३४ अकस्मात् उस घोररूप युद्ध में फेंक दिया और नाराचों से घायल होकर बड़े-बड़े पराक्रमी हाथी भी जहाँ तहाँ गिर पड़े ३५ युद्ध में शूरों ने शूरों को पाकर मुष्टिकाओं से व्यथित किया ३६ और परस्पर शिर के बालों को पकड़कर एक ने दूसरे को गिरा दिया और घायल किया और किसी ने ध्वजाओं को उठा के पृथ्वी पर गिराकर ३७ चरण से छाती को दबाकर फड़कते हुए शिरों को काटा ३८ इसी प्रकार दूसरों ने भी शस्त्र को जीवते शरीर में प्रवेश कर दिया हे भरतवंशिन्! वहाँ युद्धकर्ताओं का मुष्टियुद्ध अच्छे प्रकार से हुआ ३९ इसी प्रकार शिर के बालों का पकड़ना उग्र हुआ और भुजाओं का महायुद्ध बड़ा भयकारी हुआ इसी रीति से एक दूसरे से भिड़े हुए युद्ध में नाना प्रकार के शस्त्रों से बहुत प्रकार से एक ने एक के प्राणों को हरण किया युद्धकर्ताओं के भिड़ने और संकुल युद्ध होने पर ४० । ४१ हज़ारों कबन्ध अर्थात् धड़ उठ खड़े हुए और रुधिर से भरे हुए शस्त्र

कवच ४२ ऐसे शोभायमान हुए जैसे कि बड़े रङ्गों से रङ्गीन वस्त्र इन भयानक शस्त्रों से व्याकुल ४३ बड़े युद्ध में उन्मत्त गङ्गा के समान शब्दों से जगत् को पूर्ण किया बाणों से पीड्यमान अपने और दूसरों के कुछ नहीं जाने गये ४४ विजय के लोभी राजा लोग युद्ध करना चाहिये ऐसा समझकर युद्ध करते हैं हे महाराज! भाइयों ने भाइयों को और भिड़े हुए शत्रुओं को भी मारा ४५ दोनों सेना वीरों से व्याकुल युद्ध में वर्तमान हुईं हे राजन्! टूटे रथ और गिराये हुए हाथियों से ४६ और वहाँ पर पड़े हुए घोड़ों से वा गिराये हुए मनुष्यों से वह पृथ्वी क्षण भर ही में दुर्गम हो गई ४७ हे राजन्! एक क्षण में ही रुधिररूप जल की बहनेवाली नदी हो गई वहाँ कर्ण ने पाञ्चालों को और अर्जुन ने त्रिगर्त देशियों को मारा ४८ और भीमसेन ने कौरव लोगों को और हाथियों की सेना को सब रीति से मारा इस रीति से दिन के तीसरे भाग में सूर्य के होते हुए बड़े यश की चाहनेवाली कौरवीय और पाण्डवीय सेना का यह बड़ा नाश हुआ ॥ ४९ । ५० ॥

इति श्रीमहाभारते कर्णपर्वणि संकुलयुद्धे एकोनत्रिंशोऽध्यायः ॥ २९ ॥

तीसवाँ अध्याय

धृतराष्ट्र बोले कि, हे सञ्जय! मैंने बड़े असह्य और कठिन बहुत से दुःखों को और पुत्रों के नाश को तुझसे सुना १ हे सूत! जैसे कि तू मुझसे कहता है और जैसे युद्ध वर्तमान हुआ वैसे नहीं है यह मुझको अपनी बुद्धि से दृढ़ विश्वास है २ वहाँ महारथी दुर्योधन विरथ किया गया फिर धर्मपुत्र ने किस रीति से उससे युद्ध किया ३ उसके पीछे फिर तीसरी बार रोमहर्षण करनेवाला युद्ध कैसे हुआ हे सञ्जय! उसको मूल समेत मुझसे वर्णन कर ४ सञ्जय बोला कि हे राजन्! सेना के भिड़ने वा विभागियों के घायल होने पर विषैले सर्प के समान क्रोधयुक्त आपके पुत्र दुर्योधन ने दूसरे रथ पर सवार होकर धर्मराज युधिष्ठिर को देखकर सारथी से कहा कि शीघ्रतापूर्वक मुझको वहीं पहुँचा जहाँ पर पाण्डव लोग हैं ५ । ७ वह राजा युधिष्ठिर कवच और छत्रधारण किये हुए

शोभायमान है राजा की आज्ञा पाते ही सारथी ने उसके उत्तम रथ को ८ युद्ध में युधिष्ठिर के सम्मुख पहुँचाया उसके पीछे मतवाले हाथी की समान युधिष्ठिर ने सारथी को आज्ञा करी कि जहाँ दुर्योधन है वहीं चल वह रथियों में श्रेष्ठ शूरवीर दोनों भाई परस्पर में सम्मुख हुए ६ । १० उन क्रोधयुक्त युद्धदुर्मद महाधनुषधारी दोनों वीरों ने युद्ध में परस्पर बाणों की वर्षा करी ११ तदनन्तर राजा दुर्योधन ने युद्ध में तीक्ष्ण धारवाले भल्ल से उस धर्माभ्यासी युधिष्ठिर के धनुष को काटा फिर अत्यन्त क्रोधयुक्त युधिष्ठिर ने उस अपने अपमान को नहीं सहा इस हेतु से क्रोध-युक्त लाल नेत्र होकर दूसरे धनुष को लेके सेनामुख पर दुर्योधन की ध्वजा और धनुष को काटा १२ । १४ फिर उसने भी दूसरे धनुष को लेकर युधिष्ठिर को बहुत घायल किया तब तो उन अत्यन्त क्रोधयुक्तों ने परस्पर में शस्त्रों की वर्षा करी १५ सिंहों के समान अत्यन्त क्रोधयुक्त बैलों की समान गर्जनेवाले दोनों ने विजयाभिलाषी होकर परस्पर में घायल किया १६ फिर वह दोनों महारथी अवकाश को ढूँढ़ते हुए फिरने लगे इसके पीछे कर्ण पर्यन्त खैंचे हुए बाणों से घायल दोनों १७ ऐसे शोभायमान हुए जैसे कि फूले हुए किंशुक के वृक्ष शोभित होते हैं इसके पीछे वारंवार सिंहनादों को करते १८ उन दोनों नरोत्तमों ने उस बड़े युद्ध में तलधनुष और शङ्खों के शब्दों को किया १९ हे राजन् ! उन दोनों ने परस्पर में एक ने एक को बहुत पीड्यमान किया फिर क्रोधयुक्त युधिष्ठिर ने आपके पुत्र को २० वज्र के समान वेगवान् महा असह्य तीन बाणों से छाती पर घायल किया फिर राजा दुर्योधन ने सुनहरी पुङ्ख युक्त तीक्ष्ण धारवाले पाँच बाणों से शीघ्र ही उसको घायल किया २१ इसके पीछे राजा दुर्योधन ने तीक्ष्ण बड़ी भारी उल्कारूप लोहे की शक्ति को फेंका २२ उस अकस्मात् आती हुई शक्ति को देख-कर धर्मपुत्र युधिष्ठिर ने तीन तीक्ष्ण बाणों से काटा और उसको भी पाँच बाणों से घायल किया २३ इसके पीछे सुनहरी दण्डवाली महा-शब्द करनेवाली वह शक्ति गिर पड़ी और अग्निरूप बड़ी उल्का के समान गिरकर शोभायमान हुई २४ हे राजन् ! फिर आपके पुत्र ने

शक्ति को टूटा हुआ देखकर तीक्ष्ण धारवाले नौ बाणों से युधिष्ठिर को घायल किया २५ पराक्रमी शत्रु के हाथ से अत्यन्त घायल शत्रुहन्ता युधिष्ठिर ने दुर्योधन को विचार करके शीघ्र ही बाण को लिया २६ हे राजन् ! उस क्रोधयुक्त महाबली युधिष्ठिर ने उस बाण को धनुष में चढ़ाकर छोड़ा २७ फिर उस बाण ने आपके महारथी राजा को पाकर अचेत किया और पृथ्वी को फाड़ा २८ इसके पीछे युद्ध की इति श्री करने का अभिलाषी क्रोधयुक्त दुर्योधन शीघ्रता से गदा को उठाकर धर्मराज के सम्मुख गया धर्मराज ने यमराज के समान गदा उठानेवाले दुर्योधन को देखकर आपके पुत्र पर उस शक्ति को चलाया जो कि बड़ी वेगवान् अग्नि के समान देदीप्यमान उल्का के समान थी २९ । ३० उस गदा से कवच कटकर हृदय पर घायल रथ पर सवार अत्यन्त अचेत होकर गिर पड़ा और अचेत होगया ३१ उसके पीछे अपनी प्रतिज्ञा को स्मरण करनेवाले भीमसेन ने उनसे कहा कि हे राजन् ! यह आपके हाथ से नहीं मारा जायगा यह सुनकर युधिष्ठिर लौट गये ३२ इसके पीछे कृतवर्मा ने शीघ्र आकर आपके पुत्र राजा दुर्योधन को आपत्ति के समुद्र में डूबा हुआ पाया ३३ और भीमसेन भी सुवर्ण वस्त्रों से अलंकृत गदा को लेकर युद्ध में बड़े वेग से कृतवर्मा के सम्मुख गया ३४ हे महाराज ! तीसरे पहर युद्ध में विजयाभिलाषी आपके पुत्रों का युद्ध पाण्डवों के साथ इस रीति से हुआ ॥ ३५ ॥

इति श्रीमहाभारते कर्णपर्वणि द्वन्द्वयुद्धे त्रिंशोऽध्यायः ॥ ३० ॥

इकतीसवाँ अध्याय

सञ्जय बोले कि, इसके पीछे युद्ध में दुर्मद आपके युद्धकर्ताओं ने कर्ण को आगे करके फिर भी लौटकर देवासुरों के युद्ध के समान युद्ध किया १ मनुष्य, रथ, हाथी, घोड़े और शङ्खों के शब्दों से प्रसन्न नाना प्रकार के शस्त्रों की आधिक्यता से क्रोधयुक्त हो उन हाथी रथी और सवारों के समूहों ने सम्मुख होकर प्रहार किये २ उत्तम पुरुषों के श्वेत फरसे, खड्ग, पट्टिश और नाना प्रकार के भल्लों से हाथी, रथ और घोड़े

उस महायुद्ध में मारे गये और अनेक-अनेक प्रकार की सवारियों से मनुष्य चूर्ण होगये ३ कमल सूर्य और चन्द्रमा के समान श्वेत दाँत सुन्दर आँख नाक समेत मुख और अद्भुतकुण्डल मुकुटवाले मनुष्यों के कटे हुए शिरों से आच्छादित वह युद्धभूमि बड़ी ही शोभायमान हुई ४ तब सैकड़ों परिघ, मूसल, शक्ति, तोमर, नखर, भुशुण्डी और गदाओं से घायल हज़ारों हाथी, घोड़े, मनुष्य रुधिर की नदी के जारी करनेवाले हुए ५ मृतक घायल भयानक और अत्यन्त घायल रथ, मनुष्य, घोड़े, हाथीवाली शत्रुओं से घायल वह सेना ऐसी शोभायमान हुई जैसे कि संसार के नाश करने में यमराज का देश होता है ६ हे राजन्! इसके पीछे आपकी सेना के मनुष्य और देवकुमारों के समान आपके पुत्रों समेत उत्तम कौरव लोग जिनके आगे चलनेवाली असंख्य सेना थी सब मिलकर सात्यकी के सम्मुख गये ७ रुधिर से अत्यन्त भय उत्पन्न करनेवाले उत्तम पुरुष घोड़े, रथ और हाथियों से व्याप्त और उठे हुए समुद्र की समान शब्दायमान वह सेना देवता और असुरों की सेना के समान प्रकाशित होकर शोभायमान हुई ८ इसके पीछे इन्द्र के समान पराक्रमी युद्ध में विष्णु के समान सूर्य के पुत्र कर्ण ने सूर्य की किरणों के समान प्रकाशित पृषत्क नाम वामबाणों से शूरों में बड़े वीर सात्यकी को घायल किया ९ तब शीघ्रता करनेवाले सात्यकी ने बिषैले सर्प की समान नाना प्रकार के बाणों से पुरुषोत्तम कर्ण को रथ, घोड़े और सारथी समेत ढक दिया १० आपके शुभचिन्तक अतिरथी, हाथी, रथ, घोड़े और पदातियों समेत शीघ्र ही उस रथियों में श्रेष्ठ सात्यकी के बाणों से पीड्यमान सुषेण के पास गये ११ बड़े शीघ्रगामी शत्रुओं से दबाई हुई समुद्र के रूप वह सेना भागी तब धृष्टद्युम्न आदि के हाथ से मनुष्य, घोड़े, रथ और हाथियों का बड़ा विनाश हुआ १२ इसके पीछे नित्यकर्म से निवृत्त होकर बुद्धि के अनुसार प्रभु शिवजी के पूजनेवाले और शत्रुओं के मारने में निश्चय करनेवाले पुरुषोत्तम अर्जुन और केशवजी शीघ्र ही आपकी सेना के ऊपर चले १३ तब टूटे हुए चित्तवाले शत्रुओं ने बादल के समान शब्दायमान वायु से कम्पित पताका ध्वजावाले श्वेत घोड़ों से

युक्त सम्मुख आनेवाले रथ को देखा इसके पीछे रथ पर नाचते हुए अर्जुन ने गाण्डीव धनुष को टङ्कोर कर आकाश और दिशा विदिशाओं को बाणों से आच्छादित किया १४। १५ और विमानरूप रथों को शस्त्र ध्वजा और सारथियों समेत बाणों से ऐसा मारा जैसे कि वायु बादलों को ताड़ित करता है १६ फिर उसने हाथी हाथीवान् और वैजयन्ती, शस्त्र, ध्वजा, अश्वारूढ़ और पत्तियों को बाणों से यमलोक में पहुँचाया १७ सीधे बाणों से मारता हुआ अकेला दुर्योधन उस यमराज के समान क्रोधयुक्त मुख न मोड़नेवाले महारथी अर्जुन के सम्मुख गया १८ अर्जुन ने सात बाणों से उसके धनुष और ध्वजा को काटकर सारथी घोड़ों को मारकर एक बाण से उसके छत्र को काटा १९ और प्राणों के नाश करनेवाले उत्तम नवें बाण को धनुष पर चढ़ाकर दुर्योधन के ऊपर छोड़ा उस बाण के अश्वत्थामा ने आठ टुकड़े कर डाले २० इसके पीछे अर्जुन ने बाणों से धनुष को काट रथ के घोड़ों को मारकर कृपाचार्य के उस उग्र धनुष को भी काटा २१ तब कृतबर्मा के धनुष और ध्वजा को काटकर घोड़ों को मारा और दुश्शासन के धनुष को काटकर कर्ण के सम्मुख गया २२ इसके पीछे शीघ्रता करनेवाले कर्ण ने सात्यकी को छोड़कर तीन बाणों से अर्जुन को और बीस बाणों से श्रीकृष्ण को घायल करके फिर अर्जुन को वारंवार घायल किया २३ युद्ध में बहुत शायकों को छोड़ते शत्रुओं को मारते हुए कर्ण की ऐसी ग्लानि नहीं हुई जैसे कि क्रोधयुक्त इन्द्र की हुई २४ इसके पीछे सात्यकी ने आकर तीक्ष्ण बाणों से कर्ण को घायल करके एक सौ निन्नानवे उग्रबाणों से घायल किया २५ इसके पीछे पाण्डवों के इन सब वीरों ने कर्ण को पीड्यमान किया जिनके नाम युधामन्यु, शिखण्डी, द्रौपदी के पुत्र प्रभद्रक २६ उत्तमौजा, युयुत्सु, नकुल, सहदेव, धृष्टद्युम्न, चन्देर, कारुष, मत्स्य और कैकेयदेशियों की सेना २७ पराक्रमी चेकितान सुन्दर व्रतवाले धर्मराज युधिष्ठिर इन सबों ने उग्रपराक्रमी कर्ण को रथ घोड़े हाथी और पत्तियों समेत घेरकर २८ युद्ध में नाना प्रकार के अस्त्रों और शस्त्रों से ढक दिया और उग्रवचनों से वार्तालाप करते हुए सब कर्ण के मारने

में प्रवृत्त चित्त हुए २६ कर्ण ने उस अस्त्रों की वर्षा को अपने तीक्ष्ण बाणों से अनेक रीति से काटकर अस्त्रों के बल से ऐसे हटा दिया जैसे कि वायु वृक्ष को काटकर हटा देता है ३० अत्यन्त क्रोधयुक्त कर्ण रथी और सवारों समेत हाथी घोड़े और अश्वसवारों समेत सहायकों के समूहों को मारता हुआ दिखाई दिया ३१ कर्ण के अस्त्रों से घायल वह पाण्डवीय सेना शस्त्र बाण शरीर और प्राणों से रहित होकर बहुधा लोग मुखों को मोड़ गये ३२ इसके पीछे मन्द मुसकान करते हुए अर्जुन ने कर्ण के अस्त्र को अपने अस्त्र से दूर करके दिशा विदिशाओं समेत पृथ्वी और आकाश को बाणों की वर्षा से ढक दिया वह बाण फिर मुसल और परिघों के समान गिरे कितने ही शतघ्नियों के समान और कोई-कोई उग्रवज्रों के समान आकाश से पृथ्वी पर गिरे पत्ति, घोड़े, रथ और हाथियों से संयुक्त वह सेना उन बाणों से घायल आँखों को बन्द करनेवाली होकर बहुत घूमी ३३।३५ तब घोड़े हाथी और मनुष्यों ने उस युद्ध को पाया जिसमें मरना निश्चय हो गया था तब बाणों से घायल पीड्यमान और भयभीत होकर भागे ३६ युद्ध में प्रवृत्त विजयाभिलाषी आपके युद्धकर्ताओं के बाणों से ऐसी दशा हुई और सूर्य अस्ताचल को प्राप्त हुआ ३७ हे महाराज! फिर हमने अधिक अन्धकार और धूलि के गुब्बारों से अँधेरे में कुछ अच्छा बुरा नहीं देखा ३८ हे भरतवंशिन्! रात्रि के युद्ध से भयभीत बड़े-बड़े धनुषधारी वर्तमान लोग सब शूरवीरों समेत युद्धभूमि से अलग हुए ३९ हे राजन्! दिन के समाप्त होने पर सायङ्काल के समय कौरवों के हट जाने पर प्रसन्न चित्त पाण्डव विजय को पाकर अपने-अपने डेरों को गये ४० और नाना प्रकार के बाजे और सिंहनादों समेत गर्ज-गर्जकर शत्रुओं का हास्य करते अर्जुन और श्रीकृष्णजी की प्रशंसा करते चले गये ४१ उन वीरों के विश्राम करने पर उन सब सेना के लोगों ने और राजाओं ने पाण्डवों को आशीर्वाद दिया ४२ उसके पीछे वहाँ विश्राम के करने पर अत्यन्त प्रसन्नयुक्त होकर पाण्डव और अन्य राजा लोग रात्रि में अपने-अपने डेरों में जाकर विश्रामयुक्त हुए ४३ इसके पीछे राक्षस, पिशाच और भेड़िये आदि मांसा-

हारी पशुओं के समूह उस युद्धभूमि में गये जो कि रुद्रजी की क्रीड़ा के स्थानरूप थी ॥ ४४ ॥

इति श्रीमहाभारते कर्णपर्वणि प्रथमयुद्धे एकत्रिंशोऽध्यायः ॥ ३१ ॥

बत्तीसवाँ अध्याय

धृतराष्ट्र बोले कि, यह प्रत्यक्ष है कि अर्जुन ने अपनी इच्छा से हम सबको मारा इस शस्त्रधारी के युद्ध में मृत्यु भी मरने से न छूटे १ अकेले अर्जुन ने सुभद्रा को हरण किया अकेले ने ही अग्नि को तृप्त किया और अब इसी अकेले ने इस भारी पृथ्वी को विजय करके भेज देनेवाली किया २ दिव्य धनुर्धारी अकेले ने किरातरूपधारी शिवजी से युद्ध किया और निवात कवचों को मारा ३ अकेले ने ही भरतवंशियों की रक्षा करी अकेले ने ही शिवजी को प्रसन्न किया उस उग्रतेजवाले ने सब राजा लोगों को विजय किया ४ और हमारे शूरवीर भी निन्दा के योग्य नहीं हैं किन्तु प्रशंसा के योग्य हैं जो उन्होंने किया उसको भी कहो हे सूत ! इसके पीछे दुर्योधन ने क्या किया ५ सञ्जय बोले कि उन घायल और टूटे अङ्ग सवारियों से गिरे हुए कवच शस्त्र और सवारियों से रहित दुःखित शब्द करते शत्रुओं से कम्पायमान पराजित अहङ्कारी उन कौरवों ने ६ फिर दूरन्देशी की सलाहकारी जो कि टूटी डाढ़ विष से रहित पैर से दबाये हुए सर्पों की समान थे ७ उसके पीछे सर्प की समान श्वास लेता हुआ आपके पुत्र को देखता क्रोधयुक्त कर्ण हाथ से हाथों को मलकर उनसे बोला कि अर्जुन सदैव सावधान दृढ़पराक्रमी और धैर्यमान है और श्रीकृष्णजी भी समय के अनुसार उसको समझा देते हैं ८ । ६ अब हम उसके अस्त्रों के छोड़ने से अकस्मात् ठगे गये हे राजन् ! अब कल के दिन में उसके सब सङ्कल्पों को नाश करूँगा १० यह कर्ण के वचन सुनकर दुर्योधन ने बहुत अच्छा कहकर उत्तम राजाओं को आज्ञा दी तब उसकी आज्ञा पाकर सब राजा लोग अपने डेरों को गये ११ उस रात्रि में सुखपूर्वक निवास करके प्रातःकाल बड़ी प्रसन्नता से युद्ध करने के लिये निकले उन्होंने कौरवों

में श्रेष्ठ बृहस्पति और शुक्रजी के मत में नियत धर्मराज के बड़े उपाय से रचे हुए कठिनता से विजय होनेवाले व्यूह को देखा १२ इसके पीछे शत्रुहन्ता दुर्योधन ने उस शत्रुओं के मारनेवाले बड़े वीर पराक्रमी और उन्नत स्कन्धवाले कर्ण को स्मरण किया १३ जो कर्ण युद्ध में इन्द्र के समान पराक्रम में मरुद्गणों के सदृश बल में सहस्राबाहु के समान था उस कर्ण में राजा का चित्त गया १४ सब सेनाओं का चित्त भी उस बड़े धनुषधारी कर्ण में ऐसा गया जैसे कि प्राणों के सङ्कट में मन बन्द होकर एक ओर को जाता है १५ धृतराष्ट्र बोले कि हे सूत ! इसके पीछे दुर्योधन ने क्या किया हे हीनप्रारब्धी लोगो ! जो तुम्हारा मन सूर्य के पुत्र कर्ण में गया १६ तो सेनाओं के विश्राम करने के पीछे फिर युद्ध के जारी होने पर कर्ण को ऐसे देखा जैसे कि शीत से पीड़ित मनुष्य सूर्य को देखता है १७ वहाँ सूर्य का पुत्र कर्ण इस रीति से युद्ध में प्रवृत्त हुआ हे सञ्जय ! फिर वहाँ सब पाण्डवों ने कर्ण से कैसे युद्ध किया १८ अकेला ही महाबाहु कर्ण सृञ्जयों समेत सब पाण्डवों को मार सकता है क्योंकि युद्ध में कर्ण की भुजाओं का पराक्रम इन्द्र और विष्णु के समान है १९ उस महारथी के पराक्रमसंयुक्त शस्त्र बड़े घोर हैं युद्ध में कर्ण का आश्रय लेकर राजा दुर्योधन मदोन्मत्त है २० इसके पीछे पाण्डव के हाथ से अत्यन्त पीड्यमान दुर्योधन को देखकर और पाण्डवों को भी पराक्रम करनेवाला देखकर महारथी कर्ण ने क्या किया २१ फिर अभागा दुर्योधन युद्ध में कर्ण का आश्रय लेकर पाण्डवों को श्रीकृष्ण और उनके पुत्रों समेत विजय करने की अभिलाषा करता है २२ यह महाशोककारी दुःख है जिस स्थान पर कि वेगवान् कर्ण ने युद्ध में पाण्डवों को नहीं विजय किया इससे निश्चय करके दैव बड़ा है २३ यह द्यूत की निष्ठा वर्तमान है और शोक का स्थान है मैं दुर्योधन के उत्पन्न किये हुए भाले के समान घोर कठिन दुःखों को सह रहा हूँ हे तात, सञ्जय ! वह दुर्योधन शकुनी को नीतिज्ञ मानता है २४ । २५ और सदैव राजा के आज्ञावर्ती वेगवान् कर्ण को भी नीतिमान् मानता है हे सञ्जय ! महाभारी युद्धों के वर्तमान होने के कारण २६ मैंने सदैव अपने पुत्रों को

घायल और मृतक सुना और युद्ध में पाण्डवों का कोई रोकनेवाला नहीं है २७ जैसे कि स्त्रियों के मध्य में डोलते हैं उसी प्रकार सेना को भी मझाते हैं इससे दैव अधिक बलवान् है सञ्जय बोले कि हे राजन्! पूर्व समय के धर्मसम्बन्धी वार्ताओं को विचारो २८ जो मनुष्य असम्भव कार्य को पीछे से शोचता है उसका वह कार्य नहीं होता है किन्तु शोच से नाश को पाता है २९ हे राजन्! मुझ बुद्धिमान् के पूर्वयोग्य विचार को जो तुमने नहीं किया इसी से वह कार्य तुम्हारे हाथ से जाता रहा ३० हे राजन्! सदैव मैंने समझाया था कि पाण्डवों से युद्ध मत करो तुमने अपनी अज्ञानता से उस वचन को नहीं माना ३१ तुमने पाण्डवों के साथ में परस्पर मिलकर बड़े-बड़े घोर पाप किये और आप ही के कारण से अच्छे-अच्छे हज़ारों राजाओं का नाश वर्तमान हुआ ३२ हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ! अब समय आ गया शोच मत करो हे अजेय! जैसे कि यह घोर नाश हुआ उस सबको मुझसे सुनो ३३ प्रातःकाल के समय कर्ण राजा दुर्योधन के पास गया और मिलकर दुर्योधन से कहने लगा ३४ कि हे राजन्! अब मैं यशस्वी पाण्डवों से युद्ध करूँगा मैं कितो उस वीर अर्जुन को मारूँगा या वही मुझको मारेगा ३५ हे भरत-वंशिन्, राजन्, दुर्योधन! मेरे और अर्जुन के कार्यों की आधिक्यता से मेरी और अर्जुन की सम्मुखता नहीं हुई ३६ हे दुर्योधन! मेरे इस वचन को तुम बुद्धि के अनुसार सुनो कि मैं युद्ध में अर्जुन को मारकर न आऊँगा ३७ जिसके बड़े-बड़े वीर मेरे वर्तमान होने पर युद्ध में मारे गये वह अर्जुन मेरे सम्मुख आवेगा जो कि मैं इन्द्र की शक्ति से पृथक् हूँ ३८ हे राजन्! जो अपनी रक्षा करनेवाला है उसको तुम समझो कि मेरे और अर्जुन के अस्त्रों का पराक्रम और प्रताप समान है शत्रु के बड़े कार्य का नाश हस्तलाघवता बाणों का दूर फेंकना और अस्त्र गिराने की सावधानी में अर्जुन मेरे समान नहीं है ३९। ४० हे भरतवंशिन्! देह का बल वा मन का बल वा अस्त्रों की शिक्षा वा पराक्रम में लक्ष्य-भेदन करने में भी अर्जुन मेरे समान नहीं है ४१ सब शस्त्रों में श्रेष्ठ विजयनाम धनुष इन्द्र के प्रिय होने की इच्छा से विश्वकर्माजी ने उत्पन्न

किया ४२ हे राजन् ! निश्चय करके इन्द्र ने उसी धनुष के द्वारा दैत्यों के समूहों को विजय किया और जिसके शब्द से दैत्यों की दशों दिशा मोहित हुईं ४३ वह बड़ा उत्तम धनुष इन्द्र ने भार्गवजी को दिया और भार्गवजी ने वह दिव्य धनुष प्रसन्न होकर मुझको दिया ४४ हे महाविजयिन् ! उसी धनुष के द्वारा मैं महाबाहु अर्जुन से लडूँगा वैसे ही लडूँगा जैसे कि भागे हुए दैत्यों से इन्द्र लड़ा था ४५ परशुरामजी का दिया हुआ घोर धनुष गाण्डीव धनुष से अधिक है जिसके द्वारा यह पृथ्वी इक्कीस बार विजय करी गई ४६ इस धनुष के घोर कर्म को भार्गव परशुरामजी ने मुझसे कहा है उनके उस दिये हुए धनुष के द्वारा मैं पाण्डवों से लडूँगा ४७ हे दुर्योधन! अब मैं बड़े विजयी विख्यात अर्जुन को युद्ध में मारकर तुझको बान्धवों समेत प्रसन्न करूँगा ४८ हे राजन् ! अब पर्वत वन द्वीप और समुद्रों समेत यह सब पृथ्वी तेरी होगी जिसके कि वीर मारे गये और पुत्र पौत्रों की प्रतिष्ठा है ४९ अब तेरे अभीष्ट के निमित्त मेरी कोई अच्छे प्रकार की विशेषता ऐसी नहीं है जैसे कि अच्छे धर्म पर प्रीति करनेवाले मनुष्य की मोक्ष होती है ५० वह अर्जुन युद्ध में मेरे सहने को ऐसे समर्थ नहीं हो सकता जैसे कि वृक्ष अग्नि को नहीं सह सकता मैं जिस हेतु से कि अर्जुन से कम हूँ उसको अब मुझे कहना अवश्य है ५१ एक तो उसके धनुष की प्रत्यञ्चा दिव्य है और इसी प्रकार उसके दो तूणीर अक्षय हैं और उसके सारथी श्रीकृष्णजी हैं मेरा वैसा सारथी नहीं है ५२ उसका गाण्डीव धनुष दिव्य उत्तम होकर युद्ध में सबसे अजेय है और मेरा विजयनाम धनुष भी दिव्य और उत्तम है ५३ हे राजन्! वहाँ मैं उस धनुष के कारण से अर्जुन से अधिक हूँ और जिन कारणों से कि वीर पाण्डव अर्जुन मुझसे अधिक है उसको भी मुझसे सुनो ५४ प्रथम तो सबके पूज्यरूप श्रीकृष्णजी सारथी हैं और अग्निदेवता का दिया हुआ सुवर्णजटित रथ भी दिव्य है ५५ हे वीर! वह सब प्रकार से अजेय हैं उसके घोड़े भी चित्त के अनुसार शीघ्रगामी हैं और ध्वजा भी दिव्य प्रकाशमान है और उस ध्वजा में हनूमान् जी बड़े आश्चर्यकारी हैं ५६ और संसार के स्वामी श्रीकृष्णमहाराज

उसके रथ की रक्षा करते हैं इन वस्तुओं से रहित होकर मैं अर्जुन से लड़ना चाहता हूँ ५७ युद्ध को शोभा देनेवाला यह राजा शल्य श्रीकृष्ण-जी के समान है जो राजा शल्य मेरा सारथी बन जाय तो अवश्य तेरी विजय होय ५८ शत्रुओं के साथ कठिन कर्म करनेवाला शल्य मेरा सारथी होय और कङ्कपक्षवाले मेरे अनेक बाणों के बहुत से छकड़े साथ में ले चलें ५९ हे भरतर्षभ, राजेन्द्र! उत्तम घोड़ों के रथ में बैठकर तुम भी मेरे साथ ही साथ चलो ६० मैं अपने गुणों से अर्जुन से अधिक हो जाऊँगा शल्य भी श्रीकृष्णजी से अधिक है और मैं भी अर्जुन से अधिक हूँ ६१ जिस प्रकार शत्रुहन्ता श्रीकृष्णजी अश्वहृदयनाम विद्या के जाननेवाले हैं इसी प्रकार महारथी शल्य भी अश्वविद्या का ज्ञाता है ६२ और भुजा में राजा शल्य के समान कोई नहीं है इसी प्रकार अस्त्रवेत्ता मेरे समान कोई नहीं है ६३ जो कि अश्वविद्या में शल्य के समान कोई नहीं है इसी से यह मेरा रथ अर्जुन से भी अधिक होगा हे कौरवों में श्रेष्ठ! ऐसा करने से मैं रथ की सवारी में अधिक हो जाऊँगा और युद्ध में अर्जुन को विजय करूँगा ६४। ६५ इन्द्रसमेत देवता भी मेरे सम्मुख होने को समर्थ नहीं हैं हे शत्रुहन्तः, महाराज, दुर्योधन! यह काम मैं तुमसे करवाया चाहता हूँ ६६ यह मेरा मनोरथ पूर्ण करो इस समय को किसी प्रकार से उल्लङ्घन न करना चाहिये ऐसा करने से सब अभीष्ट सिद्ध होंगे ६७ हे भरतवंशिन्! इसके पीछे जैसा मैं युद्ध करूँगा उसको भी तुम देखोगे मैं सम्मुख आनेवाले पाण्डवों को सब प्रकार से विजय करूँगा ६८ सुर और असुर भी युद्ध में मेरे सम्मुख आने को समर्थ होने को समर्थ नहीं हैं हे राजन्! फिर मनुष्ययोनि पाण्डवलोग मेरी सम्मुखता क्या करेंगे ६९ सञ्जय बोले कि कर्ण के इन सब वचनों को सुनकर आपका पुत्र दुर्योधन अत्यन्त प्रसन्न होकर कर्ण से प्रशंसापूर्वक यह वचन बोला ७० कि हे कर्ण! जैसा तुम कहते हो मैं इन सब बातों को वैसा ही करूँगा तूणीरों से भरे हुए रथ तुम्हारे पीछे-पीछे चलेंगे ७१ कङ्कपक्ष से जटित तुम्हारे बाणों के बहुत से छकड़े ले चलूँगा और मुझ समेत सब राजा लोग तुम्हारे पीछे-पीछे चलेंगे ७२

सञ्जय बोले कि हे महाराज ! आपका प्रतापी पुत्र दुर्योधन इस प्रकार के वचन कहकर मद्रदेश के राजा शल्य के पास जाकर उससे यह वचन बोला ॥ ७३ ॥

इति श्रीमहाभारते कर्णपर्वणि कर्णदुर्योधनविचारे द्वात्रिंशोऽध्यायः ॥ ३२ ॥

तेंतीसवाँ अध्याय

सञ्जय बोले कि, हे महाराज ! आपका पुत्र बड़ी नम्रता समेत समीप जाकर महारथी शल्य से यह वचन बोला १ हे सत्यव्रती, महाबाहु, शत्रुशोककारी, मद्रदेश के स्वामी, युद्ध में शूर और शत्रु की सेना को भय उत्पन्न करनेवाले २ श्रेष्ठ वक्ता ! आपने कर्ण का वचन सुना है मैं सब श्रेष्ठ राजाओं में आपको उत्तम जानता हूँ ३ हे अनुपम पराक्रमी, शत्रुपक्ष के नाशकारी, राजा मद्र ! मैं नम्रतापूर्वक आपको सिर से दण्डवत् करता हूँ ४ हे रथियों में श्रेष्ठ ! आप अर्जुन के नाश और मेरी वृद्धि के अर्थन्याय से सारथ्य कर्म करने को योग्य हो ५ आपके सारथी होने से कर्ण मेरे शत्रुओं को विजय करेगा कर्ण की बागडोरों का पकड़नेवाला दूसरा कोई पुरुष नहीं है ६ हे महाबाहो ! युद्ध में वासुदेवजी के समान तेरे सिवाय दूसरा मनुष्य नहीं है ७ आप सब प्रकार से कर्ण की ऐसी रक्षा करिये जैसे कि ब्रह्माजीने महेश्वरजी की और श्रीकृष्ण ने सब आपत्तियों में पाण्डवों की करी है और करते हैं हे महाराज ! उसी प्रकार आप भी कर्ण की रक्षा करिये ८ भीष्म, द्रोणाचार्य, कृपाचार्य, कर्ण और पराक्रमी कृतवर्मा, सौबल का पुत्र शकुनी, अश्वत्थामा, मैं और हमारी सब सेना ६ हे राजन् ! इस रीति से यह नौ भाग किये हैं परन्तु इन भागों में महात्मा भीष्म और द्रोणाचार्य का भाग नहीं है १० इन्होंने उन दोनों भागों का उल्लङ्घन करके मेरे शत्रुओं को मारा वह दोनों वृद्ध बड़े धनुषधारी युद्ध में छल से मारे गये ११ हे निष्पाप ! वह दोनों कठिन कर्मों को करके यहाँ से स्वर्ग को गये और इसी प्रकार अन्य-अन्य भी बहुत से पुरुषोत्तम युद्ध में शत्रुओं के हाथ से मारे गये १२ हमारे अनेक शूरवीर युद्ध में

बड़े-बड़े पराक्रमों को करके प्राणों को त्यागकर स्वर्ग को गये १३ हे राजन् ! यह मेरी बहुत सी सेना मारी गई पूर्व में भी इन अत्यन्त थोड़े पाण्डवों से मेरे बहुत से मनुष्य मारे गये अब कौन सी बात करनी उचित है १४ कुन्ती के पुत्र महाबली सत्यपराक्रमी हैं सो हे राजन् ! जिस रीति से वह पाण्डव लोग मेरी शेष बची हुई सेना को न मार सकें वही उपाय आपको करना योग्य है १५ हे समर्थ ! यह सेना युद्ध में पाण्डवों के हाथ से मृतक हुए शूरवीरवाली है अर्थात् इसके युद्ध-कर्ता शूरवीर मारे गये अब हमारी वृद्धि चाहनेवाला एक महाबाहु पराक्रमी कर्ण और सब लोगों के महारथी पुरुषोत्तम आप हो हे शल्य ! अब कर्ण युद्ध में अर्जुन के साथ लड़ना चाहता है १६।१७ हे राजन् शल्य ! उस कर्ण में मुझको विजय की बड़ी आशा है इस पृथ्वी पर उसका उत्तम सारथी कोई नहीं है १८ जैसे कि युद्ध में अर्जुन के सारथी श्रीकृष्णजी हैं उसी प्रकार आप भी कर्ण के रथ पर सारथी हूजिये १९ हे राजन् ! श्रीकृष्णजी से युक्त और रक्षित होकर जैसे कि वह अर्जुन जिन-जिन कर्मों को करता है वह सबके प्रत्यक्ष हैं २० पूर्व में अर्जुन ने युद्ध में हमारे शत्रुओं को मारा अब श्रीकृष्ण को साथ रखनेवाले इस अर्जुन का पराक्रम है २१ हे राजन्, मद्र ! अर्जुन श्रीकृष्णजी के साथ हमारी बड़ी भारी सेना को प्रतिदिन युद्ध में भगाता ही हुआ दिखाई देता है २२ हे बड़े तेजस्विन् ! कर्ण का और तुम्हारा भाग शेष रह गया है कर्ण समेत आप एक ही भाग से उस पाण्डवीय सेना का नाश करो जैसे कि सूर्य अपनी किरणों से अन्धकार को दूर करता है उसी प्रकार आप भी कर्ण समेत होकर युद्ध में अर्जुन को मारो २३।२४ सूर्य के समान उदय होनेवाले बालार्क के समान प्रकाशमान कर्ण और शल्य को देखकर युद्ध से सब महारथी ऐसे भागेंगे जैसे कि सूर्योदय में अरुण को देखकर अन्धकार दूर होता है २५ इसी प्रकार आपके युद्ध में प्रकाशमान होते ही पाञ्चाल और सृञ्जयों समेत कुन्ती के पुत्र भी नाश को पावेंगे २६ कर्ण रथियों में अत्यन्त श्रेष्ठ है और आप रथियों में असादृश्य हैं जैसा तुम

दोनों का योग होगा वैसा संयोग न पूर्व में हुआ है न आगे होगा २७ जैसे कि श्रीकृष्णजी सब दशाओं में पाण्डवों की रक्षा करते हैं उसी प्रकार आप भी सूर्य के पुत्र कर्ण की रक्षा करो २८ यह कर्ण तुझ सारथी के साथ होकर इन्द्र समेत देवताओं से भी युद्ध में अजेय होगा फिर पाण्डवों के युद्ध में कैसे विजयी न होगा हे राजन् ! तुम मेरे वचनों में सन्देह मत करो २९ सञ्जय बोले कि कुलीनता शास्त्रज्ञता अधिकार और पराक्रम से अजेय महाबाहु शल्य दुर्योधन के वचन को सुनकर क्रोध में भरा हुआ वारंवार हाथियों को प्रेरणा करता हुआ भृकुटी को त्रिवली करके क्रोध से रक्तवर्ण नेत्रों को खोलकर यह वचन बोला ३० । ३१ हे गान्धारी के पुत्र ! निश्चय करके तू मेरा अपमान करता है और सन्देह करता है जो तू निस्सन्देह होकर मुझसे कहता है कि सारथीपना करो ३२ और कर्ण को मुझसे भी अधिक जानकर उसकी प्रशंसा करता है मैं युद्ध में कर्ण को अपने समान नहीं समझता हूँ ३३ हे राजन् ! तुम मेरा अधिकतर भाग विचार करो मैं युद्ध में उसको विजय करके जहाँ से आया हूँ वहाँ को चला जाऊँ ३४ हे कौरवनन्दन ! चाहे मैं ही अकेला युद्ध करूँगा अब तुम युद्ध में मुझ शत्रुहन्ता के पराक्रम को देखो ३५ जैसे कि मुझ सा पुरुष उस अपमान को हृदय में धारण करके फिर त्याग करने को कर्मकर्ता हो जाय वैसे ही तुम भी मुझमें सन्देह न करो ३६ अथवा युद्ध में भी मेरा अपमान किसी प्रकार से न करना चाहिये मेरी वज्ररूपी मोटी-मोटी भुजाओं को देखो ३७ और मेरे चित्र धनुष समेत विषवाले सर्प के समान बाणों को देखो और वायु के समान वेगवान् उत्तम घोड़ों से अलंकृत मेरे श्रेष्ठ रथ को देखो ३८ हे गान्धारी के पुत्र ! सुवर्णसूत्रों से वेष्टित मेरी गदा को देखो मैं सम्पूर्ण पृथ्वी को फाड़कर पर्वतों को भी तोड़ सकता हूँ ३९ और हे राजन् ! अपने तेज से समुद्र का शोषण कर सकता हूँ मुझ शत्रुओं के विजय करने में समर्थ ऐसे सामर्थ्यवान् को ४० युद्ध में तू नीच अधिरथी के सारथीपने में क्यों संयुक्त करता है हे राजन् ! तुम मुझको नीच कर्म में संयुक्त करने के योग्य नहीं हो ४१ मैं उत्तम होकर नीच जाति के सेवन करने को

नहीं चाहता हूँ जो कि प्रीति से समीप आया और स्वाधीनता में नियत हुआ ४२ उसको तू नीच जाति की आधीनता में करता है देखो छोटे-बड़ों का विपर्यय करना बड़ा पाप है ब्रह्माजी ने मुख से ब्राह्मण उत्पन्न किये और भुजा से क्षत्रियों को उत्पन्न किया ४३ वैश्यों को जङ्घा से और शूद्रों को चरणों से उत्पन्न किया यह वेद का वचन है इन चारों वर्णों से अनुलोम प्रतिलोम लोग हुए हैं हे भरतवंशिन्! चारो वर्णों की मिलावट से उत्पन्न होनेवालों के क्षत्रिय लोग रक्षक दण्ड देनेवाले और दान करनेवाले कहे हैं ४४ । ४५ और ब्राह्मणों को ब्रह्माजी ने यज्ञ करने कराने दान देने लेने और वेद पढ़ने और शुद्ध दानों के द्वारा लोक के अनुग्रह के निमित्त इस पृथ्वी पर नियत किया है ४६ वैश्यों का कर्म धर्म से खेती करना पशुपालन और दान करना है और शूद्र लोग ब्राह्मण क्षत्रिय और वैश्यों के सेवा करनेवाले वर्णन किये हैं ४७ और सूत लोग तो अवश्य ही क्षत्रिय और ब्राह्मणों की सेवा करनेवाले हैं क्षत्रिय किसी दशा में भी सूतों का आज्ञावर्ती नहीं हो सकता ४८ हे राजन्! मैं राजर्षियों के कुल में उत्पन्न मूर्धाभिषेक नाम से प्रसिद्ध इस रीति से वन्दीजनों का पूज्य और स्तूयमान हूँ ४९ हे शत्रुसेनापहारिन्! सो मैं ऐसा होकर सूत के सारथीपने को इच्छा नहीं करता हूँ ५० मैं अपमानयुक्त होकर फिर किसी प्रकार से भी युद्ध नहीं करूँगा हे गान्धारी के पुत्र! मैं तुझसे पूछकर अब अपने घर को जाऊँगा ५१ सञ्जय बोले कि हे महाराज! युद्ध में शोभा पानेवाला क्रोधयुक्त शल्य इस प्रकार से कहकर राजाओं के मध्य में से शीघ्र ही उठकर चल दिया ५२ आपका पुत्र बड़ी प्रतिष्ठापूर्वक उसको पकड़कर सब प्रयोजनों के सिद्ध करने-वाले मीठे-मीठे वचनों से बड़ी नम्रतापूर्वक बोला ५३ हे शल्य! जैसा आप जानते हो और कहते हो सो यथार्थ ही है इसमें किसी प्रकार का सन्देह नहीं है इसमें मेरा प्रयोजन है उसको आप कृपा करके सुनिये ५४ हे राजन्! कर्ण आपसे अधिक नहीं है और न मैं आप पर सन्देह करता हूँ आप मद्रदेश के राजा हैं जो मिथ्या समझें तो उस काम को न करियेगा ५५ हे पुरुषोत्तम! तुम्हारे वृद्ध लोगों को रत अर्थात् सत्यता-

युक्त बोलते हैं उनकी सन्तान होने से आप आर्तायन कहे जाते हैं यह मेरा मत है ५६ हे प्रतिष्ठा देनेवाले ! इस कारण से आप युद्ध में शत्रुओं के शल्यरूप अर्थात् भल्लरूप हो इसी हेतु से पृथ्वी पर आपका नाम शल्य विख्यात है ५७ हे बड़ी दक्षिणा देनेवाले ! आपने जो प्रथम कहा है उसी को करो हे धर्मज्ञ ! मेरे निमित्त जो-जो कहा जाता है ५८ कर्ण-समेत मैं भी आपसे अधिक पराक्रमी नहीं हूँ परन्तु मैं युद्ध में आपको उत्तम घोड़ों का सारथी चाहता हूँ ५९ हे शल्य ! मैं कर्ण को भी उत्तम गुणों के द्वारा अर्जुन से अधिक मानता हूँ और आपको वासुदेवजी से भी अधिक मुझ समेत सब लोक मानते हैं ६० हे नरोत्तम ! कर्ण अस्त्रों में भी अर्जुन से अधिक है इसी प्रकार आप भी अश्वविद्या के जानने में और पराक्रम में श्रीकृष्ण से अधिक हो ६१ जैसे कि बड़े साहसी वासुदेवजी अश्वहृदय को जानते हैं उसी प्रकार उनसे भी द्विगुणित आप जानते हो ६२ शल्य बोला कि हे गान्धारी के पुत्र, कौरव ! जो तुम सेना के मध्य में मुझको श्रीकृष्णजी से अधिक मानते और कहते हो इसी से मैं तुम पर प्रसन्न हूँ ६३ अब मैं अर्जुन के साथ युद्ध करनेवाले यशस्वी कर्ण के साथ सारथीपने में नियत होता हूँ हे वीर ! जैसे कि तुम मानकर चाहते हो ६४ हे वीर ! कर्ण के विषय में मेरा यह सङ्कल्प है अर्थात् प्रतिज्ञा है कि मैं इसके सम्मुख श्रद्धा के समान कहूँगा ६५ सञ्जय बोले कि हे भरतवंशिन्, राजन्, धृतराष्ट्र ! आपका पुत्र कर्ण समेत बोला कि जैसी राजा मद्र की इच्छा है वैसा ही हो ॥ ६६ ॥

इति श्रीमहाभारते कर्णपर्वणि शल्यसारथ्ये त्रयस्त्रिंशोऽध्यायः ॥ ३३ ॥

चौंतीसवाँ अध्याय

दुर्योधन बोले कि हे राजन्, मद्र ! आपसे जो मैं कहता हूँ उसको फिर भी तुम सुनो हे समर्थ ! जैसे कि पूर्व देवासुरों के संग्राम में जो वृत्तान्त हुआ १ उसी को महर्षि मार्कण्डेयजी ने जिस रीति से मेरे पिता से कहा हे राजर्षभ ! आप उसको मुझसे सुनिये और चित्त से समझिये २ तुमको इसमें विचार न करना चाहिये हे राजन् ! परस्पर में विजय की

इच्छा से देवता और असुरों का प्रथम युद्ध ३ तारकसम्बन्धी हुआ तब दैत्य देवताओं से हार गये यह हमने सुना ४ हे राजन्! दैत्यों के हारने पर तारक के तीन पुत्र ताराक्ष, कमलाक्ष, विद्युन्माली ५ उग्रतपी होकर बड़े भारी नियम में नियत हुए हे शत्रुसन्तापिन्! उन तीनों ने तपस्याओं से अपने-अपने शरीरों को दुर्बल कर दिया उनकी शान्तचित्तता, तप, नियम और समाधि से प्रसन्न होकर वरदाता ब्रह्माजी ने उनको वरदान दिये ६। ७ हे राजन्! उन सब मिले हुओं ने सब जीवमात्र के हाथ से मृत्यु का न होना लोक के पितामह ब्रह्माजी से वर माँगा तब ब्रह्माजी ने उनसे कहा कि सबकी अविनाशिता नहीं है हे असुर लोगो! इस विचार से लौटो ८। ९ और इसके सिवाय जो दूसरा वर चाहते हो उसको माँगो हे राजन्! इसके पीछे वह सब मिले हुए प्रभु का वारंवार ध्यान करके १० और सर्वेश्वर को नमस्कारपूर्वक यह वचन बोले हे देव, पितामह! हमको यह वरदान दो ११ कि हम तीन पुरों में नियत होकर आपकी कृपा से इस लोक में इस पृथ्वी पर घूमें १२ इसके पीछे हज़ार वर्ष के अनन्तर परस्पर में मिलेंगे हे निष्पाप! यह तीनों पुर एक ही रूप हो जायँ १३ हे भगवन्! उस समय जो देवता हमारे इस मिले हुए पुर को एक ही बाण से ढहाने-वाला होगा उसी से हमारी मृत्यु हो १४ ब्रह्माजी तथास्तु कहकर स्वर्ग में चले गये फिर वह तीनों वरप्रदान को पाकर अत्यन्त प्रसन्न हुए १५ और तीन पुर बनाने के लिये असुरों के विश्वकर्मा अजर अमर और दैत्यों से पूजित जो मय नाम दैत्य है उससे बोले १६ उसके पीछे उस बुद्धिमान् मय दैत्य ने अपने तप से तीन पुरों को उत्पन्न किया उनमें एक सुवर्ण का, दूसरा चाँदी का, तीसरा लोहे का था १७ वह सुवर्ण का पुर तो स्वर्ग में नियत हुआ, चाँदी का अन्तरिक्ष में और लोहे का पुर इच्छा के अनुसार पृथ्वी पर चलनेवाला हुआ १८ उनमें प्रत्येक पुर सौ योजन वर्गात्मक गृह अट्टादिकों से युक्त प्राकार और तोरणों से शोभित अत्यन्त शोभित धामों से भरा हुआ और खुला हुआ निविड़ता से रहित बड़े-बड़े चौड़े मार्गों का रखनेवाला नाना प्रकार के हर्म्य और स्वच्छ द्वारों से शोभायमान था १९। २० हे राजन्! उन तीनों पुरों में जुदे-जुदे

राजा हुए सुवर्ण का पुर तो महात्मा तारात्त का हुआ और चाँदीवाला कमलात्त का हुआ और लोहेवाला विद्युन्माली का हुआ वह तीनों दैत्यों के राजा अस्त्रों के तेजों से तीनों लोकों को जीतकर नियत हुए २१ । २२ और कहने लगे कि कौन प्रजापति है उन उत्तम वीर दैत्यों की संख्या प्रयुत अर्बुदों थीं और करोड़ों दैत्य जहाँ तहाँ से आये वह मांसभत्ती महाबली पूर्वसमय में देवताओं से पराजित २३ । २४ बड़े ऐश्वर्य के चाहनेवाले त्रिपुर नाम गढ़ में आश्रित हुए फिर मय दैत्य इनके सब मनोरथों का पूरा करनेवाला हुआ २५ वह सब दैत्य उस मय की रत्ता में होकर निर्भय रहते थे त्रिपुर के राजाओं ने जिस-जिस अभीष्ट को मन से ध्यान किया २६ उस अभीष्ट को उनके निमित्त मय दैत्य ने अपनी माया से प्रकट किया तारकात्त के पुत्र वीर पराक्रमी हरि नाम ने बड़ी घोर तपस्या करी २७ उस तप से ब्रह्माजी प्रसन्न हुए तब ब्रह्माजी को प्रसन्न जानकर उसने यह वर माँगा कि हमारे पुर में एक ऐसी वापी अर्थात् बावड़ी उत्पन्न हो २८ जिसमें शस्त्रों से मृतक लोग उसमें डालने से सजीव होकर बलवान् हो जायँ हे राजन् ! उस तारकात्त के पुत्र हरि ने इस वर को पाकर २९ वहाँ मृतक सञ्जीवनी बावड़ी को तैयार किया फिर मरे हुए दैत्य जिस रूप और पोशाक थे उसमें डाले गये ३० वह उसी रूप को धारण किये पोशाक समेत उत्पन्न हुए उन्होंने उस बावड़ी को पाकर फिर उन सब लोकों को पीड़ित किया ३१ वह सब दैत्य बड़े-बड़े तपस्वी और सिद्ध लोगों के भी भय के बढ़ानेवाले हुए हे राजन् ! कभी उनकी युद्ध में पराजय नहीं हुई ३२ उसके पीछे लोभ मोह से व्याप्त निर्बुद्धि निर्लज्ज होकर वह सब लोभ में फँसे हुए नियत हुए ३३ वरदान से अहङ्कारी होकर वह सब जहाँ तहाँ देवताओं के समूहों को भगाकर अपनी इच्छा के अनुसार घूमने लगे ३४ देवताओं के प्रियकारी सब क्रीड़ा स्थानों को वा ऋषियों के पवित्र आश्रमों को और अनेक सुन्दर सुन्दर देशों को नाश करके उन दुष्टकर्मी दैत्यों ने मर्यादाओं को भी बिगाड़ा इसके पीछे सबके पीड़ित होने पर मरुद्गणों समेत इन्द्र ने ३५ । ३६ चारों ओर को वज्रों के प्रहार से तीनों पुरों से

युद्ध किया जब इन्द्र उन वरदान पानेवालों के पुरों के तोड़ने और पराजय करने को समर्थ नहीं हुआ तब भयभीत होकर वह उन पुरों को छोड़कर ३७ । ३८ देवताओं को साथ लेकर ब्रह्माजी के पास गया वहाँ जाकर उसने असुरों की प्रबलता ब्रह्माजी से वर्णन करी ३६ फिर शिरों से दण्डवत् करके उनका मूल वृत्तान्त वर्णन किया और उनके मारने का उपाय ब्रह्माजी से पूछा भगवान् ब्रह्माजी इन्द्र के वचन को सुनकर देवताओं से बोले कि जो तुमसे शत्रुता करता है वह मेरा भी शत्रुरूप और अपराधी है निश्चय करके वह देवताओं से विरोध करने-वाले निर्बुद्धि असुर जो तुमको पीड़ित करते हैं इसी से वह सदैव अप-राधी हैं ४० । ४२ मैं सब जीवमात्र को निस्सन्देह समान दृष्टि से देखता हूँ परन्तु धर्म के विरोधी जीव मारने के ही योग्य हैं यही मेरा नियत व्रत है ४३ मैं उन पुरों को एक ही बाण से तोडूँगा इसमें मिथ्या न होगा उन पुरों को एक ही बाण से शिवजी के सिवाय तोड़नेवाला दूसरा देवता कोई समर्थ नहीं है ४४ हे देवताओ ! तुम उस युद्ध करने-वाले अचल आदि ईश्वर शिवजी की शरण लो जिससे कि वह शिवजी उन असुरों को मारें ४५ इन्द्र समेत सब देवता ब्रह्माजी के वचनों को सुनकर ब्रह्माजी को आगे करके शिवजी की शरण में गये ४६ वह धर्मज्ञ देवता ऋषियों समेत तप और नियमों में नियत होकर सनातन वेदों को पढ़ते हुए सर्वात्मा रूप शिवजी के पास गये ४७ हे राजन् ! उन्होंने उस सर्वात्मा निर्भयता देनेवाले जगदीश्वर शिवजी को उत्तम-उत्तम स्तुतियों से प्रसन्न किया जिस आत्मारूप से सब जगत् व्याप्त है ४८ और नाना प्रकार के मुख्य तपों से मन के योगवाली सब वृत्तियों को रोकने को जानता है और जिसका चित्त भी सदैव अपने आधीन है ४६ उसने उस सर्वशक्तिमान् षडैश्वर्य के स्वामी उपाधिरहित शिवजी को देखा ५० और उसी अद्वितीय ईश्वर को ही नाना प्रकार के रूपों का धारण करनेवाला कल्पना किया अर्थात् उस परमात्मा में अपने संकल्प के अनुसार अनेक रूपों को ५१ और एक ने दूसरे के रूप को देखा जिसने विष्णुरूप से कल्पना किया उसको विष्णुरूप दृष्ट पड़े और

जिसने इन्द्ररूप ध्यान किया उसको इन्द्ररूप दिखाई दिये यह देखकर सब आश्चर्यित होकर उस जगत् के स्वामी अजन्मा को सर्वरूप देखकर ५२ देवता और ब्रह्मऋषियों ने शिरों को पृथ्वी में धरकर प्रणाम किया फिर शिवजी ने उठकर उनको स्वास्ति वचन से पूजन किया ५३ फिर मन्द मुसकान करते हुए भगवान् ने कहा कि कहो किस निमित्त आये हो तब तो शिवजी की आज्ञा पाकर वह सब देवता नियतचित्तता से तप नियमों में नियत होकर सनातन वेद को पढ़ते हुए शिवजी की स्तुति करने लगे ५४ (स्तोत्र) नमोनमोनमस्तेस्तु प्रभो इत्यब्रुवन् वचः । नमोदेवाधिदेवाय धन्विने वनमालिने ५५ प्रजापतिमखघ्नाय प्रजापतिभिरिज्यते । नमोस्तुताय स्तुत्याय स्तूयमानाय शम्भवे ५६ विलोहिताय रुद्राय नीलग्रीवाय शूलिने । अमोघाय मृगाक्षाय प्रवरायुधयोधिने ५७ अर्हाय चैव शुद्धाय क्षयाय क्राथनाय च । दुर्वारणाय क्राथाय ब्रह्मणे ब्रह्मचारिणे ५८ ईशानायाप्रमेयाय नियन्त्रे चर्मवाससे । तपोरताय पिङ्गाय व्रतिने कृत्तिवाससे ५९ कुमारपित्रे यक्षाय प्रवरायुधयोधिने । प्रपन्नार्त्तिविनाशाय ब्रह्मद्विट्संघघातिने ६० वनस्पतीनां पतये नराणां पतयेनमः । गवां च पतये नित्यं यज्ञानां पतये नमः ६१ नमोस्तु ते ससैन्याय त्र्यम्बकायामितौजसे । नमोवाक्कर्मभिर्देवत्वां प्रपन्नान्भजस्व नः ६२ ततःप्रसन्नो भगवान् स्वागतेनाभिनन्द्य च । प्रोवाच व्येतुभीतिर्वो ब्रूतकिंकरवाणिच ६३

इति श्रीमहाभारते कर्णपर्वणि त्रिपुराख्याने चतुस्त्रिंशोऽध्यायः ॥ ३४ ॥

पैंतीसवाँ अध्याय

दुर्योधन बोले कि पितृदेवता और ऋषियों के समूहों को शिवजी ने निर्भयता दी उस निर्भयता के देने पर ब्रह्माजी शिवजी की प्रशंसा करके यह लोकों का हितकारी वचन बोले १ हे देवताओं के ईश्वर ! आपके दिये हुए प्रजापति के पद पर वर्तमान होकर मैंने दैत्यों को बड़ा भारी वरदान दिया था २ उन मर्यादा उल्लंघन करनेवाले असुरों के मारने को आपके सिवाय किसी को सामर्थ्य नहीं है हे भूत-भविष्य के स्वामिन् ! आपही उनके मारने को विरोधी शत्रु हो ३ हे देवेश्वर, शङ्कर,

देव ! तुम शरणागत आनेवाले और प्रार्थना करनेवाले देवताओं के ऊपर कृपा करो और दानव लोगों को मारो ४ हे बड़ाई देनेवाले ! आपकी कृपा से ही सब संसार वृद्धि पाता है हे लोकेश ! आप ही रक्षा के स्थान हैं हम सब आपकी शरण हैं ५ शिवजी ने कहा कि तुम्हारे सब शत्रु मार डालने के ही योग्य हैं यह मेरा मत है परन्तु मैं अकेला उनके मारने को उत्साह नहीं करता हूँ क्योंकि वह बहुत से असुर बड़े-बड़े पराक्रमी हैं ६ सो तुम सब बड़े-बड़े पराक्रमी मेरे साथी होकर मेरे आधे तेज से उन शत्रुओं को युद्ध में विजय करो ७ देवता बोले कि हे विश्वनाथ ! जितना हमारा पराक्रम है उससे द्विगुणित उनका पराक्रम युद्ध में हम मानते हैं क्योंकि उनका तेजबल हमने देखा है वह वास्तव में हमसे द्विगुणित बलवान् हैं ८ श्रीभगवान् बोले कि तुमसे शत्रुता करने से वह सब पापात्मा हैं इससे वध के अवश्य योग्य हैं तुम उन शत्रुओं को मेरे आधे तेज और बल से मारोगे ९ देवता बोले हे महेश्वरजी ! हम आपका आधा तेज और बल धारण करने को समर्थ नहीं हैं आपही हम सबके आधे बल से शत्रुओं को मारो १० श्रीभगवान् शिवजी ने कहा जो मेरा पराक्रम धारण करने को तुम्हारी कोई सामर्थ्य नहीं है तो तुम्हारे आधे तेज से वृद्धि पानेवाला मैं हीं उनको मारूँगा ११ तब देवताओं ने कहा बहुत अच्छा यह देवताओं के वचन को सुनकर देवेश्वर शिवजी सबके आधे तेज को लेकर अधिक हो गये १२ अर्थात् शिवजी उनके आधे बल से सबसे अधिक बलवान् हो गये तभी से शिवजी का महादेव नाम प्रसिद्ध हुआ १३ इसके पीछे महादेवजी बोले कि हे देवताओ ! मैं धनुषबाणधारी हूँ और युद्धभूमि में रथ की सवारी के द्वारा तुम्हारे उन शत्रुओं को मारूँगा १४ इस हेतु से तुम मेरे रथ और धनुष बाण को विचार करके तब तक खोजो जब तक कि उन शत्रुओं को पृथ्वी पर न गिराऊँ १५ देवता बोले कि हे देवेश्वर ! हम जहाँ तहाँ से तीनों लोकों का सब तेज इकट्ठा करके उससे आपके प्रकाशमान रथ को तैयार करेंगे १६ फिर जैसा कि बुद्धि के अनुसार बताया गया वैसा ही विश्वकर्माजी ने शुभ और उत्तम रथ को तैयार

किया तदनन्तर उन उत्तम देवताओं ने उस बने हुए दिव्य रथ को अच्छे प्रकार से अलंकृत किया १७ विष्णुजी चन्द्रमा और अग्निदेवता यह तीनों तो शिवजी के बाण में कल्पित हुए अग्नि शृङ्ग हुआ और चन्द्रमा भल्ल हुआ १८ और विष्णुजी उस उत्तम बाण में कुन्तल हुए और बड़े-बड़े पुरों की धारण करनेवाली धरा अर्थात् पृथ्वी देवी शिवजी का रथ बनी वह पृथ्वी पर्वत वा द्वीपों से युक्त होकर अखिल जीवों की धारण करनेवाली थी उस समय मन्दराचल पर्वत अक्ष हुआ और उसकी जङ्घा महानदी हुई १९।२० तब दिशा विदिशा रथ के परिवार हुए और नक्षत्रों के समूह ईशा हुए उस रथ में सतयुग जुआ हुआ और सर्पों में श्रेष्ठ वासुकी सर्प रथ का कूबर हुआ २१ हिमाचल और विन्ध्याचल यह दोनों रथ के पहियों के उपस्कर हुए उदयाचल और अस्ताचल पाये हुए २२ और दानवों का उत्तम स्थान समुद्र अक्ष बना और सप्तऋषियों का मण्डल रथ का पुरस्कर हुआ २३ गङ्गा सरस्वती सिन्धु और आकाश धुर हुआ और जल समेत सब नदियाँ भी रथ की उपस्कर हुईं २४ दिन रात्रि और कला काष्ठा नाम समय और सब ऋतुओं समेत प्रकाशमान ग्रह अनुकर्ष हुए और नक्षत्र बरूथ हुए २५ धर्म, अर्थ, काम से संयुक्त त्रिवेणु द्वार और बन्धन हुए ओषधी वीरुध और फल फूलयुक्त वृक्ष घण्टे बने २६ उस महा उत्तम रथ में सूर्य और चन्द्रमा पूर्व और पश्चिम के पाये हुए और दिन वा रात्रि पूर्वापर नाम शुभ पक्ष हुए २७ तब धृतराष्ट्र नाम नागपति को आदि लेकर दश नागपतियों को ईशा किया और श्वास लेनेवाले बड़े-बड़े सर्पों को योक्त्र किया २८ सर्प को दूसरा जुआ बनाया और संवर्तक वा बलाहक नाम बादलों का जुये का चर्म बनाया कालपृष्ठ नहुष कर्कोटक धनञ्जय और अन्य-अन्य सर्प घोड़ों के बालबन्धन हुए और दिशा विदिशा आदि घोड़ों के मार्ग हुए २९।३० सन्ध्या पृथ्वी मेधा स्थिति सन्नति और नक्षत्रों से चित्रित आकाश को रथ का चर्म किया ३१ मद्य जल और प्रेतों के स्वामी लोकेश्वरों को घोड़ा बनाया पूर्व अमावास्या और पूर्व पूर्णिमा और उत्तर अमावास्या वा उत्तर पूर्णमासी इन सुन्दर व्रतवालियों को योक्त्र बनाया ३२ उस रथ में उस अमावास्या आदि के

अधिष्ठाता पितरों को इरावन की कीलक बनाई उन कीलकों में धम सत्य और तप को रस्सियाँ बनाईं ३३ उस रथ का आधार मन हुआ और सरस्वती प्रचार मार्ग हुई और नाना प्रकार के वर्णवाली विचित्र प्रेरणा ही उत्तम पताका हुईं ३४ बिजली इन्द्र धनुष से अलंकृत प्रकाशमान रथ को प्रकाशित किया वषट्कार मन्त्र चाबुक हुआ और गायत्री शिर का बन्धन हुई ३५ पूर्व समय में यज्ञ के मध्य महात्मा महेश्वरजी का जो संवत्सर नाम धनुष नियत हुआ था वही धनुष ठहराया गया और बड़ी शब्दवाली सावित्रीजी प्रत्यञ्चा बनीं ३६ और दिव्य कवच वह नियत किया जो कि बड़ों के योग्य रत्नों से जटित खण्डित न होनेवाला रजोगुणरहित कालचक्र से बाहर था ३७ श्रीमान् सुवर्ण का मेरु पर्वत ध्वजा की यष्टि हुई और बिजलियों से अलंकृत बादल पताका हुआ ३८ और अध्वरों के मध्य में देदीप्यमान अग्नियाँ प्रकाशमान हुईं फिर देवता लोग उस अलंकृत रथ को देखकर आश्चर्ययुक्त हुए ३६ हे श्रेष्ठ! इसके पीछे देवताओं ने सब लोकों के तेज को एक स्थान पर इकट्ठा देखकर उस सजे हुए रथ को ४० उस महात्मा के सम्मुख वर्तमान करके वर्णन किया हे महाराज, नरोत्तम! इस प्रकार से देवताओं की ओर से उस शत्रुओं के मारनेवाले उत्तम रथ के तैयार होने पर ४१ शङ्करजी ने अपने अस्त्रशस्त्रों को उस रथ पर रक्खा और आकाश को ध्वजा की यष्टि बनाके नन्दीगण को उस पर नियत किया ४२ ब्रह्मदण्ड, कालदण्ड, रुद्रदण्ड और तप यह चारों सब दिशाओं से युक्त रथ के ओर पास के रक्षक हुए ४३ अथर्वा और अङ्गिरस उस महात्मा के रथचक्रों के रक्षक हुए ऋग्वेद सामवेद और पुराण यह सब आगे चलनेवाले हुए ४४ इतिहास और यजुर्वेद पीछे के रक्षक हुए और दिव्य वाणी और विद्या यह रथ के चारों ओर नियत हुए ४५ हे राजेन्द्र! स्तोत्रादिक वषट्कार और प्रणव यह मुख में शोभा करनेवाले हुए ४६ और छओं ऋतुओं समेत वर्ष के अन्त को विचित्र धनुष करके अपने सम्मुख अविनाशी छायारूप सावित्री को युद्ध में धनुष की प्रत्यञ्चा बनाई ४७ वेगवान् रुद्रजी कालरूप हुए और उनका धनुष वर्षान्तरूप हुआ इस हेतु से रौद्री कालरात्रि को धनुष

की प्रत्यञ्चा बनाया ४८ विष्णु अग्नि और चन्द्रमा भी बाणरूप हुए यह सब जगत् अग्निष्टोम नाम दो रूपवाला वैष्णव कहा जाता है ४९ और विष्णुजी उस भगवान् महातेजस्वी शिवजी की आत्मा हैं इस कारण से उन्होंने शिवजी के धनुष की प्रत्यञ्चा के स्पर्श को न सहा ५० ईश्वर ने भृगु वा अंगिरा ऋषि के क्रोध से उत्पन्न बड़ी कठिनता से सहने के योग्य तेज सङ्कल्पवाले असह्य क्रोधाग्नि को उस बाण में लगाया ५१ और नील लोहित धूम्रवर्ण दिगम्बर भयकारी दश हज़ार सूर्य के समान प्रकाशों से संयुक्त ज्वलित तेज को ५२ कठिनता से गिरने के योग्य राक्षसों का संहार करनेवाला और ब्राह्मणों के मारनेवाले शत्रुओं का नाश करनेवाला सदैव धर्म में नियत मनुष्यों की रक्षा करनेवाला और अधर्मी लोगों का संहारकर्ता था ५३ शत्रुओं के मथन करनेवाले भयानक बल और रूप चित्त के समान शीघ्रगामी इन अपने गुणों से युक्त भगवान् शिवजी प्रकाशमान हुए ५४ यह जड़ चैतन्यरूप विश्व उन शिवजी के अङ्गों में शरणरूप होकर अपूर्व दर्शनवाला शोभायमान हुआ ५५ वह धनुषधारी शिवजी उस तैयार हुए रथ को देखकर और चन्द्रमा विष्णु और अग्नि से उत्पन्न होनेवाले उस बाण को लेकर ५६ नियत हुए हे प्रभो, राजन्, शल्य ! तब देवताओं ने उसके पीछे चलनेवाले देवताओं में श्रेष्ठ वायु को पवित्र गन्धियों का पहुँचानेवाला विचार किया ५७ तब सावधान शिवजी देवताओं को भी भयभीत करते हुए पृथ्वी को कम्पायमान करके उस रथ पर सवार हुए ५८ उस रथ पर सवार होने के अभिलाषी देवताओं के ईश्वर शिवजी को परमऋषि गन्धर्व देवगण और अप्सराओं के गणों ने स्तूयमान किया ५९ ब्रह्मऋषियों से स्तुतिमान् और बन्दीजनों से प्रतिष्ठित और नृत्यविद्या में कुशल नाचनेवाली अप्सराओं से शोभायमान ६० खड्ग बाण और धनुषधारी वरदाता शिवजी देवताओं से बोले कि हमारा सारथी कौन होगा ६१ तब देवगणों ने कहा कि हे देवेश ! आप जिसको आज्ञा देंगे वही निस्सन्देह आपका सारथी होगा ६२ फिर शिवजी ने कहा कि जो मुझसे श्रेष्ठतम होय उसको तुम अच्छी रीति से विचारकर

शीघ्र ही मेरा सारथी बनावो विलम्ब न करो ६३ इसके पीछे शिवजी के इस वचन को सुनकर देवता लोग ब्रह्माजी के समीप पहुँच बहुत प्रसन्न करके यह वचन बोले ६४ कि हे देवताओ ! असुरों के मारने में जो-जो आपने कहा वह सब हमने किया और शिवजी हम पर प्रसन्न हैं ६५ हमने विचित्र शस्त्रों से युक्त रथ को तैयार किया है हम नहीं जानते हैं कि उस उत्तम रथ में सारथी कौन होगा ६६ हे देवोत्तम ! इस हेतु से आप ही किसी सारथी को विचार कीजिये हे समर्थ, देवताओ ! हमारे इस वचन के सफल करने को आप ही समर्थ हैं ६७ हे भगवन् ! तुमने पूर्व समय में हम लोगों से ऐसा कहा है कि मैं तुम लोगों का हित करूँगा उसको आप करने के योग्य हैं ६८ हे देव ! तब वह रथियों में श्रेष्ठ कठिनता से सहने के योग्य शत्रु लोगों का भगानेवाला पिनाक धनुषधारी हमारे अनुकूल युद्ध करनेवाला विचार किया गया वह दानवों को भयभीत करता हुआ वर्तमान है ६९ उसी प्रकार चारों वेद यही चारों उत्तम घोड़े हुए और पर्वतों समेत पृथ्वी रथ हुई, नक्षत्रों समेत आकाश निवासस्थान और शिवजी युद्धकर्ता बने हैं परन्तु सारथी जानने के योग्य है इन सबसे अधिक तेज बलवाला सारथी चाहिये हे देव ! रथ घोड़े समेत लड़नेवाला देवता नियत है ७०।७१ और हे पितामहजी ! कवच धनुष और शस्त्र भी तैयार हैं परन्तु उनका सारथी आपके सिवाय दूसरा हम नहीं देखते हैं ७२ हे प्रभो ! आप ही सब गुणों से सम्पन्न देवता से अधिक हो सो तुम शीघ्र ही उत्तम रथ पर सवार होकर घोड़ों की बाग पकड़ो ७३ आपको देवताओं के विजय और असुरों के नाश के लिये ऐसा करना उचित है यह कहकर उन देवताओं ने तीनों लोकों के ईश्वर ब्रह्माजी को शिर से दण्डवत् करी और उनको सारथी बनने के निमित्त प्रसन्न किया ब्रह्माजी बोले हे देवताओ ! तुमसे जो कहा है उसमें कुछ भी मिथ्या नहीं है ७४।७५ अब मैं युद्धकर्ता शिवजी के घोड़ों को थाँभता हूँ यह कहकर वह संसार के स्वामी ब्रह्माजी ७६ देवताओं की प्रार्थना से सारथी नियत हुए उन लोकेश ब्रह्माजी के रथ पर सवार होने पर ७७ उन वायु के समान शीघ्रगामी घोड़ों ने शिरों से

पृथ्वी को प्राप्त किया अपने तेज से ही प्रकाशमान भगवान् ७८ ब्रह्माजी ने रथ पर चढ़कर बागडोरों समेत चाबुक को हाथ में लिया उसके पीछे देवताओं में श्रेष्ठ भगवान् ब्रह्माजी उन वायु के समान घोड़ों को उठाकर ७६ शिवजी से बोले कि रथ पर सवार हूजिये इसके अनन्तर शिवजी विष्णु अग्नि और चन्द्रमा से उत्पन्न होनेवाले उस बाण को लेकर ८० धनुष से शत्रुओं को कँपाते सवार हुए परम ऋषि, गन्धर्व, देवगण और अप्सराओं के गणों ने उस रथारूढ़ देवेश की स्तुति करी वह शोभायमान खड्ग धनुषबाणधारी वरदाता ८१ । ८२ अपने तेज से तीनों लोकों को अत्यन्त प्रकाश करते हुए रथ पर सवार हुए और इन्द्रादिक देवताओं से फिर कहने लगे ८३ कि यह तुम सन्देह न करना कि शत्रु नहीं मारे जायँगे ८४ इस बाण से तुम असुरों को मरा हुआ ही जानना उन देवताओं ने कहा कि सत्य है असुर मारे गये यह वचन जो आपके मुख से निकला है वह मिथ्या नहीं है ८५ देवता लोग ऐसा विचारकर बड़े प्रसन्न हुए उसके पीछे सब देवगणों समेत देवेश शिवजी ८६ उस बड़े रथ में बैठे हुए चले जिसके समान कोई नहीं वह बड़ा यशस्वी देवता मांसभक्षी अजेय दौड़ते नाचते और चारों ओर से धमकाते हुए अपने पार्षदों से शोभित था ८७ महाबाहु तपोमूर्ति बड़े गुणवान् सब ऋषि और देवगणों ने महादेवजी की विजय की आशा करी ८८ हे नरोत्तम ! इस रीति से लोकों को निर्भय करनेवाले लोकेश के चलने पर सब संसारी जीवों समेत देवता लोग प्रसन्न हुए ८९ वहाँ ऋषि लोग बहुत से स्तोत्रों से शिवजी की स्तुति को करते हुए वारंवार इनके तेज की वृद्धि करनेवाले हुए ९० उनके यात्रा करने पर प्रयुतों अर्बुदों गन्धर्वों ने नाना प्रकार के बाजों को बजाया ९१ इसके पीछे वरदाता ब्रह्माजी के रथ पर सवार होने और असुरों की ओर को चलने पर मन्द मुसकान करते हुए शिवजी बोले कि धन्य है धन्य है ९२ हे देवताओ ! उधर को चलो जिधर दैत्य लोग हैं और सावधान होकर तुम घोड़ों को तेज करो अब तुम मुझ शत्रुहन्ता के युद्ध में भुजबल को देखो ९३ हे राजन् ! इसके पीछे मन और वायु के समान शीघ्रगामी

घोड़ों को तीक्ष्ण किया और जिस ओर को दैत्य दानवों से संयुक्त वह त्रिपुर था उधर को ही उनका मुख किया ९४ भगवान् शिवजी देवताओं की विजय के निमित्त लोकपूजित इन आकाश के पान करनेवाले घोड़ों के द्वारा बड़ी शीघ्रता से चले ९५ शिवजी को रथ पर सवार होकर त्रिपुर के सम्मुख चलने के समय नन्दीगण दिशाओं को शब्दायमान करता हुआ बड़े वेग से गर्जा ९६ वहाँ देवताओं के शत्रु तारक दैत्य इस नन्दीगण के महाभयकारी शब्द को सुनकर नाश को प्राप्त हुए ९७ तब दूसरे असुर लोग वहाँ युद्ध के निमित्त सम्मुख गये हे महाराज! इसके पीछे त्रिशूलधारी शिवजी क्रोध में ज्वलित हुए ९८ तब सब जीव-धारी और तीनों लोक भयभीत हुए और पृथ्वी कम्पायमान हुई और धनुष के चढ़ाते ही बड़े-बड़े शकुन हुए ९९ उस समय चन्द्रमा, अग्नि, विष्णु, ब्रह्मा और रुद्रसमेत जो धनुष था उसके वेग से वह रथ अत्यन्त पीड़ा को पाता था १०० इसके पीछे नारायणजी उस बाण के भाग में से बाहर निकले और वृषभरूप होकर उस बड़े रथ को उठा लिया १०१ रथ के पीड़ित होने और शत्रुओं के गर्जने पर उन महाबली शिवजी ने भ्रान्ति से शब्द किया १०२ इसके पीछे बैल के मस्तक और घोड़ों के पीछे नियत होनेवाले रथ पर बैठकर उन शिवजी ने दानवों के पुर को देखा १०३ हे नरोत्तम! तब बैल और घोड़ों पर नियत रुद्रजी ने उनके घोड़ों के स्तनों का नाश करके खुरों के टुकड़े-टुकड़े कर दिये १०४ हे राजन्, शल्य! आपका भला हो तभी से गौ और बैलों के पैर बीच में से फटे और उसी समय से घोड़ों के स्तन नहीं हुए १०५ अद्भुतकर्मी महाबली रुद्रजी ने उनको पीड़ित कर अपने धनुष को सन्धान बाण को चढ़ा के पाशुपत अस्त्र से संयुक्त करके त्रिपुर को अच्छे प्रकार से चिन्तायुक्त किया हे महाराज! उस धनुषधारी शिवजी के नियत होने १०६ । १०७ पर दैव की प्रेरणा से समय के आने पर वह तीनों पुर एकत्वभाव को प्राप्त हुए फिर उन त्रिपुर नाम की एक दशा होने पर देवताओं को बड़ी प्रसन्नता हुई १०८ इसके पीछे महेश्वरजी की स्तुति करते हुए देवगण और सब सिद्ध महर्षियों ने यह शब्द किया कि विजय करिये इसके पीछे त्रिपुर

और असुरों के मारनेवाले क्षमा न करनेवाले तेजस्वी देवता शिवजी के शरीर में से एक महाउग्ररूपवाला दूसरा रूप प्रकट हुआ फिर उस भगवान् लोकेश्वर ने अपने उस दिव्य धनुष को खैंचकर १०६।१११ उस तीनों लोक के सारवान बाण को त्रिपुर के ऊपर मारा हे महाराज! उस उत्तम बाण के छोड़ने पर ११२ पृथ्वी पर वह तीनों पुर गिर पड़े और उनके पीड़ित शब्द बड़े भयकारी हुए उस बाण नें उन दैत्यगणों को नाश करके पश्चिमी समुद्र में डाल दिया ११३ इस प्रकार क्रोधयुक्त महेश्वरजी के हाथ से तीनों लोकों का दुःखदायी त्रिपुर नाश को प्राप्त हुआ उनका नाश तीनों लोकों की वृद्धि का कारण हुआ और दैत्य भी सब मारे गये ११४ इसके पीछे बड़ा हाहाकार करके अपने क्रोध से उत्पन्न होनेवाली उस प्रचण्ड अग्नि को शान्त किया और उसको रोककर शिवजी ने कहा कि तू संसार को भस्म मत कर ११५ इसके अनन्तर सब देवगण ऋषि और महर्षि लोग स्वस्थचित्त हुए और उत्तम-उत्तम वचनों से शिवजी को प्रसन्न करके सबने स्तुति करी ११६ इन बातों के पीछे ब्रह्मादिक सब देवता शिवजी को प्रणाम कर उनकी आज्ञा ले-लेकर जहाँ-जहाँ से आये थे वहाँ-वहाँ को चले गये ११७ इस रीति से उस संसार के स्वामी देव ऋषियों के पूज्य महेश्वर महाराजजी ने लोकों के कल्याण को किया ११८ जैसे कि सृष्टि के कर्ता भगवान् ब्रह्माजी ने वहाँ रुद्रजी के सारथ्य कर्म को किया ११६ उसी प्रकार आप भी शीघ्रता से महात्मा कर्ण के सारथी होकर घोड़ों की रस्सी पकड़िये १२० हे राजाओं में श्रेष्ठ! आप श्रीकृष्ण कर्ण और अर्जुन से अधिक श्रेष्ठ हो यह निश्चय है कि यह कर्ण युद्ध में रुद्रजी के समान है और आप नीति में ब्रह्माजी के बराबर हो इस कारण से आप मेरे उन शत्रुओं के मारने को वैसे समर्थ हो जैसे कि इन्द्र असुरों के मारने को समर्थ होता है १२१।१२२ हे शल्य! अब यह कर्ण श्रीकृष्ण सारथी समेत श्वेत घोड़ेवाले अर्जुन को युद्ध में मथन करके जिस रीति से अर्जुन को मारे वही प्रकार आपको करना उचित है १२३ हे मद्रदेश के स्वामिन्! तुम्हारे ही कारण से हमको राज्य मिलने की और अपने

जीवन की आशा है अब मुझ कर्ण के मन्त्री की विजय है अर्थात् तुम्हीं हमारे राज्य की प्राप्ति और शत्रुओं के नाश के हेतु हो १२४।१२५ जिसको धर्मज्ञ ब्राह्मण ने मेरे पिता के सम्मुख कहा हे शल्य! इस कारण अर्थ और कर्म से युक्त अपूर्व वचन को सुनकर बड़े निश्चय के साथ कर्म करो इसमें किसी बात का विचार मत करो १२६ भार्गववंश में बड़े यशस्वी जमदग्निजी उत्पन्न हुए उनके पुत्र तेजगुण में पूर्ण परशुरामजी प्रसिद्ध हुए १२७ उस प्रसन्नचित्त सावधान जितेन्द्रिय ने अस्त्रों के निमित्त उत्तम व्रतों को धारण करके शिवजी को प्रसन्न किया १२८ उसकी भक्ति और शान्तचित्तता से प्रसन्न होकर शिवजी ने उनको दर्शन दिया १२६ और परशुराम से कहा हे परशुरामजी! तुम्हारा कल्याण हो मैं प्रसन्न हूँ और तुम्हारे चित्त की इच्छा भी मुझको विदित हुई तुम अपनी आत्मा को पवित्र करो सब अभीष्टों को पावोगे १३० और जब तुम पवित्र होगे तभी तुमको अस्त्र दूँगा क्योंकि यह अस्त्र अपात्र और असमर्थ को भस्म करते हैं १३१ शिवजी के इस वचन को सुनकर परशुरामजी ने उत्तर दिया १३२ हे देवेश! जब आप मुझको पवित्र और पात्र जानें तभी अस्त्र दीजियेगा १३३ दुर्योधन ने कहा कि हे शल्य! इसके पीछे तप शान्ति और नियमपूर्वक पूजा भेंट और बलिप्रदान होम और मुख्य मन्त्रों के द्वारा १३४ बहुत वर्षों तक शिवजी की आराधना करी तब उन महादेवजी ने महात्मा भार्गवजी की १३५ प्रशंसा देवी पार्वतीजी के सम्मुख वर्णन करी कि यह दृढ़व्रत रखनेवाले परशुराम सदैव मुझमें भक्ति रखनेवाले हैं १३६ हे शत्रुहन्तः! इस प्रकार से प्रसन्न होकर शिवजी ने देवता और पितरों के सम्मुख उन परशुरामजी के बहुत से गुणों का वर्णन किया १३७ इसके पीछे उसी समय में दैत्य लोग बड़े पराक्रमी हुए और प्रबल और अहङ्कारी राक्षसों से देवता लोग पराजित होकर घायल हुए १३८ तब उनके मारने में निश्चय करनेवाले देवताओं ने इकट्ठे होकर उन शत्रुओं के मारने का उपाय किया परन्तु उनके मारने को समर्थ नहीं हुए १३६ इसके पीछे देवताओं ने उमापति महेश्वरजी को भक्ति से प्रसन्न किया और प्रार्थना करी कि

शत्रुओं के समूहों को मारिये १४० इसके अनन्तर वह देवेश शिवजी देवसन्तापी दैत्यों के नाश करने का प्रण करके भार्गव परशुरामजी को बुलाकर यह वचन बोले १४१ कि हे भार्गव ! देवताओं के सब आये हुए शत्रुओं को हमारी प्रीति और लोकों के हित के अर्थ तुम मारो १४२ यह वचन सुनकर परशुरामजी ने शिवजी से प्रार्थना करी कि हे देवेश ! युद्ध में दुर्मद अस्त्रवेत्ता दानवों के मारने को अस्त्रों से अभिज्ञ कैसे मारने को समर्थ हो सकता है महेश्वरजी ने कहा कि मेरी आज्ञा से तुम वहाँ जावो शत्रुओं को मारोगे १४३ । १४४ और शत्रुओं के समूहों को विजय करके बड़े गुणों को प्राप्त होगे इस वचन को सुनकर परशुरामजी सब बातों को अङ्गीकार करके १४५ स्वस्तिवाचनपूर्वक दानवों की ओर चले वहाँ जाकर बड़े अहङ्कार और बल से उन दानवों से बोले १४६ कि हे युद्धदुर्मद, दैत्य लोगो ! मुझसे युद्ध करो हे महाअसुर लोगो ! मुझको महादेवजी ने तुम्हारे विजय करने को भेजा है १४७ फिर भार्गवजी के इस वचन को सुनकर दैत्यों ने युद्ध किया उस समय उस भार्गवनन्दन ने वज्र और बिजली के समान स्पर्शवाले प्रहारों से युद्ध में उन दैत्यों को मारकर शिवजी का दर्शन किया फिर जमदग्निजी के पुत्र ब्राह्मणों में श्रेष्ठ परशुरामजी दानवों के हाथ से घायल शरीर शिवजी के हाथ के स्पर्श से घातजन्य पीड़ा से रहित हुए और शिवजी महाराज ने इनके उस कर्म से अत्यन्त प्रसन्न १४८ । १५० होकर इन महात्मा भार्गव-जी को बहुत से वरदान दिये और उन प्रसन्नमूर्ति शिवजी ने परशुरामजी से कहा १५१ कि शस्त्रों के आघात से यह तेरे शरीर में पीड़ा हुई उस पीड़ा से हे भृगुनन्दन ! तेरा मानुषी कर्म नष्ट होकर दिव्य कर्म प्राप्त हुआ १५२ अब तुम अपनी इच्छानुसार मुझसे दिव्य अस्त्रों को लो, दुर्योधन ने कहा कि इसके पीछे परशुरामजी सब अस्त्रों को और अनेक अभीष्ट वरों को पाकर शिर से दण्डवत् कर शिवजी की आज्ञा लेकर वहाँ से चले गये १५३ तब ऋषि ने इस रीति से प्राचीन वृत्तान्त को वर्णन किया भार्गवजी ने भी अत्यन्त प्रसन्न अन्तःकरण के साथ दिव्य धनुर्वेद महात्मा कर्ण को दिया हे पुरुषोत्तम, राजन्, शल्य ! जो कर्ण में कुछ

पाप होता तो भृगुनन्दनजी काहे को दिव्य अस्त्र उसको देते और मैं भी उसको सूत के वंश में उत्पन्न नहीं समझता हूँ १५४ । १५६ मैं इसको क्षत्रियों के वंश में उत्पन्न देवकुमार जानता हूँ और यह कुल के गुप्त करने को आज्ञा दिया है यह मेरा मत है १५७ हे शल्य ! यह कर्ण सब प्रकार से क्षत्रिय है और सूत के वंश में नहीं उत्पन्न हुआ है कुण्डल और कवचधारी महाबाहु महारथी १५८ सूर्य के समान तेजस्वी सिंह को मृगी कैसे उत्पन्न कर सक्ती है और जैसे कि इसके दोनों भुजा गजराज की सूँड़ के समान मोटी हैं १५६ उसी प्रकार हे शत्रुहन्तः ! इसकी बड़ी छाती को भी देखो यह सूर्य का पुत्र धर्मात्मा कर्ण कोई प्राकृत पुरुष नहीं है १६० हे राजेन्द्र ! यह कर्ण महात्मा परशुरामजी का प्रतापवान् और महापराक्रमी शिष्य है ॥ १६१ ॥

इति श्रीमहाभारते कर्णपर्वणि शल्यदुर्योधनसंवादे पंचत्रिंशोऽध्यायः ॥ ३५ ॥

छत्तीसवाँ अध्याय

दुर्योधन बोले कि इस रीति से वहाँ सब लोकों के पितामह भगवान् ब्रह्माजी ने सारथ्य कर्म किया और श्रीरुद्रजी रथी हुए १ हे वीर ! रथी से अधिक रथ का सारथी करना योग्य है हे पुरुषोत्तम ! इस हेतु से तुम युद्ध में घोड़ों को थाँभो जैसे कि शिवजी के निमित्त देवगणों ने भगवान् ब्रह्माजी को सारथ्य कर्म के लिये प्रार्थना करी उसी प्रकार हम लोगों की ओर से कर्ण से भी अधिक आप प्रार्थना किये गये हो २ । ३ जैसे कि देवताओं की ओर से शिवजी से बड़े भी ब्रह्माजी प्रार्थना किये गये हे महाराज ! उसी प्रकार आप भी कर्ण से अधिक होने के कारण प्रार्थना किये गये हैं जैसे कि ब्रह्माजी ने रुद्रजी के घोड़ों को थाँभा ४ उसी प्रकार आप भी बड़े तेजस्वी कर्ण के घोड़ों को थाँभो शल्य बोले कि हे नरोत्तम ! मैंने भी इन नरोत्तम श्रीकृष्ण और अर्जुन के मुख से कही हुई इस उत्तम अद्भुत कथा को बहुधा सुना है जैसे कि ब्रह्माजी ने शिवजी के सारथ्य कर्म को किया है ५ और जैसे कि शिवजी ने एक ही बाण से सब असुरों को मारा हे भरतवंशिन् ! यह भूतकाल का वृत्तान्त

श्रीकृष्णजी का भी जाना हुआ है ६ । ७ जैसे कि भगवान् ब्रह्माजी सारथी हुए उसी प्रकार श्रीकृष्णजी भी भूत-भविष्य के वृत्तान्तों को जानते हैं ८ इसी हेतु से जैसे कि जान बूझकर भगवान् ब्रह्माजी ने शिवजी के सारथ्य कर्म को किया हे भरतवंशिन्! उसी प्रकार श्रीकृष्णजी ने अर्जुन की रथवानी अङ्गीकार करी ९ जो कर्ण किसी दशा में भी अर्जुन को मार डालेगा तो अर्जुन के मरने के पीछे आप श्रीकृष्णजी युद्ध करेंगे १० शङ्ख चक्र गदा के हाथ में धारण करनेवाले श्रीकृष्णजी तेरी सेना को भस्म करेंगे उस समय उन क्रोधयुक्त श्रीकृष्णजी के सम्मुख तेरी सेना में से कोई भी युद्ध करने को समर्थ न होगा ११ सञ्जय बोले कि शत्रुओं का विजय करनेवाला महासाहसी आपका पुत्र दुर्योधन ऐसे वचन कहनेवाले शल्य से बोला हे महाबाहो! तुम सूर्य के पुत्र महापराक्रमी कर्ण का अपमान मत करो १२ । १३ जो कर्ण कि सब अस्त्रधारियों में श्रेष्ठ होकर सर्वशस्त्रों का पारगामी है जिसके धनुष की भयानक प्रत्यञ्चा के शब्द को सुनकर १४ पाण्डवीय सेना दशोंदिशाओं को भागती है हे महाबाहो! आपके नेत्रों के ही सम्मुख हुआ था जैसे कि वह मायावी सैकड़ों मायाओं का प्रकट करनेवाला घटोत्कच मारा गया और अर्जुन किसी प्रकार से भी सेना के सम्मुख नहीं हुआ १५ । १६ बड़ा भयभीत अर्जुन इस सब दिनों में कभी सम्मुख नहीं हुआ और पराक्रमी भीमसेन धनुष की कोटि से प्रेरित किया गया १७ हे राजन्! बहुत से लोगों ने कर्ण से कहा था कि तू पेट पालन करनेवालों के समान अज्ञान है इसी प्रकार बड़े युद्ध में माद्री के पुत्र शूरवीर नकुल और सहदेव को विजय करके १८ किसी प्रयोजन से युद्ध में नहीं मारा हे श्रेष्ठ! जिस कर्ण ने वृष्णियों में बड़ा वीर और यादवों में श्रेष्ठ महापराक्रमी सात्यकी को १९ युद्ध में विजय करके रथ से विहीन कर दिया और उसी मन्द मुसकानवाले ने सृञ्जयों को आदि लेकर अन्य सब योद्धाओं को जिनमें मुख्य धृष्टद्युम्न था उनको वारंवार युद्ध में विजय किया उस महारथी पराक्रमी कर्ण को पाण्डव लोग युद्ध में कैसे विजय कर सक्ते हैं २० । २१ जो क्रोधयुक्त होकर

युद्ध में वज्रधारी इन्द्र को भी मार सक्ता है और आप सर्वविद्यासम्पन्न महाअस्त्रज्ञ और पण्डित हो २२ और पृथ्वी पर आपके भुजबल के समान भी कोई नहीं है तुम शत्रुओं के भल्लरूप होकर पराक्रम में भी अक्षय हो २३ हे शत्रुहन्तः राजन्, शल्य! इसी हेतु से आपका नाम विख्यात है आपके भुजबल को पाकर सब यादव लोग समर्थ नहीं हुए २४ हे राजन्! श्रीकृष्णजी आपके भुजबल से अधिक हैं जैसे कि अर्जुन के मरने पर श्रीकृष्णजी से सेना रक्षा के योग्य है २५ उसी प्रकार कर्ण के नाश हो जाने पर सेना के लोग आपसे रक्षा के योग्य हैं जैसे कि वासुदेवजी युद्ध में सेना को रोकेंगे उसी प्रकार आप भी सेना को अवश्य मारोगे २६ आपके कारण से युद्ध में अऋणता प्राप्त करना चाहता हूँ और सब सगे भाई इष्ट मित्र और अन्य सब राजाओं की अऋणता चाहता हूँ २७ शल्य बोला कि हे प्रशंसा करनेवाले दुर्योधन! तुम सब सेना के समक्ष जो कृष्णजी से भी अधिक मुझको कहते हो इस हेतु से मैं तुझ पर प्रसन्न हूँ अब मैं प्रसन्नता से अर्जुन से लड़नेवाले यशस्वी कर्ण के साथ उसके रथ पर इस प्रतिज्ञा से सारथी बनता हूँ कि मैं जिस समय जो चाहूँगा वह कर्ण के विषय में कहूँगा उसका किसी प्रकार का मान नहीं करूँगा २८। ३० सञ्जय बोले कि हे श्रेष्ठ, राजन्, धृतराष्ट्र! तब आपका पुत्र कर्ण समेत यह बोला कि ऐसा ही होय यह कहकर सब क्षत्रियों के समक्ष में ३१ शल्य के सारथी होने से विश्वासयुक्त होकर दुर्योधन बड़ी प्रसन्नता से कर्ण से प्रीतिपूर्वक मिला ३२ और बड़ी प्रशंसा करके कहने लगा कि युद्ध में तुम सब पाण्डवों को ऐसे मारो जैसे कि महेन्द्र सब दानवों को मारता है ३३ इसके अनन्तर घोड़ों के हाँकने पर शल्य के तैयार होने पर प्रसन्नचित्त होकर कर्ण ने दुर्योधन से कहा ३४ यह मद्रदेश का राजा अत्यन्त प्रसन्नचित्त होकर बात नहीं करता है हे राजन्! आप मीठे वचनों से फिर इस प्रकार से कहो ३५ तब महाज्ञानी सर्वशस्त्र और अस्त्रों का वेत्ता पराक्रमी राजा दुर्योधन मद्रदेशियों के महाराज से बोला ३६ हे शल्य! अब कर्ण बादल के समान घिरे हुए शब्दयुक्त बाणों से युद्ध-

भूमि को पूर्ण करना मानता है कि अर्जुन के साथ युद्ध करना चाहिये ३७ हे पुरुषोत्तम ! आप युद्ध में उसके घोड़ों को थाँभो कर्ण आप सब योद्धाओं को मारकर फिर अर्जुन को मारना चाहता है ३८ हे राजन् ! मैं बारंबार आपको कर्ण के सारथी बनने के निमित्त अपनी इच्छा से प्रार्थना करता हूँ जैसे कि सारथियों में श्रेष्ठ श्रीकृष्णजी अर्जुन के मन्त्री हैं उसी प्रकार आप भी कर्ण की सब ओर से रक्षा करो ३९।४० सञ्जय बोले कि इसके पीछे प्रसन्नचित्त हो राजा शल्य आपके पुत्र दुर्योधन से बड़े स्नेह से मिलाप करके यह वचन बोला ४१ हे गान्धारी के पुत्र, अपूर्वदर्शन, राजन्, दुर्योधन ! जो तुम मुझको ऐसा मानते हो इस हेतु से तेरा जो अभीष्ट है उस सबको मैं करूँगा ४२ हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ, शत्रुसन्तापिन् ! मैं जिस-जिस कर्म के योग्य हूँ और जहाँ-जहाँ जैसा-जैसा मैं कर सक्ता हूँ वहाँ-वहाँ अपने मन से सर्वात्मा से तेरे कर्म को करूँगा ४३ मैं वृद्धि का चाहनेवाला होकर कर्ण से जो कुछ प्रिय वार्ता कहूँ उस वचन को आप और कर्ण दोनों सब प्रकार से सहने के योग्य हैं ४४ कर्ण बोला हे राजन्, मद्र ! जिस प्रकार से ब्रह्माजी शिव-जी के और श्रीकृष्णजी अर्जुन के सारथी हुए उसी प्रकार तुम भी हमारी वृद्धि में प्रवृत्त हूजिये ४५ शल्य ने कहा कि अपनी निन्दा और स्तुति और दूसरे की निन्दा और स्तुति यह चार प्रकार के कर्म अच्छे लोग नहीं करते हैं ४६ हे बुद्धिमन् ! फिर भी मैं तेरे निश्चय होने के लिये अपनी प्रशंसा से भरे हुए वचन को कहता हूँ उसको तुम यथार्थ ही समझो हे प्रभो ! मैं मातलि के समान सावधानी वा अश्व की रथवानी अथवा आगे होनेवाले दोष के जानने और उसके दूर होने के उपाय के जानने से और दोषों के दूर करने की सामर्थ्य रखने से इन्द्र के सारथी होने के योग्य हूँ ४७।४८ हे निष्पाप, कर्ण ! इस हेतु से युद्ध में अर्जुन से युद्ध करनेवाले तुझ रथी के साथ सारथी होकर तप से पृथक् घोड़ों को चलाऊँगा ॥ ४९ ॥

इति श्रीमहाभारते कर्णपर्वणि सारथ्यस्वीकारे षट्त्रिंशोऽध्यायः ॥ ३६॥

सैंतीसवाँ अध्याय

दुर्योधन बोला कि हे कर्ण ! यह राजा मद्र तेरा सारथी बनेगा यह तुम्हारा सारथी श्रीकृष्णजी से भी ऐसा अधिक है जिस प्रकार इन्द्र का सारथी मातलि १ जैसे कि मातलि हरित घोड़ों के रथ को चलाता है उसी प्रकार यह शल्य भी तेरे रथ के घोड़ों को चलावेगा २ तुझ युद्ध-कर्ता के रथी होने और राजा मद्र के सारथी होने पर तुम्हारा ही उत्तम रथ निश्चय करके पाण्डवों को विजय करेगा ३ सञ्जय बोले कि हे राजन् ! इसके अनन्तर प्रातःकाल हो जाने पर राजा दुर्योधन ने उस वेगवान् राजा मद्र से फिर कहा ४ कि हे राजन्, मद्र! आप अब युद्ध में कर्ण के उत्तम घोड़ों को थाँभो तुमसे रक्षित होकर यह कर्ण अर्जुन को अवश्य विजय करेगा ५ हे भरतवंशिन् ! यह वचन सुनकर शल्य ने रथ पर नियत होकर कहा कि ऐसा ही होगा तब प्रसन्नचित्त कर्ण अपने सारथी शल्य के पास आकर यह वचन बोला कि हे सूत ! आप मेरे रथ को शीघ्र तैयार करो उसके पीछे सारथी शल्य ने कहा विजय करो यह शब्द कहकर रथों में श्रेष्ठ गन्धर्व नगर के समान ६ । ७ बुद्धि के अनुसार अलंकृत कल्याणरूप और विजयी रथ को बड़ी शीघ्रता से तैयार करके वर्तमान किया उस उत्तम रथ को प्रथम तो महारथी कर्ण ने ब्रह्मज्ञानी अपने पुरोहित के द्वारा बुद्धि के अनुसार पूज के परिक्रमा कर विचारपूर्वक सूर्य का उपस्थान करके ८ । ९ सम्मुख वर्तमान हुए शल्य से कहा कि आप सवार हूजिये इसके पीछे बड़ा तेजस्वी शल्य कर्ण के उस अत्यन्त उत्तम बड़े अजेय रथ पर ऐसे चढ़ा १० जैसे कि पर्वत पर सिंह चढ़ता है तदनन्तर कर्ण अपने उत्तम रथ को शल्य के स्वाधीन देखकर ११ ऐसे सवार हुआ जैसे बिजली से भरे हुए बादल पर सूर्य सवार होता है फिर वह सूर्य और अग्नि के समान प्रकाशमान दोनों एक रथ पर सवार होकर १२ ऐसे शोभायमान हुए जैसे कि स्वर्ग के सूर्य और चन्द्रमा दोनों बादलों में शोभित होते हैं उस समय वह महात्मा बड़े तेजस्वी ऐसे दिखाई दिये १३ जैसे कि यज्ञ में ऋत्विज और सदस्यों से

स्तूयमान इन्द्र और अग्नि होते हैं फिर वह कर्ण रथ पर नियत हो गया जिसके घोड़ों को शल्य ने पकड़ रक्खा था १४ बाणरूप किरणों का रखनेवाला कर्ण घोर धनुष को टङ्कारता हुआ अपने उत्तम रथ पर ऐसे नियत हुआ जिस प्रकार मण्डलयुक्त सूर्य नियत होता है १५ वह पुरुषोत्तम ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि मन्दराचल पर्वत पर सूर्य नियत होता है फिर शल्य उस महाबाहु रथ पर चढ़े हुए तेजस्वी कर्ण से १६ यह वचन बोला कि हे वीर, कर्ण! युद्ध में द्रोणाचार्य और भीष्मजी से कठिन कर्म नहीं किया गया १७ तुम सब धनुषधारियों के समक्ष में उसको करो मेरे चित्त में यह पूर्ण विश्वास था कि महारथी भीष्म और द्रोणाचार्य १८ अवश्य अर्जुन और भीमसेन को मारेंगे हे वीर! उस महायुद्ध में जो वीरता का कर्म उन दोनों से नहीं हुआ १९ हे कर्ण! तुम द्वितीय इन्द्र के समान होकर उस कर्म को करो तुम धर्मराज को बाँधो अथवा अर्जुन को मारो २० हे कर्ण! तुम भीमसेन समेत माद्री के पुत्र नकुल और सहदेव को भी मारो हे पुरुषोत्तम! तुम यात्रा करो तुम्हारा कल्याण है और विजय होगी २१ वहाँ जाकर पाण्डवों की सब सेना को भस्म करो इसके पीछे तूरी नामादि हज़ारों बाजे और भेरी बजाईं २२ उनका शब्द ऐसा सुन्दर विदित हुआ जैसे कि स्वर्ग में बादलों के शब्द होते हैं फिर वह महारथी रथ में बैठा हुआ कर्ण उसके वचन को अङ्गीकार करके २३ उस युद्ध में अत्यन्त सावधान शल्य से बोला हे महाबाहो! घोड़ों को तीक्ष्ण करो मैं अर्जुन को मारूँगा २४ और भीमसेन समेत दोनों नकुल सहदेव और राजा युधिष्ठिर को मारूँगा हे शल्य! अब तुम अर्जुन को और मुझ हज़ारों बाण फेंकनेवाले के भुजबल को देखो अब मैं बड़े प्रकाशित बाणों को २५। २६ पाण्डवों के नाश और दुर्योधन की विजय के लिये फेंकता हूँ शल्य बोला कि हे सूत के पुत्र! तुम इस रीति से पाण्डवों का अपमान करते हो २७ वह पाण्डव सब अस्त्र शस्त्रों के ज्ञाता बड़े धनुषधारी अतिबली कभी मुख न मोड़नेवाले महाभाग अजेय और सत्यपराक्रमी हैं २८ जो साक्षात् इन्द्र को भी भय के उत्पन्न करनेवाले हैं हे कर्ण! जब वज्र के समान २९ गाण्डीव

धनुष के शब्द को सुनोगे तब ऐसा नहीं कहोगे अथवा जब कि भीमसेन के हाथ से ३० हाथियों की सेना को खण्डित दन्त होकर मृतक देखोगे तब ऐसा नहीं कहोगे जब युद्ध में धर्मपुत्र युधिष्ठिर वा नकुल सहदेव को देखोगे ३१ और जब तीक्ष्ण बाणों से आकाश को आच्छादित करनेवाले बाणों के चलानेवाले हस्तलाघव करनेवाले अजेय शत्रुओं को अथवा अन्य-अन्य बड़े-बड़े प्रतापी राजाओं को देखोगे तब तुम ऐसे वचन नहीं कहोगे ३२।३३ सञ्जय बोले कि इसके पीछे कर्ण राजा मद्र के कहे हुए वचनों को निंदित करके उस वेगवान् राजा मद्र से कहने लगा कि अब चलो ॥३४॥

इति श्रीमहाभारते कर्णपर्वणि शल्यसंवादे सप्तत्रिंशोऽध्यायः ॥ ३७ ॥

अड़तीसवाँ अध्याय

सञ्जय बोले कि प्रसन्नमूर्ति सब कौरव उस बड़े धनुषधारी युद्धाभिलाषी कर्ण को देखकर चारों ओर से पुकारे १ इसके पीछे दुन्दुभी और नाना प्रकार के बाणों के घोड़ों की गर्जना समेत शब्दों को करते आपके युद्ध करनेवाले २ युद्ध में मृत्यु को लौटाकर निकले इसके पीछे कर्ण समेत प्रसन्नचित्त युद्धकर्ताओं के चलने पर ३ पृथ्वी कम्पायमान हुई और बड़ी दूर तक शब्दायमान हो गई और सूर्यादि नवग्रह युद्ध के निमित्त निकलते हुए दृष्ट पड़े ४ और उल्काओं का गिरना वा शुष्क विद्युत्पातन होना प्रारम्भ हुआ और महाभयकारी वायु चली उस समय महाभयसूचक पशु और पक्षियों के समूह आपकी सेना को बहुधा दाहिने हुए और यात्रा करनेवाले कर्ण के घोड़े पृथ्वी पर गिरे और अन्तरिक्ष से अस्थियों की महाभयकारी वर्षा हुई ५।७ अस्त्र शस्त्र अग्निरूप हुई ध्वजा कम्पायमान हुई और वाहनों ने अश्रुपात किया ८ ऐसे-ऐसे अनेक भय और अशुभसूचक उत्पात कौरवों के नाश के लिये प्रकट हुए ९ परन्तु दैव से मोहित हुए उन सब राजाओं ने इन भयकारी उत्पातों को कुछ नहीं गिना और यात्रा करनेवाले कर्ण से कहने लगे कि विजय करो उस स्थान पर कौरव लोगों ने पाण्डवों को पराजय माना १० हे राजन् ! इसके पीछे शत्रुओं के वीरों का मारनेवाला

रथियों में श्रेष्ठ यह रथ पर बैठा हुआ कर्ण बड़े पराक्रमी सूर्य और अग्नि के समान प्रकाशमान भीष्म और द्रोणाचार्य को विचारकर ज्वलितरूप हुआ ११ अहङ्कार और क्रोधज्वलितरूप श्वासाओं को लेता हुआ कर्ण अर्जुन के अद्‌भुत कर्म को विचारकर शल्य को सम्मुख करके यह वचन बोला कि हे शल्य ! मैं शस्त्रधारी रथ में सवार होकर युद्ध में वज्रधारी इन्द्र से भी नहीं डरता हूँ भीष्म ही जिनमें मुख्य गिने जाते थे उनको पृथ्वी पर पड़ा हुआ देखकर मुख न मोड़ना यह जो प्रशंसा है वह मुझको त्याग करती है १२ । १३ जब कि महेन्द्र और विष्णु के रूपवाले निर्दोष अत्यन्त उत्तम रथ और घोड़ेवाले और हाथियों के संहार करनेवाले घायल न होने के समान भीष्म और द्रोणाचार्यजी शत्रुओं के हाथ से मारे गये इस हेतु से इस युद्ध में मुझको भी भय नहीं है १४ बड़े अस्त्रज्ञ ब्राह्मणों में श्रेष्ठ गुरुजी ने सारथी वा हाथी और रथों समेत बड़े-बड़े वीर पराक्रमी राजाओं को युद्ध में शत्रुओं के हाथ से मरा हुआ देखकर किस कारण से युद्ध में सब शत्रुओं को नहीं मारा १५ सो मैं इस प्रबल घोर युद्ध में द्रोणाचार्य को स्मरण करता हुआ सत्य-सत्य कहता हूँ हे कौरव! तुम उसको समझो तुममें से मेरे सिवाय कौन सा दूसरा मनुष्य है जो उस मृत्यु के समान सम्मुख आनेवाले उग्ररूप अर्जुन से सम्मुख लड़े १६ द्रोणाचार्यजी में शिक्षा करना वा बल धैर्य और महान् अस्त्रज्ञतापूर्वक नम्रता थी जो वह महात्मा मृत्यु के वशीभूत हुए तो मैं अब उसको आसन्नमृत्यु ही मानता हूँ १७ मैं इस लोक में शोचता हुआ कर्म और दैवयोग से सबको नाशवान् ही जानता हूँ गुरु के गिराये जाने पर सूर्योदय के समय सन्देह से रहित कौन मनुष्य अपने जीवने की आशा कर सक्ता है १८ निश्चय करके अस्त्र, बल, पराक्रम, कर्म, श्रेष्ठ नीति और उत्तम शस्त्र मनुष्य के सुख के कर्म को नहीं कर सक्ते हैं क्योंकि जब इस रीति से गुरुजी शत्रुओं के हाथ से मारे गये १९ तब कोई भी अस्त्रादिक उन असहिष्णु अग्नि वा सूर्य के समान तेजस्वी पराक्रम में इन्द्र और विष्णु के सदृश नीति में शुक्र और बृहस्पति के समान गुरुजी की रक्षा करने को समीपता में नियत नहीं हुए २०

स्त्री वा बालकों को पीड़ित और रोदन करने पर और दुर्योधन के उपायों के निष्फल होने पर मुझको कर्म करना उचित है यह मेरा मत है हे शल्य ! इस हेतु से शत्रुओं की उस सेना में चलो २१ जहाँ सत्यसङ्कल्प राजा युधिष्ठिर, भीमसेन, अर्जुन, वासुदेवजी, सात्यकी, सञ्जय, नकुल और सहदेव नियत हैं उनसे युद्ध करनेवाला मेरे सिवाय अन्य दूसरा कौन है २२ इस हेतु से हे राजन् मद्र ! शीघ्र चलो मैं युद्ध में सम्मुख होकर उन पाञ्चालों को वा सृञ्जयों समेत पाण्डवों को मारूँगा वा उनके हाथ से मरकर द्रोणाचार्य के समान यमराज के समीप जाऊँगा २३ हे शल्य ! यह बात नहीं है कि मैं भीष्मादि शूरों के समान न मरूँगा किन्तु मरना अवश्य है परन्तु मुझसे मित्र के द्रोह करनेवाले नहीं सहे जाते इस हेतु से उनसे पराक्रमपूर्वक लड़कर प्राणों को त्याग करके द्रोणाचार्य के पीछे जाऊँगा २४ जीवन के अन्त होने पर मृत्यु के चाहे हुए बुद्धिमान् और अबुद्धिमान् दोनों बच नहीं सकते हे बुद्धिमन् ! इस हेतु से मैं पाण्डवों के सम्मुख जाऊँगा निश्चय करके दैव के उल्लङ्घन करने को कोई समर्थ नहीं है २५ राजा धृतराष्ट्र का पुत्र सदैव से मेरा शुभचिन्तक और मित्र रहा है इस निमित्त मैं उसके अभीष्ट सिद्ध होने के लिये प्रियभोग और कठिनता से त्यागने के योग्य अपने प्राणों को भी त्याग करूँगा २६ वह व्याघ्रचर्म से मढ़ा हुआ रथ मुझको परशुरामजी ने दिया है जो शब्दरहित चक्र सुवर्णमय त्रिकोश और रजतमय त्रिवेणु और अत्यन्त उत्तम घोड़ों से संयुक्त है २७ हे शल्य ! चित्र विचित्र धनुष ध्वजा गदा वा उग्ररूप शायक प्रकाशित खड्ग और उत्तम आयुधों समेत शब्दायमान उग्र उज्ज्वल शङ्ख को देखो २८ मैं इस पताकाधारी वज्र के समान दृढ़ शब्दायमान श्वेत घोड़े और तूणीरों से शोभायमान रथों में श्रेष्ठ इस रथ पर आरूढ़ होकर युद्ध में अपने पराक्रम से अर्जुन को मारूँगा २९ जो युद्धभूमि में सदैव सावधान सबका नाश करनेवाला काल भी अर्जुन की रक्षा करे तो भी युद्ध में सम्मुख होकर उसको अवश्य मारूँगा अथवा भीष्म के समक्ष यमराज के पास जाऊँगा ३० जो युद्ध में यमराज, वरुण, कुबेर, इन्द्र अपने सब समूहों समेत इकट्ठे

होकर भी अर्जुन की रक्षा करें तब भी मैं उन सब समेत अर्जुन को विजय करूँगा बहुत बातों के कहने से क्या प्रयोजन है ३१ सञ्जय बोले कि कर्ण के वचनों को सुनकर पराक्रमी राजा शल्य उसका अपमान करके हँसा और निषेध करके उत्तर दिया ३२ शल्य ने कहा हे कर्ण! अपनी प्रशंसा मत करो हे बड़े अहङ्कारिन्! तुम बड़ा बोल बोलते हो बड़े आश्चर्य की बात है कि कहाँ तो नरोत्तम अर्जुन और कहाँ नराधम तुम ३३ अर्जुन के सिवाय कौन पुरुष विष्णुजी और इन्द्र से रक्षित देवस्वरूप यदुभवन को विलोड़न करके श्रीकृष्ण की छोटी बहिन सुभद्रा को हरण कर सकता था ३४ और मृगवध कलह में अर्थात् शूकर के शिकार करने में इन्द्र के समान पराक्रमवाले अर्जुन के सिवाय कौन-सा पुरुष इस लोक में त्रिभुवन के स्वामी ईश्वरों के भी ईश्वर शिवजी को युद्ध में बुला सकता है ३५ अर्जुन ने अग्नि की गौरवता से असुर, सुर, महाउरग, मनुष्य, गरुड़, पिशाच, यक्ष और राक्षसों को अपने बाणों से विजय किया और अग्नि को यथेच्छ भोजनरूप हव्य दिया ३६ तुझको स्मरण है कि जब युद्ध में कौरवों समेत तुम सबको पराजय करके गन्धर्वों ने इस धृतराष्ट्र के पुत्र दुर्योधन को बाँध लिया था और तुम लोग भाग आये थे उस समय इसी अकेले अर्जुन ने सूर्य के समान प्रचण्ड शायकों से गन्धर्वों को पराजय करके उसको छुटाया था ३७।३८ फिर गोहरण में सेना वा सवारी समेत चढ़ाई करनेवाले गुरु, गुरुपुत्र और भीष्मादिक तुम सब उस पुरुषोत्तम के हाथ से विजय किये गये थे उस समय तुमने क्यों नहीं अर्जुन को विजय किया ३९ सञ्जय बोले कि इस रीति से शत्रुओं की प्रशंसा बड़े साहसी शल्य के मुख से होने पर कौरवीय सेना का सेनापति कर्ण अत्यन्त क्रोधयुक्त होकर राजा मद्र से बोला ४० ऐसा ही होगा ऐसा ही होगा क्या अधिक वर्णन करते हो अब तो निश्चय करके मेरा उसका युद्ध वर्तमान है जो वह इस युद्ध में मुझको विजय कर लेगा तब तेरा यह कहना ठीक-ठीक होगा ४१।४२ राजा मद्र ने कहा ऐसा ही होय यह कहकर उत्तर नहीं दिया तब युद्ध की इच्छा करके कर्ण ने शल्य से कहा कि हे शल्य! सावधान हो

जाओ ४३ वह श्वेत घोड़ों से युक्त शल्य को सारथी रखनेवाला युद्ध में शत्रुओं को मारता हुआ उन वीर शत्रुओं के सम्मुख ऐसे गया जैसे कि अन्धकार को दूर करता हुआ सूर्य जाता है उसके पीछे व्याघ्रचर्म से मढ़े हुए श्वेतघोड़ों के रथ के द्वारा वहाँ पहुँचकर सब पाण्डवीय सेना को देखकर बड़ी शीघ्रता से अर्जुन को पूछा ॥ ४४ । ४५ ॥

इति श्रीमहाभारते कर्णपर्वणि शल्यसंवादेऽष्टत्रिंशोऽध्यायः ॥ ३८ ॥

उनतालीसवाँ अध्याय

इसके अनन्तर यात्रा करने में आपकी सेना को प्रसन्न करते हुए कर्ण ने युद्ध में प्रत्येक को देखकर पाण्डवों से कहा १ कि इस समय जो पुरुष महात्मा अर्जुन को मुझे दिखावे उसको मुँहमाँगा धन दूँ २ और जो पुरुष अर्जुन को मुझसे थोड़ा जाने उसको मैं रत्नों का भरा हुआ एक शकट दूँ ३ और जो अर्जुन का बतलानेवाला पुरुष उसको भी थोड़ा माने तो मैं उसको भोजन और कांस्य दोहनियों समेत सौ गौवें दूँ ४ अर्जुन के दिखलाने पर सौ उत्तम गाँव दूँ और खच्चरों समेत रथ भी दूँ ५ अथवा इन सबको भी थोड़ा जाने तो मैं उसको कृष्ण केशों से शोभित स्त्रियों को दूँगा जो अर्जुन का दिखलानेवाला इसको भी साधारण जाने ६ तो उसको सुनहरी हाथी के समान छः बैलों से युक्त रथ दूँ और इसी प्रकार उसे ऐसी वस्त्रालङ्कारयुक्त स्त्रियों का एक सैकड़ा दूँगा ७ जो कि निष्क की माला धारण किये गीतवाद्य में कुशल श्यामाङ्गी हों अथवा जो अर्जुन का दिखलानेवाला उसको भी कम जाने उसको सौ हाथी सौ गाँव सौ रथ और दशहज़ार सुवर्ण से युक्त ८ । ९ सुशिक्षित हृष्ट पुष्ट रथ के ले चलने में समर्थ होयँ ऐसे घोड़े दूँगा और सुवर्ण शृङ्गों से युक्त सवत्सा चार सौ गौवें दूँगा १० जो अर्जुन का दिखलानेवाला पुरुष इसको भी थोड़ा माने ११ उसके लिये दूसरा वर देकर ऐसे पाँच सौ घोड़े दूँ जो कि श्वेतवर्ण और सुवर्ण से मण्डित स्वच्छ मणियों के भूषणों से अलंकृत हों १२ इसके विशेष मैं अठारह अच्छे शिक्षित अन्य घोड़ों को भी दूँगा और अति उज्ज्वल सुवर्ण से अलंकृत काम्बोजी

घोड़ों से युक्त रथ दूँ १३ जो अर्जुन का दिखलानेवाला पुरुष उसको भी न्यून समझे १४ तो दूसरा दान दूँ अर्थात् नाना प्रकार के स्वर्ण भूषणों से और मालाओं से अलंकृत पश्चिमीय कच्छदेशों में उत्पन्न और माल्यवान् हाथीवानों से शिक्षित सौ हाथी दूँ और जो इसको भी थोड़ा माने १५।१६ उसको बहुत वृद्धियुक्त धन से पूर्ण वन जङ्गलवाले ऐसे चौदह गाँव दूँ जो निर्भय और अच्छे राजाओं के भोगने के योग्य होयँ १७ इसी प्रकार निष्क की माला धारण करनेवाली मगधदेशीय दासियों का एक सैकड़ा दूँ और जो अर्जुन का दिखलानेवाला पुरुष इसको भी थोड़ा माने तो जो वह माँगे वह दूँ अर्थात् बेटी स्त्री को आदि ले जो मेरा प्रियधन होय उसको भी दूँगा इसके विशेष जो-जो मेरा धन है और वह चाहता है वह सब उसको दे सकता हूँ जो अर्जुन को मुझे बतावे वा दिखावे १८।२० श्रीकृष्ण और अर्जुन को एक समय में ही मारकर उनका सब धन उसको दूँ जो अर्जुन और श्रीकृष्णजी को मुझे दिखावे २१ युद्ध में ऐसे वचनों को कहते हुए कर्ण ने समुद्र से उत्पन्न हुए अपने शङ्ख को बजाया २२ हे महाराज ! कर्ण के इन वचनों को सुनकर दुर्योधन अपने साथियों समेत अत्यन्त प्रसन्न हुआ २३ इसके पीछे हे पुरुषोत्तम ! दुन्दुभी आदि मृदङ्गों के सब प्रकार के शब्द वा बाजों समेत सिंहनाद और हाथियों के शब्द २४ सेनाओं के मध्य में प्रकट हुए इसी प्रकार अत्यन्त प्रसन्नचित्त शूरवीरों के अनेक शब्द हुए २५ तब तो सेना के प्रसन्न होने पर राजामद्र हँसकर उस शत्रुओं के विजय करनेवाले और अपनी प्रशंसा करते हुए जानेवाले महारथी कर्ण से यह वचन बोला ॥ २६ ॥

इति श्रीमहाभारते कर्णपर्वणि कर्णावलेपे नवत्रिंशोऽध्यायः ॥ ३९ ॥

चालीसवाँ अध्याय

शल्य बोले कि, हे सूतपुत्र ! दान करने से बन्द हो तू सुवर्णमय हाथी के समान छः बैलों से संयुक्त रथ को पुरुष के अर्थ अर्थात् ब्रह्म के अर्पण करो तब तुम अर्जुन को देखोगे १ हे राधा के बेटे ! तुम यहाँ

बालबुद्धि से अज्ञानियों के समान धन को देते हो अब तुम विना उपाय के ही अर्जुन को देखोगे २ तुम अज्ञानियों के समान जो निरर्थक धन को देते हो सो अपात्र के दान देने में जो दोष हैं उनको भी अपने मोह से नहीं जानते हो ३ जो तुम बहुत से धन को देते हो उस धन के द्वारा तुमको उचित है कि यज्ञों को करो ४ जो तुम अपनी अज्ञानता से श्रीकृष्ण और अर्जुन को मारना चाहते हो वह निरर्थक है शृगालों से सिंहों का मारना हमने कभी और कहीं भी नहीं सुना है ५ तू अप्रियता को और अप्राप्त को चाहता है तेरे शुभचिन्तक मित्र हैं जो कि तुझको अग्नि में गिरते हुए नहीं रोकते हैं ६ तू शुभाशुभ कर्म को भी नहीं जानता है और निस्सन्देह तू काल के गाल में फँसता है जीवन का चाहनेवाला कौन पुरुष सर्वथा निष्प्रयोजन और सुनने के अयोग्य वार्ताओं को करे ७ जैसे कि गले में पत्थर की शिला को बाँध-कर समुद्र में पैरना चाहै अथवा पर्वत के शिखर से गिरना होय वैसे ही प्रकार का तेरा ईप्सित कर्म है ८ जो अपना कल्याण चाहते हो तो तुम सब योद्धाओं से युक्त सजी हुई अपनी सेना समेत अर्जुन से युद्ध करो ९ मैं दुर्योधन की वृद्धि के लिये तुझसे कहता हूँ जो तू जीवन की इच्छा रखता है तो मेरे वचनों को शत्रुता और ईर्षासंयुक्त न जान १० कर्ण बोला मैं अपने ही भुजबल के आश्रित होकर युद्ध में अर्जुन को चाहता हूँ हे उत्तम, मित्र ! तुम शत्रुरूप होकर मुझको भयभीत कराते हो ११ अब मुझको मेरे इस विचार से कोई भी नहीं हटा सकता इन्द्र भी जो वज्र दिखाकर मुझको युद्ध से निवृत्त किया चाहै तो नहीं निवृत्त हो सकता फिर मनुष्य की क्या सामर्थ्य है १२ सञ्जय बोले कि फिर कर्ण को क्रोधयुक्त करने की इच्छा से मद्रदेश के स्वामी शल्य ने कर्ण के बोलने के पीछे इस उत्तररूप वचन को कहा १३ कि जब अर्जुन के वेग से युक्त प्रत्यञ्चा से प्रेरित तीव्र हाथों से छोड़े हुए कङ्कपक्ष से जटित तीक्ष्ण नोकवाले बाण तेरे सम्मुख आवेंगे तब तू अर्जुन के विषय में ऐसे वचन कहने को दुःखी होगा १४ जब सेना को सन्तप्त करता हुआ तुझको तीक्ष्ण नोकवाले बाणों से मर्दन करना चाहनेवाला अर्जुन

अपने दिव्य धनुष को लेकर तेरे सम्मुख आवेगा तब हे सूतपुत्र ! तू महादुःखी होगा १५ जैसे कि माता की गोदी में कोई सोता हुआ बालक चन्द्रमा के पकड़ने की इच्छा करता है उसी प्रकार अब तुम इस रथ पर सवार होकर प्रकाशमान अर्जुन को अपने मोह से विजय किया चाहते हो १६ हे कर्ण ! अब तुम अत्यन्त तीक्ष्णधारवाले त्रिशूल से चिपटकर अपने अङ्गों को घसीटते हो जो कि अत्यन्त तीक्ष्णधारवाले त्रिशूलकर्मी अर्जुन के साथ में लड़ना चाहते हो १७ जैसे कि अज्ञान बालक वा वेगवान् नीचमृग क्रोधयुक्त बड़े केसरी सिंह को युद्ध के निमित्त बुलावे हे सूतपुत्र ! इसी प्रकार से तू भी अर्जुन को बुलाता है १८ हे सूत के पुत्र ! तू राजकुमार को मत बुलावे जैसे कि मांस से तृप्त हुआ शृगाल वन में केसरी सिंह को नहीं बुला सकता उसी प्रकार तुम अर्जुन को प्राप्त होकर अपना नाश करना चाहते हो सो मत करो १९ जैसे कि शृगाल ईशा के समान दाँत रखनेवाले मुख और गण्डस्थल से मद झाड़नेवाले बड़े हाथी को युद्ध में बुलावे हे कर्ण ! उसी प्रकार तुम पाण्डव अर्जुन को बुलाते हो २० तुम अपनी अज्ञानता और बल बुद्धि से बिल में बैठे हुए क्रोधयुक्त महाविषधर काले सर्प को लकड़ी से मारते हो जो अर्जुन से युद्ध करना चाहते हो २१ हे कर्ण ! अब शृगालरूप अज्ञान होकर तुम केसरी सिंहरूप क्रोधयुक्त नरोत्तम पाण्डव अर्जुन को उल्लङ्घन करके गर्जते हो २२ और सर्प के समान तुम अपनी मृत्यु के लिये सुन्दर पक्षवाले अद्भुत पराक्रमी गरुड़ के समान वेगवान् महाबली पाण्डव अर्जुन को बुलाते हो २३ सब जलों के स्वामी भयानक मत्स्यादिक जीवों से व्याप्त चन्द्रोदय में प्रसन्नरूप वृद्धि पानेवाले मूर्तिमान् समुद्र को भुजाओं से तरना चाहते हो २४ हे कर्ण ! बछड़े के समान तुम दुन्दुभीरूप क्षुद्र घण्टिकाओं के शब्द रखनेवाले होकर तीक्ष्ण शृङ्ग से घात करनेवाले बड़े बैल के समान पाण्डव अर्जुन को युद्ध में बुलाते हो २५ तुम मेढक के समान होकर लोक में घोर जल बरसानेवाले नररूप बादल के समान अर्जुन के सम्मुख ऐसे गर्जते हो २६ जैसे कि अपने घर में नियत कुत्ता वन में वर्त-

मान व्याघ्र को अपने स्थान से भौंकता है उसी प्रकार तुम भी कुत्ते के समान नररूप व्याघ्र अर्जुन की ओर को भौंकते हो २७ हे कर्ण ! खरगोशों से युक्त शृगाल भी वन में निवास करता हुआ अपने को उस समय तक सिंहरूप मानता है जब तक कि सिंह को नहीं देखता है २८ हे राधा के पुत्र ! इसी प्रकार शत्रुओं के विजय करनेवाले अर्जुन को न देखके तुम भी अपने को सिंहरूप मान रहे हो २९ जब तक एक रथ पर सूर्य और चन्द्रमा के समान नियत श्रीकृष्ण और अर्जुन को नहीं देखते हो तब तक तुम अपनी आत्मा को व्याघ्र मानते हो ३० हे कर्ण! जब तक कि तुम युद्ध में गाण्डीव धनुष के शब्द को नहीं सुनते हो तभी तक तुम इन अस्तव्यस्त वचनों को मुख से बोल रहे हो रथ और धनुषों से दशों दिशाओं को शब्दायमान करनेवाले और शार्दूल के समान गर्जनेवाले अर्जुन को देखकर तू शृगालरूप हो जायगा ३१।३२ तुम सदैव शृगालरूप हो और अर्जुन सदैव सिंहरूप है हे अज्ञान ! इस कारण वीर लोगों से शत्रुता करने में तू शृगाल के समान दिखाई देता है ३३ जैसे कि चूहा बिलार और महावन में कुत्ता और व्याघ्र होय और जैसे शृगाल और सिंह होयँ और जिस प्रकार खरगोश और हाथी होयँ ३४ अथवा मिथ्या और सत्य वा विष और अमृत होय उसी प्रकार तुम और अर्जुन भी अपने-अपने कर्म से विख्यात हो ॥ ३५ ॥

इति श्रीमहाभारते कर्णपर्वणि कर्णशल्यसंवादे चत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४० ॥

इकतालीसवाँ अध्याय

सञ्जय बोले कि तेजस्वी शल्य से निन्दा किया हुआ कर्ण अत्यन्त क्रोधयुक्त होकर वचनरूप भालों को सहन करता हुआ बोला १ कि हे शल्य ! गुणवानों के गुणों को गुणवान् ही जानता है गुणहीन मनुष्य नहीं जानता है तुम गुणों से रहित हो इसी से गुण और अवगुणों को क्या जान सकते हो २ हे शल्य ! मैं महात्मा अर्जुन के बड़े अस्त्रों को वा क्रोध बल पराक्रम धनुष और बाणों को अच्छे प्रकार से जानता हूँ ३ और राजाओं में वा यादवों में श्रेष्ठ श्रीकृष्णजी की भी महानता को

जैसा कि मैं जानता हूँ वैसा तुम नहीं जानते हो ४ मैं अपने और पाण्डवों के पराक्रम को अच्छे प्रकार से जानता हुआ युद्ध में उस गाण्डीव धनुषधारी को बुलाता हूँ ५ हे शल्य ! यह सुन्दर पुङ्खवाला रुधिर पीनेवाला तरकस में अकेला ही रहनेवाला स्वच्छ अलंकृत ६ चन्दन से लिप्त बहुत वर्षों से पूजित सर्परूप विषधर उग्र मनुष्य घोड़े और हाथियों के समूहों का मारनेवाला ७ घोर रुद्ररूप कवचसमेत अस्थियों का चूर्णकर्ता जिसके द्वारा मैं क्रोधयुक्त होकर मेरुपर्वत सरीखे बड़े-बड़े पर्वतों को भी चीर डालता हूँ ८ मैं अर्जुन और देवकीनन्दन श्रीकृष्ण के सिवाय उस बाण को कभी दूसरे पर नहीं चलाऊँगा इस हेतु से मैं सत्य-सत्य वचन कहता हूँ ९ कि मैं अत्यन्त क्रोधयुक्त होकर उस बाण से अर्जुन और वासुदेवजी से लड़ूँगा यह कर्म मेरे ही योग्य है १० सब वृष्णिवंशीय वीरों की लक्ष्मी श्रीकृष्णजी में नियत है और सब पाण्डवों की विजय अर्जुन में नियत है ११ इससे अब दोनों को पाकर कौन लौट सकता है वह दोनों पुरुषोत्तम भागे हुए हैं वा रथ पर नियत हैं १२ मुझ अकेले के सम्मुख होने पर हे शल्य ! मेरे युद्ध की शोभा को देखना बुआ और मामा के बेटे अजेय दोनों भाइयों को १३ सूत में पोही हुई दो मणियों के सदृश मेरे हाथ से मृतक ही देखोगे अर्जुन के पास गाण्डीव धनुष है श्रीकृष्ण के पास सुदर्शन चक्र है और गरुड़ वा हनूमान्‌जी के रूप रखनेवाली दोनों ध्वजा हैं १४ हे शल्य ! भयभीतों को भय के उत्पन्न करनेवाले और मेरी प्रसन्नता के बढ़ानेवाले वह दोनों हैं दुष्टप्रकृति अज्ञानी महायुद्ध में अनभिज्ञ भय से विदीर्ण-चित्त तुम भयभीत होकर बहुत से भयकारी वचनों को कहते हो हे पापिन् ! देश में उत्पन्न होनेवाले निर्बुद्धि नीच क्षत्रियों के कुल को कलङ्क लगानेवाले अब युद्ध में उन दोनों को मारकर तुझको भी बांधवों समेत मारूँगा १५। १७ तू मित्र होकर शत्रु के समान शत्रुओं की प्रशंसा करता है मुझको श्रीकृष्ण और अर्जुन से क्या डराता है कै तो वह दोनों मुझको ही मारेंगे वा मैं ही उन दोनों को मारूँगा १८ मैं अपने पराक्रम को जानता हुआ श्रीकृष्ण और अर्जुन से नहीं डरता हूँ

मैं अकेला ही हज़ारों वासुदेव और अर्जुनों को मार सकता हूँ १६ हे दुर्देश में उत्पन्न होनेवाले ! मौन हो दुष्ट अन्तःकरणवाले मद्रदेशियों के विषय में क्रीड़ा के निमित्त इकट्ठे होनेवाले स्त्री, बालक, वृद्ध, मनुष्य बहुधा जिन कथाओं को गान करके पढ़ा करते हैं हे शल्य! उन गाथाओं को मुझसे सुनो २०।२१ और पूर्व समय में इन्हीं कथाओं को राजाओं के समक्ष में ब्राह्मणों ने भी जिस प्रकार से वर्णन करी हैं हे अज्ञानिन् ! तुम उनको एकाग्रचित्त से सुनकर क्षमा करना वा उत्तर देना २२ अर्थात् मद्रदेशीय सदैव मित्र से शत्रुता करनेवाले हैं जो हमसे शत्रुता करता है हम उसको मद्रदेशीय ही जानते हैं मद्रदेशीय में मेल मिलाप नहीं होता है और आपस में क्षुद्रवचन बोला करते हैं २३ हमने सुना है कि मद्र-देशीय लोग सदैव दुष्टात्मा मिथ्यावादी और कुटिल होते हैं २४ पिता, माता, पुत्र, सास, ससुर, मामा, जामाता, लड़की, भाई, पोते, बान्धव और समान अवस्थावाले, अभ्यागत और अन्य दासी दास आदि सब मिले हुए हैं और बुद्धिमान् होकर भी अज्ञानियों के समान अपनी इच्छा से पुरुषों से विषयभोग करनेवाले हैं २५।२६ इसी प्रकार जिन नीच अचेतता में युक्त मत्स्यखादकों के घर में गौ के मांस समेत मद्य को पीकर पुकारते और हँसते हैं २७ और अयोग्य गीतों को भी गाते हुए इच्छानुसार कर्मों को करते हैं और परस्पर में भी इच्छानुसार वार्त्तालाप करते हैं उनमें धर्म कैसे हो सकता है २८ जो कि मद्रदेशीय अहङ्कारी होकर दुष्टकर्मी विख्यात हैं इस हेतु से मद्रदेशियों से मित्रता और शत्रुता दोनों न करे २६ मद्रदेशियों में स्नेह और प्रीति नहीं होती और वह सदैव अपवित्र हैं मद्रदेशीय और गान्धारदेशियों में पवित्रता नष्ट हो गई है ३० राजा जिसमें याचक है उस यज्ञ में जो दिया जाता है वह सब जैसे नष्टता को पाता है और जिस प्रकार शूद्रों का संस्कार करने-वाला तिरस्कार को पाता है और जैसे इस लोक में ब्राह्मणों के शत्रु सदैव नाश होते हैं उसी प्रकार मद्रदेशियों से प्रीति करके मनुष्य नष्टता को पाता है ३१।३२ मद्रदेशियों में मेल मिलाप नहीं है हे विषैले बिच्छू ! मैंने तेरे विष को अथर्वणवेद के मन्त्रों से शान्त किया है ३३

इसी प्रकार ज्ञानी लोग बिच्छू के काटे हुए विष के वेग से घायल मनुष्य की ओषधी करते हैं वह भी सत्य-सत्य देखने में आते हैं ३४ हे बुद्धिमन्! की तो मौन हो जाओ नहीं तो ऐसे-ऐसे वचनों को सुनोगे जिन वचनों को मद्य से मदोन्मत्त स्त्रियाँ गाकर नाचती हैं ३५ उन स्वेच्छाचारी पति-वञ्चक भोगों में अनियम स्त्रियों का पुत्र मद्रदेशीय किस रीति से धर्म कहने को योग्य हो सकता है ३६ जो स्त्रियाँ कि ऊँट और गधों के समान खड़ी-खड़ी पेशाब किया करती हैं उन बेधर्म और निर्लज्ज ३७ स्त्रियों का पुत्र होकर तू धर्म कहना चाहता है जो स्त्रियाँ कांजी माँगने पर कचों को खींचती हैं ३८ और न देने की इच्छा से इन भयकारी असह्य वचनों को कहती हैं कि कोई हमसे कांजी मत माँगो वह हमारी बड़ी प्रिय है ३९ बेटी को दें पति को दें परन्तु कांजी को न देंगे कन्या और वृद्ध स्त्री निर्लज्ज हैं और कम्बलों की धारण करनेवाली होकर बहुधा दुराचारिणी और भ्रष्ट हैं इस रीति से अन्य लोग भी शिर की चोटी से पैर के नखों तक अयोग्य और अनुचित बातें मद्रदेशियों के विषय में कहा करते हैं और यह भी हमने सुना है कि ४० । ४२ पापिष्ठ देश में उत्पन्न होनेवाले म्लेच्छरूप धर्मों से रहित मद्र, सिन्धु, और सौवेरदेशीय लोग कैसे धर्मों को जानेंगे क्षत्रियों का यह श्रेष्ठ धर्म है ४३ कि युद्धभूमि में मृतक होकर अथवा सत्पुरुषों से स्तूयमान होकर पृथ्वी पर शयन करें इस हेतु से जो मैं युद्धभूमि में जीवन को त्याग करूँ ४४ तो मुझ स्वर्गाभिलाषी का यह प्रथम कल्प है ऐसा मैं बुद्धिमान् दुर्योधन का प्यारा मित्र हूँ ४५ उसके लिये ही मेरे प्राण और धन हैं हे पापिन् देश में पैदा होनेवाले! विदित होता है कि तू भी पाण्डवों से भगाया हुआ है तुम शत्रु के समान जैसे कर्म हमारे साथ में करते हो वह सब तुम इच्छापूर्वक करो यह निश्चय समझो कि मैं तुझ सरीखे सैकड़ों मनुष्यों से भी युद्ध में अजेय हूँ जैसे कि धर्मज्ञ मनुष्य नास्तिक के वचनों से धूप के मारे सारङ्ग पक्षी के समान विलाप करके शरीर को सुखाता है ४६ । ४८ उसी प्रकार क्षत्रिय के व्यवहार में नियत होकर मैं डराने के योग्य नहीं हूँ पूर्व समय में मेरे गुरु श्रीपरशुरामजी ने युद्ध

में मुख न मोड़नेवाले और शरीर त्यागनेवाले नरोत्तम लोगों की जो गति कही है उसको मैं स्मरण करता हूँ और धृतराष्ट्र के पुत्रों की रक्षा और शत्रुओं के नाश करने में प्रवृत्त हूँ ४९ । ५० मुझको उत्तम व्यवहार में नियत पुरूरवावंशीय जानो हे राजन्, मद्र ! मैं तीनों लोकों में ऐसा किसी जीवधारी को नहीं देखता हूँ ५१ जो मुझको इस विचार से हटावे यह मेरा सिद्धान्त है हे बुद्धिमन् ! ऐसा जानकर मौन हो भयभीत होकर क्यों बहुत बकता है ५२ हे मद्रदेशियों में नीच ! मैं तुझको मारकर कच्चे मांसभक्षियों को नहीं दूँगा हे शल्य ! तुम मित्र और मित्र के पिता धृतराष्ट्र इन दोनों विचारों से और कठिन वचनों की सहनशीलता से अब तक जीवते बचे हो हे राजन्, मद्र ! जो तू फिर ऐसे वचनों को कहेगा ५३ । ५४ तो तेरे शिर को अपनी वज्र की समान गदा से काटकर पृथ्वी पर गिराऊँगा हे दुष्टदेश में उत्पन्न होनेवाले ! अब यहाँ इस बात के देखने और सुननेवाले हैं ५५ कि श्रीकृष्ण और अर्जुन कर्ण को मारें अथवा कर्ण उन दोनों को मारे हे राजन् ! इस प्रकार कहकर ५६ फिर कर्ण राजा मद्र से बोला कि निर्भय होकर तुम रक्षा करो रक्षा करो ॥ ५७ ॥

इति श्रीमहाभारतेकर्णपर्वणिशल्यकर्णपरस्परनिन्दनन्नामैकचत्वारिंशोऽध्यायः ॥४१॥

बयालीसवाँ अध्याय

सञ्जय बोले कि हे श्रेष्ठ ! फिर शल्य युद्ध के अभिलाषी अधिरथी कर्ण के वचनों को सुनकर उससे यह विश्वासरूप वचन बोला १ कि मैं अपने धर्म में नियत यज्ञकर्ता युद्ध में मुख न मोड़नेवाले मूर्द्धाभिषेक राजाओं के वंश में उत्पन्न हुआ हूँ २ हे कर्ण ! जैसे मदिरा से उन्मत्त मनुष्य होता है वैसा ही तू मुझको दिखाई देता है इससे अब मैं उसी प्रकार से शुभचिन्तकता से तुझ मतवाले की चिकित्सा करता हूँ ३ हे नीच, कुलकलङ्की, कर्ण ! इस मेरी कही हुई काकोपमा को समझो उसको सुनकर अपनी इच्छा के अनुसार कर्म करना ४ हे कर्ण ! मैं अपने विषय में उस दोष को स्मरण नहीं करता हूँ अर्थात् नहीं जानता

हूँ जिसके हेतु से हे महाबाहो ! तुम मुझ निरपराधी को मारना चाहते हो ५ मुख्य कर राजा का अभ्युदय चाहनेवाले रथ पर सवार होकर मैं तेरे हानि लाभ के कहने के योग्य हूँ मेरे इन वचनों को समझो ६ कि टेढ़ा सीधा मार्ग रथ के सवारों की बल निर्बलता रथ की सवारी में घोड़ों का क्लेश और थकावट ७ शस्त्रों का ज्ञान पशु पक्षियों के शब्द भार की न्यूनाधिकता बाणों के भालों की चिकित्सा ८ अस्त्रों का योग युद्ध और शकुन यह सब बातें मुझ रथ के रक्षक से तुमको जानने के योग्य हैं ९ हे कर्ण ! इस हेतु से यह दृष्टान्त तुझसे कहता हूँ ठेठ समुद्र के किनारे पर एक बड़ा धनी वैश्य अनाज रखनेवाला था १० वह वैश्य यज्ञों का करनेवाला महादानी शान्तचित्त होकर पवित्रतापूर्वक अपने कर्म में नियत बहुत से पुत्र पौत्रादि से युक्त प्रीतिमान् और जीवमात्रों पर दया करनेवाला था ११ वह धर्म पर चलनेवाले राजा के देश में निर्भयता से निवास करता था उसके कुमार बालकों की जूठन का खानेवाला एक उच्छिष्टभृत नाम काक था उसको वैश्य के कुमार बालक सदैव मांस, उष्ण अन्न, दही, दूध, खीर, मधु, घृत, यह सब वस्तु खिलाया करते थे उस बालकों के जूठन खानेवाले अहङ्कारी काक ने अपने बराबरवाले वा अपने से बड़ों की भी निन्दा करी इसके पीछे किसी समय दैवयोग से समुद्र के तट पर चलने में गरुड़ के समान मन के समान बड़े शीघ्रगामी प्रसन्नचित्त चक्राङ्ग आदिक हंस आये तब वह वैश्यों के बालक उन हंसों को देखकर अपने जूठन खानेवाले को ऐसे बोले १२ । १६ हे आकाशचारिन्, काक ! आप तो सब पक्षियों से उत्तम हो यह प्रशंसा सुनकर उस निर्बुद्धि काक ने अपने अहङ्कार और अज्ञानता से उस वचन को सत्य ही जाना और उन दूर जानेवाले बहुत हंसों के पास जाकर उस दुर्बुद्धि ने कहा कि तुम लोगों में से जो श्रेष्ठ होय वह मेरे साथ उड़े यह सुनकर वह सब आये हुए हंस हँसे १७ । २० और उन आकाशचारी मनगामी और पक्षियों में श्रेष्ठ हंसों में से चक्राङ्ग नाम हंस ने उस अहङ्कारी काक से कहा २१ कि हम हंसों की गति मन के समान है और दूर जाने के कारण से हम सब पक्षियों में शिरोमणि गिने जाते हैं हे निर्बुद्धे तू काक

होकर अपने साथ हमको उड़ने के लिये कैसे बुलाता है २२। २३ भला कह तो सही कि तू हमारे साथ किस प्रकार से उड़ेगा यह सुनकर उस निकृष्ट जाति और अपनी प्रशंसा आप करनेवाले काक ने हंसों के कहे हुए वाक्यों को वारंवार निन्दा करके उत्तर दिया २४ कि मैं निस्सन्देह सौ प्रकार की गति से उड़ सकता हूँ और प्रत्येक गति शतयोजन लम्बी चित्र विचित्र और जुदे-जुदे प्रकार की है २५ उन गतियों के यह नाम हैं उड्डीन अर्थात् ऊपर को उड़ना अवड्डीन, नीचे को चलना प्रड्डीन, सब ओर को जाना विडीन, केवल उड़ना निड्डीन, धीरे चलना सण्डीन, चित्तरोचक गति तिरछी डीन गति भी चार प्रकार की है २६ विडीन, बड़ी विस्तृत परिडीन, सब ओर से चलना पराडीन, पीछे को उड़ना सुडीन, स्वर्गमार्ग में चलना अभिडीन, सम्मुख चलना महाडीन, पवित्र और ऊँची गति खडीन, आकाश को जाना परिडीन, चारों ओर को चलना अवडीन, चढ़ना प्रडीन, अद्भुत गति सण्डीन, डीन, डीनक, ऊपर की ओर की गतें विडीन, उड्डीन, सण्डीन, पुनडीन, विडीन २७।२८ सम्पात, समुदीष, व्यतिरिक्त, गतागत, प्रतिगत, वर्ही, निकुलीन इत्यादि अनेक प्रकार की गति हैं २९ उन गतियों को मैं तुम्हारे सम्मुख करता हूँ इसी से मेरे पराक्रम को देखोगे मैं उन गतियों में से एक गति के द्वारा आकाश में उड़ता हूँ हे हंस लोगो! आप जिस गति से कहो उसी गति से उड़ूँ ३०। ३१ हे पक्षियो! निश्चय करके इस निराश्रय आकाश में इन गतियों से उड़ सकते हो तो तुम भी अच्छे प्रकार से निश्चय करके मेरे साथ उड़ो काक के इस वचन को सुनकर ३२ एक हंस ने हँसकर काक को उत्तर दिया है हे कर्ण! उस वचन को मुझसे समझो अर्थात् हंस ने कहा हे काक! तुम निश्चय करके सौ प्रकार की गति को उड़ोगे ३३ और मैं उसी गति से उड़ूँगा जिस गति से सब पक्षी उड़ते हैं क्योंकि मैं इस एक गति के सिवाय दूसरी गति को नहीं जानता हूँ ३४ हे ताम्राक्ष! अब तुम भी चाहे जिस गति से उड़ो इसके पीछे जो वहाँ और काक इकट्ठे हो गये थे वह सब हँसे ३५ और कहने लगे कि हंस एक ही गतिवाला होकर सौ गति जाननेवाले को कैसे परास्त

कर सकता है ३६ इसके अनन्तर हंस और काक ईर्षा करके उड़े अर्थात् एक गति उड़नेवाला हंस सौ गतिवाले काक के साथ उड़ा ३७ काक उड़ते ही वृक्षों पर बैठ-बैठ अहङ्कार में भरा हुआ इधर-उधर फिरता बोलने लगा ३८ उसकी ऐसी गति को देखकर सब काक प्रसन्न हुए और सब हंस उसकी अभाग्यता देखकर हँसने लगे ३९ इस रीति से एक मुहूर्त तक उड़कर हंस को पुकार-पुकार कर कहता था कि ४०। ४१ मेरी इन कलाओं को देखकर आप भी अपनी कलाओं को प्रकट कीजिये ४२ हंस उसके वचन को सुन बहुत सा हँसकर पश्चिम समुद्र की ओर को चला ४३। ४४ और उसके सङ्ग काक भी अपने परों को चपल करता हुआ चला समुद्र के ऊपर चलते-चलते कुछ दूर पर काक थकित हो गया ४५ और कोई वृक्ष टापू न देखके धैर्यता से रहित होकर उड़ने लगा ४६ जब उसके सब पक्ष शिथिल हो गये तब समुद्र में गिर पड़ा ४७ उसको गिरा हुआ देखके वह हंस वहाँ स्थिर होकर हँसकर कहने लगा ४८ हे काक! आप अपना व्रत और स्नान शीघ्र करके चलो क्योंकि अभी समुद्र का पाट सौ योजन है कहो सौ गतियों में से यह कौनसी आपकी गति है कि जल में मौन होकर अपने पक्ष और चोंच को डुबाते और निकालते हो यह वचन सुनकर वह नीच वायस आरत वचनों से बोला हे हंस! अब आप अपनी ओर को देखकर मेरे ऊपर क्षमा करो और जल से निकाल कर मुझको आनन्द दो और हमने अपनी कुमति के वशीभूत होकर जो आपसे कुत्सित वचन कहे उनको अपने हृदय से दूर कर दया करके मुझको जल से निकालिये हे कर्ण! यह काक के वचन सुनकर हंस ने अपने पंजे से उसको पकड़कर स्थल में लाकर डाल दिया सो जैसे कि वैश्य के घर में उच्छिष्ट खा-खाकर काक पुष्ट हुआ और हंस से प्रण करके अपना हास्य कराया उसी प्रकार तुम भी धृतराष्ट्र के घर में खाके मोटे होकर बढ़े हो अब तुम काक के समान हो हंसरूपी पार्थ से लड़कर अपना हास्य कराया चाहते हो अरे विराटनगर में द्रोणाचार्य कृपाचार्य और भीष्मादिक सरीखे शूरवीरों को पार्थ ने विजय किया तब तुमने अकेले अर्जुन को क्यों नहीं

मारा ४६ । ७३ उस स्थान पर पृथक्-पृथक् और संयुक्त तुम सब लोगों को अर्जुन ने ऐसे विजय किया जैसे कि शृगालों को सिंह विजय करता है तब तेरा पराक्रम कहाँ था ७४ युद्ध में अर्जुन के हाथ से मारे हुए भाई को देखकर सब कौरवीय वीरों के देखते हुए प्रथम तो तुम्हीं भागे ७५ हे कर्ण ! इसी प्रकार द्वैतवन में गन्धर्वों से सम्मुखता होने में प्रथम तुम हीं सब कौरवों को छोड़कर भागे थे ७६ वहाँ भी हे कर्ण ! अर्जुन ने ही युद्ध में गन्धर्वों को मारकर और चित्रसेनादिकों को विजय करके स्त्रीसमेत तेरे मित्र वा पालन करनेवाले दुर्योधन को छुटाया था ७७ हे कर्ण ! फिर परशुरामजी ने राजाओं के मध्य सभा के बीच अर्जुन और केशवजी का प्राचीन प्रभाव वर्णन किया था ७८ तुमने राजा लोगों के समक्ष में श्रीकृष्ण और अर्जुन को अवध्य वर्णन करनेवाले भीष्म और द्रोणाचार्य के वारंवार कहे हुए वचनों को सुना मैं उसको कहाँ तक तुझसे कहूँ अर्जुन अनेक प्रकार से तुझसे ऐसा अधिक है जैसे कि सब जीवों से ब्राह्मण अधिक होता है ७६ । ८० तू अभी रथ पर चढ़े हुए वसुदेवनन्दन और कुन्तीनन्दन श्रीकृष्ण और अर्जुन को देखेगा जैसे कि बुद्धि में नियत होकर काक हंस के पास शरणागत हुआ उसी प्रकार तू भी वासुदेवजी और अर्जुन के पास जाकर शरणागत हो ८१ । ८२ हे कर्ण ! जब तुम युद्ध में पराक्रमी अर्जुन और वासुदेवजी को एक रथ पर देखोगे तब ऐसी-ऐसी बातें न कहोगे ८३ जब अर्जुन सैकड़ों बाणों से तेरे अहङ्कार का नाश करेगा तभी तुम अपने और अर्जुन के बलाबलरूप अन्तर को देखोगे ८४ अरे जो नरोत्तम देव असुर और मनुष्यों में प्रसिद्ध हैं उनका अपमान तुम ऐसे मत करो जैसे कि पटबीजना सूर्य का अपमान नहीं कर सकता ८५ जैसे कि सूर्य और चन्द्रमा हैं उसी प्रकार अर्जुन और श्रीकृष्णजी अपने तेज से विख्यात हैं तुम मनुष्यों में पटबीजने के समान हो ८६ हे बुद्धिमन्, सूत के पुत्र, कर्ण ! तू अर्जुन और केशवजी का अपमान मत कर वह दोनों नरोत्तम महात्मा हैं मौन हो जा अपनी प्रशंसा मत कर ॥८७॥

दो०—सूर्य चन्द्रसम विदित है, पारथ कृष्ण अमान ।

तिनकी सरवरि जनि करो, तुम खद्योत समान ॥ १ ॥
वरप्रभाव हरि पार्थ को, पूर्व कह्यो बलराम ।
सो भुलाय कत मोहवश, लरन चहत जयकाम ॥ २ ॥

इति श्रीमहाभारते कर्णपर्वणि शल्यसंवादे हंसकाकोपाख्यानेद्विचत्वारिंशोऽध्यायः ॥४२॥

तैंतालीसवाँ अध्याय

सञ्जय बोले कि महात्मा कर्ण शल्य के अप्रिय वचनों को सुनकर शल्य से बोला कि मैं ठीक-ठीक जानता हूँ जैसे कि अर्जुन और श्रीकृष्णजी हैं १ मैं अर्जुन के रथ के हाँकनेवाले केशवजी और अर्जुन के पराक्रम समेत बड़े अस्त्रों को भी अच्छी रीति से जानता हूँ हे शत्रुरूप, शल्य ! उसको तू नहीं जानता है २ मैं उन शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ और निर्भयरूप श्रीकृष्ण और अर्जुन से युद्ध करूँगा परन्तु ब्राह्मणों में श्रेष्ठ परशुरामजी का दिया हुआ शाप अब मुझको अधिकतर दुःख दे रहा है ३ हे शल्य ! शाप का कारण यह था कि मैं पूर्व समय में दिव्य अस्त्रों का अभिलाषी होकर ब्राह्मण का रूप बनाकर कपट से परशुरामजी के पास ठहरने को गया था वहाँ भी अर्जुन की ही उन्नति चाहनेवाले देवराज इन्द्र ने ४ भयानकरूप कीट के शरीर में प्रवेश करके मेरी जङ्घा में चिपटकर काटने से विघ्न कर दिया अर्थात् मेरी जङ्घा पर शिर रखकर गुरु परशुरामजी के सोने पर उस कीट ने मेरी जङ्घा को काटा ५ और बड़े घाव होने के कारण मेरी जङ्घा में से बहुत सा रुधिर प्रकट हुआ परन्तु मैंने गुरुजी के भय से शरीर को जरा भी न कँपाया इसके पीछे जब गुरुजी जागे और उस मेरी जङ्घा के रुधिर को देखा ६ उन्होंने उस घाव से भी मुझको धैर्यता में नियत देखा तब यह वचन कहा कि निश्चय करके तू ब्राह्मण नहीं है कौन है यह सत्य-सत्य कहो हे शल्य ! तब तो मैंने सूत के समान समीप जाकर अपना यथार्थ वृत्तान्त कहा ७ उस समय क्रोधयुक्त होकर महातपस्वी गुरुजी ने मुझको देखकर शाप दिया कि हे सूत ! तैंने अपनी ज्ञाति को गुप्त करके जो इस अस्त्र को प्राप्त किया है वह युद्धकर्म के समय पर तुझको स्मरण न रहेगा ८

इसके सिवाय और काल में इस अस्त्र से तेरी मृत्यु होगी क्योंकि ब्राह्मण के विना मन्त्र और वेदरूप ब्रह्म अचल होकर स्थिर नहीं होता है अब इस भयकारी कठिन युद्ध में उस बड़े अस्त्र का प्रयोग संहार स्मरण नहीं आता है ९ हे शल्य ! जो यह सबका मारनेवाला महाघोर भयानकरूप प्रबलयुद्ध भरतवंशियों में उत्पन्न हुआ है यह कालरूप युद्ध बहुत से बड़े-बड़े क्षत्रिय शूरवीरों को निश्चय करके सन्तप्त करेगा परन्तु मैं उस उग्र धनुषधारी महा वेगवान् भयानक कठिनता से सहने के योग्य सत्यपराक्रम और प्रतिज्ञावाले पाण्डव अर्जुन को युद्ध में मृत्यु के मुख में पहुँचाऊँगा १०।११ वह मेरा अस्त्र वर्तमान है उसी के द्वारा युद्ध में शत्रुओं के समूहों को और प्रतापी बलवान् अस्त्रज्ञ और महा उग्र धनुषधारी तेजस्वी निर्दयी शूर रुद्र शत्रुओं के नाश करनेवाले अर्जुन को युद्ध में ऐसे मारूँगा जैसे कि महा वेगवान् अप्रमेय जलों का स्वामी समुद्र अनेक जीवों को अपने में मग्न कर लेता है १२।१३ जैसे समुद्र बड़ा वेगवान् बुद्धि से परे मर्यादा और किनारों समेत बड़े-बड़े प्रभाववालों को धारण करता है १४ इसी प्रकार अब मैं भी इस लोक के युद्ध में मर्मों के भेदी वीरों के मारनेवाले तीक्ष्ण बाण समूहों के छोड़नेवाली प्रत्यञ्चा खैंचनेवालों में श्रेष्ठ अर्जुन के साथ युद्ध करूँगा १५ इस रीति से बाणों के बल के प्रताप से उस बड़े पराक्रमी अस्त्रज्ञ समुद्र के समान महा दुर्जय बड़े-बड़े शूरवीर राजाओं के नाश करनेवाले अर्जुन को ऐसे सहूँगा जैसे कि समुद्र को मर्यादा सह लेती है १६ अब युद्ध में जिसके समान दूसरे धनुषधारी को नहीं समझता और मानता हूँ वह देवता और असुरों को भी युद्ध में विजय कर सकता है उसके साथ अब मेरे महाघोर युद्ध को देखो युद्धाभिलाषी महा अहङ्कारी अर्जुन दिव्य महा अस्त्रों के द्वारा मेरे सम्मुख आवेगा १७ तब मैं युद्ध में उसके अस्त्रों को अपने अस्त्रों से हटाकर उत्तम बाणों से उस सूर्य के समान उग्र दिशाओं के तपानेवाले अर्जुन को गिराऊँगा १८ जैसे कि बड़ा बादल सूर्य को ढक देता है उसी प्रकार अग्निरूप क्रोध रखनेवाले महा तेजस्वी इस लोक के भस्म करनेवाले अर्जुन को अपने

बाणों से आच्छादित कर दूँगा १९ मैं बादलरूप अपने वर्षारूप बाणों से युद्ध में उस अग्निरूप बल पराक्रम रखनेवाले प्रहारकर्त्ता वायुरूप उग्र अर्जुन को शान्त करूँगा २० हिमालय पर्वत के समान युद्ध में अग्नि के समान क्रोधरूप पण्डित सत्यवक्ता अर्थमार्गों में समर्थ महाबली अर्जुन को देखूँगा २१ लोक में अद्वितीय धनुर्धर जिसके समान दूसरा नहीं देखता और जिसने सब पृथ्वी को विजय किया मैं युद्ध में सम्मुख होकर उस अर्जुन से लड़ूँगा २२ जिस अर्जुन ने इन्द्रप्रस्थ के समीप खाण्डव वन में देवताओं समेत सब जीवों को विजय किया २३ उस वीर के सम्मुख मेरे सिवाय इच्छापूर्वक कौन युद्ध कर सकता है वह महाअहङ्कारी अस्त्रज्ञ हस्तलाघव का करनेवाला दिव्य अस्त्रों के प्रयोग संहारों का ज्ञाता प्रलय का मचानेवाला है २४ अब मैं तीक्ष्ण बाणों से उस अति-रथी के शिर को देह से जुदा करूँगा हे शल्य! मैं युद्ध में विजय को और मृत्यु को आगे करके इस अर्जुन से लड़ूँगा २५ ऐसा मेरे सिवाय दूसरा कोई मनुष्य नहीं है जोकि उस इन्द्र के समान पराक्रमी के साथ एक रथ से युद्ध करे मैं युद्ध में प्रसन्नचित्त होकर क्षत्रियों के देखते हुए उस पाण्डव अर्जुन की वीरता वर्णन करता हूँ २६ तुम महामूर्ख और अज्ञानचित्त होकर हठ से उस अर्जुन की वीरता को क्या कहते हो जो पुरुष सबका अप्रिय कठोरचित्त नीच और अशान्तचित्त होता है वह शान्तचित्तवालों की निन्दा करता है २७ मैं इस प्रकार के सैकड़ों पुरुषों को मार सकता हूँ परन्तु मैं क्षमा करने के समय आने पर क्षमा कर देता हूँ हे पापात्मन्, शल्य! तू अज्ञानी के समान मुझको डराकर अर्जुन के लिये प्रियवचनों को कहता है २८ हे सत्यता के समय मित्र से शत्रुता करनेवाले, कुटिलबुद्धे! निश्चय करके मित्रता सात पदों से सम्बन्ध रखनेवाली है वह भयकारी समय सम्मुख आता है जिससे कि दुर्योधन ने युद्ध को प्राप्त किया है २९ और मैं भी उसी के अभीष्ट सिद्धि का चाहनेवाला हूँ परन्तु तुम उसी बात को मानते हो जिसमें कि प्रीति नहीं है अर्थात् हमारा पक्षवाला होकर भी अन्य के साथ प्रीति करता है मित्रशब्द "मिद" धातु से सम्बन्ध रखता है जिसका अर्थ मोद है वा

"मिदि" धातु से जिसका अर्थ प्रसन्न करना तृप्त करना रक्षा करना और अन्त में कुशल करना है अथवा सुख से सम्पन्न करना कहा है इन लक्षणों से मित्र कहा जाता है ३० मैं तुझसे सत्य-सत्य कहता हूँ कि यह सब गुण मुझमें प्राप्त हैं राजा दुर्योधन मेरे इन सब गुणों को जानता है और मारना शासन करना, स्वाधीन करना दण्ड देना लम्बे श्वास लेने में पकड़ लेना और पीड़ित करना इन गुणों के होने से शत्रु कहा जाता है ३१ यह सब गुण बहुधा तुझमें नियत हैं इस निमित्त अब मैं दुर्योधन की वा तेरी इच्छा अथवा अपनी शुभकीर्ति और ईश्वर की प्रसन्नता के लिये अर्जुन और वासुदेवजी से लडूँगा अब उस कर्म को वा ब्रह्मास्त्र आदि महाउत्तम और दिव्य अस्त्रों को और मानुषी शस्त्रों को देखो ३२ । ३३ मैं उस उग्र पराक्रमी को ऐसे प्राप्त करूँगा जैसे कि बड़ा मतवाला हाथी दूसरे मतवाले हाथी को और विजय के हेतु उस अजेय ब्रह्मास्त्र को मन से अर्जुन के ऊपर चलाऊँगा ३४ उस मेरे अस्त्र से भी युद्ध में कोई शत्रु नहीं बच सकता है जो कदाचित् यह रथ का चक्र किसी गढ़े में नहीं गिरे ३५ तो हे शल्य ! मैं दण्डधारी यमराज पाशभृत् वरुण गदाधारी कुबेर वज्रधारी इन्द्र और युद्धाभिलाषी शस्त्रों से मारनेवाले किसी प्रकार के भी शत्रु से ३६ नहीं डरता हूँ इसी हेतु से मुझको अर्जुन और श्रीकृष्णजी से जरा भी भय नहीं है ३७ मेरा युद्ध उन दोनों के साथ परलोक के निमित्त होगा हे राजन् ! इसका हेतु यह है कि एक समय अस्त्रों के सीखने में मैंने घोररूप अस्त्रों को फेंका था ३८ वहाँ अज्ञानता से एक ब्राह्मण की होमसाधन करनेवाली गौ का बछड़ा जो निर्जन वन में चर रहा था वह मेरे बाण से मारा गया उसके मर जाने से उस ब्राह्मण ने कहा कि ३९ जो तुझ बड़े मतवाले ने मेरी होम की गौ के बछड़े को मारा है इस हेतु से तुझ युद्ध में लड़नेवाले को रथ का पहिया पृथ्वी में घुस जायगा यह ब्राह्मण ने मुझको शाप दिया है ४० । ४१ इस हेतु से मैं ब्राह्मण के शाप से बहुत डरता हूँ इन ब्राह्मणों का राजा चन्द्रमा है इसी से यह सब ब्राह्मण सुख दुःख के स्वामी हैं ४२ हे मद्रदेशाधिपते ! मैंने हज़ारों गौ और बैल देने से भी उसको प्रसन्न करना

चाहा परन्तु वह किसी प्रकार से भी प्रसन्न नहीं हुआ ४३ वह उत्तम ब्राह्मण सात सौ हाथी और सैकड़ों दास दासी देने पर भी मुझ पर प्रसन्न नहीं हुआ ४४ श्वेतवत्सा चौदह हज़ार कृष्णा गौवों के भी भेंट करने से उसका चित्त मुझसे प्रसन्न नहीं हुआ इसके सिवाय सब पदार्थों से युक्त मैंने अपने स्थान धन आदि जो-जो मेरी वस्तु थीं ४५ उन सबको भी वारंवार उसको भेंट किया तब भी उसने इच्छा नहीं करी ४६ और मुझ अपराध क्षमा करानेवाले से कहा कि हे सूत ! जो मैंने कहा है वह वैसे ही होगा मिथ्या कभी नहीं हो सकता ४७ मिथ्या बोलना सन्तान का नाश करनेवाला होता है पाप का भागी होता है इस कारण धर्म की रक्षा के निमित्त मैं मिथ्या नहीं बोल सकता हूँ ४८ तू ब्राह्मण की गति को नाश मत कर तुमने बड़ा अपराध किया है इस लोक में मेरे वचन को कोई मिथ्या नहीं कर सकता इससे मेरे शाप को अङ्गीकार कर ४९ हे अनम्र होनेवाले ! मैंने शुभचिन्तकता से यह कहा है मैं तुझ निरादर करनेवाले को जानता हूँ तू मौन होकर उत्तर को सुन ॥ ५० ॥

इति श्रीमहाभारते कर्णपर्वणि कर्णशल्यसंवादे त्रिचत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४३ ॥

चवालीसवाँ अध्याय

सञ्जय बोले कि हे महाराज ! इसके पीछे शत्रुविजयी कर्ण राजा मद्र को सम्बोधन करके यह वचन बोला कि १ हे शल्य ! जो तुमने निदर्शन के निमित्त अर्थात् दृष्टान्तार्थ मुझसे कहा है सो मैं युद्ध में तेरे वचनों से भयभीत नहीं हो सकता जो देवताओं समेत इन्द्र भी मुझसे युद्ध करें तो भी मैं भयभीत नहीं हो सकता फिर श्रीकृष्णजी को साथ रखनेवाले अर्जुन से क्या भय कर सकता हूँ वह क्या कर सकते हैं २।३ मैं केवल बातों ही से किसी दशा में भी भयभीत होने को योग्य नहीं हूँ हे शल्य ! वह कोई दूसरे ही मनुष्य होंगे जो युद्ध में अर्जुन से डरें ४ नीच मनुष्य की इतनी ही सामर्थ्य है जो तुमने मुझको कठोर वचन कहे हे दुर्बुद्धे ! मेरी प्रशंसा करने को असमर्थ होकर तुम बहुत सी बातें करते हो ५ हे मद्रदेशीय ! इस लोक में कर्ण भय के लिये नहीं उत्पन्न

हुआ है किन्तु यशकीर्ति और पराक्रम के हेतु मैंने जन्म लिया है हे राजन्, शल्य ! तुम इन तीन कारणों से जीवते बचे हो एक तो सारथ्य कर्म करने से उत्पन्न हुई मित्रता दूसरे मेरी क्षमायुक्त प्रकृति तीसरे अपने परममित्र दुर्योधन के कार्य सिद्ध के लिये ६। ७ हे शल्य ! राजा दुर्योधन का बड़ा भारी कार्य वर्तमान होकर मुझमें नियत है इस हेतु से अल्पकाल तक मेरे हाथ से जीवते हो क्योंकि प्रथम में नियम कर चुका हूँ कि तेरे अप्रिय वचनों को सहूँगा मैं शल्य के विना भी शत्रुओं को विजय कर सकता हूँ क्योंकि मैं अकेला ही हज़ार शल्य के बराबर हूँ ८। ६ और मित्र से शत्रुता करना पापकर्म कहा है इसी कारण से तुम जीवते हो ॥ १० ॥

इति श्रीमहाभारते कर्णपर्वणि कर्णशल्यसंवादे चतुश्चत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४४ ॥

पैंतालीसवाँ अध्याय

शल्य बोला कि हे कर्ण ! निश्चय करके ये सब निष्फल बातें हैं जिनको तुम शत्रुओं के विषय में कहते हो युद्ध में हज़ार कर्ण के विना भी मेरे हाथ से शत्रु विजय होने के योग्य हैं अर्थात् मैं हज़ार कर्ण के समान हूँ १ सञ्जय बोले कि इस पीछे कर्ण ने इस प्रकार के कठोर वचन कहनेवाले शल्य से फिर प्रथम से भी द्विगुणित ऐसे कठोर वचन कहे जो देखने और सुनने के अयोग्य थे २ कर्ण बोला कि हे राजन्, मद्र ! तुम चित्त को स्थिर करके उन वचनों को सुनो जो दुर्योधन के समक्ष में ३ ब्राह्मणों ने धृतराष्ट्र की सभा के मध्य नाना प्रकार के अद्भुत देशों के भूत भविष्य वृत्तान्तों को राजाओं से वर्णन किया था वहाँ एक वृद्ध ब्राह्मणोत्तम भूतकालीन वृत्तान्तविषयक कथाओं को कहता वाहीक और मद्रदेशों की निन्दा करता हुआ यह वचन बोला ४-५ कि जो लोग हिमाचल पर्वत श्रीगङ्गाजी सरस्वती यमुना और कुरुक्षेत्र से अलग किये गये हैं और जो लोग पंजाब और सिन्धु के मध्य में निवास करनेवाले हैं उन धर्महीन अपवित्र वाहीक नामवालों को त्याग करें ६।७ वहाँ पर गोवर्धन अर्थात्

गौओं के मारने को स्थान और मद्य पीनेवालों के चौतरे यही दोनों राजकुल के द्वार हैं मैं बालक से लेकर वृद्धों तक के मुख से सुना हुआ स्मरण करता हूँ ८ मैंने बड़े कार्य के कारण से वाहीक देशियों में सात रात्रि निवास करके वहाँ का सब चरित्र जाना ९ उनमें शाकल नाम नगर और आपगा नाम नदी वा जरत्का नाम वाहीक इन तीनों का चरित्र महानिन्दित है १० यह लोग जौ और गुड़ की मद्य को पानकर लहसन के साथ गोमांस को खाके मांस के पूप आदि बाजार के सम्पूर्ण भोजनों की करनेवाली शीलता से रहित नङ्ग शरीर और दिखाने को माला चन्दन आदि धारण करनेवाली स्त्रियाँ नगर के स्थानों में अथवा नगर के वा प्रागार में गाती और नाचती हैं ११।१२ और गधे वा ऊँटों के समान शब्दों से नाना प्रकार के निर्लज्ज गीतों से मतवाली विषय भोगों में अपने और पराये जाति कुजाति का विवेक न रखनेवाली सब प्रकार से स्वैरिणी अर्थात् स्वेच्छाचारिणी कुत्सित कर्म करानेवाली हैं १३ उन मदोन्मत्त असभ्य वार्त्ता करनेवालियों ने बड़े विनोदपूर्वक इन गीतों को गाया कि हे घायलभग ! हे घायलभग ! हे पति और स्वामी से ताड़ितभग ! १४ वह संस्काररहित अजितेन्द्रिय स्त्रियाँ इस रीति से पुकारती हुई उत्सवों के दिनों में यथेच्छा नृत्य करती हैं फिर ब्राह्मण ने कहा कि वाहीकवासियों से भ्रष्ट कुरु जाङ्गल देशों में निवास करने-वाली १५ अप्रसन्नचित्त स्त्रियों ने यह गीत गाया कि निश्चय करके कुरु जाङ्गल देशों में बृहती गौरी और सूक्ष्म कम्बलों की धारण करनेवाली स्त्रियाँ शाक लहसन के मिलने पर काक के समान हर्षित होती हैं १६ और मद्यपान कर हँसती और नाचती हैं ऊँट वा गधे के समान स्वर से हर समय गान किया करती हैं सदैव मैथुन में ऐसी रत हैं कि कभी नहीं अघाती हैं १७ और पुरुषों को बुला-बुलाकर अपने आप प्रसन्नता से मिलती हैं और अपने वा पराये पुरुष के वर्ण कामी जहाँ विचार नहीं वह स्त्रियाँ कलह हास्य और विहार में परस्पर गालियों से बातें करती हैं १८ वहाँ स्त्री पुरुष रात्रि दिन इसी प्रकार से बकते रहते हैं और अपनी पराई स्त्री वा अपना पराया पुरुष इन बातों का जो विचार करे वह

कुत्सित गिना जाता है १६ और जहाँ वराह कुक्कुट गौ गधा इनके मांस को जो न खाय अथवा मद्य का जो पान न करे उसका जन्म निष्फल गिना जाता है २० इस प्रकार से कहकर वह ब्राह्मण पञ्चनदों के नाम राजा से कहने लगा कि २१ चन्द्रभागा शतद्रू विपाशा इरावती वितस्ता और छठवाँ सिन्धु इन नदों के मध्य में वह पुरुष बसते हैं जिनके पूर्वजन्म के पाप सञ्चित होते हैं २२ उनका दिया हुआ देव पितर और ब्राह्मण ग्रहण नहीं करते हैं कुत्सित कर्म करनेवाले अशुभ वेष भक्ष्याभक्ष्य और गम्यागम्य का विचाररहित जिस देश में धर्म का लवलेश भी नहीं होता है २३ इस वृत्तान्त को अन्य ब्राह्मणों ने भी कौरवों की सभा में हमसे कहा कि यह पाँचों नदियाँ जहाँ बहती हैं २४ वहाँ पीलू नाम वृक्षों के वन हैं वह धर्महीन देश आरट्ट नाम से प्रसिद्ध हैं २५ यज्ञोपवीत आदि संस्कारों से रहित दासी पुत्र कुचाली यज्ञों के न करनेवाले वाहीकों के इन देशों में नहीं जाना उचित है २६ देव पितर और ब्राह्मण भी उनके हव्य कव्य और दानों को नहीं ग्रहण करते कष्टकुण्ड नाम मृत्तिका विशेष और मट्टी के पात्रों में भोजन करते हैं २७। २८ सत्तू वा मद्य से अहङ्कारी उच्छिष्टभोजी कुत्ते, भेड़ी, ऊँट, गधे इनका दूध और मांस खाते पीते हैं पुत्रों के मारनेवाले महामूर्ख सब अन्न और दूध के खानेवाले हैं २९।३० वह आरट्ट वाहीक पण्डित लोगों से त्यागने के योग्य हैं हे शल्य! इसको समझकर फिर उस दूसरी बात को तुझसे कहता हूँ ३१। ३२ जिसको अन्य ब्राह्मणों ने कौरवों की सभा में वर्णन किया है कि युगन्धर देश जहाँ भक्ष्याभक्ष्य का विचार नहीं है उसमें दूध पीकर और अच्युतस्थल नाम नगर में निवास करके ३३। ३४ और भूतल तड़ाग जिसमें चाण्डाल और ब्राह्मण सब सङ्ग स्नान करते हैं उसमें स्नान करके कैसे स्वर्ग को जायगा जहाँ यह पाँचों नदी पर्वत से निकलकर बहती हैं ३५।३६ उस आरट्ट नाम वाहीक देश में श्रेष्ठ मनुष्य दो दिन भी न वास करें विपाशा नदी में वहि और हीक नाम दो पिशाच हैं ३७। ३८ उन दोनों की सन्तान वाहीक लोग हैं यह ब्रह्माजी की सृष्टि में नहीं हैं वह नीच

योनि में उत्पन्न होनेवाले नाना प्रकार के धर्मों को कैसे जान सकते हैं ३९।४० कारस्कर माहिष कलिङ्ग केरल कर्कोटक और वीरक इन भ्रष्ट धर्मियों को त्याग करना योग्य है ४१।४२ बड़े उलूखल के समान मेखला रखनेवाली किसी राक्षसी ने तीर्थयात्रा करनेवाले एक रात्रि घर में निवास करनेवाले ब्राह्मण से यह वचन कहा ४३।४४ कि वह आरट्ट देश और वाहीक नाम जल ब्राह्मणों के निमित्त सदैव ब्रह्माजी के काल के समान हैं ४५ उन जाति वेदरहित यज्ञहीन पूजनादि के अकर्ता दासीपुत्र कुटिल बुद्धि संस्कार से हीन लोगों के अन्न को देवता पितर भोजन नहीं करते हैं ४६ प्रस्थल मद्र गान्धार आरट्ट नाम पखश वा साति सिन्धु और सौवीर नाम देशों के रहनेवाले बहुधा निन्दित हैं॥४७॥

इति श्रीमहाभारते कर्णपर्वणि पञ्चचत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४५ ॥

छियालीसवाँ अध्याय

कर्ण बोला कि हे शल्य ! समझो मैं फिर भी तुमसे कहता हूँ तुम चित्त को स्थिर करके अच्छे प्रकार से मेरे वचनों को सुनो १ निश्चय करके पूर्व समय में एक अतिथि ब्राह्मण हमारे घर में आया और हमारे आचार को देखकर प्रसन्नचित्त होके कहने लगा २ कि मुझ अकेले ने बहुत काल पर्यन्त हिमाचल के शिखर पर निवास किया था तब वहाँ मैंने नाना प्रकार के धर्मों से युक्त देशों को देखा ३ जहाँ प्रजा लोग किसी अधर्म से भी शास्त्र के विरोधी नहीं होते हैं वहाँ के वेदपारग ब्राह्मणों के कहे हुए सब धर्मों को तुझसे कहता हूँ ४ हे महाराज ! नाना प्रकार के धर्मों से युक्त देशों में घूमता हुआ वाहीक देशों में आने के समय मैंने सुना ५ निश्चय करके उस देश में ब्राह्मण होकर फिर क्षत्रिय होता है वैश्य शूद्र और वाहीक होकर फिर नाई होता है ६ नाई हो जाने के पीछे ब्राह्मण होता है फिर वह द्विज होकर दास हो जाता है ७ सब कुल भरे में एक ही वेदपाठी होता है और अन्य सब भाई लोग वर्णसंकर स्वेच्छाचारी कर्मों के करनेवाले होते हैं ८ गान्धार मद्रदेशीय और वाहीक यह निर्बुद्धि होते हैं मैंने सम्पूर्ण पृथ्वी को घूम-

कर उस वाहीक देश में धर्मों का संकर करनेवाला यह विपर्यय सुना है उसको मैं फिर कहता हूँ ९ तुम चित्त से सुनो इस वाहीकों के निन्दित वृत्तान्तों को एक अन्य ब्राह्मण ने कहा है १० वह भी मैंने सुना है कि पूर्वकाल में किसी पतिव्रता स्त्री को उस आरट्ट देश से चोरों ने हर लिया तब वह अधर्म युक्त हो गई तब उस स्त्री ने उनको शाप दिया ११ कि जो मुझ बाला और भाइयोंवाली को तुमने अधर्म से प्राप्त किया इस कारण से तुम्हारे कुल की सब स्त्रियाँ वेश्या हो जायँगी १२ हे नीच, मनुष्यो ! तुम इस घोर पाप से कभी न छूटोगे इस हेतु से उनके पाप-भागी भानजे हैं पुत्र नहीं हैं अर्थात् माता के धन की लेनेवाली बेटी ही होती है और पिता के धन का लेनेवाला पुत्र होता है यद्यपि वह दोनों कुकर्म से उत्पन्न हैं तो भी पुत्र तो पिता का नहीं कहलाता है परन्तु बेटी माता की ही कहलाती है इस हेतु से भानजा ही अंश का भागी होता है १३ कौरव, पाञ्चाल, शाल्व, मत्स्य, नैमिष, कोशल, काश, पौण्ड्र, कलिङ्ग, मागध १४ और चन्देरीदेशीय यह महाभाग सनातन धर्म को जानते हैं बाह्लीक देश में केवल असन्त लोग रहते हैं १५ मत्स्यदेशियों से लेकर कौरव पाञ्चालदेशीय और नैमिषदेशियों से लेकर चन्देरीदेशियों तक जो उत्तम और सन्त लोग हैं वह सब प्राचीन धर्मों से अपना कर्म धर्म और निर्वाह करते हैं इन कुटिल पाञ्चाल और मद्रदेशियों के सिवाय १६ हे बुद्धिमन्, राजन्, शल्य ! इस रीति से धर्म-कथाओं में मौन और जड़ के समान होकर तुम उन मनुष्यों के रक्षक होकर उनके पाप पुण्य के छठे भाग के लेनेवाले हो १७ अथवा तुम उनकी रक्षा न करनेवाले पापभागी हो क्योंकि प्रजा की रक्षा करने-वाला राजा पुण्य का भागी है परन्तु तुम पुण्यभागी नहीं हो १८ पूर्व समय में सब देशों के बीच सनातन धर्म के पूजित होने पर ब्रह्माजी ने पंजाब देश के धर्म को देखकर कहा कि धिक्कार है १९ सतयुग में भी संस्कार से रहित अशुभकर्मी दासीपुत्रों का धर्म ब्रह्माजी से निन्दित होने पर तुम बाह्लीक लोक में क्या कहा करते हो २० जिन ब्रह्माजी ने पंजाब के धर्म को नष्ट कहा है उन ब्रह्माजी ने सब वर्णों को अपने-

अपने धर्म में नियत होने पर भी उनकी प्रशंसा नहीं की २१ हे शल्य! इसको तुम समझो और दूसरा वृत्तान्त कहता हूँ जो कल्माषपाद के सरोवर में डूबनेवाले राक्षस ने कहा है २२ क्षत्रिय का मल भिक्षा है और ब्राह्मण का मल व्रत का न करना है और सम्पूर्ण पृथ्वी भरे का मल बाह्लीक लोग हैं और स्त्रियों का मल मद्र देश की स्त्रियाँ हैं २३ किसी राजा ने उस डूबनेवाले राक्षस को डूबने से निकालकर उससे जो-जो पूछा और उसने जो-जो उत्तर दिये उन सबको मुझसे सुनो २४ मनुष्यों का मल वह म्लेच्छ हैं जो पाप में प्रवृत्त होकर अपशब्द बोलते हैं और म्लेच्छों का मल औष्ट्रिक हैं औष्ट्रिकों का मल नपुंसक हैं और नपुंसकों का मल राजपुरोहित अथवा राजा के यज्ञ करानेवाले होते हैं २५ राजा से विनय करके याचना करनेवाले वा उसके याज्ञिक लोगों का और मद्रदेशियों का जो मल है वह तुझको प्राप्त होय जो हमको नहीं त्याग करता है २६ राक्षस से वा भूतादिक के आवेश से व्याकुल और पीड़ित मनुष्यों की चिकित्सा कौल करार करके पीछे स्वाधीन होनेवाला राक्षस होता है २७ पाञ्चालदेशीय वेदों का सञ्चय रखनेवाले हैं कौरव लोग धर्मसंयुक्त कर्म के करनेवाले हैं मत्स्यदेशीय सत्यवक्ता हैं सूरसेनदेशीय यज्ञ को करते हैं और पूर्व के वासी दास हैं अर्थात् शूद्रधर्मवाले हैं और मत्स्यों के खानेवाले हैं दाक्षिणात्य लोग धर्माभ्यासी हैं परन्तु बाह्लीक और सौराष्ट्रदेशीय चोर और वर्णसङ्कर हैं २८ कृतघ्नता दूसरे का धन हरना मद्य पीना गुरु की स्त्री से सम्भोग करना कठोर वचन कहना गौ को मारना और घर से बाहर रात्रि में अन्य की स्त्री से भोग करना अन्य पुरुषों के वस्त्रों का धारण करना यह अवगुण ही २९ जिन लोगों का धर्म है उनमें कहो कि अधर्म नहीं है नहीं अवश्य है परन्तु अरट्ट और पंजाबदेशियों को धिक्कार है पाञ्चालदेशियों से लेकर कुरुदेशियों तक और नैमिषदेशियों से लेकर मत्स्यदेशियों तक के लोग भी धर्म को जानते हैं फिर उत्तर में रहनेवाले अङ्ग और मगधदेशीय वृद्ध मनुष्य उत्तम धर्मों से अपना बर्ताव करके निर्वाह करते हैं ३० जिनमें मुख्य अग्नि है वह देवता पूर्व दिशा में रहते हैं और

शुभ कर्म करनेवाले यमराज से रक्षित होकर दक्षिण दिशा में पितर लोग निवास करते हैं ३१ और पराक्रमी वरुण देवता सब देवताओं समेत पश्चिम दिशा की रक्षा करता है और भगवान् चन्द्रमा ब्राह्मणों समेत उत्तर दिशा की रक्षा करता है ३२ हे महाराज ! इसी प्रकार राक्षस और पिशाच हिमालय नाम श्रेष्ठ पर्वत की गुह्यक गन्धमादन शैल की रक्षा करते हैं ३३ और सब जीवमात्रों की भगवान् विष्णुजी रक्षा करते हैं मगधदेशीय लोग अङ्गचेष्टाओं से उत्पन्न होनेवाले वृत्तान्तों के जाननेवाले हैं और कौशलदेशीय प्रत्यक्ष और प्रकट हुए वृत्तान्तों के ज्ञाता हैं ३४ कौरव पाञ्चालदेशीय आधी बात के ही कहने से पूरी बात के जाननेवाले हैं शाल्वदेशीय सब आज्ञाओं के पूरे करनेवाले हैं और पर्वतीय विषम हैं इससे कठिनता से आधीन होनेवाले हैं ३५ हे राजन् ! मुख्य करके सब बातों के जाननेवाले सुरयुवन अर्थात् यूनानी म्लेच्छ बनावट के धर्म पर चलते हैं अर्थात् वैदिक धर्म को नहीं मानते हैं और अन्य लोग विना समझाये हुए मङ्गलपूर्वक पूर्ण होनेवाले वचनों को नहीं समझते हैं ३६ बाह्लीक लोग अपने शुभचिन्तकों के विरोधी हैं और मद्रदेशीय कुछ भी नहीं हैं हे शल्य ! इस निमित्त तुम ऐसे उत्तर देने को योग्य नहीं हो इस पृथ्वी पर सब देशों का मल मद्रदेश कहाता है ३७ मद्य का पान गुरु की स्त्री से सम्भोग कुश्ती लड़ना पराये धन का हरना यही जिन लोगों का धर्म है उनमें धर्म अवश्य है उन अरट्टदेशीय और पंजाबदेशियों को धिक्कार है ३८ इस बात को जानकर मौन होकर विरुद्धता मत कर नहीं तो मैं प्रथम तुझको मारूँगा फिर अर्जुन और केशवजी को मारूँगा कर्ण की इन सब बातों को सुनकर शल्य बोला कि हे कर्ण ! अङ्गदेश में रोगी दुखिया लोगों का त्याग और अपनी स्त्री पुत्र का बेच डालना वर्तमान है उन देशों का तू अधिपति है ३९ । ४० भीष्मजी ने जो तुमको रथी अतिरथी की संख्या में कहा उन अपने दोषों को जानकर क्रोधरहित होकर क्रोधयुक्त मत हो ४१ हे कर्ण ! सर्वस्थानों में ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र हैं और सुन्दर व्रतवाली पतिव्रता स्त्रियाँ हैं ४२ मनुष्य मनुष्य के साथ में हास्यविनोद-

पूर्वक क्रीड़ा करते हैं और विषयभोग करनेवाले मनुष्य प्रत्येक देश में परस्पर रक्षा करनेवाले होते हैं ४३ हरएक मनुष्य सदैव दूसरे की बुराइयों में कुशल होता है और अपने दोषों को नहीं जानता वा जानता हुआ भी अज्ञान होकर मोहित हो जाता है ४४ अपने-अपने धर्म पर कर्म करनेवाले राजा सब स्थानों में हैं दुराचारियों को दण्ड देते हैं और सर्वत्र धर्म के रखनेवाले मनुष्य हैं ४५ हे कर्ण ! देश के सामान्य होने से सब मनुष्य पाप को सेवन नहीं करते हैं वह अपने स्वभाव से जैसे होते हैं वैसे देवता भी नहीं होते सञ्जय बोले कि इसके पीछे राजा दुर्योधन ने मित्रता की रीति से कर्ण को और हाथ जोड़कर शल्य को निषेध किया ४६ । ४७ इसके पीछे हे श्रेष्ठ ! दुर्योधन के निषेध करने से कर्ण ने उत्तर नहीं दिया और शल्य भी शत्रुओं के सम्मुख हुआ ४८ फिर कर्ण ने शल्य को प्रेरणा करी कि शत्रु के सम्मुख चलो ॥ ४६ ॥

इति श्रीमहाभारते कर्णपर्वणि कर्णशल्यसंवादे षट्चत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४६ ॥

सैंतालीसवाँ अध्याय

सञ्जय बोले कि इसके पीछे धृष्टद्युम्न से रक्षित पाण्डवों की सेना को देखकर कर्ण ने शत्रु की सेना के सहनेवाले अपूर्व व्यूह को अलंकृत किया १ और रथ, शङ्ख और अन्य-अन्य बाजों के द्वारा पृथ्वी को कम्पायमान करता हुआ चला २ हे भरतर्षभ ! बड़े तेजस्वी युद्ध में कुशल शत्रुसन्तापी क्रोधयुक्त कर्ण ने बुद्धि के अनुसार व्यूह को शोभित करके ३ पाण्डवों की सेना को ऐसे छिन्न भिन्न कर दिया जैसे कि आसुरी सेना को इन्द्र छिन्न भिन्न कर देता है वहाँ युधिष्ठिर को घायल करके वाम अङ्ग में कर दिया ४ धृतराष्ट्र बोले कि हे सञ्जय ! कर्ण ने भीमसेन से रक्षित उन सब पाण्डवों के सम्मुख जिनमें अग्रगामी धृष्टद्युम्न था कैसे व्यूह को अलंकृत किया ५ और देवताओं से भी अजेय बड़े धनुषधारी सब युद्धकर्त्ताओं को किस-किस रीति से रोका और हे सञ्जय ! मेरी सेना के पक्ष और प्रपक्ष पर कौन-कौन हुए ६ और न्याय के अनुसार सेना का विभाग करके किस रीति से नियत हुए और पाण्डवों

ने भी मेरे पुत्रों के सम्मुख कैसे-कैसे व्यूह को रचा ७ और वह महा भयानक युद्ध कैसे जारी हुआ और उस समय अर्जुन कहाँ था जब कि कर्ण युधिष्ठिर के सम्मुख गया था ८ क्योंकि अर्जुन के समक्ष में युधिष्ठिर के सम्मुख जाने को कौन समर्थ हो सकता है कि जिस अकेले ने पूर्व-काल में खाण्डव वन के सब जीवमात्रों को विजय किया उसके सम्मुख कर्ण के सिवाय कौनसा पुरुष जीवन की आशा करके युद्ध को करे ९ सञ्जय बोले कि व्यूह की रचना को सुनिये और जैसे अर्जुन वहाँ से गया और जिस रीति से अपने-अपने राजा को घेरे हुए युद्ध जारी हुआ १० हे राजन्! सारद्वत, कृपाचार्य, वेगवान् मगधदेशीय यादव कृतवर्मा यह तो दाहिने पक्ष पर नियत हुए ११ और उनके प्रपक्ष पर महारथी शकुनी और महारथी उलूक ने स्वच्छप्रास रखनेवाले सवारों समेत आपकी सेना को रक्षित किया १२ भय से उत्पन्न होनेवाले व्या-कुलता से रहित गान्धारदेशीय लोग और कठिनता से विजय होनेवाले उन पहाड़ियों समेत जोकि टीड़ीदल के समान पिशाचों के तुल्य कठि-नता से देखने के योग्य थे १३ मुख न मोड़नेवाले चौबीस हज़ार रथी युद्ध में कुशल संसप्तकों ने बायें पक्ष को रक्षित किया १४ वह सब आपके पुत्रों से युक्त श्रीकृष्ण अर्जुन के मारने के अभिलाषी थे और पाण्डवों के प्रपक्ष में यवनों समेत काम्बोजदेशीय शकजाति के लोग हुए १५ और कर्ण की आज्ञा से रथ, घोड़े और पत्तियों समेत सब लोग श्रीकृष्णजी और अर्जुन को पुकारते हुए नियत हुए १६ वह अपूर्व कवच बाजूबन्द और माला धारण करनेवाला कर्ण भी सेनामुख को रक्षित करता हुआ सेना के मुख पर नियत हुआ १७ वह अत्यन्त क्रोधित आपके पुत्रों से व्याप्त शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ शूरवीर कर्ण सेना का संहारकर्ता मध्य सेना मुख पर शोभायमान हुआ १८ और सूर्य और अग्नि के समान प्रकाशित अपूर्वदर्शन पिङ्गल वर्ण नेत्रवाले बड़े हाथी पर सवार सेना समेत व्यूह के पृष्ठ भाग पर दुश्शासन नियत हुआ हे राजन्! उसके पीछे अद्भुत अस्त्र और कवचधारी निज भाइयों से और एकत्र हुए बड़े शूरवीर मद्र और कैकेयदेशियों से चारों ओर से रक्षित आप राजा दुर्योधन

ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि देवताओं के मध्य में रक्षा किया हुआ इन्द्र शोभित होता है और अश्वत्थामा वा कौरवों के बड़े-बड़े महारथी शूर म्लेच्छों से युक्त सदैव मतवाले बादलों के समान मदरूप जल के डालनेवाले हाथी उस रथों की सेना के पीछे-पीछे चले १६।२३ वह ध्वजा पताका वा प्रकाशित उत्तम शस्त्र और सवारों समेत नियत होकर ऐसे शोभायमान हुए जैसे कि वृक्षधारी पर्वत होते हैं २४ उन पदाती और हाथियों के पादरक्षक भी पट्टिश और खड्ग के धारण करनेवाले मुख न मोड़नेवाले हज़ारों शूरवीर वर्तमान थे २५ वह देवासुरों की सेना के समान व्यूहराज सवार रथ और हाथियों समेत अलंकृत महाशोभायमान हुआ २६ उस बुद्धिमान् सेनापति ने इस रीति से बार्हस्पत्य व्यूह को रचा उस नाचते हुए महाव्यूह को देखकर शत्रुओं को भय उत्पन्न हुआ २७ उसके पक्ष और प्रपक्षों से पत्ती घोड़े रथ और हाथी सबके सब युद्धाभिलाषी होकर ऐसे निकलते थे जैसे कि वर्षा ऋतु में बादल निकलते हैं २८ इसके पीछे राजा युधिष्ठिर कर्ण को सेना मुख पर देखकर शत्रुओं के मारनेवाले अकेले अर्जुन से बोले २६ हे अर्जुन! युद्ध में कर्ण के रचे हुए उस महाव्यूह को देखो जो पक्ष और प्रपक्षों से संयुक्त शत्रु की सेना को प्रकाशित करता है ३० सो तुम इस शत्रु की बृहत्सेना को अच्छे प्रकार से देखकर ऐसी नीति विचारो जिससे कि यह हमको भयभीत न करे ३१ राजा के इस रीति के वचन को सुनकर अर्जुन हाथ जोड़कर राजा से कहने लगा कि जैसा आप कहते हैं वैसा ही है मिथ्या नहीं है ३२ हे भरतर्षभ! जिस रीति से इसका मारना विचार किया है उसको मैं करूँगा इसका मारना बहुत श्रेष्ठ है इससे मैं इसका नाश करता हूँ ३३ युधिष्ठिर बोले कि तुम तो कर्ण से लड़ो भीमसेन सुयोधन से नकुल वृषसेन से सहदेव सौबल से ३४ शतानीक दुश्शासन से सात्यकी कृतवर्मा से पाण्ड्य अश्वत्थामा से सम्मुख होकर लड़ो और मैं आप कृपाचार्य से युद्ध करूँगा ३५ और शिखण्डी समेत द्रौपदी के सब पुत्र उन शेष बचे हुए धृतराष्ट्र के पुत्रों से सम्मुख होकर लड़ने को जाओ और सब हमारे शूरवीर उनके शूरवीरों को मारो ३६ सञ्जय

बोले कि इस रीति से धर्मराज के वचनों को सुनकर अर्जुन ने कहा कि ऐसा ही होगा यह कहकर अपनी सेनाओं को आज्ञा दी और आप सेनामुख पर गया ३७ जो कि यह वैश्वानर अग्नि विश्व का प्रभु है वह प्रथम ब्रह्माजी के मुख से उत्पन्न चन्द्रमारूप से प्रकट होनेवाला है उसी ने घोड़े के रूप को पाया उस घोड़े को देवता और ब्राह्मणों ने जान लिया कि यह ब्रह्माजी के मुख से उत्पन्न है वही अकेला एक देवता अपने चार रूप बनाकर अर्जुन के रथ को ले चलता है ३८ जिसने पूर्व समय में ब्रह्मा, रुद्र, इन्द्र और वरुण को क्रमपूर्वक सवार किया है इस हेतु से प्रथम तो रथ पर सवार होकर केशवजी और अर्जुन चले ३९ तदनन्तर शल्य उस अपूर्व दर्शनीय आते हुए रथ को देखकर उस युद्धदुर्मद अधिरथी कर्ण से बोला ४० यह श्वेत घोड़ों से युक्त सारथी श्रीकृष्णजी समेत सब सेनाओं से भी कठिनता से रोकने के योग्य अर्जुन का रथ आया यह रथ ऐसे कठिनता से रोकने के योग्य है जैसे कि कर्मों का फल रोकने के योग्य नहीं होता है ४१ हे कर्ण! जिसको तुम पूछते थे वह शत्रुओं को मारता हुआ अर्जुन चला आता है उसका ऐसा कठोर शब्द सुनाई देता है जैसा कि बादल का घोर शब्द होता है ४२ निश्चय करके यह दोनों महात्मा श्रीकृष्ण और अर्जुन हैं देखो यह उठी हुई धूलि आकाश को व्याप्त करके नियत है ४३ हे कर्ण! रथ के पहिये के नीचे से चलायमान पृथ्वी कम्पायमान है और महावेगवान् वायु आपकी सेना के सम्मुख चल रही है ४४ यह कच्चे मांस खानेवाले राक्षस आदि भी बोल रहे हैं यह मृग भयानक शब्दों को करते हैं हे कर्ण! इस घोर भयदायक रोमहर्षण करनेवाले सूर्य को आच्छादित किये हुए बादल की सूरत केतु नक्षत्र को देखो और सब दिशाओं में नाना प्रकार के पशुओं के झुण्ड और पराक्रमी शार्दूल सूर्य को देखते हैं हजारों भागनेवाले और सम्मुख नियत होनेवाले परस्पर में घोर शब्द करनेवाले कङ्क और गृध्रों को देखो और हे कर्ण! तेरे रथ पर लगे हुए अति उत्तम चमर भी अग्नि के समान हो गये हैं ४५। ४८ और ध्वजा काँपती है बड़े वेगवान् उन्नत बलिष्ठ शरीरवाले

घोड़ों के कम्प को देखो ४६ जैसे दर्शन करने के योग्य आकाश में उड़नेवाले गरुड़ों को देखते हैं उसी प्रकार निश्चय करके युद्धों में हज़ारों मरे हुए राजा लोग पृथ्वी पर आश्रय लेकर ५० शयन करेंगे और शङ्खों के कठोर शब्द रोमाञ्च खड़े करनेवाले सुनाई देते हैं ५१ हे कर्ण ! ढोल और मृदङ्गों के शब्दों को सुनो हे राधा के पुत्र ! बाणों के मनुष्यों के और घोड़े हाथियों के शब्द ५२ महात्मा के प्रत्यञ्चा के तलत्रों के शब्दों को और कारीगरों के हाथ से सुवर्ण और चाँदी से निर्मित वस्त्रों के बनाये हुए ५३ नाना प्रकार की वर्णवाली ध्वजाओं से कम्पायमान पृथ्वी चन्द्रमा सूर्य और नक्षत्र रखनेवाली क्षुद्रघण्टिकायुक्त पताका रथ पर महाशोभायमान फर्रा रही हैं ५४ हे कर्ण ! देखो कि अर्जुन की ध्वजा वायु से चलायमान ऐसी कणकणा रही हैं जैसे कि आकाश में बिजलियाँ कणकणाया करती हैं ५५ और महात्मा पाञ्चालों के यह पताकाधारी रथ कैसे शोभायमान हैं ५६ वानराधीश को धारण करनेवाली अति उत्तम विजयकारिणी ध्वजासंयुक्त आनेवाले अजेय कुन्तीनन्दन अर्जुन को देखो ५७ यह चारों ओर से देखने के योग्य महाभयानक शत्रुओं का भयकारी वानर अर्जुन की ध्वजा की नोक पर दिखाई दे रहा है ५८ और बुद्धिमान् श्रीकृष्णजी का यह शङ्ख, चक्र, गदा और शार्ङ्ग धनुष है जिसमें श्रीकृष्णजी का कौस्तुभमणि न्यारी ही शोभा दे रहा है ५६ यह शार्ङ्ग धनुष और गदा हाथ में रखनेवाले पराक्रमी वासुदेवजी वायु के समान शीघ्रगामी श्वेत घोड़ों को चलाते हुए चले आते हैं ६० अर्जुन से खैंचा हुआ यह गाण्डीव धनुष कैसे शब्दों को करता है उस हस्तलाघवीय के छोड़े हुए यह तीक्ष्ण बाण शत्रुओं को मार रहे हैं ६१ और मुख न मोड़नेवाले बड़े लम्बे रक्तनेत्रधारी पूर्णचन्द्रमा के समान मुखवाले शूरवीरों के शिरों से यह पृथ्वी आच्छादित होती चली आती है ६२ उठाये हुए शस्त्रों में कुशल युद्धकर्ताओं के परिघ की समान पवित्र चन्दनादि से चर्चित भुजदण्ड शस्त्रों के द्वारा गिराये जाते हैं ६३ जिनके नेत्र और जिह्वा निकल पड़ीं वह सवारों समेत घोड़े पृथ्वी पर मरकर गिरे हुए सो रहे हैं ६४ पर्वत के शिखर के समान रूपवाले यह हाथी मारे गये और

अर्जुन के हाथ से घायल वा चूर्णीभूत अङ्गवाले हाथी पर्वतों के समान घूमते हैं ६५ यह गंधर्वनगर के समान रूपवाले रथ जिनके कि राजा मर गये वह स्वर्गवासियों के पवित्र विमानों के समान पृथ्वी पर गिरते हैं ६६ अर्जुन के हाथ से अत्यन्त व्याकुल सेना ऐसी दिखाई देती है जैसे कि नाना प्रकार के हज़ारों पशुओं के समूह केशरीसिंह से व्याकुल होते हैं ६७ आपके हाथी घोड़े रथ और पत्तियों के समूहों को मारनेवाले सम्मुख दौड़नेवाले यह वीर पाण्डव लोग राजाओं को मारते हैं ६८ जैसे कि बादलों से सूर्य ढक जाता है उसी प्रकार यह अर्जुन ढका हुआ दिखाई नहीं देता है उसकी ध्वजा की नोक ही दिखाई देती है और प्रत्यञ्चा का शब्द भी सुना जाता है अब उस श्वेत घोड़ेवाले श्रीकृष्णजी को सारथी रखनेवाले युद्ध में शत्रुओं के मारनेवाले वीर अर्जुन को देखोगे ६९ जिसको कि तुम पूछते थे हे कर्ण! अब तुम इन पुरुषोत्तम लालनेत्र शत्रुओं के सन्तप्त करनेवाले एक रथ पर नियत अर्जुन और वासुदेवजी को देखोगे ७० जिसके सारथी श्रीकृष्णजी हैं और धनुष जिसका गाण्डीव है हे कर्ण! उसको जो तुम मारोगे तो हमारे राजा होगे ७१ संसप्तकों का बुलाया हुआ यह अर्जुन उनके समीप सम्मुख होकर उन महापराक्रमियों का युद्ध में नाश कर रहा है ७२ ऐसे शल्य के वचनों को सुनकर कर्ण महाक्रोधयुक्त होकर बड़े अहङ्कार से बोला कि हे शल्य! तुम महाक्रोधयुक्त संसप्तकों से सब ओर घिरे हुए अर्जुन को देखो ७३ जैसे कि सूर्य बादलों से ढक जाय उसी प्रकार ढका हुआ यह अर्जुन दिखाई नहीं पड़ता है हे शल्य! अर्जुन ऐसे ही अन्त का करनेवाला है जो कि युद्धकर्ताओं के समुद्र में डूब रहा है ७४ शल्य बोला कि कौन पुरुष वरुण को जल से मारे और कौन मनुष्य इन्धन से अग्नि को बुझावे और कौन हवा को पकड़े अथवा कौन पुरुष महासमुद्र को पान करे ७५ मैं युद्ध में अर्जुन का मरना असम्भव मानता हूँ इन्द्रसमेत देवता लोग भी युद्ध में अस्त्रों से अर्जुन को विजय नहीं कर सक्के ७६ अब तेरी प्रसन्नता है तो अपने वचन को कहकर चित्त को प्रसन्न कर वह तो युद्ध में किसी से विजय करने के योग्य नहीं है अब तू दूसरे मनोरथ को कर ७७ जो

भुजाओं से पृथ्वी को उठा सके और क्रोधयुक्त होकर इन सब जड़-चैतन्यों का नाश करे स्वर्ग से देवताओं को गिरा सके उस अर्जुन को युद्ध में कौन विजय कर सक्ता है ७८ साधारणकर्मी महाप्रकाशमान द्वितीय मेरुपर्वत के समान नियत महाबाहु कुन्ती के पुत्र शूर वीर भीमसेन को देखो ७९ कि सदैव क्रोधयुक्त असहिष्णु विजयाभिलाषी यह पराक्रमी भीमसेन चिरकाल की शत्रुता को स्मरण करता युद्ध में नियत है ८० यह धर्मधारियों में श्रेष्ठ युद्ध में शत्रुओं के साथ कठिन कर्म करनेवाला शत्रुओं के पुरों का विजय करनेवाला धर्मराज युधिष्ठिर नियत है ८१ यह कठनिता से विजय होनेवाले दोनों पुरुषोत्तम अश्विनीकुमारों के समान निज सहोदर नकुल सहदेव दोनों भाई युद्ध में नियत हैं ८२ यह पाँच पर्वतों के समान पाँचो द्रौपदी के पुत्र नियत हैं यह सब अर्जुन के समान युद्धाभिलाषी युद्ध में वर्तमान हैं ८३ बल की वृद्धिवाले बड़े तेजस्वी सत्यवक्ता द्रुपद के शूरवीर पुत्र जिनमें मुख्य धृष्टद्युम्न हैं वह भी नियत हैं ८४ इन्द्र के समान असह्य पूर्व समय में क्रोधयुक्त मृत्यु के समान यादवों में श्रेष्ठ युद्धाभिलाषी यह सात्यकी हमारे सम्मुख आता है ८५ उन दोनों पुरुषोत्तमों के इस रीति से वार्त्तालाप करते-करते वह दोनों सेना श्रीगङ्गा और यमुना के समान बड़े वेग से भिड़गईं ॥ ८६ ॥

इति श्रीमहाभारते कर्णपर्वणि कर्णशल्यसंवादे सप्तचत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४७ ॥

अड़तालीसवाँ अध्याय

धृतराष्ट्र बोले कि इस रीति से सेनाओं के तैयार होने पर और अच्छी रीति से भिड़ जाने पर अर्जुन किस रीति से संसप्तकों के सम्मुख गया और कर्ण कैसे पाण्डवों के सम्मुख गया १ इस युद्ध को ब्यौरे समेत कहो क्योंकि तुम बड़े चतुर हो मैं युद्ध में शत्रुओं के पराक्रमों के सुनने से तृप्त नहीं होता हूँ २ सञ्जय बोले कि आपके पुत्र के हेतु अन्याय होने पर अर्जुन ने शत्रुओं की बड़ी सेना को नियत जानकर व्यूह को रचा वह अश्वसवार हाथियों समेत रथ और पदातियों से आवृत बड़ी

सेनावाला व्यूह जिसमें मुख्य धृष्टद्युम्न था शोभायमान हुआ ३ । ४ चन्द्रमा और सूर्य के समान तेजस्वी धनुषधारी मूर्त्तिमान् काल के समान धृष्टद्युम्न कपोतवर्ण घोड़ों समेत शोभित हुआ ५ दिव्य कवच और धनुष रखनेवाले शार्दूल के समान पराक्रमी शरीर से प्रकाशमान युद्धाभिलाषी द्रौपदी के पुत्रों ने अपने साथियों समेत धृष्टद्युम्न को ऐसा रक्षित किया जैसे कि तारागण चन्द्रमा को रक्षित करते हैं तदनन्तर सेनाओं के सन्नद्ध होने पर युद्ध में संसप्तकों को देखकर ६ । ७ क्रोधयुक्त अर्जुन अपने गाण्डीव धनुष को टङ्कारता हुआ सम्मुख गया इसके पीछे मारने के अभिलाषी संसप्तक लोग अर्जुन के सम्मुख दौ. ८ वह विजय में सङ्कल्प करनेवाले मृत्यु को तिरस्कार करके सम्मुख गये मनुष्य, हाथी, घोड़ों के समूहों से युक्त मतवाले हाथी और रथों से व्याप्त ९ पत्तियों से युक्त शूरवीरों के उस समूह को अर्जुन ने बड़ी शीघ्रता से पीड़ित किया अर्जुन के साथ में उन लोगों का ऐसा कठिन युद्ध हुआ १० जैसा कि उसका युद्ध निवातकवचियों के साथ हमने सुना था रथ, घोड़े, ध्वजा, हाथी इन युद्ध में वर्तमानों को भी ११ बाण धनुष खड्ग चक्र फरसे आदि नाना प्रकार के शस्त्रों को उठाये हुए भुजाओं वा नाना प्रकार के शस्त्रों १२ को और शत्रुओं के हज़ारों शिरों को अर्जुन ने काटा तब पातालतल के समान उस सेनारूपी सागर में १३ इस प्रकार मग्न हुए उस रथ को देखकर संसप्तक लोग गर्जे तदनन्तर उसने उन शत्रुओं को मारकर फिर भी उत्तर की ओर से मारा १४ दक्षिण और पश्चिम ओर से भी ऐसा मारा जैसे कि क्रोधयुक्त रुद्र पशुओं को मारते हैं उसके पीछे हे श्रेष्ठ ! पाञ्चाल चन्देरी और सृञ्जयदेशियों के युद्ध १५ आपके युद्धकर्त्ताओं से बड़े भारी कठिन हुए युद्ध में दुर्मद अत्यन्त क्रोधयुक्त रथ समेत सेना को मारनेवाले प्रसन्नचित्त कृपाचार्य कृतवर्मा और सौबल के पुत्र शकुनी ने कोशल, काशी, मत्स्य, कारूष, कैकय १६ । १७ और शूरसेनदेशीय उत्तम शूरों समेत युद्ध किया यह तीनों उनके युद्ध का अन्त करनेवाले शरीर पाप और प्राणों के नाश करनेवाले १८ क्षत्रिय वैश्य और शूद्र वीरों के धर्म स्वर्ग और यश के उत्पन्न करनेवाले

हुए हे भरतर्षभ ! इसके पीछे बड़े वीर कौरव और महारथी मद्रदेशियों से रक्षित वीर दुर्योधन ने भाइयों समेत युद्ध में आकर पाण्डव पाञ्चाल और चन्देरीदेशियों समेत सात्यकी के साथ १६ । २० युद्ध करनेवाले कर्ण को चारों ओर से रक्षित किया फिर कर्ण ने भी तीक्ष्णधारवाले बाणों से बड़ी भारी सेना को मारकर २१ उत्तम-उत्तम रथियों को मर्दन करके युधिष्ठिर को पीड्यमान किया हज़ारों शत्रुओं को वस्त्र शस्त्र शरीर और प्राणों से पृथक्कर २२ स्वर्ग और यश को स्पर्श करके अपने शूरवीरों को प्रसन्न किया हे श्रेष्ठ! इस रीति से मनुष्य हाथी और घोड़ों का नाश करनेवाला युद्ध कौरव और सृञ्जयों में देवासुरों के युद्ध के समान हुआ ॥ २३ ॥

इति श्रीमहाभारते कर्णपर्वणि परस्परयुद्धेऽष्टचत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४८ ॥

उनचासवाँ अध्याय

धृतराष्ट्र बोले कि हे सञ्जय ! मनुष्यों का नाश करनेवाले कर्ण ने पाण्डवों की उस सेना में जाकर राजा युधिष्ठिर को जैसे अचेत किया वह सब मुझसे वर्णन करो १ युद्ध में पाण्डवों के कौन-कौन से बड़े वीरों ने कर्ण को रोका और अधिरथी कर्ण ने कौन-कौन से वीरों को मथकर युधिष्ठिर को पीड़ित किया २ सञ्जय बोले कि शत्रुओं का विजय करनेवाला कर्ण सम्मुख वर्तमान पाण्डवों को जिनमें मुख्य धृष्टद्युम्न था देखकर शीघ्र ही पाञ्चाल के सम्मुख दौड़ा ३ विजय से शोभायमान पाञ्चाल शीघ्र ही उस सम्मुख दौड़नेवाले महात्मा के सम्मुख ऐसे गये जैसे कि हंस सम्मुख जाते हैं ४ इसके पीछे दोनों ओर से हज़ारों शङ्खों के चित्तरोचक शब्द प्रकट हुए और भेरियों के भयानक शब्द होने लगे ५ तब नाना प्रकार के बाणों का गिरना और हाथी घोड़े वा रथों के शब्द और भयकारी वीरों के सिंहनाद उत्पन्न हुए ६ पर्वत वृक्ष और समुद्र समेत पृथ्वी वायु और बादलों समेत आकाश अथवा सूर्य, चन्द्रमा, ग्रह, नक्षत्रादिक समेत स्वर्ग यह सब प्रत्यक्ष में घूमने लगे ७ सब जीवमात्र उस शब्द को इस प्रकार का मानकर घात करने से बन्द हुए

और छोटे-छोटे जीव तो भयभीत होकर मर गये ८ इसके पीछे अत्यन्त क्रोधयुक्त कर्ण ने शीघ्र ही अस्त्र को प्रकट करके पाण्डवीय सेना को ऐसे मारा जिस प्रकार आसुरी सेना को इन्द्र मारता है ९ बाणों को छोड़ते हुए उस कर्ण ने पाण्डवीय सेना में घुसकर प्रभद्रकों के बड़े-बड़े सतहत्तर वीरों को मारा १० इसके पीछे उस महारथी कर्ण ने सुनहरी पुङ्खवाले तीक्ष्णधार पचीस उत्तम बाणों से पचीस ही पाञ्चालों को मारा ११ फिर उस वीर ने सुनहरी पुङ्खवाले शत्रुओं के चीरनेवाले नाराचों से हजारों चन्देरीदेशियों को भी मारा १२ हे महाराज! इसके पीछे पाञ्चालों के रथसमूहों ने इस रीति के बुद्धि से बाहर कर्म करनेवाले कर्ण को चारों ओर से घेर लिया १३ फिर तो सूर्य के पुत्र महात्मा कर्ण ने दुस्सह पाँच विशिखों को धनुष पर चढ़ाकर पाँच पाञ्चालों को मारा १४ अर्थात् हे भरतर्षभ! युद्ध में भानुदेव, चित्रसेन, सेनाबिन्दु, तपन, शूरसेन इन पाञ्चालों को मारा १५ उस युद्ध में शूरवीर पाञ्चालों के मरने पर पाञ्चालों में बड़ा हाहाकार हुआ १६ हे महाराज! तब तो पाञ्चालों के दश महारथियों ने कर्ण को चारों ओर से घेर लिया उस समय भी कर्ण ने शीघ्र ही बाणों से उनको मारा १७ इसके पीछे चक्र के रक्षक दुर्जय कर्ण के पुत्र सुखेन और सत्यसेन ने कर्ण को त्यागकर युद्ध किया १८ फिर कर्ण के पुत्र पृष्ठरक्षक वृषसेन ने कर्ण को पीछे की ओर से रक्षित किया १९ कवच और शस्त्रों के धारण करनेवाले धृष्टद्युम्न, सात्यकी, द्रौपदी के पुत्र, भीमसेन, जनमेजय, शिखण्डी और बड़े वीर प्रभद्रक २० चन्देरी, केकय, पाञ्चालदेशीय, नकुल, सहदेव और मत्स्यदेशीय शूरवीर यह सब मारने के इच्छावान् उस प्रहार करनेवाले कर्ण के सम्मुख दौड़े २१ और नाना प्रकार की बाणवर्षा से इस कर्ण को ऐसा मर्दन किया जैसे कि वर्षाऋतु में बादल पर्वत को मर्दन करते हैं २२ इसके पीछे पिता के चाहनेवाले प्रहारकर्ता कर्ण के पुत्रों ने और आपके अन्य अन्य वीरों ने उन सब वीरों को रोका २३ सुसेन भल्ल से भीमसेन के धनुष को काटकर और सात नाराचों से भीमसेन को छाती पर घायल करके गर्जा २४ इसके पीछे भयानक पराक्रमी भीम-

सेन ने बड़े दृढ़ दूसरे धनुष को लेकर अपने बाण से सुसेन के धनुष को २५ काटकर क्रोध से युक्त नाचते हुए भीमसेन ने दश बाणों से उसको घायल किया और बड़ी शीघ्रता से कर्ण को भी तिहत्तर बाणों से घायल किया २६ और देखनेवाले मित्रों के मध्य में कर्ण के पुत्र भानुसेन को घोड़े, सारथी, रथ, शस्त्र और ध्वजा समेत दश बाणों से गिरा दिया २७ फिर क्षुरप्र से कटा हुआ उसका वह प्रकाशमान शिर ऐसा शोभित मालूम हुआ जैसे कि नाल से जुदा हुआ कमल होता है २८ भीमसेन ने कर्ण के पुत्र को मारकर आपके शूरवीरों को फिर पीड्यमान करके कृपाचार्य और कृतवर्मा के धनुषों को काटकर उनको भी व्याकुल किया फिर दुश्शासन को तीन बाण से और शकुनी को छः लोहे के बाणों से घायल करके उलूक और पत्री इन दोनों को विरथ किया हाय सुसेन को मारा है ऐसा कहते हुए भीमसेन ने शायक को लिया तब कर्ण ने उसके उस बाण को काटकर तीन बाणों से उसको भी घायल किया २९।३१ इसके पीछे भीमसेन ने सुन्दर पर्ववाले बाण को लेकर सुसेन के ऊपर छोड़ा फिर कर्ण ने उस बाण को भी काटा ३२ इसके पीछे पुत्र को चाहते निर्दय कर्ण ने मारने की इच्छा से तिहत्तर बाणों से निर्दय होकर भीमसेन को फिर घायल किया ३३ फिर सुसेन ने बड़े भारवाहक उत्तम धनुष को लेकर पाँच बाणों से नकुल को दोनों भुजा और छाती पर घायल किया ३४ तब नकुल भी भार सहनेवाले बीस बाणों से उसको घायल करके बड़े शब्द से गर्जा और कर्ण के भय को उत्पन्न किया ३५ फिर महारथी सुसेन ने शीघ्रगामी तीक्ष्ण दश बाणों से उसको घायल करके शीघ्र ही क्षुरप्र से उसके धनुष को काटा ३६ इसके पीछे क्रोध से भरे हुए नकुल ने दूसरे धनुष को लेकर युद्ध में नौ बाणों से सुसेन को रोककर ३७ उस शत्रुहन्ता ने बाणों से दिशाओं को ढककर इसके सारथी को घायल किया फिर सुसेन को तीन बाण से ३८ और तीन भल्लों से उसके बड़े दृढ़ धनुष के तीन खण्ड कर दिये इसके पीछे क्रोधयुक्त सुसेन ने दूसरे धनुष को लेकर ३९ साठ बाणों से नकुल को घायल करके सात बाणों से सहदेव को छेदा

परस्पर के युद्ध में शीघ्रतापूर्वक शायक मारनेवाले वीरों का युद्ध देवासुरों के युद्ध के समान हुआ फिर सात्यकी तीन बाणों से वृषसेन के सारथी को मारकर ४० । ४१ भल्ल से उसके धनुष को काट घोड़ों को भी सात बाणों से मारा एक बाण से ध्वजा को काटकर तीन बाणों से उसको भी हृदय पर घायल किया ४२ इसके पीछे एक मुहूर्त अपने रथ पर अचेत होकर फिर उठ खड़ा हुआ युद्ध में सात्यकी के हाथ से सारथी घोड़े रथ और ध्वजा से रहित किया हुआ वह वृषसेन ४३ सात्यकी के मारने की इच्छा से ढाल तलवार बाँधकर सात्यकी के सम्मुख गया उस शीघ्रता से आनेवाले वृषसेन की ढाल तलवार को सात्यकी ने ४४ वराह कर्ण नाम दश बाणों से काटा और दुश्शासन ने उस रथ और शस्त्र से हीन वृषसेन को देखकर ४५ अपने रथ पर सवार करके शीघ्र ही दूसरे रथ पर सवार किया इसके पीछे महारथी वृषसेन ने दूसरे रथ पर सवार होकर ४६ तिहत्तर बाणों से द्रुपद के पुत्रों को और पाँच बाणों से सात्यकी को चौंसठ बाणों से भीमसेन को पाँच से सहदेव को ४७ तीन बाणों से नकुल को सात बाणों से शतानीक को दश बाणों से शिखण्डी को और सौ बाणों से धर्मराज को घायल किया ४८ हे राजन् ! उस धनुषधारी कर्ण के पुत्र ने इन और अन्य-अन्य शूरवीरों को पीड्यमान किया ४९ इसके पीछे उस अजेय ने युद्ध में कर्ण के पृष्ठभाग को रक्षित किया फिर सात्यकी ने नवीन लोहे के नौ बाणों से दुश्शासन को ५० सारथी घोड़े और रथ से विहीन करके तीन बाण से उसके ललाट को घायल किया फिर वह दुश्शासन बुद्धि के अनुसार अलंकृत दूसरे रथ पर सवार होकर ५१ कर्ण के बल को बढ़ाता हुआ पाण्डवों के साथ युद्ध करने लगा इसी प्रकार धृष्टद्युम्न ने दश बाणों से कर्ण को घायल किया ५२ द्रौपदी के पुत्रों ने तिहत्तर बाणों से सात्यकी ने सात बाणों से भीमसेन ने चौंसठ बाणों से सहदेव ने सात बाणों से नकुल ने तीन सौ बाणों से शतानीक ने सात बाणों से ५३ शिखण्डी ने दश बाणों से और वीर धर्मराज ने सौ बाणों से घायल किया ५४ हे राजेन्द्र ! विजयाभिलाषी इन वीरों ने और अन्य वीरों ने उस महायुद्ध में बड़े

भारी धनुषधारी को पीड्यमान किया ५५ फिर रथ से घूमकर उस शत्रु-विजयी वीर कर्ण ने विशिख नाम दश-दश बाणों से प्रत्येक को घायल किया ५६ हे महाबाहो ! हमने महात्मा कर्ण के अस्त्रबल और हस्त-लाघवता को देखकर बड़ा आश्चर्य किया ५७ क्रोध से बाणों को लेते चढ़ाते और मारते हुए कर्ण को नहीं देखा परन्तु शत्रुओं को मृतक हुआ देखा ५८ उस समय तीक्ष्णधारवाले बाणों से पृथ्वी स्वर्ग दिशा और आकाश भर व्याप्त हो गया उस स्थान पर आकाश लाल बादलों से व्याप्त होने के समान परिपूर्ण हो गया ५९ उस समय धनुष हाथ में लिये नाचता हुआ प्रतापवान् कर्ण जिन-जिनके हाथ से घायल हुआ था उन-उनको एक-एक करके तिगुने बाणों से घायल किया ६० फिर हज़ार बाणों से उनको घायल करके बड़े वेग से गर्जा इसके पीछे घोड़े रथ सारथी समेत वह सब लोग घायल हो-होकर हट गये ६१ शत्रुओं का घायल करनेवाला कर्ण बाणों की वर्षा से उन बड़े-बड़े धनुषधारियों को मथकर परस्पर मर्दनरूप पीड़ा से रहित होकर हाथियों की सेनाओं में आया ६२ वहाँ उस कर्ण ने मुख न मोड़नेवाले चन्देरीदेशियों के तीन सौ रथों को मारकर तीक्ष्णधारवाले बाणों से युधिष्ठिर को घायल किया ६३ इसके पीछे हे राजन् ! सब पाण्डव सात्यकी और शिखण्डी जो कि राजा को कर्ण से रक्षा कर रहे थे उन सबने आकर युधिष्ठिर को चारों ओर से रक्षित किया ६४ उसी प्रकार सावधान शूरवीर महा-धनुषधारी आपके सब युद्धकर्ताओं ने युद्ध में दुर्जय कर्ण को चारों ओर से रक्षित किया ६५ हे राजन् ! फिर नाना प्रकार के बाजों के शब्द प्रकट हुए और सम्मुख गर्जनेवाले वीरों के सिंहनाद उत्पन्न हुए ६६ इसके पीछे निर्भय पाण्डव और कौरव फिर सम्मुख हुए पाण्डवों का मुख्य युधिष्ठिर था और हमारा मुख्य अग्रगामी कर्ण था ॥ ६७ ॥

इति श्रीमहाभारते कर्णपर्वणि संकुलयुद्धे नवचत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४९ ॥

पचासवाँ अध्याय

सञ्जय बोले कि, इसके पीछे हज़ारों रथ घोड़े हाथी और पत्तियों समेत कर्ण उस सेना को चीरकर युधिष्ठिर के सम्मुख गया १ वहाँ कर्ण निर्भयतापूर्वक शत्रुओं से सन्तप्त होकर नाना प्रकार के हज़ारों शस्त्रों को काटकर सैकड़ों महाउग्र बाणों से शत्रुओं को घायल किया २ कर्ण ने उनके शिर जङ्घा और भुजाओं को काटा तब वह घायल और मृतक होकर पृथ्वी पर पड़े और बहुत से भाग गये ३ फिर सात्यकी के कहने पर द्राविड़ निषाद और शूरवीर पत्ती लोग युद्ध में मारने की इच्छा से कर्ण के सम्मुख गये ४ वह लोग भी कर्ण के हाथ से शायक और भुजाओं से रहित होकर मारे गये और एक साथ ही पृथ्वी पर ऐसे गिर पड़े जैसे कि टूटा हुआ ताल का वन गिर पड़ता है ५ इस रीति से युद्धभूमि में दिशाओं को व्याप्त करते सैकड़ों और हज़ारों शूरवीर मृतक होकर पृथ्वी पर वर्तमान हुए इसके पीछे पाण्डव और पाञ्चालों ने मृत्यु के समान सूर्य के पुत्र कर्ण को ऐसे रोका जैसे कि मन्त्र और ओषधियों के द्वारा रोग को रोकते हैं ६ । ७ वह कर्ण उनको भी मर्दन करके फिर युधिष्ठिर के पास ऐसे पहुँचा जैसे कि मन्त्र वा ओषधियों के कर्म को उल्लङ्घन करनेवाला महाकठिन रोग होता है ८ राज्य के अभिलाषी पाण्डव पाञ्चाल और केकय लोगों से रोका हुआ वह कर्ण उल्लङ्घन करने को ऐसे समर्थ नहीं हुआ जैसे कि काल ब्रह्मज्ञानी को नहीं उल्ल-ङ्घन कर सकता है ९ इसके पीछे समीप वर्तमान शत्रुविजयी रोके हुए कर्ण से वह क्रोध से रक्तनेत्र युधिष्ठिर बोले १० हे वृथा दीखनेवाले, सूतपुत्र, कर्ण ! मेरे वचन को सुन तू सदैव युद्ध में महावेगवान् अर्जुन से ईर्षा करता है ११ और दुर्योधन के मत में होकर सदैव हम लोगों को पीड़ा देता है तेरा तेज बल पराक्रम और पाण्डवों के साथ में जो शत्रुता है १२ उस सबको तू बड़ी वीरता में नियत होकर दिखला अब मैं बड़े युद्ध में तेरे युद्ध के निश्चय का नाश करूँगा १३ हे महाराज ! पाण्डव युधिष्ठिर ने कर्ण से ऐसे वचन कह के सुनहरी पुङ्खवाले दश

बाणों से उसको घायल किया १४ हे भरतवंशिन् ! शत्रुओं के विजयी कर्ण ने हँसकर विषदन्तनाम दशबाणों से उसको घायल किया १५ हे श्रेष्ठ ! कर्ण के हाथ से घायल वह युधिष्ठिर उसको तुच्छ करके ऐसा क्रोधयुक्त हुआ जैसे कि हव्य के कारण से अग्नि प्रज्वलित होती है १६ प्रलयकाल करने की इच्छावाली ज्वालाओं की मालाओं से व्याप्त युधिष्ठिर का शरीर ऐसा दिखाई दिया जैसे कि प्रलयकाल में कामनाओं का भस्म करनेवाला दूसरा संवर्तक अग्नि होता है १७ हे राजेन्द्र ! इसके पीछे वह सेना के मनुष्य जो कि अत्यन्त प्रकाशित शस्त्रों के धारण करनेवाले थे और जिनके प्रकाशमान वस्त्र और माला गिर पड़ी थीं वे दशो दिशाओं को भागे १८ उसके पीछे सुवर्ण से जटित बहुत बड़े धनुष को टङ्कार कर पर्वतों के भी विदीर्ण करनेवाले बहुत तीक्ष्ण बाणों को चढ़ाया १९ इसके पीछे राजा ने कर्ण के मारने की इच्छा से शीघ्र कर्ण तक खींचे हुए यमराज के दण्ड के समान बाण को छोड़ा २० फिर वह उस वेगवान् के हाथ से छूटा हुआ बिजली के समान शब्दायमान बाण अकस्मात् उस महारथी कर्ण की बाईं कोख में नियत हुआ २१ तब वह महाबाहु उस बाण से पीड़ित होकर रथ पर धनुष को छोड़कर अचेत हो गया २२ इसके पीछे दुर्योधन की बड़ी सेना ने कर्ण को उस दशा में विपरीत चेष्टायुक्त देखकर बड़ा हाहाकार किया २३ हे राजन् ! युधिष्ठिर के पराक्रम को देखकर पाण्डवों का सिंहनाद और क्रीड़ापूर्वक किलकिला शब्द प्रकट हुआ २४ फिर बड़े पराक्रमी कर्ण ने थोड़े ही काल में सचेत होकर राजा के मारने का मनोरथ किया २५ और उस साहसी ने सुवर्णजटित विजय नाम धनुष को टङ्कार कर तीक्ष्ण धारवाले बाणों से पाण्डवों को घायल किया २६ इसके पीछे युद्ध में महात्मा राजा के चक्र के रक्षक पाञ्चालदेशीय चन्द्रदेव और दण्डधार को दो क्षुरप्रों से घायल किया २७ धर्मराज के वह दोनों बड़े वीर दोनों पहियों की ओर रथ के समीप ऐसे शोभायमान हुए जैसे कि चन्द्रमा के पास पुनर्वसु नक्षत्र शोभायमान होते हैं २८ युधिष्ठिर ने तीक्ष्ण धारवाले बाणों से कर्ण को फिर छेदा और सुसेन वा सत्यसेन को तीन बाणों

से घायल किया २६ शल्य को नब्बे बाणों से और कर्ण को तिहत्तर बाणों से पीड्यमान किया और उनके रक्षकों को सीधे चलनेवाले तीन तीन बाणों से घायल किया ३० इसके पीछे धनुष को चलायमान करता हुआ वह कर्ण बहुत हँसा और भल्ल से राजा को व्यथित कर साठ बाणों से घायल करके गर्जा ३१ इसके पीछे युधिष्ठिर पाण्डव के बड़े-बड़े वीर क्रोधयुक्त होकर युधिष्ठिर की रक्षा करने को कर्ण के सम्मुख दौड़े और बाणों से उसको पीड्यमान किया ३२ सात्यकी, चेकितान, युयुत्सु, पाण्ड्य, धृष्टद्युम्न, द्रौपदी के पुत्र, प्रभद्रक ३३ नकुल, सहदेव, भीमसेन, शिशुपाल के पुत्र, कारुष्य, मत्स्य, कैकेय, काशी कोशल इन देशों के शेष शूरवीरों ने ३४ सुसेन को घायल किया और पाञ्चलदेशीय जनमेजय ने शायकों से कर्ण को पीड़ित किया ३५ बराहकर्ण, नाराच, नालीक, वत्सदत्त, विपाट, क्षुरप्र, चुटका, मुख ३६ और नाना प्रकार के उग्र शस्त्रों से और रथ, हाथी, घोड़े और अश्वसवारों से कर्ण को घेरकर मारने की इच्छा से सम्मुख दौड़े ३७ सब प्रकार करके पाण्डवों के उत्तम शूरवीरों से घिरा हुआ होकर ब्रह्मास्त्र को प्रकट करते हुए उस कर्ण ने बाणों से दिशाओं को व्याप्त कर दिया ३८ इसके पीछे बाणरूप बड़ी अग्नि और पराक्रमरूप बड़ी उष्णता रखनेवाला अग्निरूप कर्ण पाण्डवरूपी वन को भस्म करता हुआ इधर उधर भ्रमण करने लगा ३९ फिर बड़े धनुषधारी वीर कर्ण ने हँसकर महाअस्त्रों को चढ़ाकर बाणों से महाराजा युधिष्ठिर के धनुष को काटा ४० इसके पीछे कर्ण ने एक पल भर में ही नब्बे बाणों को चढ़ाकर युद्ध में राजा के कवच को छेदा ४१ उस समय वह रत्नजटित सुवर्ण से खचित कवच पृथ्वी पर गिरता हुआ ऐसा शोभायमान हुआ जैसा कि बिजली का रखनेवाला बादल वायु से ताड़ित होकर सूर्य से चिपटा हुआ होता है ४२ उस महाराज के शरीर से गिरा हुआ अपूर्व रत्नों से अलंकृत वह कवच ऐसा अत्यन्त शोभायमान हुआ जैसे कि रात्रि के समय बादलों से रहित आकाश होता है ४३ इसके पीछे बाणों से टूटे कवच रुधिर से भरे हुए उस राजा ने केवल लोहे की बनी हुई शक्ति को कर्ण के ऊपर फेंका ४४ कर्ण ने उस अग्निरूपी

शक्ति को आकाश में ही सात बाणों से काटा और वह शक्ति पृथ्वी पर गिर पड़ी ४५ इसके पीछे-पीछे पाण्डव युधिष्ठिर चार तोमरों से कर्ण को दोनों भुजा ललाट और हृदय पर घायल करके बड़ी प्रसन्नता से गर्जा ४६ फिर रुधिर भरे क्रोधयुक्त सर्प के समान श्वास लेनेवाले कर्ण ने भल्ल से ध्वजा को काटकर तीन बाणों से पाण्डव युधिष्ठिर को घायल किया ४७ और उसके दोनों तूणीरों को काटकर रथ को तिल-तिल के समान चूर्ण कर डाला जिन कृष्णवर्ण बाल रखनेवाले दत्तवर्ण घोड़ों ने युधिष्ठिर को सवार किया ४८ राजा उन घोड़ों के रथ पर चढ़कर मुख मोड़कर घर को चल दिया इस रीति से वह युधिष्ठिर जिसका सारथी और पीछे रहनेवाला मर गया था वह हट गया ४९ फिर वह महाखेदित चित्त होकर कर्ण के सम्मुख होने को समर्थ नहीं हुआ फिर कर्ण ने पाण्डव युधिष्ठिर के पास जाकर ५० वज्र, अंकुश, मत्स्य, ध्वजा, कच्छप और कमल आदि के चिह्नवाले हाथ से उसको पकड़ना चाहा ५१ और अपने पवित्र होने को हाथ से कन्धे को छूकर बल से पकड़ना चाहा ही था कि कुन्ती का वचन उसको स्मरण हो आया ५२ तब शल्य ने कहा कि हे कर्ण! इस उत्तम राजा को मत पकड़ो वह पकड़ते ही तुझको भस्म न कर डाले ५३ हे राजन्! इस बात के सुनते ही वह कर्ण हँसा और पाण्डवों की निन्दा करता हुआ बोला बड़े कुल में उत्पन्न क्षत्रिय धर्म में नियत होकर ५४ इस बड़े युद्ध में भयभीतता से प्राणों की रक्षा करते युद्ध को त्यागकर कैसे जाते हो इससे मेरे मत से आप क्षत्रियधर्म में कुशल नहीं हो ५५ आप ब्राह्मणों के समूहों में वेदपाठ और यज्ञ करने में योग्य हो हे कुन्ती के पुत्र! युद्ध मत करो और वीरों के सम्मुख मत हो ५६ इनको अप्रिय मत कहो बड़े युद्ध में मत जाओ उस बड़े वीर ने इस रीति से कहकर पाण्डव को छोड़ ५७ पाण्डवीय सेना को ऐसे मारा जैसे वज्रधारी इन्द्र आसुरी सेना को मारता है हे राजन्! इसके पीछे लज्जायुक्त राजा युधिष्ठिर शीघ्र ही हट गया ५८ तदनन्तर उस अजेय राजा को हटा हुआ मानकर आगे लिखे हुए वीर इसके पीछे-पीछे चले चन्देरी देशवाले, पाण्डव, पाञ्चाल, महारथी सात्यकी ५९ शूर द्रौपदी के पुत्र,

नकुल, सहदेव इत्यादि तदनन्तर युधिष्ठिर की सेना को फिरा हुआ देख-
कर ६० अत्यन्त प्रसन्नचित्त कर्ण कौरवों समेत पीछे की ओर से चला
और धृतराष्ट्र के पुत्रों के भेरी, शङ्ख, मृदङ्ग, धनुष ६१ और सिंहनादों के
शब्द हुए हे कौरव्य, महाराज ! फिर युधिष्ठिर ने शीघ्र ही ६२ श्रुतकीर्त्ति
के रथ पर चढ़कर कर्ण के पराक्रम को देखा फिर धर्मराज अपनी सेना
को छिन्न-भिन्न देखकर ६३ महाक्रोधित हो अपने शूरवीरों से बोला कि
तुम कैसे खड़े हो इनको क्यों नहीं मारते तब वह राजा की आज्ञा पाकर
पाण्डवों के सब महारथी ६४ जिनमें अग्रगामी भीमसेन था आपके
पुत्रों के सम्मुख दौड़े तब वहाँ शूरवीरों के बड़े कठोर शब्द हुए ६५ रथ
हाथी घोड़े और पत्तियों के जहाँ तहाँ शब्द होने लगे फिर उठो घायल
करो सम्मुख हो जाओ दौड़ो ६६ इस प्रकार की परस्पर में वार्ता करते
हुए शूरवीरों ने उस बड़े युद्ध में एक ने एक को मारा और आकाश में
बाणों के कारण घटा सी छा गई ६७ परस्पर में मारनेवाले लौटे हुए
उत्तम पुरुषों के हाथ से युद्ध में ध्वजा पताकाओं से खण्डित घोड़े सारथी
और शस्त्रों से रहित एक-एक शरीर के अङ्गों से चूर्णित राजा लोग मृतक
होकर पृथ्वी पर ऐसे गिर पड़े ६८ जैसे कि टूट टूटकर पहाड़ों के शिखर
गिर पड़ते हैं इसी प्रकार सवारों समेत ६९ उत्तम-उत्तम हाथी मृतक होकर
पृथ्वी पर ऐसे गिर पड़े जैसे कि वज्र से टूटे हुए सारोह भूषण और कवचों
से संयुक्त पर्वत गिरते हैं ७० हज़ारों सवारों समेत घोड़े जिनके बहुत
से शूरवीर मारे गये वह भी पृथ्वी पर गिर पड़े और जिनके शस्त्र अत्यन्त
टूट गये वह रथहीन होकर रथों से ही मारे गये ७१ और युद्ध में सम्मुख
युद्ध करनेवाले वीरों से पत्तियों के हज़ारों समूह मारे गये बड़ी लम्बी
लाल आँख और चन्द्रमा कमल के समान मुख रखनेवाले ७२ युद्ध-
कुशल पुरुषों के उत्तम शिरों से सब ओर में पृथ्वी आच्छादित हो गई
और जो-जो काम पृथ्वी पर हुआ उसका शब्द मनुष्यों ने आकाश में
भी सुना ७३ उत्तम गीत और बाजों समेत अप्सराओं के समूह हज़ारों
वीरलोगों को ७४ विमानों में बैठाकर लिये जाती थीं उस बड़े आश्चर्य को
प्रत्यक्ष में देखकर स्वर्ग की अभिलाषा से ७५ अत्यन्त प्रसन्नचित्त शूरवीरों

ने बड़ी शीघ्रता से परस्पर में मारा और रथियों ने रथों समेत बड़ी वीरता से अद्‌भुत युद्ध किया ७६ पत्तियों ने पत्तियों के साथ हाथियों ने हाथियों के साथ घोड़ों ने घोड़ों के साथ मनुष्य और हाथियों का नाशकारक युद्ध किया ७७ इस रीति के युद्ध जारी होने और धूलि से सेना के ढक जाने पर कचाकच युद्ध हुआ और एक ने एक को वा अपनों ने अपने को मारा और अन्योन्य में बालों का पकड़ना दाँतों से काटना नखों से विदीर्ण करना ७८ मुष्टि प्रहार करना भुजा से भुजा को तोड़ना यह सब युद्ध पाप और प्राणों के नाशकारी हुए इस रीति से हाथी घोड़े और मनुष्यों का नाशकारक युद्ध जारी होने पर ७९ मनुष्य हाथी और घोड़ों के शरीरों से रुधिर की ऐसी नदी बह निकली जिसने हाथी घोड़े और मनुष्यों के कटे गिरे शरीरों को पृथ्वी पर बहाया ८० मनुष्य हाथी और हाथियों के परस्पर जुट जाने पर घोड़े हाथी और सवारों का रुधिर रूप जल रखनेवाली ८१ महाघोर मांस, रुधिर, मज्जारूप कीच से संयुक्त नदी मनुष्य घोड़े और हाथियों के शरीरों की बहानेवाली और भयभीतों को भय की करानेवाली थी विजयाभिलाषी वीरों ने उस अपार नदी के पार को पाया ८२ और कोई-कोई उछलते डूबते हुए स्नान करने के अभिलाषी हुए हे भरतर्षभ ! उन भयभीतयुक्त शरीरवाले उत्तम रक्तवर्ण कवच और शस्त्रों के धारण करनेवालों ने ८३ उस नदी में स्नान किया और पान करते ही कुँभलाकर लज्जित हुए हमने रथ, घोड़े, मनुष्य, हाथी, भूषण ८४ कपड़े और टूटे हुए कवचों को पृथ्वी दिशा और आकाश समेत बहुधा रक्तवर्ण ही देखा ८५ हे भरतवंशिन् ! रुधिर के गन्ध स्पर्श रस और कठिनतारूप समेत शब्दों से ८६ बहुत सी सेना में व्याकुलता प्राप्त हुई तब भीमसेन और सात्यकी जिनमें मुख्य थे वह वीर उस अत्यन्त घायल और मृतक सेना के सम्मुख फिर गये ८७ उस समय उन चढ़ाई करनेवाले वीरों का वेग असह्य हुआ ८८ हे राजन् ! आपके पुत्रों के समेत बड़ी सेना के मुख मुड़ गये और मनुष्य घोड़ों से व्याकुल वह आपकी सेना रथ घोड़े और हाथियों से रहित होकर ८९ टूटी ढाल टूटे कवच और खण्डित शस्त्र धनुषवाली चारों ओर से ऐसे

तिर्रे बिर्रे होकर भागी ६० जैसे कि वन में सिंह से पीड़ित हाथियों के समूह व्याकुल होकर भागते हैं ॥ ६१ ॥

इति श्रीमहाभारते कर्णपर्वणि संकुलयुद्धे पञ्चाशत्तमोऽध्यायः ॥ ५० ॥

इक्यावनवाँ अध्याय

सञ्जय बोले कि हे महाराज ! आपकी सेना के सम्मुख दौड़नेवाले पाण्डवों को देखकर दुर्योधन ने सेना को हर प्रकार से रोका १ हे भरतर्षभ ! उस दुर्योधन ने बड़े-बड़े शूरवीरों को और सेना को अनेक प्रकार से रोका परन्तु आपके पुत्र के भी पुकारने से वह लोग नहीं लौटे २ तब उसके पीछे पत्त प्रपत्त समेत सौबल का पुत्र शकुनी और शस्त्रधारी कौरव युद्ध में भीमसेन के सम्मुख गये ३ कर्ण भी राजाओं समेत धृतराष्ट्र के पुत्रों को देखकर मद्र के राजा से यह बोला कि तुम भीमसेन के रथ के समीप चलो ४ कर्ण के इस वचन को सुनकर राजा मद्र ने हंसवर्ण के उत्तम घोड़ों को वहाँ पहुँचाया जहाँ कि भीमसेन था ५ हे महाराज ! युद्ध को शोभा देनेवाले कर्ण के प्रेरित घोड़े भीमसेन के रथ को पाकर अच्छे प्रकार से भिड़े ६ हे भरतर्षभ ! क्रोधयुक्त भीमसेन ने कर्ण को आता हुआ देखकर उसके मारने का उपाय विचारा ७ और वीरसात्यकी और धृष्टद्युम्न से बोला कि तुम धर्मात्मा राजा युधिष्ठिर की रक्षा करो ८ क्योंकि वह मुझको देखकर बड़े सन्देह को न करे और मुझ पर कर्ण चला आता है ९ सो मैं आज उसको युद्ध में बध करके अपने जय के होने की विधि करता हूँ १० मैं तुमसे सत्य-सत्य कहता हूँ कि घोरयुद्ध के द्वारा कितो मैं ही कर्ण को मारूँगा अथवा कर्ण मुझको मारेगा ११ अब मैं राजा को आप लोगों के सुपुर्द करता हूँ तुम सब लोग अनेक प्रकार से उसकी रक्षा के उपाय को करो १२ वह महाबाहु भीमसेन इस प्रकार धृष्टद्युम्न से कहकर बड़े शब्द से सिंहनाद को करके दिशाओं को शब्दायमान करता हुआ कर्ण के रथ की ओर गया १३ इसके पीछे मद्रदेशियों का स्वामी समर्थ शल्य युद्ध के चाहनेवाले शीघ्रतापूर्वक आनेवाले भीमसेन को देखकर कर्ण

से बोला १४ हे कर्ण ! इस अत्यन्त क्रोधयुक्त बहुत काल से दबे हुए क्रोध को तेरे ऊपर निकालने की इच्छावाले पाण्डुनन्दन भीमसेन को देखो १५ हे कर्ण ! पूर्व में मैंने अभिमन्यु और घटोत्कच के मरने पर भी इसका इस प्रकार का रूप नहीं देखा था जैसा कि अब देखने में आता है १६ यह क्रोधयुक्त तीनों लोकों के भी हटाने में समर्थ है इस समय इसने प्रलयकाल की अग्नि के समान देदीप्यमान अपने रूप को धारण किया है १७ सञ्जय बोले कि हे राजन् ! शल्य के इस प्रकार के कहते ही कहते में महाविकरालरूप भीमसेन कर्ण के सम्मुख वर्तमान हुआ इसके पीछे हँसता हुआ कर्ण उस सम्मुख आये हुए भीमसेन को देखकर शल्य से यह वचन बोला १८। १९ हे मद्रदेश के स्वामिन् ! अब तुमने भीमसेन के विषय में जो वचन मुझसे कहा वह सत्य है इसमें सन्देह नहीं है २० यह भीमसेन बड़ा शूरवीर क्रोध में भरा शरीर से असादृश्य पराक्रमियों में भी अधिक पराक्रमी है २१ विराट नगर में गुप्त रहनेवाली द्रौपदी के अभीष्ट चाहनेवाले ने केवल भुजबल के ही द्वारा २२ गुप्त उपाय में आश्रित और प्रवृत्त होकर कीचक को उसके सब समूहों समेत मारा अब कवचधारी क्रोध से व्याकुल यह भीमसेन दण्डधारी मृत्यु के संग भी युद्ध करने को समर्थ है फिर यह मेरे मन का अभिलाष बहुत काल से हो रहा है कि मैं युद्ध में अर्जुन को मारूँ अथवा अर्जुन मुझे मारे वह मेरा प्रयोजन भीमसेन के लड़ने से कदाचित् अभी हो जाय क्योंकि भीमसेन के मरने पर अथवा विरथ करने पर अर्जुन मेरे सम्मुख आवेगा यही मुझको श्रेष्ठ लाभ होगा २३।२६ अब यहाँ जो उचित समझते हो उसको शीघ्रता से करो बड़े तेजस्वी कर्ण के इस वचन को सुनकर २७ शल्य कर्ण से बोला कि हे महाबाहो ! तुम बड़े पराक्रमी भीमसेन के सम्मुख चलो २८ तुम भीमसेन को विजय करके अर्जुन को पाओगे जो तेरे चित्त का अभीष्ट बहुत काल से हृदय में वर्तमान है २९ हे कर्ण ! वह अभीष्ट तेरा तुझको प्राप्त होगा इसमें मिथ्या न होगा ऐसा कहने पर फिर कर्ण शल्य से बोला ३० कि मैं युद्ध में अर्जुन को मारूँगा वा अर्जुन मुझको मारेगा तुम युद्ध में मन

लगाकर वहाँ चलो जहाँ भीमसेन है ३१ तब सञ्जय ने कहा हे राजन्! फिर शल्य रथ के द्वारा वहाँ गया जहाँ पर बड़े धनुषधारी भीमसेन ने आपकी सेना को भगाया था ३२ हे राजेन्द्र! इसके पीछे कर्ण और भीमसेन की सम्मुखता में तूरी और भेरी आदि बाजों के शब्द होने लगे ३३ तदनन्तर अत्यन्त क्रोधयुक्त पराक्रमी भीमसेन ने उसकी महा-दुर्जय सेना को साफ़ और तीक्ष्ण नाराचों से दिशाओं में भगा दिया ३४ हे महाराज, धृतराष्ट्र! इसके पीछे भीमसेन और कर्ण का महाभयकारी कठिन रोमहर्षण युद्ध हुआ ३५ इसके पीछे एक क्षणमात्र में ही भीम-सेन कर्ण की ओर दौड़ा फिर सूर्य के पुत्र धर्मात्मा कर्ण ने उस आते हुए भीमसेन को देखकर ३६ अत्यन्त क्रोधित होकर छाती पर घायल किया और बाणों की वर्षा से ढक दिया ३७ कर्ण के हाथ से छिदे हुए भीमसेन ने भी कर्ण को बाणों से ढककर टेढ़े पर्ववाले नौ बाणों से देह में घायल किया ३८ फिर कर्ण ने बाणों से उसके धनुष को दो स्थानों से काटकर अत्यन्त तीक्ष्ण सब प्रकार के कवचों के काटनेवाले नाराच से उसकी छाती को घायल किया ३९ फिर मर्मों के जाननेवाले उस भीमसेन ने दूसरे धनुष को लेकर तीक्ष्ण बाणों से कर्ण को ४० मर्म-स्थलों में घायल किया और पृथ्वी वा आकाश को कम्पायमान करता हुआ महाघोर शब्द करके गर्जा ४१ फिर कर्ण ने उसको पच्चीस नाराचों से ऐसे घायल किया जैसे कि वन में मतवाले हाथी को उल्काओं से घायल करते हैं ४२ इसके पीछे शायकों से घायल शरीर क्रोध से व्याकुल क्रोध और ईर्षा से लाल नेत्र करके उसके मारने की इच्छा से भीमसेन ने ४३ बड़े भारवाही पर्वतों के भी छेदनेवाले उग्रबाण को धनुष में चढ़ाया ४४ और बड़े धनुषधारी वेगवान् वायुपुत्र भीमसेन ने कर्ण के मारने की अभिलाषा से कर्णपर्यन्त धनुष को खैंचकर वह बाण चलाया ४५ पराक्रमी भीमसेन के हाथ से छूटे हुए वज्र और बिजली के समान शब्दायमान उस प्रबल बाण से युद्ध में कर्ण को ऐसे घायल किया जैसे कि वज्र का वेग पर्वत को व्याकुल करके घायल करता है ४६ हे कौरव्य! वह सेनापति कर्ण भीमसेन के हाथ से घायल और अचेत होकर रथ के

बैठने के स्थान पर गिर पड़ा ४७ तब तो राजा मद्र कर्ण को अचेत देखकर युद्ध में शोभा देनेवाले कर्ण को युद्धभूमि से दूर ले गया ४८ इसके पीछे कर्ण के विजय होने पर भीमसेन ने दुर्योधन की बड़ी सेना को ऐसा भगाया जैसे कि पूर्वकाल में इन्द्र ने दानवों को भगाया था ॥४६॥

इति श्रीमहाभारते कर्णपर्वणि कर्णोपयानोनामैकपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ॥ ५१ ॥

बावनवाँ अध्याय

धृतराष्ट्र बोले कि हे सञ्जय! भीमसेन ने यह अत्यन्त कठिन कर्म किया जिसने अपने हाथ से कर्ण को रथ के स्थान में अचेत करके गिराया १ अकेला कर्ण युद्ध में सृञ्जयों समेत सब पाण्डवों को मारेगा हे सञ्जय! यह बात वारंवार मुझसे दुर्योधन ने कही है २ युद्ध में भीमसेन के हाथ से विजय किये हुए कर्ण को देखकर मेरे पुत्र दुर्योधन ने क्या किया ३ हे महाराज! युद्ध में आपका पुत्र कर्ण को मुख मोड़नेवाला देखकर अपने निज भाइयों से बोला कि ४ तुम्हारा भला हो तुम शीघ्र जाकर कर्ण को भीमसेन के महाकष्टरूपी अथाह समुद्र में डूबे हुए कर्ण की सब ओर से रक्षा करो ५ राजा की आज्ञा पाते ही वह सब लोग महाक्रोधयुक्त होकर भीमसेन के सम्मुख ऐसे हुए जैसे कि अग्नि के सम्मुख पतङ्ग होते हैं ६ श्रुतवान्, दुर्द्धर, क्राथ, विवित्सु, विकट, सम, निषङ्गी, कवची, पाशी, नन्द, उपनन्द ७ दुष्प्रधर्ष सुबाहु, बाणवेग, सुवर्चस, धनुर्ग्राह्य, दुर्मद, जलसन्ध, शल, सह इन महापराक्रमी रथों से रक्षित धृतराष्ट्र के पुत्रों ने भीमसेन को पाकर चारों ओर से घेर लिया ८। ६ और नाना प्रकार के रूपवाले बाण समूहों को चारों ओर से फेंका फिर वह महाबली भीमसेन ने उन्हों के हाथ से पीड्यमान होकर १० उन आते हुए आपके पुत्रों के पन्द्रह रथों समेत पचास रथियों को मारा ११ इसके पीछे फिर क्रोधयुक्त भीमसेन ने भल्ल से विवित्सु के शिर को देह से जुदा किया और वह मरकर पृथ्वी पर गिर पड़ा १२ पूर्ण चन्द्रमा के समान कुण्डल भी उसके शिर के साथ ही गिरा हे राजन्! तब तो उसके सब भाई उस शूरवीर अपने भाई को मरा हुआ देखकर १३ युद्ध में

भयानक पराक्रमी भीमसेन के सम्मुख गये इसके अनन्तर उस भयानक भीमसेन ने उस महायुद्ध में दूसरे दो भल्लों से १४ आपके दो पुत्रों के प्राणों का हरण किया हे राजन् ! हवा से टूटे हुए वृक्षों के समान देव-कुमारों के समान वह विकट और सहनाम दोनों भाई भी मरकर पृथ्वी पर गिर पड़े इसके पीछे शीघ्रता करनेवाले भीमसेन ने क्राथ को भी यमलोक में पहुँचाया १५। १६ अत्यन्त तीक्ष्ण नाराच का मारा हुआ वह क्राथ पृथ्वी पर गिर पड़ा तब तो महाकठिन हाहाकार उत्पन्न हुआ १७ आपके धनुषधारी वीर पुत्रों के मरने और उनकी सेना के चलायमान होने पर फिर महाबली भीमसेन ने १८ युद्ध में नन्द, उप-नन्द को यमलोक में पहुँचाया उसके पीछे वह आपके पुत्र भयभीत और व्याकुल १९ युद्ध में कालरूप भीमसेन को देखकर भागे फिर बड़े दुःखी कर्ण ने आपके पुत्रों को मरा हुआ देखकर २० फिर हंसवर्ण घोड़ों को वहाँ ही चलाया जहाँ पर पाण्डव भीमसेन था हे महाराज ! राजा मद्र के चलाये हुए वह वेगवान् घोड़े २१ भीमसेन के रथ को पाकर अच्छी रीति से भिड़े हे राजन्, धृतराष्ट्र ! युद्ध में कर्ण और पाण्डव भीमसेन का वह युद्ध महा-कठिन घोररूप रुधिर का उत्पन्न करनेवाला हुआ फिर उन भिड़े हुए महा-रथियों को देखकर २२। २३ मैंने विचार किया कि यह युद्ध कैसे होगा इसके पीछे युद्ध में प्रशंसनीय भीमसेन ने बाणों से २४ कर्ण को आपके पुत्रों के देखते हुए ढक दिया फिर अत्यन्त क्रोधयुक्त अस्त्रों के जाननेवाले कर्ण ने भी भीमसेन को २५ टेढ़े पर्ववाले नौ भल्लों से पीड्यमान किया तब उस घायल महाबाहु भयानक पराक्रमी भीमसेन ने २६ कान तक खैंचे हुए सात विशिखों से कर्ण को पीड्यमान किया हे महाराज ! इसके पीछे विषैले सर्प की समान श्वास लेनेवाले कर्ण ने २७ बाणों की बड़ी वर्षा से भीमसेन को ढक दिया फिर महाबली भीमसेन ने भी अपने बाणों की वृष्टि से उस कर्ण को ढक दिया २८ और कौरवों के देखते हुए गर्जा इसके पीछे अत्यन्त क्रोधयुक्त कर्ण ने दृढ़ धनुष को लेकर तीक्ष्ण धारवाले दश बाणों से भीमसेन को पीड्यमान करके तीक्ष्णधारवाले भल्ल से उस के धनुष को काटा इसके

पीछे बड़े पराक्रमी महाबाहु कर्ण के मारने की इच्छा से गर्जना करते हुए भीमसेन ने सुवर्ण वस्त्रों से अलंकृत कालदण्ड के समान घोर परिघ को लेकर फेंका कर्ण ने उस वज्र और बिजली के समान आते हुए परिघ को २६ । ३२ विषैले सर्पों की समान बाणों से टुकड़े-टुकड़े कर दिया तब तो शत्रुसन्तापी भीमसेन ने बहुत बड़े दृढ़ धनुष को लेकर ३३ कर्ण को मारे बाणों के आच्छादित कर दिया उसके पीछे कर्ण और भीमसेन का ऐसा घोरयुद्ध हुआ ३४ जैसे कि परस्पर मारने की इच्छा करनेवाले महाबली बन्दरों के राजाओं का युद्ध कटकट कर वारंवार होता है हे महाराज ! इसके पीछे कर्ण ने दृढ़ धनुष को चढ़ाकर तीन बाण से ३५ भीमसेन को कर्णमूल पर घायल किया कर्ण के हाथ से अत्यन्त घायल महाबली भीमसेन ने कर्ण के शरीर को छेदनेवाले घोर विशिख को हाथ में लेकर फेंका वह बाण उस कर्ण के कवच में घुस शरीर को छेदकर ३६ । ३७ पृथ्वी में ऐसा समा गया जैसे कि सर्प बामी में समा जाता है उस कठिन घात से महापीड़ित व्याकुल और अचेत के समान ३८ वह कर्ण रथ पर ऐसा कम्पित हुआ जैसे कि पृथ्वी के भूकम्प में पर्वत हिलता है हे महाराज ! इसके पीछे क्रोध और व्याकुलता से कर्ण ने ३६ भीमसेन को पच्चीस नाराचों से घायल किया और अनेक बाणों से देह को घायल करके एक बाण से ध्वजा को काटा ४० और भल्ल से उसके सारथी को काल के वश किया और शीघ्र ही तीक्ष्ण बाणों से उसके धनुष को काटकर ४१ हँसते हुए कर्ण ने एक मुहूर्त में सावधानी से भयकारी कर्म करनेवाले भीमसेन को रथ से विरथ कर दिया ४२ हे भरतर्षभ ! वह वायु के समान रथ से विहीन हँसता हुआ महाबाहु भीमसेन गदा को लेकर उस उत्तम रथ से कूदा ४३ और बड़े वेग से दौड़कर भीमसेन ने आपकी सेना को उस गदा से ऐसा तिर्रबिर्र कर दिया जैसे कि बादलों को वायु छिन्न भिन्न कर देता है ४४ फिर उस भयानकरूप शत्रुसन्तापी सर्वज्ञ भीमसेन ने ईर्षा के समान दाँत रखनेवाले घातक सात सौ हाथियों को भी छिन्न भिन्न करके ४५ बड़े पराक्रम से उन हाथियों के जाबड़े आँख मस्तक कमर और मर्म-

स्थलों को घायल किया ४६ इसके पीछे सब हाथी भयभीत होकर भागे और फिर शत्रुओं की ओर से भेजे हुए अन्य सवारों समेत हाथियों ने उसको ऐसा घेर लिया जैसे कि सूर्य को बादल घेर लेता है ४७ फिर उस पृथ्वी पर नियत ने उन सात सौ हाथियों को भी सवार शस्त्र और ध्वजाओं समेत ऐसा मारा जैसे कि इन्द्र वज्र से पहाड़ों को मारता है ४८ इसके पीछे शत्रुओं के विजयी भीमसेन ने शकुनी के बड़े पराक्रमी बावन हाथियों को फिर मारा ४९ इसी प्रकार आपकी सेना को कम्पायमान करते हुए पाण्डव भीमसेन ने एक सौ से अधिक रथ और हज़ारों पत्तियों को मारा ५० तब आपकी सेना महात्मा भीमसेनरूपी सूर्य से सन्तप्त होकर छिन्न भिन्न हो गई ५१ हे भरतर्षभ ! भीमसेन के भय से आपके शूरवीर भयभीत होकर युद्ध में भीमसेन को छोड़कर दशों दिशाओं को भागे ५२ तब शब्द करनेवाले चर्म के कवचधारी अन्य पाँच सौ रथ रथियों समेत भीमसेन पर चारों ओर से बाणों की वर्षा करते हुए सम्मुख आये ५३ भीमसेन ने उन पाँच सौ रथ समेत वीरों को भी ध्वजा पताकाओं समेत अपनी गदा से ऐसा मारा जैसे कि असुरों को विष्णु भगवान् मारते हैं ५४ इसके पीछे शकुनी के आज्ञावर्त्ती शूरों के अङ्गीकृत शक्ति दुधारे खड्ग और प्रासों के हाथ में रखनेवाले तीन हज़ार अश्वसवार भीमसेन के सम्मुख गये ५५ तब शत्रुहन्ता भीमसेन ने नाना प्रकार के मार्गों में घूम-घूमकर शीघ्र ही सम्मुख जाकर बड़े वेग पूर्वक गदा से उन अश्वसवारों को भी मारा ५६ हे भरतवंशिन् ! तब तो उन सब घायलों के ऐसे शब्द प्रकट हुए जैसे कि पत्थरों से घायल हुए हाथियों के शब्द होते हैं ५७ इस रीति से शकुनी के तीनों हज़ार अश्वारूढ़ों को मारकर दूसरे रथ में सवार हो क्रोधयुक्त भीमसेन कर्ण के सम्मुख गया ५८ वहाँ उस कर्ण ने भी शत्रुविजयी धर्मपुत्र युधिष्ठिर को बाणों से ढककर सारथी को रथ से गिराया ५९ इसके पीछे वह महारथी युद्ध में सारथी से रहित रथ को देखकर भागा और कर्ण कङ्कपत्रों से जटित सीधे बाणों को मारता हुआ उसके पीछे चला ६० वायु के पुत्र भीमसेन ने राजा की ओर जानेवाले कर्ण को देखकर अपने बाण-

जालों से ढक दिया फिर बाणों से पृथ्वी आकाश को ढककर शत्रुओं का विजय करनेवाला कर्ण बहुत शीघ्र लौटा और तीक्ष्ण बाणों से भीमसेन को सब ओर से ढक दिया ६१ । ६२ इसके पीछे हे राजन्! बड़े धनुष-धारी सात्यकी ने पीछे होने के कारण भीमसेन के रथ से व्याकुल कर्ण को पीड्यमान किया ६३ बाणों से अत्यन्त पीड़ित कर्ण भी उसके सम्मुख वर्तमान हुआ फिर सब धनुषधारियों में श्रेष्ठ वह दोनों वीर सम्मुख हो कर युद्ध करने लगे और हर एक ने परस्पर में चौंसठ-चौंसठ बाण छोड़े उन बाणों के छोड़ते में वह दोनों वीर अत्यन्त शोभित हुए हे राजन्! उन दोनों का फैलाया हुआ भयकारी मर्दन करनेवाला ६४ । ६५ रुद्र-बाणजाल क्रौञ्च की पुच्छ के समान रक्त वर्ण दिखाई दिया फिर छोड़े हुए हज़ारों बाणों के कारण से हमने और उन सब लोगों ने न सूर्य को देखा और न दिशाओं को ऐसे नहीं पहिचाना जैसे कि मध्याह्न के समय तेजस्वी सूर्य के कारण दिशाओं का ज्ञान नहीं होता है ६६।६७ उस समय कर्ण और भीमसेन के बाणसमूहों से हटाये हुए शकुनी अश्वत्थामा कृतवर्मा और अधिरथी कृपाचार्य ६८ यह सब कर्ण को पाण्डवों से भिड़ा हुआ देखकर फिर लौटे हे राजन्! उन आनवाले वीरों के ऐसे बड़े कठोर शब्द हुए ६९ जैसे कि चन्द्र के उदय से उठे हुए महा समुद्रों के शब्द होते हैं वह दोनों सेना उस महायुद्ध में परस्पर अच्छे प्रकार से देखकर खूब लड़ीं ७० और परस्पर में एक-एक को घेर-कर बड़ी प्रसन्न हुईं इसके पीछे मध्याह्न के समय सूर्य के वर्तमान होने पर युद्ध जारी हुआ ७१ ऐसा युद्ध पूर्व में कभी न देखा था न सुना था फिर सेना के समूह दूसरी सेना के समूहों को पाकर ७२ तीव्रता से ऐसे सम्मुख गये जैसे कि जलों के समूह समुद्र के सम्मुख होते हैं उस समय परस्पर बाणों की वर्षा के ऐसे बड़े-बड़े शब्द हुए जैसे कि गर्जने-वाले समुद्रों के जल के वेग की बड़ी ध्वनि होती है फिर उन दोनों वेगवान् सेनाओं ने परस्पर में एक-एक को पाकर ७३ । ७४ एकता को ऐसे पाया जैसे कि दो नदियाँ परस्पर मिलकर एक हो जाती हैं हे राजन्! इसके पीछे यश के चाहनेवाले कौरव और पाण्डवों का घोररूप

युद्ध जारी हुआ उस समय वहाँ गर्जनेवाले शूरवीरों की वार्तालाप जो कि निरन्तर नाना प्रकार की थीं ७५ । ७६ और नामों को ले लेकर हो रही थीं सुनी गईं जिस-जिस के पिता माता के अवगुण स्वाभाविक दोष थे वह युद्ध में परस्पर एक-एक को सुनाते थे हे राजन् ! युद्ध में परस्पर घुड़कनेवाले उन शूरों को देखकर ७७ । ७८ मैंने समझा कि अब इनका जीवन नहीं है और उन क्रोधयुक्त बड़े तेजस्वियों के शरीरों को देखकर ७९ मुझ को अत्यन्त भय हुआ कि यह कैसे होगा इसके पीछे उन महारथी पाण्डव और कौरवों ने परस्पर में मारते-मारते प्रत्येक को अपने अपने तीक्ष्ण शायकों से घायल किया ॥ ८० ॥

इति श्रीमहाभारते कर्णपर्वणि संकुलयुद्धे द्विपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ॥ ५२ ॥

तिरपनवाँ अध्याय

सञ्जय बोले कि हे महाराज ! परस्पर में मारने के अभिलाषी और शत्रुता करनेवाले उन क्षत्रियों ने परस्पर में घायल किया और रथ घोड़े और मनुष्यों समेत राजाओं के समूह चारों ओर से आपस में खूब जुटे १ । २ फेंके हुए परिघ, गदा, कुणप, प्रास, भिन्दिपाल और भुशुण्डियों के सब प्रकार के प्रहारों को ३ युद्ध में महाभयकारी देखा और बाणों की वर्षा टीड़ी के समान हज़ारों प्रकार से होने लगी ४ हाथियों ने हाथियों को परस्पर में पाकर छिन्न भिन्न किया तब घोड़ों ने घोड़ों को रथियों ने रथियों को ५ पत्तियों ने पत्तियों के समूहों को वा घोड़ों के यूथों को अथवा रथ और हाथियों और रथ वा हाथियों ने घोड़ों को ६ और शीघ्रगामी हाथियों ने सेना को अङ्गों से विहीन करके छिन्न भिन्न कर दिया ७ वहाँ शूरवीरों के समूह परस्पर में घायल होते और पुकारते थे इस हेतु से युद्धभूमि ऐसी अत्यन्त भयानक हो गई जैसी कि पशुओं के संहार स्थान की भूमि होती है ८ हे भरतवंशिन् ! उस समय रुधिर से भरी हुई पृथ्वी ऐसी दिखाई देती थी जैसे कि वर्षाऋतु में वीरबहूटियों के समूहों से पृथ्वी रक्त दिखाई देती है अथवा जैसे कुसुम के रँगे हुए श्वेतवस्त्रों को श्यामा स्त्री धारण करे वह पृथ्वी ऐसे प्रकार की हो गई

मानों मांस रुधिर से व्याप्त स्वर्णमयी कुम्भों से ही व्याप्त है ६।१० हे राजन् ! कटे वा टूटे हुए शिर जङ्घा भुजा बहुत बड़े कुण्डल आभूषण ढाल पताकाओं के समूह विशिख और धनुषधारी शूरों के शरीर पृथ्वी पर गिर पड़े ११।१२ हे राजन् ! हाथियों ने हाथियों को पाकर दाँतों से पीड्यमान किया उस समय दाँतों से कटे रुधिर से भरे हुए हाथी ऐसे शोभायमान हुए १३ जैसे कि सुवर्ण कैसे रङ्गवाले झिरनों के गिरानेवाले और पहाड़ी धातुओं से शोभित जलों के गेरनेवाले पर्वत शोभित होते हैं १४ फिर वह हाथी भ्रमण करनेवाले हुए और इसी प्रकार अन्य हाथियों ने भुजा से छोड़े हुए तोमरों समेत सम्मुख खड़े हुए अनेक शत्रुओं को विध्वंस किया १५ फिर नाराचों से घायल टूटे कवचवाले उत्तम हाथी ऐसे शोभायमान हुए जैसे कि मार्गशिर और पौष के महीनों में बादलों से रहित पर्वत होते हैं १६ सुनहरी पुङ्खवाले बाणों से छिदे हुए हाथी ऐसे शोभित हुए जैसे कि उल्काओं से पर्वतों के शिखर प्रकाशमान होते हैं १७ कितने ही पर्वताकार हाथी अन्य हाथियों से घायल और पत्तधारी पर्वतों के समान उस युद्ध में नाश को प्राप्त हुए १८ और बहुत से शल्यों से पीड़ित घावों से खेदित हाथी युद्ध में भाग गये और घोर युद्ध में अपने कुम्भों समेत पृथ्वी पर गिर पड़े १६ और बहुतेरे सिंहों के समान शब्दों को गर्जे बहुत से घूमने लगे २० और बहुत से हाथी पुकारे और सुनहरी सामानों से अलंकृत घोड़े बाणों से मारे हुए बैठ गये और मृतकप्राय होकर दशों दिशाओं में घूमने लगे २१ बाण वा तोमरों से घायल चेष्टाओं को करते हुए बहुत से हाथी घूमने लगे और अनेक हाथियों ने नाना प्रकार की चेष्टाओं को किया २२ हे श्रेष्ठ भरतवंशिन् ! वहाँ मनुष्य घायल हो-होकर पृथ्वी पर शब्द करने लगे और बहुत से लोग भाई, बन्धु, पिता और पितामहादिकों को देखकर २३ किसी ने दौड़ते हुए शत्रुओं को देखकर गोत्रनामों समेत अपनी जातों को वर्णन किया २४ हे महाराज ! उन लोगों के स्वर्णमयी भूषणों से अलंकृत भुजदण्ड टूटे हुए हाथ पैरों में चेष्टा करकर लिपटते थे और उछलते थे इसी प्रकार बहुत सी भुजा उछल-उछल कर अनेक चेष्टा

करती थीं और हज़ारों ऊपर नीचे होकर अपूर्व चेष्टा करती थीं और किसी-किसी भुजाओं ने पाँच मुख रखनेवाले सर्प की समान युद्ध में बहुत सा वेग किया २५ । २६ हे राजन् ! सर्पों के फणों के समान चन्दन से लिप्त रुधिर से भरी हुई वह सब भुजा स्वर्णमयी ध्वजा के समान बहुत शोभायमान हुई २७ इस रीति से दशों दिशाओं में घोष-संकुल नाम घोर युद्ध होने पर अज्ञातरूप परस्पर में युद्ध करनेवाले हुए २८ और धूलि से संयुक्त शस्त्रों के आघातों से व्याकुल युद्ध में अँधेरे होने के कारण अपने और पराये नहीं जाने गये २९ इस रीति से वह युद्ध महाघोर रूप और भयानक हुआ वहाँ पर रुधिररूप जल रखनेवाली बड़ी-बड़ी नदियाँ बह निकलीं ३० वह नदियाँ बाणरूप पत्थरों से युक्त केशरूप शैवल और शाद्वल रखनेवाली अस्थिरूप मछलियों से पूर्ण धनुषबाण और गदारूपी नौका रखनेवाली ३१ मांस रुधिररूपी कीच से भरी हुई घोररूप बड़ी भयानक रुधिररूप जल के वेग की बढ़ानेवाली होकर बहने लगीं ३२ भयभीतों के भय की बढ़ानेवाली शूरवीरों की प्रसन्नता बढ़ानेवाली घोररूप वह नदियाँ यमलोक को पहुँचानेवाली होगईं ३३ हे नरोत्तम ! वह नदियाँ भीतर जानेवालों को डुबानेवाली क्षत्रियों का भय बढ़ानेवाली हुईं जहाँ तहाँ मांसभक्षी जीवों की गर्जना करने से ३४ वह युद्धभूमि घोररूप यमराजपुरी के समान होगई और चारों ओर से असंख्यों रुण्ड उठ खड़े हुए ३५ मांस और रुधिर से तृप्त हो-होकर जीवों के समूह नाचते थे हे भरतवंशिन् ! वहाँ रुधिर और मज्जा का भोजन करके ३६ मांस मज्जा और भेजों के खाने से मतवाले सिंह, काक, गृध्र और बगले भी दौड़ते हुए दिखाई दिये ३७ शूरवीरों ने त्यागने के अयोग्य भय को भी त्याग करके युद्धाभिलाषी होकर निर्भय लोगों के समान युद्ध में कर्मों को किया ३८ उस युद्ध में वह शूरलोग अपनी वीरता को प्रसिद्ध करते हुए भ्रमण करने लगे जो कि बाण और शक्तियों से युक्त होकर मांस भक्षियों से व्याकुल थे ३९ हे समर्थ, भरतवंशिन् ! उन लोगों ने परस्पर में गोत्र नामों समेत अपने अपने पिताओं का भी नाम लिया ४० हज़ारों ने तो अपने गोत्रादि

और नामों को सुनाया और बहुत से युद्धकर्ता ४१ इधर उधर से तोमर शक्ति और पट्टिशों के द्वारा परस्पर में मर्दन करने लगे इस रीति से घोररूप महाभयानक युद्ध जारी होने पर कौरवीय सेना ऐसी पीड़ित हुई जैसे कि समुद्र में टूटी हुई नौका डामाडोल होकर पीड़ित होती है ॥४२॥

इति श्रीमहाभारते कर्णपर्वणि संकुलयुद्धे त्रिपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ॥ ५३ ॥

चौवनवाँ अध्याय

सञ्जय बोले कि हे श्रेष्ठ! इस रीति से क्षत्रियों के नाशकारी युद्ध के जारी होने पर युद्ध में गाण्डीव धनुष के बड़े शब्द सुनाई दिये हे राजन्! जहाँ पर कि पाण्डव अर्जुन ने संसप्तकों का वा कोशिल देशियों का और नारायण नाम सेना का नाश किया वहाँ क्रोधयुक्त संसप्तकों ने युद्ध में चारों ओर से अर्जुन के शिर पर बाणों की वर्षा करी हे राजन्! रथियों में श्रेष्ठ वेग से अकस्मात् उन बाण वर्षा को सहते और मारते हुए प्रभु अर्जुन ने सेना को विलोडन किया १ । ४ और अपने तीक्ष्ण धारवाले बाणों के द्वारा उस रथवाली सेना के पार होकर उत्तम शस्त्रधारी सुशर्मा को सम्मुख पाया ५ तब उस श्रेष्ठ रथी ने बाणों की वर्षा से उसको आच्छादित किया और संसप्तकों ने भी बाणों की वर्षा से अर्जुन को ढका ६ इसके पीछे सुशर्मा ने शीघ्रगामी दश बाणों से अर्जुन को और तीन उत्तम बाणों से श्रीकृष्णचन्द्रजी को दाहिनी भुजा पर छेदकर ७ दूसरे भल्ल से ध्वजा को भी विदीर्ण किया हे राजन्! विश्वकर्माजी का उत्पन्न किया हुआ वानरों में श्रेष्ठ वह बड़ा वानर ८ सबको भयभीत करके बड़ा शब्द करके गर्जा इस हनुमान्‌जी के शब्द को सुनकर आपकी सेना महाभयभीत हुई ९ और अत्यन्त भयभीत होकर चेष्टा रहित हो गई इसके पीछे हे राजन्! वह सेना निश्चेष्ट होकर ऐसी शोभायमान हुई १० जैसे कि नाना प्रकार के फूलों से युक्त चैत्ररथ वन होता है हे कौरव्य! इसके पीछे उन युद्धकर्ताओं ने सावधान होकर ११ अर्जुन को बाणों से ऐसा आच्छादित कर दिया जैसे कि पर्वत को बादल आच्छादित कर लेते हैं इसके पीछे सबों ने अर्जुन के बड़े रथ को घेर लिया १२ उसको घेर के

तीक्ष्ण बाणों से घायल करके पुकारने लगे हे श्रेष्ठ! इसके पीछे वह सब क्रोधयुक्त रथ के चारों ओर होकर रथ के चक्र और ईशा के भी पकड़ने को पास गये वह हज़ारों शूरवीर उसके उस रथ को पकड़कर १३।१४ और बड़े बल से उसके सब साथियों को पकड़कर सिंहनाद करने लगे और कितनों ही ने केशवजी की भी भुजा को पकड़ लिया १५ और बहुतों ने रथ में सवार अर्जुन को पकड़ लिया इसके पीछे दोनों भुजाओं को कम्पायमान करते हुए केशवजी ने उन सबको ऐसे गिरा दिया जैसे कि मतवाला हाथी हाथी के सवारों को गिरा देता है इसके पीछे उन महारथियों से घिरे हुए क्रोधयुक्त अर्जुन ने युद्ध में १६।१७ उस पकड़े हुए रथ को देख और श्रीकृष्णजी को भी गिरा हुआ जानकर बहुत से रथ सवारों समेत पदातियों को गिराया उसी प्रकार समीप वर्त-मान शूरवीरों को समीप ही से मारे बाणों के ढक दिया और केशवजी से कहने लगा १८।१९ हे महाराज, श्रीकृष्णजी! भयकारी कर्म करनेवाले शरीर से घायल हज़ारों संसप्तकों को देखो २० यह रथों की बँधावट महाघोर हैं और पृथ्वी पर मेरे सिवाय ऐसा कोई नहीं है जो नरलोक में इस बन्धन को सहै अर्जुन ने ऐसा कहकर अपने देवदत्त शङ्ख को बजाया और पृथ्वी आकाशादि को व्याप्त करके श्रीकृष्णजी ने भी पाञ्चजन्य शङ्ख को बजाया २१।२२ हे महाराज! उस शङ्ख के शब्द को सुनकर संसप्तकों की सेना महाकम्पित हुई और भयभीत होकर भागी २३ इसके पीछे शत्रुविजयी अर्जुन ने वारंवार नागास्त्र को प्रकट करके उनके चरणों को बाँध दिया २४ हे राजन्! महात्मा अर्जुन के बन्धन से चरणों में बँधे हुए वह लोग लोहे की मूर्ति के समान निश्चेष्ट खड़े रह गये २५ इसके पीछे उन निश्चेष्ट मनुष्यों को पाण्डु-नन्दन ने ऐसे मारा जैसे कि पूर्व समय में तारक असुर के मारनेवाले युद्ध में इन्द्र ने दैत्यों को मारा था २६ युद्ध में घायल होकर उन लोगों ने अर्जुन के उत्तम रथ को छोड़ दिया और शस्त्रों का मारना प्रारम्भ किया २७ हे राजन्! चरणबन्धन के कारण से वह लोग हिलचल भी न सके इसके पीछे अर्जुन ने टेढ़े पर्ववाले बाणों से उनको मारा २८

युद्ध में वह सब शूरवीर लोग सर्पों से बँधे हुए खड़े रह गये जिनको कि अर्जुन ने लक्ष्य करके चरणों का बन्धन किया २६ हे राजन्! इसके पीछे महारथी सुशर्मा ने बँधी हुई सेना को देखकर शीघ्र ही गरुड़ास्त्र को प्रकट किया ३० तब तो बहुत से गरुड़ सर्पों को भक्षण करने को दौड़े और वह सर्प उन गरुड़ों को देखकर भागे ३१ फिर चरणबन्धनों से छूटी हुई वह सेना ऐसी शोभायमान हुई जैसे कि सब सृष्टि के सन्तप्त करनेवाले सूर्य बादलों से रहित होकर शोभित होते हैं ३२ इसके पीछे उन बन्धनों से छूटे हुए शूरवीरों ने अर्जुन के रथ पर बाण और शस्त्रों के समूहों को छोड़ा ३३ और सबने नाना प्रकार के अस्त्रों को चलाया तब तो इन्द्र के पुत्र महावीर अर्जुन ने उन लोगों को बाणों की वर्षा से ढककर ३४ युद्धकर्ताओं को मारा इसके पीछे सुशर्मा ने टेढ़े पर्ववाले बाणों से अर्जुन को हृदय में घायल करके दूसरे तीन बाणों से पीड़ित किया तब वह अत्यन्त घायल और पीड्यमान होकर रथ के बैठने के स्थान पर बैठ गया ३५।३६ इसके पीछे सबों ने पुकार करी कि अर्जुन मारा गया इसके पीछे शङ्ख भेरी आदि बाजों के शब्द ३७ और सिंहनाद उत्पन्न हुए फिर श्वेत घोड़ों से युक्त श्रीकृष्णजी को सारथी रखनेवाले बड़े साहसी शीघ्रता से युक्त अर्जुन ने सचेत होकर ३८ ऐन्द्रास्त्र को प्रकट किया हे श्रेष्ठ! उस ऐन्द्रास्त्र से हज़ारों बाण उत्पन्न हुए ३९ और सब दिशाओं में दिखाई दिये और युद्ध में आपके हज़ारों रथ घोड़े और हाथियों को शस्त्रों से मारा ४० हे भरतवंशिन्! इसके पीछे सेना के मरने पर संसप्तक और गोपालों के समूहों को बड़ा भय उत्पन्न हुआ ४१ ऐसा कोई मनुष्य न था और न रहा जो अर्जुन को मारता सब वीरों के देखते हुए आपकी सेना मारी गई ४२ वहाँ पाण्डव अर्जुन सेना को घायल और पराक्रम से थकित देखता हुआ युद्ध में दशहज़ार शूरवीरों को मारकर ४३ निर्धूम अग्नि के समान प्रकाशित होकर शोभायमान हुआ हे भरतवंशिन्, महाराज! परीक्षा करी हुई चौदह सहस्र सेना और तीन हज़ार हाथियों समेत दश हज़ार रथों से संसप्तकों ने फिर अर्जुन को आ घेरा और यह विचार ठान लिया कि चाहै विजय होय वा पराजय होय युद्ध

में लड़कर मरना योग्य है ऐसा विचारकर आपके शूरवीरों का और अर्जुन का महाघोर युद्ध हुआ ॥ ४४ । ४७ ॥

इति श्रीमहाभारते कर्णपर्वणि संकुलयुद्धे चतुष्पञ्चाशत्तमोऽध्यायः ॥ ५४ ॥

पचपनवाँ अध्याय

सञ्जय बोले कि हे श्रेष्ठ, धृतराष्ट्र ! कृतवर्मा, कृपाचार्य, अश्वत्थामा, कर्ण, उलूक, शकुनी और अपने निज भाइयों समेत राजा दुर्योधन ने १ अर्जुन के भय से पीड्यमान सेना को देखकर बड़े वेग से उनको ऐसे छुटाया जैसे समुद्र में से टूटी हुई नौका को निकालते हैं २ हे भरत-वंशिन् ! इसके अनन्तर एक मुहूर्त तक वह कठिन युद्ध रहा जो भयभीतों को भय और शूरवीरों की प्रसन्नता का बढ़ानेवाला था ३ युद्ध में कृपा-चार्य के छोड़े हुए टीड़ियों के समूहों के समान बाणों ने सृञ्जयों को ढक दिया ४ इसके पीछे बहुत शीघ्रता से शिखण्डी कृपाचार्य के सम्मुख गया और चारों ओर से उन श्रेष्ठ ब्राह्मण कृपाचार्य के ऊपर बाणों को बरसाया ५ फिर महाअस्त्रों के ज्ञाता कृपाचार्य ने क्रोधयुक्त होकर उन बाणों के समूहों को हटाकर युद्ध में शिखण्डी को दश बाणों से पीड़ित किया ६ फिर शिखण्डी ने भी क्रोधयुक्त होकर कङ्कपत्र से जड़ित शीघ्र-गामी सात बाणों से उन क्रोधरूप कृपाचार्य को पीड्यमान किया ७ उसके पीछे उन महारथी कृपाचार्यजी ने तीक्ष्ण बाणों से शिखण्डी को घोड़े रथ और सारथी से रहित कर दिया ८ इसके पीछे महारथी शिखण्डी मृतक घोड़ों के रथ से कूदकर अच्छे प्रकार से ढाल तलवार को लेकर शीघ्र आचार्यजी के सम्मुख गया ९ तब आचार्यजी ने उस आते हुए को टेढ़े पर्ववाले बाणों से ढक दिया यह देखकर सबको आश्चर्य सा हुआ १० वहाँ हमने शस्त्रों के अपूर्व आघातों को ऐसा देखा जैसे कि शिलाओं का उछलना होता है जब हे राजन् ! शिखण्डी निश्चेष्ट होकर युद्ध में नियत हुआ ११ तब श्रेष्ठ महारथी धृष्टद्युम्न उस कृपाचार्य के बाणों से ढके हुए शिखण्डी को देखकर शीघ्र ही कृपाचार्य के सम्मुख गया १२ इसके पीछे महारथी कृतवर्मा ने कृपाचार्य के रथ की ओर

जानेवाले धृष्टद्युम्न को बड़े वेग से रोका १३ पीछे से कृपाचार्य के रथ की ओर पुत्र और सेना समेत आनेवाले युधिष्ठिर को अश्वत्थामा ने रोका १४ और बाणों की वर्षा करनेवाले आपके पुत्रों ने शीघ्रता करनेवाले महारथी नकुल और सहदेव को रोका १५ हे भरतवंशिन् । सूर्य के पुत्र कर्ण ने युद्ध में भीमसेन, कारुष्य, कैकेय और सृञ्जयदेशियों को रोका इसके पीछे शीघ्रता से युक्त भस्म करने के अभिलाषी सारद्वत कृपाचार्य ने युद्ध में शिखण्डी के ऊपर बाणों को चलाया १६ । १७ फिर वारंवार खड्ग को फिराते हुए शिखण्डी ने उन कृपाचार्य के स्वर्णमयी चारों ओर से फेंके हुए बाणों को काटा १८ हे भरतवंशिन् ! फिर गौतम कृपाचार्यजी ने उसकी सौ चन्द्रमा रखनेवाली ढाल को बड़ी शीघ्रतापूर्वक शायकों से तोड़ा इस हेतु से सब मनुष्य पुकारे १९ फिर वह ढाल से रहित हाथ में खड्ग लिये जैसे कि मृत्यु के मुख पर रोगी वर्तमान होता है वैसे ही कृपाचार्य के स्वाधीनता में वर्तमान शिखण्डी उनके पास गया हे राजन् ! चित्रकेतु का पुत्र बड़ा पराक्रमी सुकेतु कृपाचार्य के बाणों से ढके हुए महादुःखी शिखण्डी को देखकर शीघ्र ही सम्मुख गया २० । २१ युद्ध में बड़े तीक्ष्ण बाणों से ढकता हुआ महासाहसी सुकेतु कृपाचार्य के रथ के समीप पहुँचा २२ हे राजाओं में श्रेष्ठ ! इसके पीछे शिखण्डी युद्ध में प्रवृत्त उस व्रत करनेवाले ब्राह्मण को देखकर शीघ्र ही हट गया तदनन्तर सुकेतु ने कृपाचार्य को नौ बाणों से व्यथित कर सत्तर बाणों से पीड्यमान किया फिर दूसरी बार भी तीन बाणों से घायल किया २३ । २४ और उनके धनुष को बाण समेत काटकर एक बाण से उनके सारथी को भी मर्मस्थल में कठिन घायल किया २५ इसके पीछे क्रोधयुक्त कृपाचार्य ने दृढ़ नवीन धनुष लेकर तीस बाणों से सुकेतु के सब मर्मस्थलों को घायल किया २६ तब वह अत्यन्त कम्पायमान और व्याकुल सुकेतु अपने उत्तम रथ पर ऐसे चेष्टा करनेवाला हुआ जैसे कि भूकम्प होने में वृक्ष काँपता है २७ तब उस कम्पायमान के शरीर से प्रकाशित कुण्डलों समेत शिर को पगड़ी समेत क्षुरप्र से गिराया उस समय उसका शिर पृथ्वी पर ऐसे गिर पड़ा जैसे कि बाज

पत्नी का लाया हुआ मांसपिण्ड गिर पड़ता है शिर कटते ही उसका शरीर भी पृथ्वी पर गिर पड़ा २८ । २९ इसके मरने के पीछे उसके अग्रगामी लोग क्रोधयुक्त हुए और युद्ध में कृपाचार्य को त्याग करके दशो दिशाओं में भाग गये ३० हे भरतवंशिन् ! प्रसन्नचित्त महारथी कृतवर्मा युद्ध में धृष्टद्युम्न को रोककर बोला कि खड़ा हो यह कहकर कृतवर्मा और धृष्टद्युम्न का वह महाभयकारी युद्ध हुआ जैसे कि मांस के निमित्त लड़ने-वाले दो बाज पत्तियों का अत्यन्त युद्ध होता है ३१ । ३२ हार्दिक्य के पुत्र कृतवर्मा को पीड़ित करनेवाले क्रोधयुक्त धृष्टद्युम्न ने युद्ध में नौ बाणों से कृतवर्मा को छाती पर घायल किया ३३ फिर धृष्टद्युम्न के हाथ से अत्यन्त घायल कृतवर्मा ने युद्ध में बाणों से धृष्टद्युम्न को रथ और घोड़ों समेत ढक दिया ३४ हे राजन् ! रथ समेत ढका हुआ धृष्टद्युम्न ऐसा दिखाई दिया जैसे कि जलधारावाले बादलों से ढका हुआ सूर्य होता है ३५ अर्थात् वह घायल हुआ धृष्टद्युम्न युद्ध में स्वर्णमयी बाणों से उन बाण-समूहों को हटाकर महाशोभायमान हुआ इसके पीछे क्रोधयुक्त सेनापति धृष्टद्युम्न ने कृतवर्मा पर बड़ी बाणों की वर्षा करी ३६ । ३७ कृतवर्मा ने भी उस एकाएकी गिरनेवाले बाणसमूहों को हज़ारों बाणों से हटाया ३८ फिर उस असह्य हटाये हुए बाणसमूहों को देखकर युद्ध में कृतवर्मा को रोका ३९ और तीक्ष्ण धारवाले भल्ल से उसके सारथी को बड़े वेग से यमलोक को भेजा और वह मृतक होकर रथ पर गिर पड़ा ४० फिर पराक्रमी धृष्टद्युम्न ने बड़े बली शत्रु को विजय करके युद्ध में शायकों के द्वारा कौरवों को शीघ्रता से रोका ४१ उसके पीछे आपके शूरवीर सिंहनादों को करके शीघ्र ही धृष्टद्युम्न के सम्मुख गये और युद्ध जारी हुआ ॥४२॥

इति श्रीमहाभारते कर्णपर्वणि संकुलयुद्धे पञ्चपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ॥ ५५ ॥

छप्पनवाँ अध्याय

सञ्जय बोले कि सात्यकी और शूरवीर द्रौपदी के पुत्रों से रक्षित युधिष्ठिर को देखकर अश्वत्थामाजी प्रसन्नचित्त के समान सम्मुख वर्तमान हुए १ अर्थात् हस्तलाघवता के समान सुनहरी पुङ्खवाले तीक्ष्ण घोर

बाणों को फेंकते और नाना प्रकार के मार्गों समेत अपने अभ्यासों को दिखलाते हुए सम्मुख आये २ उसके पीछे बड़े अस्त्रज्ञ अश्वत्थामा ने युद्ध में युधिष्ठिर को घेरकर दिव्य अस्त्रों से अभिमन्त्रित बाणों की वर्षा के द्वारा आकाश को व्याप्त किया ३ अश्वत्थामा के बाणों से आच्छादित आकाश में कुछ नहीं जाना गया और बड़ी युद्धभूमि का शिर बाणरूप हो गया ४ हे भरतर्षभ ! आकाश में सुवर्णजालों से अलंकृत और ढका हुआ बाणजाल ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि नियत हुआ यज्ञ शोभित होता है ५ उन प्रकाशित बाणजालों से जब आकाश ढक गया और बाणों के युद्ध में आकाशमण्डल में बादलों की छाया हो गई ६ ऐसे बाणरूप जालों के होने पर हमने एक आश्चर्य को देखा कि अन्तरिक्ष का उड़नेवाला कोई जीव नहीं उड़ा ७ उपाय करनेवाले सात्यकी और पाण्डव धर्मराज समेत अन्य सेना के शूरवीर लोग पराक्रम नहीं कर सके ८ हे महाराज ! वहाँ महारथी अश्वत्थामा की हस्तलाघवता को देखकर आश्चर्ययुक्त होकर वह सब राजा लोग उसके सम्मुख देखने को भी ऐसे समर्थ न हुए ९ जैसे कि सन्तप्त करनेवाले सूर्य को कोई नहीं देख सकता है इसके पीछे सेना के घायल होने पर महारथी द्रौपदी के पुत्र १० सात्यकी धर्मराज और सब पाञ्चालदेशीय इकट्ठे हुए और घोर मृत्यु के भय को त्यागकर अश्वत्थामा के सम्मुख गये ११ सात्यकी ने शिलीमुख नाम सत्ताईस बाणों से अश्वत्थामा को छेदकर सुवर्ण से अलंकृत सात नाराचों से पीड्यमान किया १२ युधिष्ठिर ने तिहत्तर बाणों से प्रतिविन्ध्य ने सात बाणों से श्रुतकर्मा ने तीन बाणों से श्रुतकीर्ति ने सात बाणों से १३ सुतसोम ने नौ बाणों से शतानीक ने सात बाणों से और अन्य-अन्य शूरों ने भी चारों ओर से घायल किया १४ हे राजन् ! इसके पीछे उस क्रोधयुक्त विषैले सर्प के समान श्वास लेनेवाले अश्वत्थामा ने शिलीमुख नाम पच्चीस बाणों से सात्यकी को घायल किया १५ श्रुतिकीर्ति को नौ बाणों से सुतसोम को पाँच बाणों से श्रुतकर्मा को आठ बाणों से प्रतिविन्ध्य को तीन बाणों से १६ शतानीक को नौ बाणों से युधिष्ठिर को पाँच बाणों से

और इसी प्रकार अन्य शूरों को भी दो-दो बाणों से घायल किया १७ और तीक्ष्ण धारवाले बाण से श्रुतिकीर्ति के धनुष को काटा इसके पीछे महारथी श्रुतिकीर्ति ने दूसरे धनुष को लेकर १८ अश्वत्थामा को तीन बाणों से छेदकर दूसरे तीक्ष्णबाणों से पीड्यमान किया हे भरतर्षभ, महाराज, धृतराष्ट्र! इसके पीछे अश्वत्थामा ने बाणों की वर्षा से १९ उस सेना को चारों ओर से ढक दिया तब तो महासाहसी हँसते हुए अश्वत्थामा ने धर्मराज के धनुष को फिर काटा २० और तीन बाणों से पीड्यमान किया हे राजन्! उसके पीछे धर्मपुत्र ने दूसरे बड़े धनुष को लेकर २१ अश्वत्थामा को सत्तर बाणों से पीड़ित किया और छाती समेत भुजाओं को घायल किया तब सात्यकी युद्ध में प्रहार करनेवाले अश्वत्थामा के २२ धनुष को अपने तीक्ष्ण अर्धचन्द्र बाण से काटकर महाध्वनि से गर्जा इसके पीछे उस टूटे धनुषधारी शक्ति रखनेवाले अश्वत्थामा ने शक्ति से सात्यकी के रथ से बड़ी शीघ्रतापूर्वक सारथी को गिराया २३। २४ तदनन्तर प्रतापवान् अश्वत्थामा ने दूसरे धनुष को लेकर सात्यकी को बाणों की वर्षा से ढक दिया रथ से सारथी के गिरने पर युद्ध में उसके घोड़े भागने लगे और जहाँ तहाँ भागते हुए दिखाई दिये २५। २६ फिर युधिष्ठिर के साथी शूरवीर तीक्ष्ण बाणों को छोड़ते वेग से उस महाशस्त्रधारी अश्वत्थामा के ऊपर बाणों की वृष्टि करने लगे उन क्रोधरूप आनेवालों को देखकर शत्रुसन्तापी २७ हँसते हुए द्रोणपुत्र ने उस महायुद्ध में उनको रोका इसके पीछे सैकड़ों बाणरूप ज्वाला रखनेवाले महारथी २८ अश्वत्थामा ने युद्ध में सेनारूपी सूखे वन को ऐसे भस्म कर दिया जैसे कि वन में सूखे तृणों को अग्नि भस्म कर देता है हे भरतवंशिन्! अश्वत्थामा से सन्तप्त करी हुई वह पाण्डवीय सेना २९ ऐसे व्याकुल हो गई जैसे कि तिमिनामक जीव करके नदी का मुख व्याकुल किया जाता है हे महाराज! अश्वत्थामा के ऐसे पराक्रम को देखकर ३० उसके हाथ से सब पाण्डवों को मृतकरूप माना फिर क्रोध और शीघ्रता से युक्त द्रोणाचार्य का शिष्य महारथी युधिष्ठिर ३१ अश्वत्थामा से कहने लगा कि ठीक-ठीक तुममें न तो स्नेह है और न

उपकार को स्मरण करते हो ३२ हे पुरुषोत्तम ! तुम मुझी को मारना चाहते हो तुम ब्राह्मण होकर तपस्या दान और वेदपाठ करने के योग्य हो ३३ क्योंकि लिखा है कि ब्राह्मण तप दान और वेदपाठ के योग्य हैं क्षत्रिय धनुष नवाने के योग्य हैं सो आप नाममात्र के ही ब्राह्मण हैं हे महाबाहो ! तेरे देखते ही देखते कौरवों को युद्ध में विजय करूँगा ३४ तुम युद्ध में कर्म करो निश्चय करके ब्राह्मणबन्धु हो हे महाराज ! इस प्रकार के वचनों को सुनकर हँसते और मन्द मुसकान करते हुए अश्वत्थामा ने ३५ योग्य और मुख्य बात को विचारकर कुछ उत्तर नहीं दिया और उत्तर न देकर बाणों की वर्षा से पाण्डवों को ऐसे ढक दिया ३६ जैसे कि क्रोधरूप मृत्यु सब संसार को व्याप्त कर देती है हे श्रेष्ठ ! तब अश्वत्थामा के हाथ से ढका हुआ पाण्डव युधिष्ठिर ३७ शीघ्र ही अपनी बड़ी सेना को छोड़कर दूर हट गया हे राजन् ! उस युधिष्ठिर के हट जाने पर ३८ बड़े साहसी अश्वत्थामाजी पश्चिममुख हुए और युधिष्ठिर युद्ध में अश्वत्थामा को छोड़कर कठोर कर्म में चित्त को करके आपकी सेना के सम्मुख गया ॥ ३९ ॥

इति श्रीमहाभारते कर्णपर्वणि पार्थापयाने षट्पञ्चाशत्तमोऽध्यायः ॥ ५६ ॥

सत्तावनवाँ अध्याय

सञ्जय बोले कि चन्देरी और कैकेयदेशियों से युक्त धृष्टद्युम्न और भीमसेन को आप कर्ण ने रोककर शायकों से हटाया १ इसके पीछे कर्ण ने भीमसेन के देखते हुए युद्ध में चन्देरी कारुष्य और सृञ्जय देशीय महारथियों को मारा २ तब भीमसेन रथियों में श्रेष्ठ कर्ण को छोड़कर कौरवीय सेना के सम्मुख गया ३ कर्ण ने भी युद्ध में हज़ारों पाञ्चाल कैकेय और बड़े धनुषधारी सृञ्जयों को मारा ४ अर्जुन ने संसप्तकों में भीमसेन ने कौरवों में और कर्ण ने महारथी पाञ्चालों में प्रलय कर दी ५ हे राजन् ! आपके कुविचार में अग्नि के समान उन तीनों वीरों के हाथ से युद्ध में मरनेवाले असंख्य क्षत्रियों ने नाश को पाया ६ हे भरतर्षभ ! और क्रोधयुक्त दुर्योधन ने नौ बाणों से चारों घोड़ों समेत नकुल

को घायल किया ७ इसके पीछे बड़े साहसी आपके पुत्र ने क्षुरप्र से सहदेव की स्वर्णमयी ध्वजा को काटा ८ फिर क्रोधयुक्त नकुल ने सात बाणों से सहदेव ने पाँच बाणों से आपके पुत्र को घायल किया ९ उस समय अत्यन्त क्रोधयुक्त दुर्योधन ने पाँच-पाँच बाणों से उन भरतवंशियों में और सब धनुषधारियों में श्रेष्ठ नकुल सहदेव को घायल करके दूसरे दो भल्लों से उन दोनों के धनुषों को भी अकस्मात् काट डाला और इक्कीस बाणों से घायल किया १०। ११ युद्ध में देवकुमारों के समान वह शूरवीर दूसरे इन्द्रधनुष के समान शुभधनुषों को लेकर शोभायमान हुए १२ इसके पीछे युद्ध में वेगवान् वह दोनों भाई युद्ध में घोरबाणों की वर्षा भाई दुर्योधन के ऊपर ऐसे करने लगे जैसे कि दो बादल पर्वत पर वर्षा करते हैं १३ हे महाराज ! तब तो आपके क्रोधयुक्त पुत्र ने बड़े धनुषधारी दोनों पाण्डवों को अपने बाणों से रोका १४ उस समय दुर्योधन का धनुष युद्ध में मण्डलाकार दिखलाई देता था और चारों ओर से दौड़ते हुए शायक दृष्टि पड़ते थे १५ सब दिशाओं को ऐसे ढक दिया जैसे कि सूर्य की किरणें संसार को व्याप्त कर देती हैं इसके अनन्तर आकाशमण्डल को बाणरूपी जालों से ढक जाने पर १६ नकुल और सहदेव के निमित्त उसका रूप काल और मृत्युरूप यमराज के समान दिखाई पड़ा महारथियों ने आपके पुत्र के उस पराक्रम को देखकर १७ नकुल और सहदेव को मृत्यु के गाल में फँसा हुआ माना इसके पीछे पाण्डवों का महारथी सेनापति धृष्टद्युम्न १८ वहाँ गया जहाँ पर कि राजा दुर्योधन था वहाँ जाकर महारथी शूरवीर नकुल और सहदेव को उल्लङ्घनकर धृष्टद्युम्न ने आप के पुत्र को शायकों से रोका तब आपके साहसी क्रोधयुक्त पुत्र ने हँसकर १९। २० धृष्टद्युम्न को पच्चीस बाणों से छेदकर पैंसठ बाणों से घायल करके बड़े शब्द से गर्जना करी और फिर उसके बाण और हस्तत्राण समेत धनुष को २१। २२ अपने तीक्ष्णक्षुरप्र से काट डाला तब शत्रुविजयी धृष्टद्युम्न ने उस टूटे धनुष को डालकर २३ बड़े वेग से बड़े भारवाहक नवीन धनुष को हाथ में लिया और वेग से लालनेत्र क्रोधयुक्त २४ घायल हुआ धृष्टद्युम्न महाशोभायमान हुआ फिर सर्पों के

समान श्वास लेनेवाले पन्द्रह नाराचों को मारने के इच्छावान् धृष्टद्युम्न ने राजा दुर्योधन के ऊपर छोड़े २५ वह तीक्ष्णधार कङ्क और मोरपक्षी के परों से जटित बाण राजा के स्वर्णमयी कवच को काटकर पृथ्वी में २६ बड़े वेग से समा गये फिर वह आपका पुत्र अत्यन्त घायल होकर ऐसा शोभायमान हुआ २७ जैसे कि वसन्तऋतु में अच्छा प्रफुल्लित किंशुक वृक्ष होता है नाराचों से टूटा कवच और प्रहारों से घायल शरीर २८ क्रोधयुक्त दुर्योधन ने भल्ल से धृष्टद्युम्न के धनुष को काटा और बड़ी शीघ्रता से टूटे धनुषवाले धृष्टद्युम्न को २९ दश शायकों से दोनों भृकुटियों में घायल किया बड़े कारीगर के स्वच्छ किये हुए उन बाणों ने उसके मुख को ऐसा शोभायमान किया ३० जैसे कि मधु के लोभी भ्रमर अच्छे फूले हुए कमल को शोभित करते हैं फिर उस महासाहसी धृष्टद्युम्न ने उस टूटे हुए धनुष को डालकर ३१ बड़े वेग से सोलह भल्लों समेत दूसरे धनुष को लिया इसके पीछे पाँच बाणों से दुर्योधन के सारथी समेत घोड़ों को मारकर ३२ एक भल्ल से सुनहरी धनुष को काटा फिर धृष्टद्युम्न ने आपके पुत्र के रथ, उपस्कर, छत्र, शक्ति, खड्ग, गदा और ध्वजा को दश भल्लों से काटा ३३ सब राजाओं ने दुर्योधन की उस टूटी हुई ध्वजा को जो कि सुवर्ण के बाजूबन्द रखने-वाली अपूर्व मणियों से जटित नाग चिह्नवाली अति शुभरूप की थी देखा हे भरतर्षभ ! फिर उस रथ से विहीन टूटे कवच और ध्वजावाले दुर्योधन को ३४ । ३५ उसके निज भाइयों ने चारों ओर से रक्षित किया हे राजन् ! भय से उत्पन्न होनेवाली व्याकुलता से रहित राजा दण्डधारी दुर्योधन को रथ पर बैठाकर ३६ धृष्टद्युम्न के देखते हुए दूर ले गया फिर राज्य का लोभी महाबली कर्ण सात्यकी को विजय करके ३७ युद्ध में द्रोणाचार्य के मारनेवाले उग्र बाणधारी धृष्टद्युम्न के सम्मुख गया फिर बाणों को मारता हुआ सात्यकी उसके पीछे ऐसा शीघ्र चला ३८ जैसे कि हाथी को हाथी दाँतों से जङ्घास्थान में पीड्यमान करता हुआ जाता है ३९ हे भरतवंशिन् ! बड़े महात्मा आपके शूरवीरों का वह महाघोर युद्ध कर्ण और धृष्टद्युम्न के मध्य में ऐसा उत्तम युद्ध हुआ कि

जिसमें पाण्डवों के और हमारी ओर के किसी पुरुष ने भी मुख को न मोड़ा ४० इसके पीछे बड़ी शीघ्रता से कर्ण पाञ्चालों से युद्ध करने लगा हे नरोत्तम, राजन्, धृतराष्ट्र! मध्याह्न के समय घोड़े हाथी और मनुष्यों का विध्वंसन दोनों ओर में हुआ फिर विजयाभिलाषी वह सब पाञ्चाल ४१। ४२ शीघ्रता से कर्ण के सम्मुख ऐसे गये जैसे कि वृक्ष की ओर पक्षी जाते हैं इस रीति से क्रोधयुक्त बाण-समूहों से रोकते हुए अधिरथी कर्ण ने उन उपाय करनेवाले साहसी सेनापति से मिले हुए ४३ व्याघ्रकेतु सुशर्मा, चित्र, उग्रायुध, जय, शुक्ल, रोचमान, सिंहसेन और दुर्जय को सम्मुख पाया उन वीरों ने उस नरोत्तम को रथमार्ग से घेर लिया ४४। ४५ जो कि बाणों का छोड़नेवाला क्रोधयुक्त होकर युद्ध में शोभा देनेवाला था उस प्रतापी कर्ण ने उन दूर से युद्ध करनेवाले ४६ आठों वीरों को तीक्ष्ण धारवाले आठ बाणों से पीड्यमान किया हे महाराज! उनको पीड़ित करके महाप्रतापी कर्ण ने ४७ उन अन्य हज़ारों शूरवीरों को भी जो कि युद्ध में बड़े कुशल थे मारा इसके पीछे उस अत्यन्त क्रोधयुक्त ने जिष्णु, जिष्णुकर्मा, देवापी, भद्र ४८ दण्ड, चित्र, चित्रायुध, हरि, व्याघ्रकेतु, रोचमान, महारथी शलभ ४६ इन चन्देरी देशों के महारथियों को मारा उस समय उनके प्राण हरनेवाले कर्ण का शरीर ऐसा हो गया ५० जैसे कि रुधिर से लिप्त शिवजी का बड़ा शरीर होता है हे भरतवंशिन्! इसके सिवाय युद्ध में कर्ण के बाणों से अनेक हाथी भी घायल हुए ५१ बड़ी व्याकुलता उत्पन्न करनेवाले भयकारी वह हाथी युद्ध में कर्ण के बाणों से चारों ओर को भाग-भागकर पृथ्वी पर गिर पड़े ५२ वज्र से ताड़ित पर्वतों के समान घोर शब्द करते हुए गिरनेवाले हाथी घोड़े मनुष्य और रथों से कर्ण के मार्ग की पृथ्वी आच्छादित हो गई ५३ युद्ध में भीष्म, द्रोणाचार्य और अन्य आपके वीरों ने भी ऐसा कर्म नहीं किया जैसा कि युद्धभूमि में कर्ण ने किया ५४। ५५ हे महाराज! हाथी घोड़े रथ और मनुष्यों का कर्ण के हाथ से नाश हुआ जैसे कि मृगों के मध्य में घूमनेवाला निर्भय सिंह पशुओं का नाश करता है ५६ उसी प्रकार कर्ण भी भयभीत मृगों के

समान पाञ्चालों में निर्भयतापूर्वक विचरता हुआ नाश करता था जैसे कि सिंह भयभीत मृगों को दिशाओं में भगा देता है ५७ उसी प्रकार कर्ण ने पाञ्चालों के रथसमूहों को भगा दिया जैसे कि सिंह के मुख को पाकर कोई पशु नहीं जीता है ५८ उसी प्रकार महारथी कर्ण को पाकर कोई जीवता नहीं रहा निश्चय करके जिस प्रकार सब जीवमात्र वैश्वानर अग्नि को पाकर भस्म होते हैं ५९ उसी प्रकार हे भरतवंशिन्! सृञ्जयरूपी वन भी कर्णरूपी अग्नि से भस्म हो गये हे भारत! कर्ण ने चन्देरी कैकेय और पाञ्चालदेशियों के मध्य में नामों को सुना-सुनाकर वीरों के अङ्गीकृत अनेक युद्धकर्त्ताओं को मारा इस कर्ण के पराक्रम को देखकर मैंने विचार किया ६०। ६१ कि कर्ण के हाथ से एक भी पाञ्चालदेशीय जीवता न बचेगा कर्ण ने युद्ध में पाञ्चालों को वारंवार छिन्नभिन्न कर दिया ६२ इसके पीछे अत्यन्त क्रोधयुक्त धर्मराज युधिष्ठिर उस महायुद्ध में पाञ्चालों के मारनेवाले कर्ण को देखकर सम्मुख दौड़े ६३ हे श्रेष्ठ! धृष्टद्युम्न, द्रौपदी के पुत्र, और अन्य हज़ारों मनुष्यों ने शत्रु के मारनेवाले कर्ण को घेर लिया ६४ शिखण्डी, सहदेव, नकुल, नकुल का पुत्र, जनमेजय, सात्यकी, बहव, प्रभद्रक ६५ और धृष्टद्युम्न, यह सब बड़े तेजस्वी युद्ध में सम्मुख होकर धनुषधारी बाण फेंकनेवाले कर्ण के सम्मुख होकर बाण और अस्त्रों समेत शोभायमान हुए ६६ वहाँ अकेला कर्ण युद्ध में उन चन्देरी पाञ्चालदेशीय और अन्य शूरवीरों समेत पाण्डवों के सम्मुख ऐसे हुआ जैसे कि सर्पों के सम्मुख अकेला गरुड़ होता है ६७ हे राजन्! उन सबके साथ कर्ण के ऐसे घोररूप युद्ध हुए जैसे कि पूर्व समय में देवताओं का युद्ध दानवों से हुआ था ६८ फिर उस क्रोधरूप ने यमदण्ड के समान अपने बाणों से वाहीक, कैकेय, मत्स्य वा सत्य, मद्र, सिन्धु इन देशियों को सब ओर से मारा ६९ वह बड़ा धनुषधारी अकेला ही युद्ध में लड़ता हुआ बहुत शोभित हुआ और भीमसेन के नाराचों से हाथी मर्मस्थलों में घायल हुए ७० जिनके सवार मारेगये उन गिरते हुए हाथी घोड़े और निर्जीव पत्तियों ने पृथ्वी को कम्पायमान कर दिया ७१ युद्ध में घायल रुधिर को वमन करते हुए और जिन

के कि शस्त्र गिर पड़े वह हज़ारों रथी मारेगये ७२ रथी अश्वसवार सारथी पदाती घोड़े यह सब हाथियों समेत घायल होकर भीमसेन से भयभीत और मरे हुए दृष्टिपड़े ७३ भीमसेन के तोड़े हुए अस्त्र शस्त्रादिकों से पृथ्वी भरगई दुर्योधन की वह सब सेना भीमसेन के भय से पीड़ित अचेष्टितों के समान नियत थी ७४ उत्साह से रहित घायल और अङ्गचेष्टा विना अत्यन्त दुःखीरूप युद्ध में दिखाई पड़ी ७५ हे राजन्! जैसे कि प्रसन्नकाल में स्वच्छ जलवाला समुद्र स्थिर नियत होता है उसी प्रकार आपकी सेना भी निश्चल होगई ७६ अर्थात् क्रोध पराक्रम से युक्त आपके पुत्र की वह सेना अहङ्कार से पराजित होकर शोभा से रहित होगई ७७ हे भरतर्षभ! वह सेना परस्पर घायल होकर रुधिरों से लिप्त होकर भागी ७८ फिर युद्ध में क्रोधयुक्त पराक्रमी कर्ण पाण्डवों समेत सेना को ७९ और भीमसेन भी कौरवों समेत कौरवीय सेना को भगाते हुए शोभायमान हुए इस रीति से महाघोर भयङ्कर युद्ध जारी होनेपर ८० महाविजयी अर्जुन सेना में संसप्तकों के बहुत से समूहों को मारकर फिर वासुदेवजी से बोला ८१ कि हे जनार्दनजी! यह युद्धाभिलाषी सेना छिन्न भिन्न होकर पराजित हुई यह संसप्तक महारथी अपने समूहों समेत मेरे बाणों से ऐसे भागते हैं ८२ जैसे कि सिंह के शब्द को सुनकर मृग भागते हैं और बड़े युद्ध में सृञ्जयों की बड़ी सेना पृथक्-पृथक् हुई जाती है ८३ हे श्रीकृष्णजी! राजाओं की सेना के मध्य में प्रसन्नतापूर्वक घूमनेवाले बुद्धिमान् कर्ण की यह ध्वजा दिखाई देती है जिसमें कि हाथी की कक्षा का चिह्न है ८४ और कोई महारथी कर्ण के विजय करने को समर्थ नहीं है आप भी कर्ण को बड़ा पराक्रमी जानते हैं ८५ अब आप वहाँ चलिये जहाँ पर कि वह कर्ण हमारी सेना को भगा रहा है आप इन सबको त्यागकर युद्ध में महारथी कर्ण के सम्मुख चलिये ८६ हे श्रीकृष्णजी! मुझको यह उचित मालूम होता है अथवा जैसी आपकी इच्छा हो वही करना योग्य है उसके इस वचन को सुनकर गोविन्दजी हँसकर बोले ८७ हे पाण्डव! तुम शीघ्र ही कौरवों को मारो इसके पीछे गोविन्दजी की आज्ञानुसार

अपने सारथीरूप श्रीकृष्णजी समेत श्वेत हंसवर्ण घोड़ों की सवारी से अर्जुन आपकी सेना में आ पहुँचा केशवजी का आज्ञाकारी सुवर्ण के भूषणों से युक्त ८८।८९ श्वेत घोड़ों के रथ के पहुँचते ही आपकी सेना चारों दिशाओं में हट गई बादल के समान शब्दायमान हनुमान्‌जी की ध्वजा से संयुक्त चेष्टावान् पताकावाला ९० वह रथ उस सेना में ऐसे पहुँचा जैसे कि स्वर्ग में विमान पहुँचता है वहाँ वह अर्जुन और केशव-जी दोनों सेना को चीरते हुए प्रविष्ट हुए ९१ और क्रोध से भरे लाल-नेत्र किये हुए वह दोनों श्रीकृष्ण अर्जुन शोभायमान हुए युद्ध में कुशल और बुलाये हुए वह दोनों युद्धरूपी यज्ञभूमि में ऐसे आ पहुँचे ९२ जिस प्रकार विधिपूर्वक यज्ञ करनेवालों से आह्वान किये हुए अश्विनीकुमार होते हैं फिर क्रोधयुक्त वह दोनों नरोत्तम ऐसे युद्ध में प्रवृत्त हुए ९३ जैसे कि महावन में तल शब्द से क्रोधित महाबली हाथी होते हैं फिर अर्जुन रथों की सेना और घोड़ों के समूहों को मझाकर ९४ पाशधारी यमराज के समान सेना में घूमने लगा हे भरतवंशिन्! युद्ध में आपकी सेना के मध्य में पराक्रम करनेवाले उस अर्जुन को देखकर ९५ आपके पुत्र ने संसप्तकों के समूहों को फिर प्रेरणा करी तब हज़ार रथ तीन सौ हाथी ९६ चौदह हजार घोड़े और दो लाख धनुषधारी ९७ शूरवीर लक्षों के बेधनेवाले चारों ओर से घिरे हुए पदातियों समेत महारथी अर्जुन को बाणों से आच्छा-दित करते हुए सम्मुख वर्तमान हुए ९८ हे महाराज! उन सब लोगों ने चारों ओर से बाणों की वर्षा करके अर्जुन को ढक दिया फिर शत्रु की सेना को पीड्यमान करनेवाला युद्ध में बाणों से ढका हुआ वह अर्जुन पाशधारी यम-राज के समान अपना रुद्ररूप दिखलाता हुआ और संसप्तकों को मारता हुआ अपूर्व दर्शन के योग्य हुआ ९९।१०० इसके पीछे बिजली के समान प्रकाशमान सुवर्ण से अलंकृत अर्जुन के चलाये हुए बाणों से सब आकाश ढक गया १०१ वहाँ अर्जुन के छोड़े हुए बड़े-बड़े बाणों के गिरने से सब आकाश आच्छादित होकर ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि कद्रू के बेटे सर्पों से व्याप्त होकर शोभित होता है १०२ बड़े साहसी पाण्डव ने सुन-हरी पुङ्खयुक्त तीक्ष्ण नोक के से टेढ़े पर्ववाले बाणों को सब दिशाओं में

छोड़ा १०३ मनुष्यों ने अर्जुन की प्रत्यञ्चा के शब्द से यह अनुमान किया कि पृथ्वी आकाश सब दिशा समुद्र और पर्वत टूटते हैं १०४ महारथी अर्जुन दश हज़ार क्षत्रिय महारथियों को मारकर शीघ्र ही संसप्तकों के सम्मुख गया १०५ वहाँ अर्जुन ने काम्बोज के राजा से रक्षित सेना को नेत्रों के सम्मुख पाकर अपने बाणों के बल से उसको ऐसे मारा जैसे कि दानव लोगों को इन्द्र मारता है और बड़ी शीघ्रता से मारने के इच्छावान् शत्रु लोगों के शस्त्र भुजा हाथ और शिरों को भी काटा १०६ । १०७ वह शस्त्रों से रहित टूटे अङ्ग होकर पृथ्वी पर ऐसे गिर पड़े जैसे कि संसारी वायु से टूटे बहुत शाखावाले वृक्ष गिरते हैं १०८ हाथी घोड़े रथ वा पत्तियों के समूहों के मारनेवाले अर्जुन के ऊपर सुदक्षिण के छोटे भाई ने बाणों की वर्षा करी १०९ तब अर्जुन ने उस बाणवर्षा करनेवाले की परिघ के समान दोनों भुजाओं को दो अर्धचन्द्रों से और पूर्णचन्द्रमा के समान मुखवाले शिर को क्षुरप्र से जुदा किया ११० उसके पीछे बड़े रुधिर को गिरानेवाला वह राजा रथ से ऐसे गिर पड़ा जैसे कि वज्र से फटा हुआ मनःशिल पर्वत का शिखर गिरता है सुदक्षिण के छोटे भाई काम्बोजदेशीय कमलपत्र के समान नेत्रधारी उन्नत बड़े तेजस्वी अपूर्वदर्शन को इस रीति से मारा १११ । ११२ वह काञ्चन के स्तम्भ समान टूटे हेमागिरि के समान वर्तमान था इसके अनन्तर फिर महाघोर युद्ध जारी हुआ ११३ उस युद्ध में लड़नेवाले शूरवीरों की नाना प्रकार की अपूर्वदशा वर्तमान हुई अर्थात् एक बाण से मरे हुए काम्बोजदेशीय यवनदेशीय और शकदेशीय घोड़ों से ११४ और रुधिर से लिप्त शूरवीरों से सब रुधिरमयी भूमि हो गई मृतक घोड़े और सारथीवाले रथ वा मृतक सवारोंके घोड़े वा मृतक हाथीवान् और सवारों-वाले हाथियों से परस्पर में मनुष्यों का बड़ा नाश हुआ ११५ । ११६ अर्जुन के हाथ से उस पक्ष और प्रपक्ष के मरने पर बड़ी शीघ्रतापूर्वक अश्वत्थामाजी उस महाविजयी अर्जुन के सम्मुख गये ११७ सुवर्ण-जटित बड़े धनुष को कम्पायमान करता सूर्य की किरणों के समान घोर बाणों को लेता ११८ क्रोध और अशान्ति से फैला हुआ मुख रक्तनेत्र वह

पराक्रमी ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि प्रलयकाल में किङ्करनाम दण्ड-धारी क्रोधरूप अग्नि होता है ११९ इसके पीछे उग्रबाणों की वर्षाओं को वर्षाया हे महाराज उन छोड़े हुए बाणों से पाण्डवीय सेना को भगाया १२० हे श्रेष्ठ, राजन् ! उसने रथ पर सवार श्रीकृष्णजी को देखते ही फिर उदग्र बाणों की वर्षा करी १२१ तब हे महाराज ! अश्वत्थामा के छोड़े हुए और चारों ओर से गिरते हुए उन बाणों से वह रथ पर चढ़े हुए दोनों श्रीकृष्ण और अर्जुन ढक गये १२२ इसके पीछे प्रतापी अश्वत्थामा ने युद्ध में हज़ारों तीक्ष्ण बाणों से उन श्रीकृष्ण अर्जुन को स्तब्ध कर दिया १२३ इस रीति से युद्ध के रक्षक उन दोनों को बाणों से आच्छादित देखकर सब जड़ चैतन्य हाहाकार करने लगे १२४ सिद्ध चारणों के वह समूह चारों ओर से यह चिन्ता करते हुए दौड़े कि अब लोकों की कुशल होगी वा न होगी १२५ हे राजन् ! ऐसा युद्ध और पराक्रम हमने प्रथम कभी न देखा था जैसा कि दोनों श्रीकृष्ण अर्जुन को बाणों से ढकनेवाले अश्वत्थामा ने किया १२६ वहाँ मैंने शत्रुओं के भयकारी अश्वत्थामा के धनुष का शब्द वारंवार सुना १२७ इस युद्ध में वाम दक्षिण दोनों ओर को घूमनेवाले सव्य-साची अश्वत्थामा की प्रत्यञ्चा ऐसी शोभायमान हुई जैसे कि बादलों के मध्य में बिजली चमकती है १२८ फिर शीघ्रकर्मी दृढ़हस्तवाले अर्जुन ने अश्वत्थामा को देख बड़े मोह को प्राप्त होकर १२९ अपने बल पराक्रम को हत माना और युद्ध में दोनों का शरीर दुर्दर्श हुआ १३० हे राजेन्द्र ! इस प्रकार से अश्वत्थामा और अर्जुन के महाघोर युद्ध होने और पराक्रमी अश्वत्थामा के प्रबल होने १३१ और अर्जुन के निर्बल होने पर श्रीकृष्णजी में महा-क्रोध उत्पन्न हुआ क्रोध से श्वास लेते और नेत्रों से भस्म करते हुए उन श्रीकृष्णजी ने १३२ युद्ध में अश्वत्थामा और अर्जुन को वारंवार देखा और क्रोधरूप होकर श्रीकृष्णजी अर्जुन से प्रीतिपूर्वक बोले १३३ हे भरतवंशिन्, अर्जुन ! युद्ध में इस तेरे कर्म को अपूर्व मानता हूँ कि जहाँ अश्वत्थामा सरीखा तुझको उल्लङ्घन करके वर्तमान है १३४ क्या तेरा पराक्रम और भुजबल पूर्व के समान है क्या तेरा गाण्डीव धनुष रथ में हस्तगत नियत है १३५ क्या तेरे दोनों भुज कुशल हैं और मुट्ठी तो

निर्बल नहीं हो गई हैं हे अर्जुन ! मैं युद्ध में अश्वत्थामा को ही प्रबल विजयी देखता हूँ १३६ हे भरतर्षभ, अर्जुन ! यह गुरु का पुत्र है ऐसा मानकर छोड़ना न चाहिये यह समय त्यागने के योग्य नहीं है १३७ इस रीति के श्रीकृष्णजी के वचनों को सुनकर शीघ्रता करनेवाले अर्जुन ने चौदह भल्लों को लेकर बड़ी शीघ्रता से अश्वत्थामा के धनुष को काटा १३८ इसी प्रकार से ध्वजा, पताका, रथ, छत्र, शक्ति और गदा को तोड़कर वत्सदन्त नाम बाणों से ठोढ़ी के स्थान पर अत्यन्त घायल किया १३९ तब तो अश्वत्थामा बड़ा मूर्च्छित होकर ध्वजा की यष्टी के आश्रय हुआ हे राजन् ! फिर अर्जुन से बचाता हुआ उसका सारथी उस शत्रुओं के भयभीत करनेवाले अचेतरूप अश्वत्थामा को युद्ध से दूर ले गया फिर उस समय शत्रुसन्तापी अर्जुन ने १४०।१४१ आपकी हजारों सेना को मारा यह सब कर्म अर्जुन ने उस आपके वीर पुत्र के देखते हुए किया १४२ इस रीति से आपके कुमन्त्रों के कारण शत्रुओं के साथ आपके शूरवीरों का यह महाघोर नाश वर्तमान हुआ १४३ अर्जुन ने संसप्तकों को भीमसेन ने कौरवों को वा सुषेण ने पाञ्चालों को क्षणमात्र में ही युद्धभूमि में छिन्न-भिन्न कर दिया १४४ हे राजन् ! इस रीति से उत्तम वीरों के सम्मुख नाशकारी युद्ध के होने पर चारों ओर से असंख्य रुण्ड उठ खड़े हुए १४५ हे भरतर्षभ ! आघातों से कठिन पीड्यमान युधिष्ठिर भी युद्ध में एक कोस हटकर नियत हुआ ॥ १४६ ॥

इति श्रीमहाभारते कर्णपर्वणि संकुलयुद्धे सप्तपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ॥ ५७ ॥

अट्ठावनवाँ अध्याय

सञ्जय बोले कि हे भरतर्षभ ! इसके पीछे दुर्योधन ने शल्य आदि अन्य राजाओं समेत कर्ण से कहा कि १ दैवइच्छा से यह स्वर्ग का द्वार खुला हुआ है ऐसे युद्ध को स्वर्ग और मोक्ष के पानेवाले क्षत्रिय लोग पाते हैं २ हे कर्ण ! तू युद्ध में अपने समान युद्ध करनेवाले शूरवीर क्षत्रियों के चित्त का जो प्यारा होता है वह दिन आज वर्तमान होकर नियत हुआ है ३ युद्ध में पाण्डवों को मारकर वृद्धियुक्त पृथ्वी को पावोगे अथवा युद्ध में शत्रुओं के हाथ से मरकर वीरों के लोकों को पावोगे ४ वह सब श्रेष्ठ

क्षत्रिय लोग दुर्योधन के इस वचन को सुनकर बड़े प्रसन्न होकर अत्यन्त उच्चस्वर से गर्जे और बाजों को बजाया ५ इसके पीछे दुर्योधन की उस सेना के अतिप्रसन्न होने पर अश्वत्थामाजी आपके शूरवीरों को प्रसन्न करते हुए यह वचन बोले कि सब सेना के मनुष्यों के समक्ष में शस्त्रों का त्यागनेवाला मेरा पिता इस धृष्टद्युम्न के हाथ से मारा गया ६।७ हे राजा लोगो! इस हेतु से मैं उस क्रोध से मित्र के लिये भी तुमसे सत्यप्रतिज्ञा करता हूँ उसको आप सब समझो ८ मैं धृष्टद्युम्न को जब तक न मार लूँगा तब तक कवच को नहीं उतारूँगा जो मेरी प्रतिज्ञा पूरी न होगी तो स्वर्ग को भी मैं नहीं पा सकता ९ युद्ध में भीमसेन अर्जुन को आदि ले जो कोई शूरवीर धृष्टद्युम्न का रक्षक होगा उसको भी मैं युद्ध में बाणों से मारूँगा १० इस वचन के सुनते ही भरतवंशियों की सब सेना एक साथ ही पाण्डवों के सम्मुख गई और इसी प्रकार वह पाण्डव लोग भी कौरवों के सम्मुख दौड़े ११ हे राजन्! वह महारथियों का संग्राम बड़ा भयकारी हुआ और कौरव वा सृञ्जयों के आगे मनुष्यों का नाश कुछ कम प्रलय ही के समान हुआ १२ इसके पीछे युद्ध में उन कठिन प्रहारों के वर्तमान होने पर अप्सराओं समेत देवता और सब जीवमात्र उन नरवीरों के देखने के अभिलाषी इकट्ठे हुए १३ अत्यन्त प्रसन्नचित्त अप्सराओं ने युद्ध में अपने कर्म से स्वर्ग में पहुँचने के योग्य बड़े-बड़े नरोत्तम वीरों को दिव्य माला वा नाना प्रकार की गन्धि और रत्न-जटित उत्तम-उत्तम अद्भुत भूषणों से वर्षा करके ढक दिया १४ फिर वायु ने उन सब गन्धादिकों को लेकर उन सब श्रेष्ठ युद्ध करनेवाले शूरवीरों को सेवन किया वायु से सेवित होकर परस्पर में मारे हुए शूरवीर पृथ्वी पर गिर पड़े १५ दिव्यमाला वा सुनहरी पुङ्खवाले विचित्र बाणों से व्याप्त उत्तम शूरवीरों से विचित्र वह पृथ्वी ऐसी शोभायमान हुई जैसे कि नक्षत्र मण्डल से अलंकृत आकाश होता है १६ इसके पीछे वह युद्धभूमि अन्तरिक्ष के प्रशंसायुक्त वचन बाजों के शब्दों से शब्दायमान धनुष और रथचक्रों के अपूर्व शब्दों से अद्भुतरूप होकर व्याकुलरूप हो गई ॥ १७ ॥

इति श्रीमहाभारते कर्णपर्वणि भूम्यद्भुतरूपवर्णनेऽष्टपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ॥ ५८ ॥

उनसठवाँ अध्याय

सञ्जय बोले कि अर्जुन कर्ण और भीमसेन के क्रोधयुक्त होने पर इस रीति से राजाओं का यह अद्‌भुत युद्ध हुआ १ हे राजन् ! अर्जुन अश्वत्थामा को पराजित करके और दूसरे महारथियों को भी विजय करके वासुदेवजी से यह वचन बोला २ हे महाबाहो, श्रीकृष्णजी ! भागती हुई पाण्डवीय सेना को और युद्ध में महारथियों को भगाते हुए कर्ण को देखो ३ हे श्रीकृष्णजी ! मैं धर्मराज युधिष्ठिर को नहीं देखता हूँ हे बड़े शूरवीर ! मुझको युधिष्ठिर की बड़ी ध्वजा भी नहीं दिखाई देती ४ हे जनार्दनजी ! जिनका तीसरा भाग शेष है उन धृतराष्ट्र के पुत्रों में से युद्ध में मेरे सम्मुख कोई नहीं आता है ५ इस हेतु से आप मेरे हित को करते हुए वहाँ चलो जहाँ पर युधिष्ठिर हैं हे माधवजी ! मैं युद्ध में अपने छोटे भाइयों समेत युधिष्ठिर को कुशल देखकर फिर आनकर शत्रुओं से लडूँगा यह सुनकर श्रीकृष्णजी शीघ्र ही रथ के द्वारा चले ६ । ७ जहाँ राजा युधिष्ठिर और महारथी सृञ्जय अपनी-अपनी सेनासमेत मृत्यु को हाथ में लिये परस्पर में युद्ध करते थे इसके पीछे मनुष्यों के नाशकाल वर्तमान होने पर युद्धभूमि को देखते हुए गोविन्दजी अर्जुन से बोले ८।९ हे अर्जुन ! देखो कि दुर्योधन के कारण से पृथ्वी पर क्षत्रियों का और भरतवंशियों का महाघोर रुद्ररूप नाश वर्तमान है १० हे धनुषधारिन् ! मरे हुए धनुषधारियों के सुवर्ण पृष्ठवाले धनुष और बहुमूल्य टूटे हुए तूणीरों को देखो ११ और सुनहरी पुङ्खयुक्त टेढ़े पर्ववाले बाणों को तेल से सफा किये हुए काँचली से रहित सर्पों की समान नाराचों को देखो १२ हाथी दाँत का बेंटा रखनेवाले सुवर्णजटित खड्गों को और टूटे हुए स्वर्णमयी कवचों को देखो १३ सुवर्णजटित प्रास और सुवर्ण भूषणों से अलंकृत शक्ति अथवा स्वर्णसूत्रों से खचित बड़ी-बड़ी गदाओं को देखो १४ सुवर्ण से जटित दुधारे खड्ग और पट्टिश और फरसों को देखो १५ गिरे हुए भारी-भारी मुसल चित्रित शतघ्नी और बड़े-बड़े परिघों को देखो १६ इस महायुद्ध में टूटे चक्र और तोमरों को

देखो विजयाभिलाषी वेगवान् युद्धकर्ता लोग नाना प्रकार के शस्त्रों समेत मरे हुए भी जीवते हुए से विदित होते हैं गदाओं से अङ्ग भङ्ग मुसलों से टूटे मस्तक १७। १८ हाथी घोड़े और रथों से घायल हज़ारों शूरवीरों को देखो हे शत्रुहन्तः, अर्जुन ! मनुष्य घोड़े और हाथियों के शरीर बाण, शक्ति, दुधारा, खड्ग, पट्टिश १९ घोर रूप लोहे की परिघ, असिकान्त, फरसा आदि शस्त्रों से छिन्नरूप और बहुत से मृतकरूप शरीरों से २० आच्छादित होकर चन्दन से लिप्त सुवर्ण के बाजुओं से अलंकृत २१ हस्तत्राण वा केयूर रखनेवाली भुजाओं से पृथ्वी प्रकाशमान हुई हे भरतवंशिन् ! हस्तत्राण रखनेवाले अत्यन्त अलंकृत और छिदी हुई उत्तम भुजा २२ और हाथी की सूँड़ के समान महावेगवानों की टूटी जङ्घा और उत्तम चूड़ामणिसमेत कुण्डलधारी २३ उत्तम नेत्रवाले वीरोंसमेत पड़े हुए शिरों से पृथ्वी महाशोभायमान हो गई है हे भरतर्षभ ! रुधिर से लिप्त अङ्ग जिनकी ग्रीवा टूटी हुई २४ इन सब नाना अङ्गों से पृथ्वी ऐसी प्रकाशित हुई जैसे कि शान्त ज्योतिवाली अग्नियों से वन शोभित होता है और सुनहरी घण्टे रखनेवाले बहुत प्रकार से टूटे हुए शुभ रथों से व्याप्त २५ बाणों से घायल मृतक वा व्याकुल पड़े हुए आनर्तवाले घोड़ों को देखो अनुकर्ष उपासङ्ग पताका और नाना प्रकार की ध्वजाओं को देखो २६ रथी लोगों के बड़े-बड़े शङ्ख श्वेत चामर और जिनकी जिह्वा बाहर निकल पड़ीं उन पर्वताकार सोते हुए हाथियों को देखो २७ वैजयन्ती माला वा रथ के विचित्र मृतक घोड़े वा हाथियों के परिस्तोम मृगचर्म और कम्बलों को देखो २८ फैलने से विचित्र चाँदी से जड़े हुए अंकुश और बड़े-बड़े हाथियों समेत गिरकर टूटे घण्टों को देखो २९ वैदूर्य मणियों से जटित सुन्दर दण्डयुक्त गिरे हुए शुभ अंकुश और सवारों की भुजाओं में बँधे हुए सुवर्णजटित चाबुकों को देखो ३० विचित्र मणियों से जटित सुवर्ण से अलंकृत रांकवान् मृगचर्म से बने हुए पृथ्वी पर पड़े हुए घोड़ों के स्तर परिस्तोमों को देखो ३१ राजाओं की चूड़ामणि वा विचित्र स्वर्णमयी माला वा टूटे हुए छत्र चामर और व्यजनों को देखो ३२ चन्द्रमा और नक्षत्रों के

समान प्रकाशमान सुन्दर कुण्डलधारी डाढ़ी मूछों से अलंकृत भयसंयुक्त वीरों के मुखों से ३३ ढकी हुई रुधिररूप कीचवाली पृथ्वी को देखो और चारों ओर से शब्द करनेवाले अन्य सजीव जीवों को देखो ३४ हे राजन्! शस्त्रों को त्यागकर वारंवार रोनेवाले जातवालों से घिरे हुए बहुत से मनुष्यों को देखो ३५ वेगवान् वा विजयाभिलाषी क्रोध भरे शूरवीर दूसरे मृतक शूरवीरों को ढककर फिर युद्ध के लिये जाते हैं ३६ इसी प्रकार पड़े हुए शूरवीरों ने जिन जातवालों से जल को माँगा वह मनुष्य जहाँ तहाँ दौड़ रहे हैं ३७ हे अर्जुन! कोई तो जल के निमित्त गये और अनेक मृतक हुए वह शूर उनको अचेत देखकर लौटे ३८ जल को त्यागकर परस्पर पुकारते हुए दौड़ते हैं हे श्रेष्ठ! जल पी पीकर मरने-वालों को वा जल के पीनेवालों को भी देखो ३९ कितने ही बान्धवों के प्यारे मनुष्य अपने प्रिय बान्धवों को त्यागकर जहाँ तहाँ इस महा-युद्ध में युद्ध करते हुए दृष्ट पड़ते हैं ४० हे नरोत्तम! इसी प्रकार दोनों ओष्ठों को काटनेवाले टेढ़ी भृकुटीवाले मुखों से चारों ओर को देखनेवाले अन्य मनुष्यों को देखो ४१ तब इस रीति से बातें करते हुए श्रीकृष्णजी वहाँ गये जहाँ पर कि युधिष्ठिर थे और अर्जुन ने भी राजा के देखने के निमित्त ४२ वारंवार गोविन्दजी को प्रेरणा करी कि शीघ्र चलो २ ऐसी शीघ्रता करनेवाले माधव श्रीकृष्णजी ने वह युद्धभूमि अर्जुन को दिखा कर ४३ बड़ी धैर्यता से अर्जुन से यह वचन कहा कि हे अर्जुन! राजा युधिष्ठिर को और सम्मुख जानेवाले राजाओं को देखो ४४ और महा-युद्ध में अग्नि के समान क्रोधरूप कर्ण को भी देखो यह बड़ा धनुषधारी भीमसेन युद्ध में लौटा है ४५ पाञ्चाल सृञ्जय और जो-जो पाण्डवों के उत्तम गिने जाते हैं जिनका अग्रगामी धृष्टद्युम्न है वह सब उस भीमसेन के सङ्ग में लड़ते हैं ४६ और उस लौटनेवाले पाण्डव भीमसेन से शत्रुओं की बड़ी सेना फिर पराजय हुई हे अर्जुन! यह कर्ण भागनेवाले कौरवों को रोकता है ४७ हे कौरव्य! वेग में यमराज के समान और इन्द्र के सदृश पराक्रमी शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ यह अश्वत्थामा भी जाता है ४८ महारथी धृष्टद्युम्न युद्ध में उस भागनेवाले के पीछे जाता है और

युद्ध में मरे हुए सृञ्जयों को देखो ४९ महा अजेय वासुदेवजी ने इस रीति से इस सब वृत्तान्त को अर्जुन से कहा हे राजन्! इसके पीछे महाघोर युद्ध जारी हुआ ५० तब मृत्यु को निवृत्त करके दोनों सेनाओं के समागम होने में दोनों ओर को सिंहनादों के महान् शब्द होने लगे ५१ हे पृथ्वीपते, राजन्, धृतराष्ट्र! आपके दुर्मन्त्रों से पृथ्वी पर आपके और अन्यों के शूरवीरों का इस रीति से नाश जारी हुआ ॥ ५२ ॥

इति श्रीमहाभारते कर्णपर्वणि महायुद्धे नवपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ॥ ५९ ॥

साठवाँ अध्याय

सञ्जय बोले कि इसके पीछे निर्भय कौरव सृञ्जय और युधिष्ठिर को अग्रगामी करनेवाले पाण्डव और कर्ण को अग्रगामी करनेवाले हम लोग फिर भिड़ गये १ उस समय कर्ण और पाण्डवों का वह युद्ध फिर जारी हुआ जो भयकारी रोमहर्षण करनेवाला यमराज के देश की वृद्धि करनेवाला था २ हे भरतवंशिन्! उस कठिन रुधिररूप जल रखनेवाले युद्ध के जारी होने पर और शूरवीर संसप्तकों के कुछ बाकी रहने पर ३ धृष्टद्युम्न और महारथी पाण्डव सब राजाओं समेत कर्ण के सम्मुख गये तब अकेले कर्ण ने युद्ध में आनेवाले प्रसन्नचित्त विजयाभिलाषी उन वीरों को ऐसे धारण किया जैसे कि जल के समूहों को पर्वत धारण करता है ४ । ५ वह सब महारथी कर्ण को पाकर ऐसे भिन्न-भिन्न हो गये जैसे कि जल के समूह पर्वत को पाकर इधर-उधर दिशाओं को चले जाते हैं ६ हे महाराज! इसके पीछे रोमहर्षण करनेवाला युद्ध होने लगा तब धृष्टद्युम्न ने कर्ण को टेढ़े पर्ववाले बाणों से ७ घायल किया उस समय तिष्ठ-तिष्ठ कहकर विजय नाम उत्तम धनुष को खैंचकर महारथी कर्ण ने ८ धृष्टद्युम्न के धनुष को और विषैले सर्पों के समान बाणों को काटकर अत्यन्त क्रोधयुक्त होकर नौ बाणों से धृष्टद्युम्न को घायल किया ९ हे निष्पाप! वह कर्ण के बाण उस महात्मा के सुनहरी कवच को छेदकर रुधिर में भरे हुए बीरबहूटी के समान शोभायमान हुए १० महारथी धृष्टद्युम्न ने उस टूटे हुए धनुष को डालकर दूसरे धनुष और विषैले सर्प की समान

बाणों को लेकर ११ टेढ़े पर्ववाले सत्तर बाणों से कर्ण को पीड्यमान किया और उसी प्रकार कर्ण ने भी युद्ध में शत्रुसन्तापी धृष्टद्युम्न को १२ विषैले सर्प के समान बाणों से ढक दिया फिर द्रोणाचार्य के शत्रु बड़े धनुषधारी धृष्टद्युम्न ने तीक्ष्ण धारवाले बाणों से पीड्यमान किया १३ हे राजन् ! फिर अत्यन्त क्रोधयुक्त कर्ण ने सुनहरी भूषणयुक्त द्वितीय यम-दण्ड के समान बाण को उसके ऊपर फेंका १४ हस्तलाघव करनेवाले सात्यकी ने उस अकस्मात् आनेवाले घोररूप बाण को सौ प्रकार से काटा १५ तब कर्ण ने बाण को कटा हुआ देखकर सात्यकी को बाणों की वर्षा करके चारों ओर से ढक दिया १६ और सात नाराचों से पीड्य-मान भी किया इसके पीछे सात्यकी ने भी सुवर्णजटित बाणों से उसको छेदा १७ हे महाराज ! इसके पीछे घोर युद्ध हुआ वह युद्ध नेत्र और कर्णों को भयभीत करनेवाला महाअद्भुत चारों ओर से देखने के ही योग्य था १८ हे राजन् ! वहाँ कर्ण और सात्यकी के उस कर्म को देख-कर सब जीवों के रोमाञ्च खड़े हो गये १६ इसी अन्तर में अश्वत्थामा-जी बड़े पराक्रमी उस धृष्टद्युम्न के सम्मुख गये जो कि शत्रुओं का विजय करनेवाला और पराक्रमसमेत प्राणों का हरनेवाला था २० शत्रु के पुर के विजय करनेवाले और अत्यन्त क्रोधयुक्त अश्वत्थामाजी बोले कि हे ब्राह्मण के मारनेवाले ! ठहरो-ठहरो अब मुझसे बचकर जीता नहीं बच सकता २१ यह कहकर शीघ्रता करनेवाले अश्वत्थामा ने तीक्ष्ण धार घोररूप सुन्दर बेंतवाले बाणों से वीर धृष्टद्युम्न को अत्यन्त वेग से ढक दिया २२ हे श्रेष्ठ ! जैसे कि महारथी द्रोणाचार्यजी युद्ध में उपाय करनेवाले धृष्टद्युम्न को देखकर बड़े परिश्रम से उपाय करनेवाले हुए २३ उसी प्रकार शत्रुओं के वीरों के मारनेवाले धृष्टद्युम्न युद्ध में अश्वत्थामा को देखकर कुछ अप्रसन्न होकर अपनी मृत्यु को माना २४ फिर वह युद्ध में अपने को शस्त्र से अवध्य जानकर बड़ी तीव्रता से अश्वत्थामा के सम्मुख ऐसे गया जैसे कि प्रलयकाल में काल काल के सम्मुख जाता है २५ हे महाराजेन्द्र! फिर वीर अश्वत्थामा अपने सम्मुख धृष्टद्युम्न को देखकर क्रोध से श्वास लेता हुआ उसके सम्मुख गया २६ और उन दोनों ने परस्पर

देखकर बड़ा क्रोध किया हे महाराजराज, धृतराष्ट्र ! इसके पीछे शीघ्रता करनेवाला प्रतापवान् अश्वत्थामा २७ सम्मुख होनेवाले धृष्टद्युम्न से बोले हे पाञ्चालदेशियों में नीच ! अब मैं तुझको मृत्यु के समीप भेजूँगा २८ जोकि पूर्वसमय में तुमने द्रोणाचार्य को मारकर पापकर्म किया है अब वह पाप का फल तुझको ऐसा मिलेगा जिसमें तेरा कल्याण न होगा २९ हे अज्ञान ! जो तू अर्जुन से अरक्षित होकर युद्ध में नियत होता है या नहीं हटता है इसी से सत्य-सत्य तेरा कल्याण नहीं है ३० यह वचन सुनकर प्रतापवान् धृष्टद्युम्न ने उत्तर दिया कि मेरा वही खड्ग तेरे उत्तर को देगा ३१ जिसने कि युद्ध में उपाय करनेवाले तेरे पिता को उत्तर दिया था नाममात्र अपने को ब्राह्मण कहनेवाले द्रोणाचार्यजी मेरे हाथ से मारे गये ३२ अब युद्ध में अपने पराक्रम से तुझको भी क्यों न मारूँगा हे महाराज! क्रोधयुक्त सेनापति धृष्टद्युम्न ने ऐसा कहकर ३३ अत्यन्त तीक्ष्ण बाण से अश्वत्थामा को घायल किया फिर अत्यन्त क्रोधयुक्त अश्वत्थामा ने टेढ़े पर्ववाले बाणों से युद्ध में धृष्टद्युम्न की दिशाओं को ढक दिया ३४ उस समय चारों ओर से बाणों से ढके हुए न शूरवीर दिखाई दिये न दिशा विदिशासमेत अन्तरिक्ष दिखाई दिया हे राजन् ! इसी प्रकार धृष्टद्युम्न ने भी युद्ध में शोभा देनेवाले अश्वत्थामा को ३५ । ३६ कर्ण के देखते हुए बाणों से ढक दिया फिर चारों ओर से देखने के योग्य अकेले कर्ण ने भी पाञ्चाल पाण्डव ३७ द्रौपदी के पुत्र युधामन्यु और महारथी सात्यकी को रोका ३८ फिर धृष्टद्युम्न ने युद्ध में अश्वत्थामा के धनुष को काटा तब वेगवान् अश्वत्थामा ने उसको डाल दूसरे धनुष को लेकर घोर जङ्ग में विषैले सर्पों की समान बाणों को फेंका फिर उसने धृष्टद्युम्न की गदा, शक्ति, धनुष, ध्वजा ३९ । ४० रथ, सारथी और घोड़ों को बाणों से एक क्षणमात्र में मारा तब उस धनुष, रथ, गदा, शक्ति, रथ, ध्वजा टूटे हुए धृष्टद्युम्न ने ४१ बड़े खड्ग और सौ चन्द्रमा रखनेवाली ढाल को लिया हे राजेन्द्र! तब हस्तलाघवीय वीर अश्वत्थामा ने शीघ्र ही अपने भल्लों से रथ से न उतरनेवाले धृष्टद्युम्न के उस खड्ग को भी काटा यह बड़ा आश्चर्य सा हुआ ४२ । ४३ हे भरतर्षभ! फिर

उपाय करनेवाला महारथी उस रथ, गदा, शक्ति, खड्ग आदि से रहित बाणों से अत्यन्त घायल धृष्टद्युम्न को न मार सका हे राजन्! जब अश्वत्थामा बाणों से उसको न मार सका ४४। ४५ तब वह वीर धनुष को त्यागकर धृष्टद्युम्न की ओर को चला और उस समय हे महाराज! उस महात्मा भ्रम रहित अश्वत्थामा का वेग इस प्रकार का हुआ ४६ जैसे कि उत्तम सर्प के भक्षण करनेवाले गरुड़ का वेग होता है उसी समय श्रीकृष्णजी अर्जुन से बोले ४७ हे अर्जुन! देखो जैसे कि अश्वत्थामा धृष्टद्युम्न के रथ पर बड़े उपायों को करता है वह निस्सन्देह इसको मारेगा ४८ हे शत्रुओं के विजय करनेवाले महाबाहो! जैसे हो सके वैसे अश्वत्थामारूप मृत्यु के मुख में फँसे हुए धृष्टद्युम्न को निश्चय करके छुटाओ ४९ हे महाराज! ऐसा कहकर प्रतापवान् वासुदेवजी ने घोड़ों को वहाँ पहुँचाया जहाँ कि अश्वत्थामा नियत थे ५० केशवजी के हाँके हुए वह चन्द्रवर्ण घोड़े आकाशगामी होकर अश्वत्थामा के रथ पर पहुँचे ५१ हे राजन्! महापराक्रमी अश्वत्थामा ने उन बड़े पराक्रमी श्रीकृष्ण और अर्जुन को देखकर धृष्टद्युम्न के मारने में उपाय किया ५२ तब बड़े पराक्रमी अर्जुन ने खिंचे हुए धृष्टद्युम्न को देखकर बाणों को अश्वत्थामा के ऊपर फेंका ५३ गाण्डीव धनुष से चलाये हुए वह स्वर्णमयी बाण अश्वत्थामा को पाकर उसके शरीर में ऐसे प्रवेश कर गये जैसे कि सर्प बामी में घुसते हैं हे राजन्! उन बाणों से घायल और पीड्यमान वीर अश्वत्थामा युद्ध में बड़े तेजस्वी धृष्टद्युम्न को छोड़कर रथ पर सवार हुए ५४। ५५ और अर्जुन के बाण से पीड़ित होकर उत्तम धनुष को लेकर शायकों से अर्जुन को घायल किया ५६ इसी अन्तर में वीर सहदेव युद्धभूमि में शत्रुसंतापी धृष्टद्युम्न को रथ में बैठाकर दूर ले गया ५७ हे महाराज! फिर तो अर्जुन ने भी अश्वत्थामा को बाणों से पीड़ित किया फिर बड़े क्रोधयुक्त अश्वत्थामा ने अर्जुन को दोनों भुजा और छाती पर घायल किया ५८ फिर क्रोधयुक्त अर्जुन ने युद्ध में काल के समान दूसरे कालदण्ड के समान नाराच नाम बाण को अश्वत्थामा के ऊपर फेंका ५९ वह बड़ा तेजस्वी बाण उस ब्राह्मण

अश्वत्थामा के कन्धे पर गिरा तब बाण के वेग से व्याकुल होकर अश्वत्थामा रथ के बैठने के स्थान पर बैठ गये और महाव्याकुलता को पाया हे महाराज! इसके पीछे कर्ण ने अपने विजय नाम धनुष को टंकारा ६० । ६१ युद्ध में क्रोधयुक्त होकर वारंवार अर्जुन को देखनेवाले और अर्जुन से युद्ध में द्वैरथ युद्ध करने के अभिलाषी कर्ण ने धनुष को टंकारकर ६२ युद्धभूमि में शीघ्रता करनेवाले अश्वत्थामा को व्याकुल देख के रथ के द्वारा युद्धभूमि से दूर ले गया ६३ हे महाराज! धृष्टद्युम्न को छूटा हुआ और अश्वत्थामा को अचेततापूर्वक व्याकुल देखकर विजय से शोभायमान पाञ्चालों ने बड़े शब्द किये ६४ हज़ारों दिव्य बाजे बजे और युद्ध में उस अद्भुतपने को देखकर शूरवीरों ने सिंहनाद किये ६५ पाण्डव अर्जुन ऐसा कर्म करके वासुदेवजी से बोला कि हे श्रीकृष्णजी! आप संसप्तकों के सम्मुख चलो यह मेरा बड़ा काम है ६६ अर्जुन के वचन को सुनकर श्रीकृष्णजी बड़ी पताकावाले मन और वायु के समान शीघ्रगामी रथ की सवारी से चल दिये ॥ ६७ ॥

इति श्रीमहाभारते कर्णपर्वण्यश्वत्थामा अचेतो नाम षष्टितमोऽध्यायः ॥ ६० ॥

इकसठवाँ अध्याय

सञ्जय बोले कि इसी अन्तर में कुन्ती के पुत्र धर्मराज युधिष्ठिर को दिखाते हुए श्रीकृष्णजी ने अर्जुन से यह वचन कहा हे पाण्डव! बड़े पराक्रमी मारने के इच्छावान् महाधनुषधारी धृतराष्ट्र के पुत्रों से यह तेरा भाई राजा युधिष्ठिर बड़ी शीघ्रता से पीछा किया जाता है १ । २ वहाँ महादुर्मद क्रोधयुक्त पाञ्चाल महात्मा युधिष्ठिर को चाहते हुए पीछे चले जाते हैं ३ और पृथ्वी का राजा रथ समेत सेनाओं से अलंकृत दुर्योधन राजा युधिष्ठिर के पीछे दौड़ता है ४ हे पुरुषोत्तम! यह पराक्रमी विषैले सर्प के समान स्पर्शवाले सब युद्धों में कुशल भाइयों समेत मारने का अभिलाषी है ५ युधिष्ठिर के पकड़ने की इच्छा करनेवाले यह धृतराष्ट्र के पुत्र हाथी घोड़े रथ और पत्तियों समेत ऐसे जाते हैं कि जैसे इच्छा-वान् पुरुष उत्तम मनुष्य के पास जाते हैं ६ यादव सात्यकी वा भीमसेन

से रोके हुए युधिष्ठिर को पकड़ने के इच्छावान् यह लोग फिर ऐसे नियत हैं जैसे कि इन्द्र और अग्नि से वारंवार रुके हुए अमृत के चाहनेवाले दैत्य होते हैं ७ यह शीघ्रता करनेवाले महारथी बहुत होने के कारण पाण्डव युधिष्ठिर की ओर फिर ऐसे जाते हैं जैसे कि वर्षा ऋतु में जल के प्रवाह समुद्र की ओर जाते हैं ८ बड़े-बड़े पराक्रमी बड़े धनुषधारी सिंहनादों को करते शङ्खों को बजाते और शत्रुओं को चलायमान करते हुए चले जाते हैं ९ मैं कुन्ती के पुत्र युधिष्ठिर को मृत्यु के मुख में वर्तमान मानता हूँ और उस कुन्ती के पुत्र को दुर्योधन की आधीनता में वर्तमान होकर अग्नि में होमा हुआ विचार करता हूँ १० हे अर्जुन! फिर दुर्योधन की सेना इस प्रकार की है कि इसके बाण लक्ष्य में वर्तमान होकर समर्थ भी नहीं बच सकता है ११ युद्ध में बाणों के समूहों को शीघ्र छोड़नेवाले यमराज के समान अत्यन्त क्रोधयुक्त वीर दुर्योधन के वेग को कौन सह सकता है १२ वीर दुर्योधन अश्वत्थामा कृपाचार्य और कर्ण के बाणों का वेग पर्वतों का भी तोड़नेवाला है १३ शत्रुओं को सन्तप्त करनेवाला पराक्रमी हस्तलाघवीय कर्मकर्ता युद्ध में कुशल राजा युधिष्ठिर कर्ण के हाथ से मुख मोड़नेवाला हो चुका है और बड़े शूरवीर धृतराष्ट्र के पुत्रों समेत कर्ण युद्ध में युधिष्ठिर को पीड्यमान करने को समर्थ है १४ । १५ युद्ध में लड़नेवाले प्रशंसनीय बुद्धि उस युधिष्ठिर के पराजय होने का गुमान इन और अन्य महारथियों को भी प्राप्त है १६ क्योंकि यह भरतवंशियों में श्रेष्ठ व्रत करनेवाला समर्थ राजा युधिष्ठिर ब्राह्मणों के क्षमा आदि पराक्रमों में नियत है यह क्षत्रिय धर्मरूप पराक्रम में अर्थात् कठोर प्रकृति आदि में नियत नहीं है १७ निश्चय करके कर्ण के साथ भिड़े हुए शत्रुहन्ता युधिष्ठिर बड़े संशय में प्राप्त हुआ है १८ हे अर्जुन ! जो कि असहनशील भीमसेन शत्रुओं के सिंहनादों को सह रहा है इससे मैं अनुमान करता हूँ कि महाराज युधिष्ठिर जीवते हुए नहीं हैं १९ हे भरतर्षभ ! युद्ध में विजय से शोभायमान वारंवार गर्जते और शङ्खों को बजाते हुए २० यह कर्ण बड़े पराक्रमी उन धृतराष्ट्र के पुत्रों को प्रेरणा करता है कि तुम पाण्डव युधिष्ठिर को मारो २१ हे

अर्जुन ! महारथी लोग इन्द्रजालरूप स्थूणाकर्ण नाम गान्धर्वअस्त्र वा पाशुपतअस्त्र और बाणों के जालों से राजा को ढक रहे हैं २२ हे भरतवंशिन्, अर्जुन ! राजा युधिष्ठिर ऐसा व्याकुल कर दिया है जैसा कि यह पाञ्चालदेशीय अश्वत्थामा ने किया था पाण्डवों समेत सब शूरवीर इसके पीछे हुए हैं इसी प्रकार तुमसे भी यह राजा रक्षा करने के योग्य है २३ सब शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ पराक्रमी शीघ्रता के समय शीघ्रता करनेवाले शूरवीर उस पाताल में डूबे हुए के समान युधिष्ठिर को निकालने की इच्छा कर रहे हैं २४ राजा की ध्वजा नहीं दिखाई देती है हे अर्जुन ! वह राजा नकुल, सहदेव, सात्यकी और शिखण्डी के देखते हुए कर्ण के बाणों से मारा गया २५ हे भरतवंशिन्, समर्थ अर्जुन ! वह राजा धृष्टद्युम्न, भीमसेन, शतानीक और सब पाञ्चाल वा चन्देरीदेशियों के देखते हुए मारा गया २६ हे अर्जुन ! यह कर्ण बाणों से पाण्डवों की सेना को ऐसे मार रहा है जैसे कि कमल के वनों को हाथी मारता है २७ हे पाण्डुनन्दन ! यह आपके रथी भागते हैं हे अर्जुन ! देखो-देखो यह महारथी जाते हैं २८ हे भरतवंशिन् ! यह हाथी कर्ण के बाणों से घायल और पीड़ित होकर शब्दों को करते हुए दशों दिशाओं को भागते हैं २९ हे अर्जुन ! शत्रुओं के पराजय करनेवाले कर्ण से युद्ध में भगाये हुए यह रथों के समूह चारों ओर से भागते चले जाते हैं ३० हे ध्वजाधारियों में श्रेष्ठ, अर्जुन ! कर्ण के रथ पर नियत हाथी की कक्षा का चिह्न रखनेवाली और जहाँ-तहाँ युद्ध में घूमनेवाली ध्वजा को देखो ३१ यह कर्ण हज़ारों बाणों को वर्षाता तुम्हारी सेना को मारता हुआ भीमसेन के रथ पर दौड़ता है ३२ इन भगाये हुए महारथी पाञ्चालों को ऐसा देखो जैसे कि महायुद्ध में इन्द्र से भगाये हुए दैत्य होते हैं ३३ यह कर्ण युद्ध में पाञ्चाल, पाण्डव और सृञ्जयों को विजय करके तेरे निमित्त सब दिशाओं को देखता है यह मेरा पक्का अनुमान है ३४ हे अर्जुन ! यह कर्ण उत्तम धनुष को खैंचता हुआ ऐसा शोभायमान है जैसे कि देवगणों से व्याप्त शत्रुओं को विजय करके इन्द्र शोभायमान होता है ३५ यह सब कौरव कर्ण के पराक्रम को देखकर गर्जते हुए शब्दों को करते हैं और युद्ध में

चारों ओर से पाण्डव और सृञ्जयों को डरते हैं ३६ हे प्रशंसा देनेवाले ! यह कर्ण युद्ध में सब आत्मा से पाण्डवों को भयभीत करके सब सेना के मनुष्यों से बोला ३७ हे कौरव्य ! तुम्हारा कल्याण हो तुम शीघ्र चलकर सम्मुखता करो जिससे कि कोई सृञ्जय युद्ध में तुम्हारे हाथ से जीवता बचकर न जावे तुम शस्त्रों को धारण किये सावधानी से युद्ध करो और हम पीछे की ओर से चलते हैं यह कर्ण इस रीति से कहकर पीछे की ओर से बाणों को मारता हुआ चला गया ३८ । ३९ हे अर्जुन ! श्वेत छत्र से शोभायमान कर्ण को देखो वह ऐसा मालूम होता है जैसे कि चन्द्रमा से शोभायमान उदयाचल पर्वत होता है ४० हे भरतवंशिन् अर्जुन ! पूर्ण चन्द्रमा के समान शोभायमान सौ शलाका रखनेवाले मस्तक पर धारण किये हुए छत्र समेत ४१ यह कर्ण तुझको सकटाक्ष देखता है निश्चय करके यह बड़ी तीव्रता में नियत होकर युद्ध में आवेगा ४२ हे महाबाहो ! बड़े युद्ध में बृहत् धनुष को चढ़ानेवाले विषैले सर्पों के समान बाणों के छोड़नेवाले इस कर्ण को देखो ४३ हे शत्रु-सन्तापिन्, अर्जुन ! यह कर्ण तुझसे युद्ध करने की इच्छा करता हुआ तेरी वानरी ध्वजा को देखकर लौटा ४४ यह अपने मरने के लिये ऐसे आता है जैसे कि शलभ नाम पक्षी प्रकाशमान अग्नि के मुख में जाता है हे भरतवंशिन् ! रथ की सेनासमेत रक्षा करने का अभिलाषी दुर्योधन अकेले कर्ण को ही देखकर लड़ता है इन सब समेत इस दुष्ट अन्तःकरण-वाले दुर्योधन को बड़े विचारपूर्वक उपायों से मारना चाहिये ४५ । ४६ हे उच्चाभिलाषिन् ! शस्त्रों को अच्छी रीति से जाननेवाले युद्धाभिलाषी यश राज्य और उत्तम सुख को चाहनेवाले तेरे हाथ से मारने के योग्य है ४७ हे राजन् ! जैसे कि देवासुरों के युद्ध में देवता और दानवों के युद्ध होते हैं इसी प्रकार हे भरतर्षभ ! अत्यन्त क्रोधयुक्त तुझको और कर्ण को देखकर ४८ यह क्रोधयुक्त दुर्योधन अपने को बुद्धिमान् विचारकर उत्तर को नहीं पाता है ४९ हे कुन्ती के पुत्र ! तुम धर्मात्मा युधिष्ठिर के साथ अपराध करनेवाले आसन्नमृत्यु कर्ण के सम्मुख शीघ्र ही जाओ ५० और बुद्धि को प्रबल करके इस महारथी के सम्मुख चलो हे रथियों में

श्रेष्ठ! यह पाँच महापराक्रमी और तेजस्वी उत्तम रथी ५१ पाँच हज़ार हाथी और दश हज़ार घोड़ों समेत हज़ारों शूरवीरों को साथ लिये ५२ प्रयुतों पदातियों से युक्त होकर आते हैं हे वीर! परस्पर में रक्षित सेना तेरे सम्मुख आती है ५३ हे भरतर्षभ! तुम आप चलकर इस बड़े धनुषधारी कर्ण को दर्शन दो और बड़ी तीव्रता में नियत होकर सम्मुख जाओ ५४ यह अत्यन्त क्रोधयुक्त होकर कर्ण पाञ्चालों के सम्मुख दौड़ता है मैं इसकी ध्वजा को धृष्टद्युम्न के रथ पर देखता हूँ ५५ हे शत्रुसन्तापिन्! मैं मानता हूँ अर्थात् अनुमान करता हूँ कि यह पाञ्चालों के सम्मुख जाता है हे अर्जुन! अब मैं उस तेरी अभीष्ट प्रियवार्ता को कहता हूँ ५६ कि यह श्रीमान् धर्म का पुत्र राजा युधिष्ठिर आनन्दपूर्वक कुशल से है और यह महाबाहु भीमसेन सेना के मुख से निवृत्त हुआ लौटा है ५७ और वह भरतवंशी सृञ्जयों की सेना सात्यकी से युक्त है यह कौरव युद्ध में तीक्ष्णधार बाणों से मर रहे हैं ५८ हे अर्जुन! महात्मा पाञ्चालों से और भीमसेन के हाथ से दुर्योधन की सेना युद्ध में मुखों को मोड़-मोड़ कर ५९ भीमसेन के बाणों से घायल होकर बड़ी शीघ्रता से भागती है और टूटे कवच रुधिर से लिप्त शरीरवाली ६० महादुःखी भरतवंशियों की सेना दिखाई देती है हे भरतर्षभ, अर्जुन! इस शूरवीरों के स्वामी फैले हुए भीमसेन को देखो कि यह विषैले सर्प की समान क्रोधयुक्त सेना का भगानेवाला है हे राजन्! यह लाल पीले काले और श्वेत सूर्य चन्द्रमा और नक्षत्रों से शोभायमान ६१। ६२ अलंकृत पताका और छत्र गिरते हैं मुख न मोड़नेवाले और नाना प्रकार के वर्णवाले पाञ्चालों के बाणों से घायल और निर्जीव होकर यह रथी अपने-अपने रथों से गिरते हैं ६३। ६४ हे अर्जुन! वेगवान् पाञ्चाल, मनुष्य, हाथी, घोड़े और रथों से जुदे धृतराष्ट्र के पुत्रों के सम्मुख जाते हैं और नरोत्तम भीमसेन से रक्षित होकर ६५। ६६ वह अजेय पाञ्चाल लोग अपने-अपने प्राणों की आशा छोड़-छोड़ शत्रुओं को मर्दन करते हैं हे शत्रुविजयिन्! यह सब पाञ्चाल प्रसन्न हो होकर शङ्खों को बजाते हैं ६७ और युद्ध में बाणों से शत्रुओं को मर्दन करते हुए दौड़ते हैं इन अपने शूरवीरों के साहस

को देखो कि पाञ्चालदेशीय शूर अपने पराक्रमों से धृतराष्ट्र के पुत्रों को ऐसे मारते हैं ६८ जैसे कि क्रोधयुक्त सिंह हाथियों को मारते हैं। शस्त्रों से रहित शूरवीर शस्त्रधारी शत्रुओं के शस्त्र को काटकर ६९ उसी से इन फलयुक्त शस्त्रधारियों को मारते हुए गर्जनाओं को करते हैं शत्रुओं के शिर और भुजा भी गिराई जाती हैं ७० रथ हाथी घोड़े और युद्ध के सब वीर लोग शूरता के उत्पन्न करनेवाले शब्दों को कर रहे हैं और यह दुर्योधन की बड़ी सेना सब ओर को पाञ्चालों के सम्मुख ऐसे वर्तमान है ७१ जैसे कि वेगवान् हंसों से चारों ओर को व्याप्त श्रीगङ्गाजी होती हैं श्रेष्ठों में भी अतिश्रेष्ठ वीर कृपाचार्य और कर्ण आदि यह सब पाञ्चालों के रोकने में कठिन पराक्रम करनेवाले हुए और भीमसेन के अस्त्रों से पराजित महारथी धृतराष्ट्र के पुत्रों को देखो ७२।७३ और शत्रुओं के हाथ से पाञ्चालों के पराजय होने पर निर्भय होकर गर्जनेवाले धृष्टद्युम्न आदि वीर हज़ारों शत्रुओं को मारते हैं ७४ वायु का पुत्र भीमसेन शत्रुओं के पत्तों को मँझाकर बाणों की वर्षा करता है और धृतराष्ट्र की बड़ी सेना महाव्याकुल है ७५ और यह रथी भी भीमसेन के भय से अत्यन्त पीड्यमान होकर भयभीत हैं देखो भीमसेन के नाराचों से घायल होकर यह हाथी ऐसे गिरते हैं ७६ जैसे कि इन्द्र के वज्र से टूटे हुए पर्वतों के शिखर गिरते हैं भीमसेन के गुप्त ग्रन्थीवाले बाणों से घायल यह बड़े-बड़े हाथी अपनी सेनाओं को कुचलते दबाते हुए इधर उधर को भागते हैं भीमसेन का सिंहनाद बड़े दुःख से सहने के योग्य जानो ७७।७८ हे राजन्! दण्डधारी यमराज के समान क्रोधयुक्त तोमरों से भीमसेन के मारने की इच्छा से यह निषाद का पुत्र इस युद्ध में गर्जनेवाले और विजय से शोभायमान वीर भीमसेन के सम्मुख आता है इसकी दोनों भुजाओं को उस गर्जनेवाले भीमसेन ने तोमर से काट डाला ७९।८० और देदीप्यमान अग्नि और सूर्य के समान प्रकाशित दश बाणों से मार डाला इसको मारकर अब प्रहार करनेवाले दूसरे हाथियों के सम्मुख आता है ८१ सवारों समेत सवारियों को और नीले बादलों के समान हाथियों को शक्ति और तोमरों से मारनेवाले भीमसेन को देखो ८२ हे

राजन् ! तीक्ष्ण धारवाले बाणों से उन सात-सात हाथियों की वैजयन्ती ध्वजाओं को काटकर तेरे बड़े भाई भीमसेन ने मार डाला ८३ दश-दश नाराचों से एक-एक हाथी मारा गया इसी से धृतराष्ट्र के पुत्रों के शब्द नहीं सुने जाते हैं हे भरतर्षभ ! इसी प्रकार युद्ध में इन्द्र के समान भीमसेन के लौटने पर क्रोधयुक्त नरोत्तम भीमसेन के हाथ से दुर्योधन की तीन अक्षौहिणी सेना घायल और रोकी गई सञ्जय बोले कि भीमसेन के उन कठिन कर्मों को देखकर ८४। ८६ अर्जुन ने शेष बचे हुए शत्रुओं को तीक्ष्ण धार बाणों से छिन्न-भिन्न कर दिया हे प्रभो ! वह संसप्तकों के समूह युद्ध में घायल और भयभीत होकर दशों दिशाओं में विभागित होकर भागे और इन्द्र के आतिथ्य को पाकर शोक से रहित हुए ८७। ८८ पुरुषोत्तम अर्जुन ने टेढ़े पर्ववाले बाणों से दुर्योधन की चतुरङ्गिणी सेना को मारा ॥ ८९ ॥

इति श्रीमहाभारते कर्णपर्वणि संकुलयुद्धयेकषष्टितमोऽध्यायः ॥ ६१ ॥

बासठवाँ अध्याय

धृतराष्ट्र बोले कि पाण्डव भीमसेन और युधिष्ठिर के लौटने और पाण्डव वा सृञ्जयों के हाथ से मेरी सेना के मरने १ अथवा अप्रसन्नतापूर्वक सेना के समूहों के वारंवार भागने पर हे सञ्जय ! मुझको समझाकर कहो कि कौरवों ने क्या-क्या किया सञ्जय बोले कि हे राजन् ! क्रोध से रक्तनेत्रवाला प्रतापवान् कर्ण महाबाहु भीमसेन को देखकर उसके सम्मुख गया ३ और उस पराक्रमी भीमसेन से मुख फेरी हुई आपके पुत्र की सेना को देखकर बड़ी युक्ति और उपाय से नियत किया ४ वह महाबाहु कर्ण आपके पुत्र की सेना को नियत करके युद्ध में दुर्मद पाण्डवों के सम्मुख गया ५ फिर युद्धभूमि में धनुषों को चढ़ाकर शायकों को छोड़ते पाण्डवों के महारथी लोग कर्ण के सम्मुख गये ६ उनके नाम यह हैं भीमसेन, सात्यकी, शिखण्डी, जनमेजय, पराक्रमी धृष्टद्युम्न और सब प्रभद्रक नाम नरोत्तम क्षत्रिय ७ मारने की इच्छा से अत्यन्त क्रोधयुक्त युद्ध के शोभा देनेवाले आपकी सेना के सम्मुख गये ८ हे राजन् !

इसी प्रकार मारने के इच्छावान् शीघ्रता करनेवाले आपके भी महारथी पाण्डवों की सेना के सम्मुख गये ६ हे पुरुषोत्तम! रथ, हाथी, घोड़े, पत्ति और ध्वजाओं से युक्त वह सेना अपूर्व देखने में आई १० हे महाराज! शिखण्डी कर्ण के सम्मुख गया धृष्टद्युम्न उस आपके पुत्र दुश्शासन के सम्मुख गया जो कि बड़ी सेना को साथ लिये हुए था ११ हे राजन्! नकुल वृषसेन के युधिष्ठिर चित्रसेन के और सहदेव उलूक के सम्मुख गया १२ सात्यकी शकुनी के द्रौपदी के पुत्र कौरवों के और युद्ध में कुशल अश्वत्थामा अर्जुन के सम्मुख गया १३ कृपाचार्य युद्ध में बड़े धनुषधारी युधामन्यु के और पराक्रमी कृतवर्मा उत्तमौजा के सम्मुख गया १४ हे श्रेष्ठ! फिर महाबाहु अकेले भीमसेन ने सब कौरवों समेत सेना को साथ रखनेवाले आपके पुत्रों को रोका १५ हे महाराज! इसके अनन्तर भीष्मजी के मारनेवाले शिखण्डी ने उस निर्भय के समान घूमनेवाले कर्ण को रोका १६ उसके पीछे रुके हुए और क्रोध से चलायमान ओष्ठवाले कर्ण ने शिखण्डी को तीन बाणों से दोनों भृकुटियों के मध्य में घायल किया वह शिखण्डी उन बाणों को धारण किये हुए ऐसे शोभायमान हुआ जैसे कि तीन शिखरों से उठे हुए सुवर्ण के पर्वत होते हैं १७। १८ युद्ध में कर्ण के हाथ से अत्यन्त घायल बड़े धनुषधारी शिखण्डी ने तीक्ष्ण धारवाले नब्बे बाणों से कर्ण को पीड्यमान किया १६ फिर महारथी कर्ण ने तीन बाणों से सारथी को मारकर क्षुरप्र से उसकी ध्वजा को काटा २० शत्रुओं के सन्तप्त करनेवाले महारथी शिखण्डी ने मृतक घोड़ों के रथ से उतरकर अपनी शक्ति को कर्ण के ऊपर फेंका २१ हे भरतवंशिन्! फिर कर्ण ने तीन शायकों से उस शक्ति को काटकर तीक्ष्ण बाणों से शिखण्डी को घायल किया २२ इसके पीछे अत्यन्त व्याकुल शिखण्डी कर्ण के धनुष से निकले हुए बाणों को रोकता हुआ शीघ्र ही हट गया २३ हे महाराज! इसके पीछे कर्ण ने पाण्डवीय सेना को ऐसा भिन्न-भिन्न कर दिया जैसे कि बड़ा पराक्रमी वायु रुई के ढेरों को तिर्रं बिर्रं कर देता है २४ फिर आपके पुत्र के हाथ से पीड्यमान धृष्टद्युम्न ने तीन बाणों से दुश्शासन को छाती पर छेदा २५

फिर दुश्शासन ने उसकी बाईं भुजा को छेदा हे भरतवंशिन् ! सुनहरी पुङ्ख टेढ़े पर्ववाले भल्ल से घायल २६ क्रोधयुक्त धृष्टद्युम्न ने घोर बाण को दुश्शासन के ऊपर फेंका २७ हे राजन् ! आपके पुत्र ने धृष्टद्युम्न के चलाये हुए बड़े वेगवान् बाण को तीन बाणों से काटकर २८ सुनहरे अङ्गवाले सत्रह भल्लों से धृष्टद्युम्न को दोनों भुजा और छाती पर घायल किया २९ इसके पीछे उस क्रोधभरे धृष्टद्युम्न ने अत्यन्त तीक्ष्ण क्षुरप्र से दुश्शासन के धनुष को काटा तब तो मनुष्य पुकारे ३० इसके पीछे हँसते हुए आपके पुत्र ने दूसरे धनुष को लेकर बाणों के समूहों से धृष्टद्युम्न को चारों ओर से रोका ३१ वह सब शूरवीर और सिद्धों समेत अप्सराओं के समूह आपके पुत्र के पराक्रम को देखकर युद्ध में आश्चर्य सा करने लगे ३२ उपाय करनेवाले बड़े पराक्रमी दुश्शासन से रुके हुए धृष्टद्युम्न को ऐसे नहीं देखा जैसे कि सिंह से रुके हुए बड़े हाथी को नहीं देखते ३३ हे पाण्डु के बड़े भाई ! इसके पीछे सेनापति के चाहनेवाले पाञ्चालों ने रथ हाथी और घोड़ों समेत आपके पुत्र को रोका ३४ हे शत्रुसन्तापिन् ! इसके पीछे आपके शूरवीरों का युद्ध दूसरों के साथ होने लगा वह युद्ध महाघोर भयानकरूप और समय पर प्राणों का हरनेवाला था ३५ पिता के सम्मुख नियत वृषसेन ने पाँच लोहे के बाणों से और तीन अन्य बाणों से नकुल को छेदा ३६ इसके पीछे हँसते हुए शूरवीर नकुल ने अत्यन्त तीक्ष्ण नाराच से वृषसेन को हृदय पर कठिन पीड्यमान किया ३७ पराक्रमी शत्रु के हाथ से अत्यन्त घायल उस शत्रुओं के पराजय करनेवाले ने बीस बाणों से शत्रु को पीड्यमान किया और उसने भी उसको पाँच बाणों से व्यथित किया ३८ उसके पीछे उन दोनों पुरुषोत्तमों ने हज़ारों बाणों से परस्पर ढक दिया तदनन्तर सेना छिन्न भिन्न हो गई ३९ हे राजन् ! कर्ण ने दुर्योधन की भागी हुई सेना को देखकर उनको पीछे से जाकर रोका ४० इसके पीछे कर्ण के लौटने पर नकुल कौरवों की ओर चला फिर कर्ण के पुत्र ने युद्ध में नकुल को छोड़कर ४१ फिर शीघ्रता से कर्ण की ही सेना को रक्षित किया वहाँ क्रोधयुक्त उलूक को युद्ध में प्रतापवान् सहदेव ने

रोककर ४२ उसके चारों घोड़ों को मार सारथी को यमलोक में पहुँचाया हे राजन् ! इसके पीछे पिता को प्रसन्न करनेवाला उलूक रथ से उतरकर शीघ्र ही त्रिगर्त्त देशियों की सेना में गया ४३ और हँसते हुए सात्यकी ने तेज धारवाले बीस बाणों से शकुनी को छेदकर एक बाण से उसकी ध्वजा को काटा ४४ हे राजन् ! फिर क्रोधयुक्त प्रतापवान् शकुनी ने युद्ध में उसके कवच को चीरकर उसकी सुनहरी ध्वजा को काटा ४५ इसके पीछे शीघ्रता करनेवाले सात्यकी ने बाणों से उसके घोड़ों को यमलोक में पहुँचाया हे भरतर्षभ ! फिर शकुनी अकस्मात् रथ से कूदकर शीघ्र ही ४६।४७ महात्मा उलूक के रथ पर सवार हुआ तब युद्ध को शोभा देनेवाले सात्यकी ने उसको शीघ्रही हटाया ४८ हे राजन् ! फिर सात्यकी आपकी सेना के सम्मुख गया और सेना भिन्न-भिन्न हो गई ४६ सात्यकी के बाणों से ढकी हुई आपकी सेना के लोग शीघ्रही दशों दिशाओं में भागकर निर्जीवों के समान गिर पड़े ५० फिर आपके पुत्र ने युद्ध में भीमसेन को रोका तब भीमसेन ने एक मुहूर्त्त भर में ही वहाँ उस पृथ्वी के राजा दुर्योधन को घोड़े, रथ, सारथी और ध्वजा से रहित कर दिया ५१ उस कर्म से सब मनुष्य प्रसन्न हुए इसके पीछे राजा दुर्योधन भीमसेन के आगे से हट गया ५२ फिर सब कौरवीय सेना ने भीमसेन को घेरा वहाँ भीमसेन के मारने के इच्छावान् शूरवीरों के बड़े शब्द हुए ५३ युधामन्यु ने कृपाचार्य को छेदकर शीघ्र ही उनके धनुष को काटा इसके पीछे शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ कृपाचार्य ने दूसरे धनुष को लेकर ५४ युधामन्यु की ध्वजा सारथी और छत्र को पृथ्वी पर गिराया इसके पीछे महारथी युधामन्यु रथ की सवारी से हट गया ५५ उत्तमौजा ने भयानक रूप और भयानक पराक्रमवाले कृतवर्मा को बाणों से अकस्मात् ऐसा ढक दिया जैसे कि बादल पानी की वर्षा से पर्वत को ढक देता है ५६ हे शत्रुसन्तापिन्, राजन्, धृतराष्ट्र ! वह महाघोर युद्ध ऐसा बहुत बढ़ा हुआ जैसा कि मैंने पहले कभी न देखा था ५७ इसके पीछे कृतवर्मा ने युद्ध में उत्तमौजा को हृदय पर पीड्यमान किया तब वह अकस्मात् रथ के अङ्ग पर बैठ गया ५८ फिर सारथी रथ के द्वारा

उस महारथी को दूर ले गया इसके पीछे सब कौरवीय सेना भीमसेन के ऊपर चढ़ आई ५६ दुश्शासन और शकुनी ने हाथियों की बड़ी सेना समेत भीमसेन को घेरकर क्षुरप्र नाम बाणों से घायल किया ६० तब क्रोधयुक्त भीमसेन सैकड़ों बाणों से क्रोधयुक्त दुर्योधन को विमुख करके बड़ी तीव्रता से हाथियों की सेना पर आ टूटा ६१ वहाँ अत्यन्त क्रोध-युक्त भीमसेन ने उस अकस्मात् आनेवाली हाथियों की सेना को देख-कर दिव्य अस्त्र को प्रकट किया ६२ हाथियों को हाथियों से ऐसे मारा जैसे कि वज्र से इन्द्र असुरों को मारता है ६३ इसके पीछे युद्ध के बीच हाथियों को मारते हुए भीमसेन ने बाणों के समूहों से आकाश को ऐसा ढक दिया जैसे कि टीड़ियों से वृक्ष ढक जाता है इसके पीछे भीमसेन ने मिले हुए हाथियों के हज़ारों झुण्डों को बड़े वेग से ऐसे छिन्न भिन्न कर दिया जैसे कि बादलों के समूहों को वायु तिर्र बिर्र कर देता है सुवर्ण और मणियों के जालों से ढके हुए हाथी ६४।६५ युद्ध में ऐसे अधिक शोभायमान हुए जैसे कि बिजली रखनेवाले बादल हे राजन्! भीमसेन के हाथ से घायल होकर सब हाथी शब्द करते हुए भागे ६६ कितने ही हाथी हृदय में घायल होकर पृथ्वी पर गिर पड़े उन गिरे हुए सुवर्ण भूषणों से अलंकृत हाथियों से ६७ वहाँ पृथ्वी ऐसी शोभायमान् हुई जैसे कि फैले हुए पर्वतों से प्रकाशित मुखवाले रत्नों से अलंकृत गिरने-वाले हाथियों के सवारों से होती है ६८ अथवा पृथ्वी ऐसी मालूम देती थी जैसे कि क्षीण पुण्यवाले ग्रहों के गिरने से शोभायमान होती है इसके पीछे मद झाड़नेवाले टूटे हुए मुखवाले सैकड़ों हाथी भीमसेन के बाणों से घायल होकर युद्ध से भागे भय से पीड़ित बाणों से घायल अङ्ग रुधिर को वमन करनेवाले पर्वताकार अनेक हाथी ६९।७० धातुयुक्त पर्वतों के समान भागे हमने भीमसेन की दोनों धनुष खैंचने-वाली भुजाओं को बड़े सर्प के समान चन्दन अगर से अलंकृत देखा और उसके वज्र के समान शब्दवाले ज्या शब्द को सुनकर ७१।७२ मूत्र विष्ठा को करते हुए हाथी बड़े कठिन शब्दों को करते हुए भागे हे राजन्! उस अकेले बुद्धिमान् भीमसेन का वह कर्म ७३ इस रीति

का शोभित हुआ जैसे कि सब जीवों के मारनेवाले रुद्रजी का होता है ॥ ७४ ॥

इति श्रीमहाभारते कर्णपर्वणि संकुलयुद्धे द्विषष्टितमोऽध्यायः ॥ ६२ ॥

तिरसठवाँ अध्याय

सञ्जय बोले कि इसके अनन्तर श्वेत घोड़ों से युक्त और श्रीनारायणजी के थाँभे हुए उत्तम रथ पर नियत श्रीमान् अर्जुन आकर सम्मुख हुआ १ हे भरतर्षभ! अर्जुन ने युद्ध में आपकी उस बड़ी घोड़ोंवाली सेना को ऐसे छिन्न भिन्न कर दिया जैसे कि वायु बड़े समुद्र को उथल पुथल कर देता है २ अर्जुन के प्रमत्त होने पर आधी सेना को साथ लिये हुए आपके पुत्र दुर्योधन ने अकस्मात् सम्मुख आकर ३ आते हुए क्रोधयुक्त युधिष्ठिर को रोककर तिहत्तर बाणों से घायल किया ४ तब तो कुन्ती के पुत्र युधिष्ठिर बड़े क्रोधयुक्त हुए और शीघ्र ही उसने बीस भल्लों को आपके पुत्र के शरीर में प्रविष्ट किया ५ इसके पीछे युधिष्ठिर के पकड़ने की इच्छा से कौरव दौड़े तब महारथी लोग शत्रुओं का दुष्ट विचार जानकर ६ उस कुन्ती के पुत्र युधिष्ठिर को चाहते हुए सब आनकर इकट्ठे हो गये नकुल सहदेव और पर्षत का पौत्र धृष्टद्युम्न एक अक्षौहिणी सेना समेत युधिष्ठिर के पास दौड़े ७ और युद्ध में आपके महारथियों को मर्दन करता हुआ भीमसेन भी शत्रुओं से घिरा हुआ ८ राजा को चाहता हुआ दौड़ा हे राजन्! सूर्य के पुत्र कर्ण ने उन आनेवाले सब बड़े धनुषधारियों को ९ बाणों की वर्षा से रोका और बाणों की वर्षा करते तोमरों को चलाते १० वह उपाय करनेवाले लोग भी कर्ण की ओर देखने को समर्थ नहीं हुए फिर कर्ण ने उन सब शस्त्रकुशल बड़े-बड़े धनुषधारियों को ११ बाणों की बड़ी वर्षा करके रोका और शीघ्र अस्त्र के प्रकट करनेवाले प्रतापी सहदेव ने दुर्योधन के सम्मुख होकर शीघ्र ही बीस बाणों से छेदा सहदेव के हाथ से घायल पर्वत के समान राजा दुर्योधन १२ । १३ मदोन्मत्त हाथी के समान रुधिर से लिप्त हुआ फिर वहाँ बाणों से घायल हुए आपके पुत्र को देखकर १४ रथियों में श्रेष्ठ कर्ण क्रोधित होकर दौड़ा तब दुर्योधन

को देखकर शीघ्र ही अस्त्र को प्रकट किया १५ उस अस्त्र से युधिष्ठिर की सेनासमेत धृष्टद्युम्न को घायल किया इसके पीछे महात्मा कर्ण के हाथ से घायल और पीड्यमान युधिष्ठिर की सेना अकस्मात् भागी १६ हे राजन्! वहाँ नाना प्रकार के बाण परस्पर में फेंके गये १७ कर्ण के धनुष से निकले हुए बाणों ने भल्लों से पुङ्खों को काटा हे राजन्! अन्तरिक्ष में परस्पर गिरनेवाले बाण समूहों की १८ घिसावट से अग्नि उत्पन्न हुई इसके पीछे कर्ण ने चलनेवाली टीड़ियों के समान शत्रु के शरीर में प्रवेश कर जानेवाले बाणों से बड़े वेगयुक्त होकर दशों दिशाओं को आच्छादित कर दिया लाल चन्दन से चर्चित सुवर्ण और मणियों से अलंकृत १९। २० भुजाओं को उत्तम अस्त्र के दिखानेवाले कर्ण ने चेष्टावान् किया इसके अनन्तर अपने शायकों से सब दिशाओं को व्याप्त करके २१ कर्ण ने धर्मराज युधिष्ठिर को बहुत पीड़ित किया इसके पीछे क्रोधयुक्त धर्म के पुत्र युधिष्ठिर ने २२ तीक्ष्ण पचास बाणों से कर्ण को घायल किया वह युद्धभूमि बाणों से अन्धकारयुक्त होकर महाभयकारी दिखाई दी २३ हे श्रेष्ठ, राजन्, धृतराष्ट्र! तब धर्मपुत्र के हाथ से सेना के घायल हो जाने पर आपके शूरवीरों ने बड़ा हाहाकार किया २४ फिर कङ्कपक्षवाले अनेक शायक तीक्ष्ण धारवाले बहुत से भल्ल नानाशक्ति दुधारे खड्ग और मुसलों से उस धर्मात्मा ने जहाँ-जहाँ अपने क्रोध को प्रकट किया हे भरतर्षभ! तहाँ-तहाँ आपके शूरवीर छिन्न-भिन्न हो गये २५। २६ फिर अत्यन्त क्रोधयुक्त कर्ण ने भी धर्मराज युधिष्ठिर को नाराच अर्द्धचन्द्र और वत्सदन्त नाम बाणों से घायल किया २७ वह अशान्तचित्त क्रोधयुक्त महासाहसी कर्ण क्रोध से ओठों को चबाता हुआ शायकों को लेकर युधिष्ठिर के पास गया २८ तब युधिष्ठिर ने उसको सुनहरी पुङ्खवाले सौ बाणों से घायल किया फिर हँसते हुए कर्ण ने तीक्ष्ण कङ्कपक्ष से जटित २९ तीन भल्लों से उस युधिष्ठिर को छाती पर घायल किया उससे अत्यन्त पीड्यमान राजा युधिष्ठिर ३० रथ के अङ्ग पर बैठकर सारथी से कहने लगा कि चल तदनन्तर सब धृतराष्ट्र के पुत्र और राजा लोग पुकारे ३१ कि राजा को

पकड़ो यह कहकर सब दौड़े उसके पीछे प्रहार करनेवाले केकयदेशियों के एक हज़ार सातसौ रथियों ने ३२ पाञ्चालों समेत धृतराष्ट्र के पुत्रों को रोका और ३३ मनुष्यों के नाशकारी उस कठिन युद्ध के जारी होने पर बड़े पराक्रमी भीमसेन और दुर्योधन परस्पर में सम्मुख हुए ॥३४॥

इति श्रीमहाभारते कर्णपर्वणि संकुलयुद्धे त्रिषष्टितमोऽध्यायः ॥ ६३ ॥

चौंसठवाँ अध्याय

सञ्जय बोले कि, कर्ण ने आगे नियत होनेवाले महारथी केकयदेशियों को अपने बाणजालों से छिन्न-भिन्न कर दिया रोकने में ही उन केकयदेशियों के पाँच सौ रथों को कर्ण ने यमलोक को भेजा १ । २ इसके पीछे शूरवीर लोग नियत हुए कर्ण को रोकने को समर्थ होकर उसके बाणों से अत्यन्त पीड़ित होकर भीमसेन के पास गये ३ फिर कर्ण एक ही रथ के द्वारा बाणों के बल से रथ की सेनाओं को चीरता हुआ युधिष्ठिर के पास गया ४ अपने डेरे को जानेवाले बाणों से घायल शरीर धीरे-धीरे चलनेवाले अचेत हुए नकुल और सहदेव के मध्यवर्ती वीर ५ राजा को पाकर दुर्योधन की प्रसन्नता की इच्छा से कर्ण ने तीक्ष्ण धारवाले तीन उत्तम बाणों से पीड्यमान किया और इसी प्रकार युधिष्ठिर ने भी कर्ण को छाती पर घायल करके तीन बाणों से सारथी को और चार बाणों से घोड़ों को पीड्यमान किया ६ । ७ फिर शत्रुसन्तापी नकुल सहदेव और जो लोग कि अर्जुन की सेना के रक्षक थे वह सब कर्ण की ओर इस निमित्त दौड़े कि यह कहीं राजा को न मारे ८ उन दोनों नकुल और सहदेव ने कर्ण के ऊपर बाणों की वर्षा करी और बड़े उपाय में प्रवृत्त हुए ९ इसी प्रकार प्रतापवान् कर्ण ने भी उन शत्रुओं के विजयी महात्मा दोनों नकुल और सहदेव को बड़े तीक्ष्ण भल्लों से घायल किया १० फिर कर्ण ने धर्मराज के दन्तवर्ण काले बाल और चित्त के समान शीघ्रगामी घोड़ों को भी मारा ११ इसके पीछे बड़े धनुषधारी हँसते हुए कर्ण ने दूसरे भल्ल से युधिष्ठिर के छत्र को गिराया १२ इसी प्रकार प्रतापी बुद्धिमान् कर्ण ने नकुल के भी घोड़ों को मारकर उसके

रथ के ईशा और धनुष को काटा १३ तब मृतक घोड़े और टूटे रथवाले अत्यन्त घायल वह दोनों भाई सहदेव के रथ पर सवार हुए वहाँ शत्रुओं के वीरों का मारनेवाला मामा शल्य उन दोनों को विरथ देखकर १४ करुणा करके कर्ण से बोला कि हे कर्ण! तुझको पाण्डव अर्जुन से लड़ना चाहिये १५ तू अत्यन्त क्रोधरूप होकर धर्मराज के साथ क्यों लड़ता है शस्त्र, अस्त्र, कवच, बाण और तूणीर से रहित १६ रथ के सारथी और घोड़ेवाला होकर यह शत्रुओं के अस्त्रों से टूटे अङ्ग हैं तुम अर्जुन को पाकर हास्य के योग्य होगे १७ इस रीति के शल्य के वचन को सुनकर क्रोधयुक्त कर्ण ने वैसी दशा में भी युधिष्ठिर को घायल किया १८ और पाण्डव नकुल और सहदेव को तीक्ष्ण बाणों से छेदा फिर कर्ण ने हँसकर बाणों से उनका मुख फेर दिया १९ इसके पीछे उस क्रोधयुक्त युधिष्ठिर के मारने में प्रवृत्त कर्ण को शल्य ने हँसकर फिर यह वचन कहा कि हे कर्ण! आपको दुर्योधन ने जिस प्रयोजन के लिये प्रतिष्ठित किया है २० उस अर्जुन को मारो युधिष्ठिर के मारने से तेरा क्या लाभ होगा २१ श्रीकृष्ण और अर्जुन के बड़े शङ्खों के यह बड़े शब्द और धनुष का यह शब्द ऐसा सुना जाता है जैसे कि वर्षाऋतु में बादलों के शब्द होते हैं २२ यह अर्जुन बाणों की वर्षा से महारथियों को मारता हुआ हमारी सब सेना को निगले जाता है हे कर्ण! इसको तुम युद्ध में देखो २३ उस शूर के पृष्ठ के रक्षक युधामन्यु और उत्तमौजा हैं और इसकी उत्तरीय सेना का सात्यकी रक्षक है २४ इसी प्रकार धृष्टद्युम्न उसकी दक्षिणी सेना का रक्षक है और भीमसेन धृतराष्ट्र के पुत्रों से युद्ध करता है २५ सो अब हम सब के देखते हुए वह भीमसेन जैसे उस दुर्योधन को नहीं मारे और जिस प्रकार से वह छूट जाय हे कर्ण! उसी प्रकार तुमको करना चाहिये २६ युद्ध को शोभा देनेवाले और भीमसेन से निगले हुए इस दुर्योधन को देखो जो कदाचित् तुमको पाकर यह छूट जाय तो बड़ा आश्चर्य होय २७ इस बड़े संशय में पड़े हुए दुर्योधन को बचाओ माद्री के पुत्र नकुल सहदेव और राजा युधिष्ठिर के मारने से क्या लाभ है २८ हे राजन्!

कर्ण ने शल्य के इन वचनों को सुनकर और महायुद्ध में भीमसेन से पराजित दुर्योधन को देखकर २९ राजा का अत्यन्त चाहनेवाला और शल्य के वचन से चलायमान बड़ा पराक्रमी कर्ण अजातशत्रु युधिष्ठिर और पाण्डव नकुल सहदेव को छोड़कर ३० आपके पुत्र की रक्षा करने को दौड़ा हे श्रेष्ठ, धृतराष्ट्र! राजा मद्र की प्रेरणा से और मानों आकाशगामी घोड़ों के द्वारा ३१ कर्ण के चले जाने पर कुन्ती का पुत्र युधिष्ठिर और पाण्डव नकुल सहदेव शीघ्रगामी घोड़ों के द्वारा दूर चले गये ३२ वह लज्जायुक्त राजा युधिष्ठिर बाणों से घायल उन दोनों भाइयोंसमेत शीघ्र ही डेरे को पाकर ३३ बहुत शीघ्र रथ से उतरा वहाँ जिसके भल्ल निकाले गये वह राजा युधिष्ठिर हृदय के भालों से महापीड्यमान होकर अपने शुभ शयन पर जाकर लेट गया ३४ और लेटकर अपने महारथी दोनों भाई नकुल और सहदेव से बोला हे पाण्डव! तुम दोनों बहुत शीघ्र भीमसेन की सेना में जाओ ३५ वह भीमसेन बादल के समान गर्जता हुआ लड़ता है इसके अनन्तर बड़े भाई की आज्ञा पाकर शत्रुओं के पीड़ा देनेवाले महातेजस्वी रथियों में श्रेष्ठ पराक्रमी दोनों भाई नकुल और सहदेव दूसरे रथ पर सवार होकर उत्तम वेगवाले घोड़ों के द्वारा भीमसेन की सेना को पाकर ३६ । ३७ दोनों भाई अपनी सेनाओं समेत वहाँ नियत हुए ॥ ३८ ॥

इति श्रीमहाभारते कर्णपर्वणि संकुलयुद्धे चतुष्षष्टितमोऽध्यायः ॥ ६४ ॥

पैंसठवाँ अध्याय

सञ्जय बोले कि हे राजन्! इसके पीछे रथ की सेना के बड़े समूहों समेत अश्वत्थामाजी अकस्मात् वहाँ पहुँचे जहाँ पर अर्जुन नियत था १ श्रीकृष्णजी को साथ रखनेवाले शूरवीर अर्जुन ने अकस्मात् आनेवाले अश्वत्थामा को तत्क्षण ऐसे रोका जैसे कि मर्यादा समुद्र को रोकती है २ हे महाराज! इसके पीछे क्रोधयुक्त प्रतापवान् अश्वत्थामा ने शायकों से श्रीकृष्णजी समेत अर्जुन को ढक दिया ३ इसके पीछे वहाँ पर महारथी कौरवों ने श्रीकृष्ण अर्जुन को ढका हुआ देखकर बड़ा आश्चर्य

किया ४ इसके अनन्तर हे भरतर्षभ ! हँसते हुए अर्जुन ने दिव्य अस्त्रों को प्रकट किया तब अश्वत्थामा ने उस अस्त्र को रोका ५ फिर अर्जुन ने मारने की इच्छा से जिस-जिस अस्त्र को चलाया उस-उस अस्त्र को बड़े धनुषधारी अश्वत्थामा ने नाश कर दिया ६ इसके पीछे बड़े भयकारी अस्त्रों को युद्ध वर्तमान होने पर युद्ध में हमने अश्वत्थामा को मुख फाड़े हुए काल के समान देखा ७ उसने बाणों से दिशा विदिशाओं को आच्छादित करके तीन बाणों से वासुदेवजी को दाहिनी भुजा पर छेदा ८ इसके पीछे अर्जुन ने उस महात्मा के सब घोड़ों को मारकर युद्धभूमि पर रुधिरों के प्रवाहवाली नदी को बहाया ९ वह भयानक नदी सब लोकों को परलोक में प्राप्त करनेवाली महाघोररूपा थी युद्ध में अर्जुन के धनुष से निकले हुए बाणों से रथों समेत सब रथियों को १० और अश्वत्थामा के घोड़ों को मृतक देखा और उस महाघोर शत्रुओं को परलोक में पहुँचानेवाली नदी को इस रीति से जारी किया ११ कि उन दोनों अश्वत्थामा और अर्जुन के महाघोर संग्राम होने पर अमर्यादा से युद्ध करनेवाले शूरवीर पीछे की ओर से दौड़े १२ हे राजन् ! अर्जुन ने युद्ध में घोड़े सारथी समेत रथ वा मृतक सवार-वाले घोड़े और हाथियों के हज़ारों यूथों को मारकर मनुष्यों का घोर नाश कर दिया अर्जुन के धनुष से निकले हुए बाणों से हज़ारों रथी मरकर गिर पड़े १३ । १४ और जिन घोड़ों के योक्त्र छूट गये वह घोड़े जहाँ तहाँ चारों ओर को दौड़े युद्ध में शोभायमान पराक्रमी अश्व-त्थामा अर्जुन के उस कर्म को देखकर १५ उस विजयी अर्जुन के पास शीघ्र ही जाकर स्वर्णमयी बड़े धनुष को टङ्कारता हुआ १६ तीक्ष्ण बाणों से उसको चारों ओर से ढकने लगा हे महाराज ! अश्वत्थामा ने बाणों से अर्जुन को फिर आच्छादित करके १७ बड़ी निर्दयतापूर्वक उसको छाती पर अत्यन्त घायल किया हे भरतवंशिन् ! उस अश्वत्थामा के हाथ से युद्ध में अत्यन्त घायल १८ गाण्डीव धनुषधारी बड़े बुद्धि-मान् अर्जुन ने बाणों की वर्षा से अश्वत्थामा को ढककर उसके धनुष को काटा १९ तब उस टूटे धनुषवाले अश्वत्थामा ने युद्ध में वज्र के

समान स्पर्शवाली परिघ को लेकर अर्जुन के ऊपर फेंका २० हे राजन्! उस स्वर्णमयी आते हुए परिघ को हँसते हुए पाण्डुनन्दन अर्जुन ने अकस्मात् काट डाला २१ फिर अर्जुन के शायकों से वह टूटा हुआ परिघ पृथ्वी पर ऐसे गिर पड़ा जैसे कि वज्र से घायल टूटे हुए पहाड़ गिरते हैं २२ हे महाराज! इसके पीछे क्रोधयुक्त महारथी अश्वत्थामा ने इन्द्रास्त्र के वेग से अर्जुन को ढक दिया २३ तब उस वेगवान् पाण्डव अर्जुन ने उसके फैले हुए इन्द्रजाल को देखकर अपने गाण्डीव धनुष को लिया २४ और महेन्द्र के उत्पन्न किये हुए उत्तम अस्त्र को लेकर इन्द्रजाल को दूर करके अर्जुन ने महेन्द्र की शक्ति से युक्त उस जाल को फाड़कर एक क्षण भर में ही अश्वत्थामा के रथ को ढक दिया इसके अनन्तर अर्जुन के बाणों से दबे हुए अश्वत्थामा ने समीप में आकर २५ अर्जुन की उस बाणवृष्टि को सहके और अपने बाणों से शत्रु को दृष्टि के सम्मुख करके सौ बाणों से अकस्मात् श्रीकृष्णजी को घायल करता हुआ तीन क्षुद्रक नाम बाणों से अर्जुन को घायल किया २६ इसके पीछे अर्जुन ने सौ शायकों से गुरु के पुत्र को मर्मस्थलों पर छेदा और आपके शूरवीरों के देखते हुए घोड़े सारथी कवच और धनुष को काटा २७ फिर उस शत्रुओं के मारनेवाले अर्जुन ने मर्मस्थलों में छेद-कर भल्ल से उसके सारथी को रथ की नीड़ से गिरा दिया २८ फिर उसने आप घोड़ों को थाँभकर बाणों से श्रीकृष्ण और अर्जुन को ढक दिया वहाँ हमने अश्वत्थामा के इस शीघ्र पराक्रम को देखा २६ कि जिसने घोड़ों को भी थाँभा और अर्जुन से भी युद्ध किया हे राजन्! युद्ध में सब शूरवीरों ने उसके उस कर्म की बड़ी प्रशंसा करी ३० इसके पीछे अर्जुन ने हँसकर अपने क्षुरप्र नाम बाणों से शीघ्र ही अश्वत्थामा के घोड़ों की बाग को काटा ३१ फिर बाण के वेग से पीड्यमान होकर वह घोड़े भागे हे भरतवंशिन्! इसके पीछे आपकी सेना का घोर शब्द हुआ ३२ फिर चारों ओर से तीक्ष्ण बाणों को छोड़ते विजयाभिलाषी पाण्डव विजय को पाकर आपकी सेना पर दौड़े ३३ हे महाराज! युद्ध में विजय से शोभायमान वीर पाण्डवों के हाथ से दुर्योधन की बड़ी

सेना वारंवार छिन्न भिन्न हुई ३४ तब अपूर्व युद्ध करनेवाले आपके पुत्र और सौबल के पुत्र शकुनी और कर्ण के देखते हुए सब भागे ३५ उस समय चारों ओर से पीड्यमान आपके पुत्रों से रोकी हुई बड़ी सेना युद्ध में नियत हुई ३६ हे महाराज ! उसके पीछे आपके पुत्रों की बड़ी सेना चारों ओर से भागनेवाले शूरवीरों के कारण व्याकुल और भयभीत हो गई ३७ तदनन्तर ठहरो-ठहरो इस प्रकार से कर्ण के कहने पर भी महात्माओं के हाथ से घायल हुई वह सेना नियत नहीं हुई ३८ हे महाराज ! इसके पीछे दुर्योधन की सेना को चारों ओर से भागी हुई देखकर विजय से शोभायमान पाण्डवों ने बड़े शब्द किये ३९ तब दुर्योधन बड़ी नम्रतापूर्वक कर्ण से बोला हे कर्ण ! देखो, पाञ्चालों के हाथ से बड़ी सेना अत्यन्त पीड़ित हो गई है ४० तेरे नियत होने पर भी भागी हे शत्रुविजयी, महाबाहो ! इस बात को समझकर उचित कर्म करो ४१ हे पुरुषोत्तम वीर ! पाण्डवों के हाथ से भगाये हुए हज़ारों शूरवीर युद्ध में तुझी को पुकारते हैं ४२ दुर्योधन के इस बड़े वचन को सुनकर हँसता हुआ कर्ण भी मद्र देश के राजा से यह वचन बोला ४३ हे राजन् ! अस्त्रों समेत मेरी दोनों भुजाओं के पराक्रम को देखो अब मैं युद्ध में पाण्डवों समेत सब पाञ्चालों को मारता हूँ ४४ हे नरोत्तम ! अब तुम कल्याण के निमित्त घोड़ों को निस्सन्देह चलाओ हे महाराज ! प्रतापी कर्ण ने इस वचन को कहकर ४५ विजय नाम उत्तम और प्राचीन धनुष को लेकर प्रत्यंचा समेत बड़ी दृढ़ता से पकड़कर ४६ सच्चे प्रकार से शूरवीरों को रोककर उस शूर पराक्रमी और साहसी ने भार्गव अस्त्र को धनुष पर चढ़ाया इसके पीछे उस महायुद्ध में लाखों प्रयुतों और अर्बुदों तीक्ष्ण बाण धनुष से निकले ४७ । ४८ उन अग्निरूप घोरकंक और मोर के पंखों से जटित बाणों से पाण्डवी सेना ऐसी ढक गई कि कुछ भी नहीं जान पड़ता था ४९ हे राजन् ! युद्ध में भार्गव अस्त्र से पीड्यमान पराक्रमी पाञ्चालों का बड़ा हाहाकार हुआ ५० हे नरोत्तम, राजन्, धृतराष्ट्र ! चारों ओर से गिरते हुए हज़ारों हाथी घोड़े रथ और चारों ओर से मृतक हुए मनुष्यों से पृथ्वी कम्पायमान हुई और सब पाण्ड-

वीय सेना व्याकुल हुई ५१ । ५२ हे नरोत्तम ! शत्रुओं का तपाने-
वाला अकेला कर्ण शत्रुओं को भस्म करता हुआ निर्धूम अग्नि के
समान शोभायमान हुआ ५३ कर्ण के हाथ से घायल वह पाञ्चाल
चन्देरी देशियों समेत जहाँ तहाँ ऐसे अचेत हो गये जैसे कि वन के
भस्म होने में हाथी अचेत हो जाते हैं ५४ हे नरोत्तम ! वह उत्तम पुरुष
व्याघ्रों के समान पुकारे इसके पीछे युद्ध में उन भयभीत पुकारनेवाले ५५
और चारों ओर से दौड़नेवालों के ऐसे बड़े शब्द उत्पन्न हुए जैसे कि
महाप्रलय में जीवों के शब्द होते हैं ५६ हे श्रेष्ठ ! फिर कर्ण के हाथ
से घायल उन जीवों को देखकर पशु पक्षी जीव भी भयभीत हो
गये ५७ युद्ध में कर्ण के हाथ से घायल वह सृञ्जय अर्जुन और वासु-
देवजी को वारंवार ऐसे पुकारते थे ५८ जैसे कि यमपुरी में दुःखी जीव
यमराज को पुकारते हैं कर्ण के शायकों से घायल होनेवालों के शब्दों
को सुनकर ५९ कुन्ती का पुत्र अर्जुन वहाँ पर छोड़े हुए भार्गवास्त्र को
देखकर वासुदेवजी से बोला ६० हे महाबाहो श्रीकृष्णजी ! भार्गवास्त्र के
पराक्रम को देखो यह अस्त्र युद्ध में कैसे नाश करने के योग्य नहीं है ६१
हे श्रीकृष्णजी ! युद्ध में भयकारी कर्म करनेवाले पराक्रम में यमराज के
समान क्रोधरूप कर्ण को देखो ६२ यह कर्ण घोड़ों को चला-चलाकर
प्रति पद वारंवार मुझको देखता है मैं युद्ध में कर्ण से भागनेवाला नहीं
हूँ ६३ मनुष्य युद्ध में विजय और पराजय दोनों पाता है हे शत्रसंहारी
श्रीकृष्णजी ! मृतक मनुष्य की तो पराजय ही होती है विजय कैसे हो
सकती है ६४ अर्जुन के इस वचन को सुनकर श्रीकृष्णजी ने बुद्धि-
मानों में श्रेष्ठ अर्जुन से समय के अनुसार यह वचन कहा ६५ कि कर्ण
के हाथ से राजा युधिष्ठिर अत्यन्त घायल हुआ है हे अर्जुन ! तुम उसको
देखकर और भरोसा देकर फिर कर्ण को मारोगे ६६ हे राजन् ! ऐसा
कहकर युधिष्ठिर को देखना चाहते और युद्ध में कर्ण को थकावट में
पकड़ना चाहते श्रीकृष्णजी चले ६७ इसके पीछे केशवजी की आज्ञा
से अर्जुन बाणों से पीड्यमान राजा युधिष्ठिर के देखने को रथ की सवारी
के द्वारा युद्धभूमि से शीघ्र ही अपने डेरों को गया ६८ तब चलते हुए

अर्जुन ने धर्मराज के दर्शन की अभिलाषा से सेना को देखा और उसमें अपने बड़े भाई को नहीं देखा ६९ हे भरतवंशिन् ! वह अर्जुन अश्वत्थामा से युद्ध करके और उस वज्रधारी इन्द्र से भी न रुकनेवाले अपने गुरु के पुत्र को पराजय करके चल दिया ॥ ७० ॥

इति श्रीमहाभारते कर्णपर्वणि संकुलयुद्धे पञ्चषष्टितमोऽध्यायः ॥ ६५ ॥

छासठवाँ अध्याय

सञ्जय बोले कि इसके पीछे उग्रधनुषधारी शत्रुओं से अजेय अर्जुन ने अश्वत्थामा को पराजय कर बड़े कठिन शूरों के कर्मों को करके फिर अपनी सेना को देखा १ महात्मा अर्जुन शूरों के साथ युद्ध न करनेवाली सेना के मुख पर नियत शूरवीरों को प्रसन्न करता और पहले प्रहारों से घायल और नियत हुए बहुत रथियों की प्रशंसा करता हुआ २ और अजमीढ़वंशीय अपने भाई युधिष्ठिर को न देखकर भीमसेन के पास जाकर यह वचन बोला कि राजा कहाँ हैं और किस रीति से उसने युद्ध किया ३ भीमसेन ने कहा कि कर्ण के बाणों से पीड्यमान धर्मपुत्र युधिष्ठिर यहाँ से हट गया है और किसी प्रकार से जीवता है ४ अर्जुन ने कहा कि हे भीमसेन ! आप शीघ्रता से उस कौरवों में श्रेष्ठ राजा की खबर लेने को यहाँ से चलो निश्चय करके वह राजा युधिष्ठिर कर्ण के बाणों से अत्यन्त घायल होकर अपने डेरे को गया है ५ द्रोणाचार्य के तीक्ष्णधार बाणों के प्रहारों से अत्यन्त घायल होकर भी वेगवान् राजा युधिष्ठिर विजय की अभिलाषा करके जब तक वहाँ नियत नहीं हुआ था तब तक द्रोणाचार्यजी भी नहीं मरे थे ६ वह महानुभाव बड़ा पाण्डव अब युद्ध में कर्ण के हाथ से संशय संयुक्त हुआ है हे भीमसेन ! अब तुम बड़ी शीघ्रता से उनके निश्चय करने को जाओ और मैं शत्रुओं को रोककर नियत हूँगा ७ भीमसेन बोले हे महानुभाव ! तुम भी उस भरतर्षभ युधिष्ठिर के वृत्तान्त को जानते हो और हे अर्जुन ! जो मैं यहाँ से चला जाऊँगा तो बड़े शूरवीर शत्रु मुझको अपने से भयभीत हुआ कहेंगे ८ तब अर्जुन ने भीमसेन से कहा कि संसप्तक मेरी सेना के

सम्मुख नियत हैं अब उनको विना मारे इन शत्रुसमूहों के स्थान से जाना योग्य नहीं है ९ हे कौरवों में बड़े वीर ! तब भीमसेन अपने पराक्रम को पाकर अर्जुन से बोले कि मैं संसप्तकों के सम्मुख युद्ध करने को जाऊँगा हे अर्जुन ! तुम चले जाओ १० शत्रुओं के मध्य में भाई भीमसेन के कठिनता से होने के योग्य इस वचन को कि हे अर्जुन ! मैं अकेला बड़ी कठिनता से विजय होनेवाले महा असहनशील संसप्तकों की सेना को रोकूँगा सुनकर ११ महापराक्रमी सत्यवक्ता वानरध्वज अर्जुन महात्मा कौरवों में श्रेष्ठ सत्यपराक्रमी भाई युधिष्ठिर के देखने को चलनेवाला होकर उन वृष्णिवंशियों में श्रेष्ठ श्रीनारायणजी से बोला कि हे इन्द्रियों के स्वामिन् ! इस समुद्ररूप सेना को त्यागकर घोड़ों को चलाइये हे केशवजी ! अजातशत्रु राजा युधिष्ठिर को मैं देखना चाहता हूँ १२ । १३ सञ्जय बोला कि तदनन्तर घोड़ों को चलायमान करते हुए सब यादवों में श्रेष्ठ श्रीकृष्णजी भीमसेन से यह बात बोले कि हे भीमसेन ! अब यह तेरा कर्म कुछ अपूर्व नहीं है मैं जाता हूँ तुम बाणों के समूहों से शत्रुओं के समूहों को मारो १४ हे राजन् ! इसके पीछे श्रीकृष्णजी गरुड़ के समान शीघ्रगामी घोड़ों के द्वारा बड़ी शीघ्रता से जहाँ राजा युधिष्ठिर था १५ वहाँ गये हे राजेन्द्र ! उस शत्रुविजयी भीमसेन को युद्ध के विषय में समझाकर सेना के सम्मुख नियत करके १६ फिर पुरुषों में बड़े वीर दोनों श्रीकृष्ण अर्जुन युधिष्ठिर के समीप गये और वहाँ अकेले ही सोते हुए राजा को पाकर दोनों ने रथ से उतरकर धर्मराज के चरणों को नमस्कार किया श्रीकृष्ण और अर्जुन उस पुरुषोत्तम को कुशलपूर्वक देखकर ऐसे प्रसन्न हुए जैसे कि इन्द्र को देखकर अश्विनीकुमार प्रसन्न होते हैं १७ । १८ फिर राजा ने भी उनको ऐसा प्रसन्न किया जैसे कि इन्द्र अश्विनीकुमारों को और जैसे महाअसुर जम्भ के मरने पर बृहस्पतिजी ने इन्द्र और विष्णु को किया था १९ सञ्जय बोले कि इसके पीछे शत्रुसन्तापी राजा युधिष्ठिर कर्ण को मृतक मानता हुआ बड़ी प्रसन्नतापूर्वक बाणों से भिदे हुए रुधिर से लिप्तशरीर महाप्रतापी लाल नेत्रवाले उन बड़े पराक्रमी साथ आने-

वाले अर्जुन और केशवजी को देखकर युद्ध में गाण्डीव धनुषधारी के हाथ से कर्ण को मृतक माना २० । २२ हे भरतर्षभ ! मन्द मुसकान-पूर्वक दोनों की प्रशंसा करते युधिष्ठिर ने उन शत्रुसंहारी श्रीकृष्ण अर्जुन को बड़ी मृदुता और मिष्टवाणी से प्रसन्न किया ॥ २३ ॥

इति श्रीमहाभारते कर्णपर्वणि संकुलयुद्धे षट्षष्टितमोऽध्यायः ॥ ६६ ॥

सड़सठवाँ अध्याय

युधिष्ठिर बोले कि हे श्रीकृष्णजी ! आपका आगमन शुभकारी हो तुम दोनों श्रीकृष्णजी और अर्जुन का दर्शन मुझको अत्यन्त अपूर्व है १ अक्षत और निर्विघ्न आप दोनों के हाथों से वह महारथी कर्ण मारा गया ही जानो जो युद्ध में विषधर सर्प की समान सब शस्त्रों में कुशल २ धृतराष्ट्र के पुत्रों का सहायक और सब कौरवीय सेना का रक्षक और वृद्धिकर्ता धनुषधारी वृषेण वा सुषेण से रक्षित श्रीपरशुरामजी से अस्त्रों का सीखनेवाला बड़ा पराक्रमी दुर्जय संसार में अद्वितीय महारथी धृत-राष्ट्र के पुत्रों का रक्षक सेना के मुख पर जानेवाले शत्रुओं का मारने-वाला वा मर्दन करनेवाला है ३ । ५ दुर्योधन के हित में युक्त हमारे पीड़ा देने के निमित्त युद्ध में देवताओं समेत इन्द्र से भी अजेय तेजबल में अग्नि वायु के समान पाताल के समान गम्भीर मित्रों की प्रसन्नता का बढ़ानेवाला है ६ । ७ उस मेरे मित्रों के मारनेवाले कर्ण को युद्ध में मारकर प्रारब्ध से तुम दोनों ऐसे आये हो जैसे कि असुर को मारकर दो देवता आते हैं ८ सब सृष्टि के मारने के अभिलाषी यमराज के समान अपने को बड़ा माननेवाले उस कर्ण ने हे श्रीकृष्ण ! और अर्जुन ! मेरे साथ बड़ा घोर युद्ध किया ९ उसने मेरी ध्वजा काटकर दोनों आगे पीछे-वाले सारथियों को भी मारा तदनन्तर मैं सात्यकी के देखते हुए मृतक घोड़ेवाला हो गया १० धृष्टद्युम्न नकुल सहदेव वीर शिखण्डी वा द्रौपदी के पुत्र और सब पाञ्चालों के देखते हुए उसने ऐसा कर्म किया ११ हे महाबाहो ! उस उपाय करनेवाले महापराक्रमी कर्ण ने शत्रुओं के बहुत से समूहों को मारकर मुझको विजय किया १२ हे शूरों में श्रेष्ठ अर्जुन !

उस कर्ण ने जहाँ तहाँ मुझको पराजय को करके निस्सन्देह पूर्वक बहुत कठोर असभ्य वचन कहे १३ हे अर्जुन ! मैं भीमसेन के प्रभाव से अब तक जीवता हूँ बहुत सी बातों के कहने से क्या प्रयोजन है मैं उस कर्ण को अब नहीं सह सकता हूँ १४ हे अर्जुन ! मैंने तेरह वर्ष तक जिससे भयभीत होकर न रात्रि को निद्रा ली न दिन को कहीं सुख चैन पाया १५ हे अर्जुन ! उसकी शत्रुता से युक्त होकर भस्म हो रहा हूँ और अपने मरण को प्राप्त होकर वाध्रीनस मेढ़े के समान भागा हूँ १६ बहुत काल से मुझ चिन्ता से युक्त होनेवाले का अब यह समय वर्तमान हुआ है वह कर्ण युद्ध में मेरे हाथ से कैसे पराजय होने को योग्य होय १७ हे अर्जुन ! मैं जागते सोते उठते बैठते चलते फिरते जहाँ तहाँ हर समय कर्ण ही को देखता हूँ अर्थात् सब संसार मुझको कर्ण ही रूप दीखता है १८ हे अर्जुन ! मैं कर्ण से ऐसा भयभीत हो रहा हूँ कि जहाँ-जहाँ जाता हूँ वहाँ-वहाँ कर्ण को ही नियत देखता हूँ १९ हे श्रीकृष्ण ! और अर्जुन ! उस युद्ध से कभी न हटनेवाले वीर कर्ण ने मुझको घोड़े और रथ समेत विजय करके जीवता त्याग किया है २० अब मुझ कर्ण के हाथ से पराजय पानेवाले का इस संसार में जीवना व्यर्थ है २१ पूर्व में भीष्मजी द्रोणाचार्य वा कृपाचार्य से भी ऐसा दुःख मैंने नहीं पाया था जैसा कि अब युद्ध में इस महारथी कर्ण से पाया है २२ हे अर्जुन ! अब मैं तुझसे यह पूछता हूँ कि किस रीति से निर्विघ्नतापूर्वक तेरे हाथ से कर्ण मारा गया उस सब वृत्तान्त को यथावास्थित ब्योरे समेत मुझसे वर्णन करो २३ पराक्रम में यमराज और पुरुषार्थ में इन्द्र के समान और अस्त्रों में परशुरामजी के समान वह कर्ण युद्ध में कैसे मारा गया २४ महारथी और सब युद्धों में कुशल धनुर्धारियों में अत्यन्त श्रेष्ठ और सब में अकेला पुरुषार्थी २५ वह कर्ण तेरे ही निमित्त पुत्रों समेत धृतराष्ट्र से स्तुति किया गया था वह तेरे हाथ से कैसे मारा गया २६ हे पुरुषोत्तम अर्जुन ! वह दुर्योधन सदैव सब शूरों के मध्य में कर्ण ही को तेरा मारनेवाला मानता था वह कर्ण तेरे हाथ से कैसे मारा गया २७ । २८ और तुमने उसके शुभचिन्तकों के देखते हुए उस युद्ध करनेवाले का शिर

ऐसे काट डाला जैसे कि रुरु नाम मृग का शिर सिंह काटता है २६ छः हाथी दान करने का इच्छावान् युद्ध में तुझको चाहनेवाले जिस कर्ण ने दिशा और विदिशाओं को सेवन किया वह दुरात्मा कर्ण क्या अब तेरे अत्यन्त तीक्ष्ण बाणों से ३० युद्ध में मरा हुआ पृथ्वी पर सोता है युद्ध में तैंने कर्ण को मारकर मेरा बड़ा भारी अभीष्ट किया ३१ जो कर्ण सदैव पूजित और अहङ्कारयुक्त होकर तेरे निमित्त सब ओर को दौड़ा वह अपने को शूर माननेवाला तुझको युद्ध में पाकर अब क्या मारा गया ३२ हे तात ! जो कि तेरे निमित्त हाथी घोड़ों समेत उत्तम सुनहरी रथों को दूसरे लोगों को देने की इच्छा कर रहा था और सदैव युद्ध में ईर्षा करनेवाला था वह पापात्मा क्या युद्ध में तेरे हाथ से मारा गया ३३ जो बल पुरुषार्थ में दुर्मद सदैव कौरवों की सभा में निरर्थक वार्तालाप करता था और उस दुर्योधन का अत्यन्त प्रिय था अब वह दुष्टात्मा क्या तेरे हाथ से मारा गया ३४ सम्मुख होकर तेरे चलाये हुए रुक्माङ्गवाले आकाशचारी बाणों से शरीर में अत्यन्त घायल था वह पापी कर्ण क्या अब सोता है दुर्योधन की भुजा ढीली और निर्बल हुई ३५ जो यह कर्ण अपने अज्ञान से राजाओं के मध्य में दुर्योधन को प्रसन्न करता हुआ अहङ्कार में भरा हुआ सदैव अपनी यह प्रशंसा करता था कि मैं अर्जुन का मारनेवाला हूँ क्या उसका वह वचन ठीक नहीं हुआ ३६ कि मैं तब तक कभी पदातिरूप से नहीं दौडूँगा जब तक कि अर्जुन नियत होकर वर्तमान है उस निर्बुद्धि का सदैव यही व्रत था हे इन्द्र के पुत्र, अर्जुन ! वह कर्ण क्या अब तेरे हाथ से मारा गया ३७ जिस दुष्ट-बुद्धि कर्ण ने सभा में कौरवीयवीरों के मध्य में द्रौपदी से यह कहा था कि हे कृष्णे ! तू इन अत्यन्त निर्बल और नाशयुक्त पुरुषार्थरहित पाण्डवों को क्यों नहीं त्याग करती है ३८ और उसी कर्ण ने तेरे विषय में प्रतिज्ञा करी थी कि मैं श्रीकृष्ण समेत अर्जुन को विना मारे हुए यहाँ नहीं आऊँगा वह पापबुद्धि तेरे बाणों से घायल हुआ अब क्या सो रहा है ३९ सृञ्जयों और कौरवों के इस युद्ध को क्या तुम जानते हो जिसमें कि मेरी यह दशा हो गई है अब वह दुरात्मा क्या तेरे हाथ से मारा

गया ४० हे अर्जुन ! तुमने युद्ध में अपने गाण्डीव धनुष से छोड़े हुए अग्निरूप बाणों से उस अत्यन्त निर्बुद्धि कर्ण का कुण्डलों समेत देदीप्यमान शिर क्या शरीर से काट डाला है ४१ हे वीर ! जो मुझ बाणों से घायल ने तुमको कर्ण के मारने के निमित्त ध्यान किया है अब तुमने कर्ण के मारने से क्या वह मेरा ध्यान सफल किया ४२ जो दुर्योधन कर्ण के आश्रित होकर हमको देखता है अब तुमने उस दुर्योधन के रक्षक को क्या पराजय किया ४३ पूर्व समय में जिसने सभा के मध्यवर्ती होकर कौरवों के सम्मुख हमको थोथेतिल और नपुंसक कहा वह दुर्बुद्धि और क्रोध से भरा हुआ कर्ण सम्मुख होकर क्या युद्ध में तेरे हाथ से मारा गया ४४ पूर्वकाल में जिस हँसते हुए दुरात्मा कर्ण ने शकुनी से जीती हुई द्रौपदी को बड़ी हठता से कहा था कि इस द्रौपदी को यहाँ लावो वह कर्ण क्या अब तेरे हाथ से मारा गया ४५ और जिस निर्बुद्धि ने विख्यात शस्त्रधारी महात्मा पितामह की निन्दा करी हे अर्जुन ! वह अर्धरथी क्या तेरे हाथ से अब मारा गया ४६ हे अर्जुन ! अब तुम इस बात को कहकर कि वह कर्ण युद्ध में मेरे हाथ से मारा गया है मेरे हृदय की जलती हुई अग्नि को बुझावो क्योंकि वह अग्नि अमर्षजनित वायु से प्रेरित मेरे हृदय में प्रदीप्त होकर सदैव नियत रहती है ४७ सो हे अर्जुन ! तेरे हाथ से कर्ण कैसे मारा गया है उस मेरे दुष्प्राप्य मनोरथ को वर्णन करो हे बड़े वीर ! मैं तुझको सदैव ऐसे ध्यान करता हूँ जैसे कि वृत्रासुर के मरने पर भगवान् इन्द्र ध्यान किये गये थे ॥ ४८ ॥

इति श्रीमहाभारते कर्णपर्वणि युधिष्ठिरवाक्ये सप्तषष्टितमोऽध्यायः ॥ ६७ ॥

अड़सठवाँ अध्याय

सञ्जय बोले कि वह अत्यन्त पराक्रमी महात्मा अतिरथी अर्जुन उस क्रोधयुक्त धर्म के अभ्यासी राजा के उस वचन को सुनकर उस निर्भय और महापराक्रमी युधिष्ठिर से बोला १ हे राजन् ! अब कौरवीय सेना में आगे चलनेवाला अश्वत्थामा विषैले सर्परूप बाणों को छोड़ता मुझ संससकों से भिड़े हुए के सम्मुख आकर अकस्मात् नियत हुआ २ हे

श्रेष्ठ ! वह अश्वत्थामा बादल के समान शब्दायमान मेरे रथ को देखकर सब सेना के मध्य में आकर नियत हुआ तब मैंने उसके पाँच सौ वीरों को मारकर फिर अश्वत्थामा को पाया हे महाराज ! वह बड़ा सावधान मुझको पाकर ऐसे मेरे सम्मुख हुआ जैसे कि सिंह के सम्मुख गजराज आता है हे महाराज ! उसने मरनेवाले कौरवीय रथों के बचाने का उपाय किया ३ । ४ तदनन्तर दुःख से कम्पायमान कौरवों के अत्यन्त श्रेष्ठ शूरवीर उस आचार्य के पुत्र ने युद्ध में श्वेतरङ्गवाले कुछ कम विष और अग्नि के समान बाणों से श्रीकृष्णजी समेत मुझको अत्यन्त पीड्यमान किया ५ उस मुझसे लड़नेवाले अश्वत्थामा के बाणों को आठ बैल रखनेवाले आठ सौ छकड़े ले चलते हैं मैंने उसके छोड़े हुए उन बाणों को अपने बाणों से ही ऐसे नाश कर दिया जैसे कि बादलों के जाल समूहों को वायु नाश कर देती है इसके पीछे सुशिक्षित अस्त्रों के बल से बड़े प्रयास से कर्णपर्यन्त खैंचे हुए अनेक बाण समूहों को ऐसे छोड़ता हुआ जैसे कि वर्षाऋतु में काल मेघ नाम बादल जल को बरसाता है ६ । ७ हमने उस बाण लेते और चढ़ाते हुए को नहीं जाना कि वह बायें हाथ से वा दक्षिण हाथ से बाणों को फेंकता है वह अश्वत्थामा युद्ध में सम्मुख वर्तमान हुआ ८ जिस अश्वत्थामा का प्रत्यञ्चा से युक्त धनुषमण्डल के समान दिखाई देता था उस अश्वत्थामा ने पाँच बाणों से मुझको और पाँच ही बाणों से वासुदेवजी को छेदा ९ तब तो मैंने एक पलमात्र में ही वज्र के समान तीस बाणों से उसको पीड्यमान किया फिर मेरे पृषत्क नाम बाणों से पीड़ित होकर वह अश्वत्थामा क्षण में ही श्वाविध् (स्याही) के समान रूपवाला हो गया १० सब अङ्गों से रुधिर को डालता हुआ वह अश्वत्थामा मुझसे पराजित होकर सेना के बड़े-बड़े श्रेष्ठ मनुष्यों को अपने रुधिर भरे हुए शरीर से देखता हुआ कर्ण के रथों की सेना में चला गया ११ उसके पीछे मारनेवाला कर्ण युद्ध में अपनी सेना को भयभीत और हाथी घोड़े और रथों को भगाता हुआ देखकर पचास उत्तम रथियों को साथ में लिये हुए बड़ी शीघ्रता करता हुआ मेरे सम्मुख आया १२ मैं उनको मारकर

युद्ध का भार भीमसेन के सिपुर्द कर और कर्ण को छोड़ करके आपके देखने को बड़े वेग से शीघ्रता करके आया हूँ सब पाञ्चाल लोग कर्ण को देखकर ऐसे भयभीत हुए जैसे कि केशरीसिंह को देखकर गौवें भय-भीत होती हैं १३ हे राजन्! प्रभद्रक नाम क्षत्रिय मृत्यु के फैले हुए मुख को प्राप्त करके और कर्ण को पाकर युद्ध करनेवाले हुए तब कर्ण ने मृत्युरूपी नदी में डूबे हुए उन सात सौ रथियों को मृत्युलोक में भेजा १४ हे राजन्! वह कर्ण भी तब तक चित्त से पीड्यमान और क्लान्त चित्त ही रहा जब तक कि उसने हम लोगों को नहीं देखा फिर तुमको उससे भिड़ा हुआ और अश्वत्थामा से पहिले बहुत घायल हुआ सुनकर १५ मैं कर्ण से हट जाने का आपका समय मानता हूँ हे ध्यान से वीरों के कर्म करनेवाले, राजन्, युधिष्ठिर! मैंने पूर्व ही कर्ण का यह अपूर्व रूप-वाला अस्त्र देखा १६ सृञ्जयों में कोई ऐसा शूरवीर नहीं वर्त्तमान है जो अब उस महारथी कर्ण का सामना कर सके हे राजन्! मेरी सेना का रक्षक धृष्टद्युम्न, सात्यकी १७ और युधामन्यु, उत्तमौजा यह दोनों राजकुमार भी पीछे की ओर से मेरी रक्षा करें हे महानुभाव! मैं कठिनता से पार होने के योग्य महावीर और रक्षापूर्वक शत्रु की सेना में वर्त्तमान उस सूतपुत्र कर्ण से अपने सहायकों समेत सम्मुख होकर युद्ध में ऐसे युद्ध करूँगा जैसे कि वज्रधारी अपने वज्र से युद्ध करता है हे राजाओं में श्रेष्ठ, भरतवंशिन्! अब जो वह इस युद्ध में दिखाई देता है १८। १९ उस सूतपुत्र का और मेरा युद्ध जय के निमित्त आप ऐसे देखोगे जैसे कि नन्दी के मुख के आश्रयी प्रभद्रक कर्ण के सम्मुख जाते हैं २० हे भरतवंशिन्! वह राज-कुमार बाँधे मारे और युद्ध में सब लोक के अर्थ डूबे इससे हे राजन्! अब जो मैं हठ करके बान्धवोंसहित उस लड़नेवाले कर्ण को नहीं मारूँ तो प्रतिज्ञा के न करनेवाले की जो घोर गति है उसको मैं पाऊँ मैं आपसे पूछता हूँ आप युद्ध में मेरी विजय को कहिये और मेरे आगे-आगे भीमसेन धृतराष्ट्र के पुत्रों को ग्रसे २१। २२ तब हे राजाओं में श्रेष्ठ! मैं कर्ण समेत सेना को और शत्रुओं के सब समूहों को मारूँगा ॥ २३ ॥

इति श्रीमहाभारते कर्णपर्वण्यर्जुनप्रतिज्ञायामष्टषष्टितमोऽध्यायः ॥ ६८ ॥

उनहत्तरवाँ अध्याय

सञ्जय बोले कि बड़ा तेजस्वी कर्ण के बाणों से पीड्यमान युधिष्ठिर कर्ण को समर्थ और बड़ा पराक्रमी सुनकर अर्जुन से महाक्रोधयुक्त होकर यह वचन कहने लगा १ कि हे भाई ! तेरी सेना भागी और जैसी रीति से अब पराजित हुई वह श्रेष्ठ नहीं है तुम कर्ण के मारने को समर्थ नहीं हो सके हो इसी हेतु से तुम भीमसेन को वहाँ छोड़कर भयभीत होकर यहाँ चले आये हो २ हे अर्जुन ! तुमने कुन्ती के गर्भ से उत्पन्न होकर जैसी प्रीति करी वह श्रेष्ठ नहीं है कि कर्ण के मारने में समर्थ न होकर भीमसेन को त्याग करके हट आया ३ द्वैतवन में जो तुमने सत्यप्रतिज्ञा करी थी कि मैं एक रथ से कर्ण को मारूँगा उस वचन को कहकर अब कैसे कर्ण से भयभीत होकर भीमसेन को छोड़कर हट आया है ४ जो तू द्वैतवन ही में यह कह देता कि हे राजन् ! मैं कर्ण से लड़ने को समर्थ न होऊँगा तो हे अर्जुन ! हम अपने समय के अनुसार सब कामों को करते ५ हे वीर ! तैंने मेरे साम्हने उसके मारने की प्रतिज्ञा करके उस प्रतिज्ञा को पूरा नहीं किया उसी प्रतिज्ञा ने हम सबको शत्रुओं के मध्य में लाकर युद्धभूमिरूपी शिला पर छोड़कर किस हेतु से पीसा है ६ इसके विशेष हे अर्जुन ! वन जाने के अभिलाषी हम लोगों ने तेरे विषय में विश्वास करके बहुत से अपने अभिमत कल्याणों की आशा करी थी हे राजपुत्र ! हम सब फल चाहनेवालों की वह सब आशा ऐसे निष्फल हो गई जैसे कि बहुत से फल रखनेवाला वृक्ष निष्फल होय ७ अथवा जैसे कि मांस से ढकी हुई बंशी और भोजन से ढका हुआ विष होता है इसी प्रकार तुमने भी मुझ राज्याभिलाषी के नाश के अर्थ राज्यरूपी अनर्थ को दिखलाया है ८ हे अर्जुन ! हम उन तेरह वर्षों तक सदैव आशा करके तेरे ही पीछे ऐसे जीवते रहे जैसे कि बोया हुआ बीज समय पर देवता इन्द्र की कृपा से वर्षा की आशा करता है सो तुमने हम सबको नरक में डुबाया ९ तुझ निर्बुद्धि के उत्पन्न होने के सात दिन पीछे अन्तरिक्ष से यह आकाशवाणी हुई थी

कि यह पुत्र इन्द्र के समान पराक्रमी उत्पन्न हुआ है यह शत्रुरूप शूरवीर मनुष्यों को विजय करेगा १० और मद्र कलिङ्ग और केकयदेशियों को भी विजय करके राजाओं के मध्य में सब कौरवों को मारेगा ११ इससे उत्तम कोई धनुषधारी नहीं होगा कोई जीवधारी इसको कभी विजय नहीं कर सकेगा यह जितेन्द्रिय और सब विद्याओं में पूर्ण होकर अपनी इच्छा से सब जीवमात्रों को अपने आधीन करेगा १२ हे कुन्ती ! यह तेरा पुत्र कान्ति और शोभा में चन्द्रमा के समान तीव्रता और शीघ्रता में वायु के सदृश और स्थिरता में मेरु पर्वत के समान क्षमा करने में पृथ्वी के तुल्य तेज में सूर्य के समान लक्ष्मी में कुबेर के शूरता में इन्द्र के पराक्रम में विष्णु के समान यह महात्मा ऐसा उत्पन्न हुआ है १३ जैसे कि शत्रुओं के मारनेवाले दिति के पुत्र विष्णुजी अपने लोगों के विजय और शत्रुओं के मारने के निमित्त सब जगत् में विख्यात महा-तेजस्वी धनुष चलानेवाले उत्पन्न हुए हैं १४ शतशृङ्ग के मस्तक पर अन्तरिक्ष में यह सब तपस्वी लोगों के सुनते हुए आकाशवाणी ने कहा है सो वह जैसा कहा था वैसा नहीं हुआ इससे निश्चय करके देवता भी मिथ्या बोलते हैं १५ और इसी प्रकार सदैव तेरी प्रशंसा करनेवाले अन्य-अन्य उत्तम ऋषियों के वचनों को सुनकर दुर्योधन के शिष्टाचार को अङ्गीकार नहीं करता हूँ और कर्ण के भय से पीड्यमान तुझको नहीं जानता हूँ १६ हे अर्जुन ! त्वष्टा देवता के बनाये हुए निश्शब्द पहियेवाले हनुमान्‌जी की ध्वजा रखनेवाले उस शुभ रथ पर सवार होकर और स्वर्णमयी वेष्टन से अलंकृत खड्ग को और तालवृक्ष के समान इस गाण्डीव धनुष को लेकर १७ केशवजी के साथ रथ पर सवार होकर तुम कर्ण से भयभीत होकर कैसे हट आये अब उस धनुष को केशवजी को दो और तुम युद्ध में केशवजी के सारथी बनो १८ तब केशवजी उस उग्र कर्ण को ऐसे मारेंगे जैसे कि वज्रधारी इन्द्र ने वृत्रासुर को मारा है जो तू अब इस घूमनेवाले उग्र कर्ण के मारने में समर्थ नहीं है १९ तो जो राजा अस्त्रविद्या में तुझसे अधिक हो उसको यह गाण्डीव धनुष दे दो हे पाण्डव ! अब यह लोक पुत्र स्त्रियों से रहित

और राज्य के नाश करने के हेतु से आनन्द और कुशलता से रहित हम लोगों को २० उस पापियों से सेवित अगाध और घोर नरक में पड़ा हुआ देखेगा जो तू कुन्ती के गर्भ में न पैदा होता तो इस दुःख में काहे को पड़ता २१ हे राजपुत्र, निर्बुद्धे ! वहीं तेरा कल्याण हो जाता जो तू युद्ध से हटकर न आता गाण्डीव धनुष को और तेरे भुजबल को २२ धिक्कार है और तेरे असंख्य बाणों को भी धिक्कार है और हनुमानरूप धारण करनेवाली तेरी ध्वजा को भी धिक्कार और अग्नि के दिये हुए तेरे रथ को धिक्कार है ॥ २३ ॥

इति श्रीमहाभारते कर्णपर्वणि कर्णमतियुधिष्ठिरक्रोधवाक्ययेकोनसप्ततितमोऽध्यायः ६९॥

सत्तरवाँ अध्याय

सञ्जय बोले कि हे भरतर्षभ ! युधिष्ठिर के इन बाणरूप निन्दित वाक्यों को सुनकर महाक्रोधरूप होकर कुन्ती के पुत्र अर्जुन ने मारने की इच्छा करके हाथ में खड्ग को लिया १ तब अन्तर्यामी सबके मन के जाननेवाले श्रीकृष्णजी ने उसके क्रोध को देखकर कहा कि हे अर्जुन ! यह क्या बात है जो तैंने खड्ग को हाथ में लिया २ हे अर्जुन ! तुझसे लड़ने के योग्य मैं किसी को नहीं देखता हूँ बुद्धिमान् भीमसेन ने उन धृतराष्ट्र के पुत्रों को घेर लिया है ३ वह राजा देखने के योग्य है इस हेतु से हट आया है हे अर्जुन ! उस राजा को तुमने कुशलपूर्वक देखा ४ सो तुम उस राजाओं में श्रेष्ठ शार्दूल के समान पराक्रमी अपने भाई राजा युधिष्ठिर को देखकर और प्रसन्नता का समय वर्तमान होने पर जो भूल से यह कर्म हो गया तो क्या हुआ ५ हे कुन्ती के पुत्र ! मैं ऐसा किसी को नहीं देखता हूँ जो तुझको मारने के योग्य होय किस हेतु से तू प्रहार करना चाहता है तेरे चित्त की भ्रान्ति क्या है ६ तुम किस कारण शीघ्रता से बड़े खड्ग को पकड़ते हो हे कुन्ती के पुत्र ! अब मैं तुझसे पूछता हूँ कि तेरी कौन से कर्म करने की इच्छा है ७ जो महाक्रोधित होकर इस बड़े भारी खड्ग को पकड़ता है फिर श्रीकृष्णजी के वचनों को सुनकर युधिष्ठिर को देखता हुआ ८ सर्प के समान श्वास

लेता क्रोधयुक्त होकर अर्जुन श्रीगोविन्दजी से बोला कि आप इस गाण्डीव धनुष को किसी दूसरे को दे दो जो मुझको इस रीति से प्रेरणा करे मैं उसके शिर को काटूँगा ९ यह मेरा उपांशुव्रत है अर्थात् गुप्तव्रत है हे अतुलबल पराक्रमवाले, गोविन्दजी ! जैसा कि इस राजा ने आपके सम्मुख मुझसे कहा १० उसके सहने को मैं उत्साह नहीं कर सकता हूँ इस हेतु से उस धर्म से भयभीत राजा को मारूँगा ११ इस नरोत्तम को मारकर अपनी प्रतिज्ञा को पूरा करूँगा हे यदुनन्दन ! मैंने इसी निमित्त खड्ग को पकड़ा है १२ हे जनार्दनजी ! सो मैं युधिष्ठिर को मारकर सत्य सङ्कल्प होकर शोक और ज्वर से निवृत्त होऊँगा १३ अथवा ऐसे समय के वर्तमान होने पर आप क्या उचित आज्ञा देते हैं जिसको मैं योग्य समझ कर करूँ १४ मैं आपकी जो आज्ञा होगी उसी को करूँगा सञ्जय बोले कि इस बात को सुनकर गोविन्दजी ने बड़ी धिक्कारियाँ देकर अर्जुन से कहा १५ हे अर्जुन ! मैं निश्चय जानता हूँ कि तुमने वृद्ध लोगों का सेवन नहीं किया हे पुरुषोत्तम ! जो तुमको क्रोध हुआ है यह क्रोध समय के समान नहीं है १६ हे अर्जुन ! धर्म के प्रकारों का ज्ञाता पुरुष ऐसा नहीं कर सकता है जैसे कि अब यहाँ तुम धर्म से भयभीत होकर निर्बुद्धि से हो रहे हो १७ जो मनुष्य करने के अयोग्य कर्मों को और योग्य कर्मों को एक करता है हे अर्जुन ! वह अधम पुरुष कहा जाता है १८ पण्डित लोग जिस धर्म पर आरूढ़ होकर ईश्वर का उपस्थान करते हैं उसी के अनुसार इतर लोग भी आचरण करते हैं १९ हे अर्जुन ! योग्यायोग्य कर्मों के निश्चय में दृढ़ता रखनेवाला मनुष्य विवश होकर ऐसा ही अज्ञानी हो जाता है जैसे कि तुम हो गये हो २० उचित और अनुचित कर्म किसी प्रकार से भी आनन्दपूर्वक जानने के अयोग्य नहीं है यह सब शास्त्र कहते हैं तुम उसका विचार नहीं करते हो २१ तुम पूरे बुद्धिमान् नहीं हो जिस बुद्धि के द्वारा धर्मज्ञ होकर धर्म की रक्षा करता है हे अर्जुन ! जो धर्म के अभ्यासी होकर भी पापपुण्यकारी कर्म नहीं जानते हो २२ हे तात ! जीवों का न मारना ही उत्तम धर्म है यह मेरा मत है चाहै मिथ्या वचन

किसी समय कह दे परन्तु हिंसा कभी न करे २३ सो हे नरोत्तम ! तुम इस धर्म में पण्डित होकर अपने बड़े भाई राजा युधिष्ठिर को कैसे मारने को प्रवृत्त हो जैसे कि कोई साधारण मनुष्य होता है २४ हे प्रशंसा देनेवाले ! सुन कि युद्ध न करनेवाले वा युद्ध से मुख मोड़नेवाले वा भागनेवाले और घर में आश्रय लेनेवाले शत्रु अथवा हाथ जोड़नेवाले वा शरणागत और मदोन्मत्तों के मारने को उत्तम लोग नहीं प्रशंसा करते हैं वह सब गुण तेरे गुरुरूप बड़े भाई युधिष्ठिर में हैं २५। २६ हे अर्जुन! पूर्व समय में तुमने बाल्यावस्था से ऐसा व्रत किया था इसी हेतु से अपनी अज्ञानता करके अधर्मयुक्त कर्म को निश्चय करते हो २७ हे अर्जुन ! धर्मों की कठिनता से मिलनेवाली सूक्ष्मगति को अच्छे प्रकार से धारण न करके तू किस हेतु से अपने गुरुरूप बड़े के मारने की इच्छा से दौड़ता है २८ हे पाण्डव ! धर्म की इस गुप्तवार्ता को भीष्म-जी के अथवा पाण्डव युधिष्ठिर के द्वारा मैं तुझसे कहूँगा २९ वा विदुर-जी और यशस्विनी कुन्ती तुमसे कहेगी हे अर्जुन! इसको मैं मूलसमेत कहूँगा तुम चित्त से सुनना सत्य बोलनेवाला साधु है ३० गृहस्थाश्रमी से कोई आश्रमी श्रेष्ठ नहीं है बड़े दुःख से जानने के योग्य अभ्यास करी हुई सत्यता को मूलसमेत देखो ३१ सत्यता कहने के योग्य नहीं होती है अर्थात् सत्यता में कोई दोष नहीं कह सकता परन्तु जब सत्यता में मिथ्यापन होता है तब वह सत्यता भी मिथ्या कहने के योग्य होती है ३२ अर्थात् किसी-किसी स्थान पर सत्यता से अधर्म भी होता है जैसे कि विवाह के समय वा विषयभोग करने के समय वा प्राणों के नाश में वा सब धन के चोरी होने में और ब्राह्मण के मनोरथ सिद्ध होने में मिथ्या बोलना इन पाँचों स्थानों में मिथ्या बोलने का कोई पाप नहीं होता है ३३ सब धन के चुराये जाने में मिथ्या बोलना योग्य होता है ऐसे स्थान में सत्य भी मिथ्या होता है ३४ बुद्धिमान् सावधान पुरुष इस रीति से देखता है अभ्यास करी हुई सत्यता को देखो कि सत्यता दोष लगाने के योग्य नहीं है और अभ्यास करी हुई कहने के योग्य नहीं प्रथम सत्य और मिथ्या को अच्छी रीति से जानकर निश्चय धर्म का

ज्ञाता होता है ३५ क्या अद्भुत कर्म देखने में आता है कि बड़ा ज्ञानी वा बड़ा भयकारी मनुष्य भी बहुत बड़े पुण्य को ऐसे प्राप्त करता है ३६ जैसे कि बलाक नाम वधिक ने व्याघ्र के मार डालने से पुण्य प्राप्त किया फिर क्या आश्चर्य्य है कि अज्ञानी और मूर्ख धर्म का अभिलाषी पुरुष बहुत बड़े पाप को प्राप्त करे जैसे कि नदियों के समीप कौशिक ने प्राप्त किया था ३७ अर्जुन बोले हे श्रीकृष्णजी ! इस बलाकनदी और कौशिकसम्बन्धी कथा को ऐसे विचार से कहिये जिसमें मैं समझूँ ३८ वासुदेवजी बोले हे भरतवंशिन् ! पूर्व समय में बलाकनाम एक वधिक हुआ वह सदैव अपने स्त्री पुत्रादिकों को पोषण के अर्थ मृगों को मारा करता था अपनी इच्छा से नहीं मारता था अपने वृद्ध माता पिता और अन्य आश्रित लोगों की पालना करता था ३९ और अपने धर्म में प्रीतिमान् होकर सत्यवक्ता और किसी के गुण में दोष नहीं लगाता था एक समय उस मृगाकांक्षी को कोई मृग नहीं मिला तब बहुत खोज करते करते एक जल पीता हुआ नाक ही जिसकी नेत्ररूप थी ४० ऐसे श्वापद व्याघ्र को उसने देखा ऐसे रूप का जीव उसने पहले नहीं देखा था इसी हेतु से उसको भी अपूर्व दर्शन जानकर मारा उस अन्धे स्वापद के मारने पर आकाश से पुष्पों की वर्षा हुई ४१ और उत्तम गीत वाद्यों समेत अप्सरा नाचीं और उस वधिक के ले जाने के लिये स्वर्ग से विमान आया ४२ हे अर्जुन ! निश्चय करके उस स्वापद जीव ने सब जीवों के नाश के लिये तपस्या करके वरदान पाया था इसीसे ब्रह्माजी ने उसको अन्धा कर दिया ४३ सब जीवों के नाश में निश्चय करने-वाले उस जीव को मारकर पीछे से वह बलाक स्वर्ग को गया इस रीति से धर्म की बड़ी सूक्ष्मगति है बड़ी कठिनता से जानने के योग्य है ४४ और कौशिक ब्राह्मण भी एक बड़ा तपस्वी और शास्त्रों का जाननेवाला था वह गाँव से दूर नदियों के सङ्गम पर निवास करता था ४५ सत्य बोलने का सदैव व्रत रखता था इसीसे हे अर्जुन ! वह सत्यवक्ता विख्यात हुआ ४६ इसके पीछे कितने ही मनुष्य चोरों के भय से उस वन में रहने लगे वहाँ भी क्रोधयुक्त चोरों ने बड़े उपायों से उनको ढूँढ़ा ४७।४८

इसके अनन्तर उन्होंने सत्य बोलनेवाले कौशिक के पास आकर कहा कि हे भगवन् ! बहुत से मनुष्यों का समूह किस मार्ग से गया है हम सत्य सत्य पूछते हैं जो आप जानते होयँ तो कहिये सत्यता से पूछे हुए उस कौशिक ने उनसे कहा ४६ कि बहुत वृक्ष लता वल्लीवाले उस वन में रहते हैं उस कौशिक ने उनको प्रकट करके मूल वृत्तान्त को भी प्रकट किया ५० इसके पीछे उन्होंने उन क्रूर मनुष्यों को पाकर मार डाला यह सुना जाता है सूक्ष्मधर्मों से अनभिज्ञ वह कौशिक उन बड़े अधर्मरूप कहे हुए दुष्ट वचन से महादुःखरूप नरक को ऐसे गया जैसे कि थोड़े शास्त्र का जाननेवाला अज्ञानी धर्मों के प्रकारों को न जानकर जाता है ५१ । ५२ अपने सन्देहों को वृद्ध लोगों से न पूछनेवाला बड़े नरक के योग्य होता है उस धर्म और अधर्म का मूल निश्चय करने के लिये तेरी योग्यता का कोई तो वचन होगा ५३ कठिनता से प्राप्त करने के योग्य उत्तम ज्ञान को तर्क से निश्चय करते हैं और बहुत से लोग कहते हैं कि धर्म वेद से होता है ५४ इस हेतु से तुझको दोष नहीं लगाता हूँ सब नहीं किया जाता है क्योंकि जीवधारियों की उत्पत्ति के लिये धर्म का वर्णन किया गया ५५ जो अहिंसा से युक्त होता है वही धर्म है और धर्मरूप वचन भी हिंसा न करनेवालों की अहिंसा के निमित्त वर्णन किया गया है ५६ धारण करने से धर्म कहा गया है क्योंकि वह सृष्टि को धारण करता है अर्थात् उत्पत्ति और पोषण करता है जिस हेतु से कि वह धारणनाम गुण से युक्त है इसी कारण से वह निश्चय करके धर्म कहा जाता है ५७ जो किसी समय पर अन्याय से चोरी करते हुए धर्म को चाहते हैं अथवा वेद के विरुद्ध मोक्षपद को चाहते हैं उनके साथ कभी वार्तालाप भी न करना चाहिये ५८ अथवा आवश्यक बोलने के समय पर भी वेद वा लौकिक वचन का संदेह होय अर्थात् इस विषय के विचार करने के समय कि यह ब्राह्मण चोर है वा नहीं ऐसे समय में वहाँ मौन होना अवश्य है और जो कदाचित् मौन होने से भी काम न हो सके तो वहाँ मिथ्या बोलना भी योग्य गिना जाता है वह विना विचारे से भी सत्य ही के तुल्य है ५९ जो किसी काम के विषय

में व्रत करके कर्म से उसको पूरा न करे अर्थात् विरुद्ध कर्म करे उसके विषय में बुद्धिमान् लोगों का वचन है कि वह उसके फल को नहीं पाता है ६० किसी के प्राण जाने में विवाह में सब जाति के नाश में और जारी होनेवाले कर्म में कहा हुआ वचन मिथ्या नहीं कहलाता है ६१ धर्मतत्त्व के जाननेवाले वा देखनेवाले इस बात में अधर्म को न देखते हैं न जानते हैं जो शपथों के खाने में भी चोरों से मिला हुआ नहीं है ६२ वहाँ मिथ्या कहना ही श्रेष्ठ होता है वह भी बिना विचार के सत्य है और समर्थ होने पर उनको किसी दशा में भी धन देने के योग्य नहीं है ६३ पापियों को दिया हुआ धन दाता को भी पीड़ित करता है अर्थात् नरक में डालता है इसी कारण धर्म के निमित्त मिथ्या कहने से मिथ्या के फल को भोगनेवाला नहीं होता है मैंने बुद्धि के अनुसार यह लक्षणोद्देश तुझसे विधिपूर्वक कहा ६४ यह सब मुझ शुभचिन्तक ने धर्म और बुद्धि के अनुसार कहा है हे अर्जुन! इसको सुनकर अब तुम कहो कि यह युधिष्ठिर तेरे मारने के योग्य है वा नहीं ६५ अर्जुन बोले बड़ा ज्ञानी और बुद्धिमान् जिस रीति से कहे और जिस रीति से हमारा भला होय उसी प्रकार का यह आपका वचन है ६६ हे श्रीकृष्णजी! आप हमारे माता और पिता के समान होकर परमगति और परमस्थान हो ६७ तीनों लोकों में आप-से कोई बात छिपी नहीं है इसी से आप सब प्रकार के उत्तम धर्मों को ठीक-ठीक जानते हो ६८ मैं धर्मराज पाण्डव युधिष्ठिर को अवध्य अर्थात् मारने के अयोग्य मानता हूँ आप इस मेरे सङ्कल्प में प्रतिज्ञा के रक्षा का कोई उपाय वर्णन कीजिये ६९ अथवा इस स्थान पर मेरे हृदय में वर्तमान कहने के योग्य उत्तम बातों को सुनिये हे श्रीकृष्णजी! आप मेरे व्रत को जानते हैं जो कोई मनुष्य सब मनुष्यों के आगे मुझसे ऐसा वचन कहे कि ७० हे अर्जुन! तुम इस गाण्डीव धनुष को ऐसे मनुष्य को दे दो जो बलपराक्रम और शस्त्रविद्या में तुमसे अधिक हो हे श्रीकृष्णजी! मैं ऐसे कहनेवाले मनुष्य को हठ करके ऐसे मारूँ जैसे कि मिथ्या शब्द के कहने से भीमसेन मारता है ७१ हे

वृष्णियों में वीर, श्रीकृष्णजी ! आपके सम्मुख राजा युधिष्ठिर ने इसी शब्द को वारंवार मुझसे कहा कि धनुष को दूसरे को दे हे केशवजी ! जो मैं उसको मार डालूँ तो मैं थोड़े समय तक भी इस जीवलोक में नियत नहीं रहूँगा ७२ इससे निश्चय करके मैं निष्पाप राजा के मारने को ध्यान करके पराक्रम से हीन अचेत होकर अपने शरीर को त्याग करूँगा हे धर्मधारियों में श्रेष्ठ ! जिससे कि मेरी प्रतिज्ञा संसार की बुद्धि में सत्य समझी जाय ७३ और जिस प्रकार पाण्डव युधिष्ठिर और मैं जीवता रहूँ हे श्रीकृष्णजी ! वैसे ही आप भी अपना सम्मत मुझको दीजिये वासुदेवजी बोले हे वीर ! युद्ध में कर्ण के तीक्ष्ण धारवाले बाणों के समूहों से राजा युधिष्ठिर महाघायल दुःखी थकावट से युक्त वारंवार युद्ध करने में कर्ण के बाणों से विदीर्ण हो गया है ७४ इस हेतु से इसने महादुःखी होकर ऐसे अयोग्य वचन तुमसे कहे जिससे कि तुम क्रोधयुक्त होकर युद्ध में कर्ण को मारो इसी कारण से वारंवार तुझमें क्रोध बढ़ाने के लिये कहा है कि तू युद्ध में क्रोधरूप होकर कर्ण को मारे ७५ यह युधिष्ठिर भी इस लोक में उस पापी कर्ण के समान अथवा उससे सम्मुखता करनेवाला तेरे सिवाय किसी दूसरे को नहीं समझता है हे अर्जुन ! इसी हेतु से मेरे सम्मुख अत्यन्त क्रोधयुक्त होकर राजा ने तुमसे यह कठोर वचन कहे हैं ७६ युद्ध में सदैव सन्नद्ध दूसरे के सहने को अयोग्य कर्ण में ही अब युद्धरूपी द्यूत बाँधा गया है उसी के मरने पर कौरव लोग विजय होंगे ऐसी बुद्धि राजा युधिष्ठिर में है ७७ इस कारण से धर्मपुत्र युधिष्ठिर मारने के योग्य नहीं है हे अर्जुन ! तुझको अपने प्रण को पूरा करना योग्य है और अपने योग्य उस बात को तू मुझसे समझ जिससे कि यह जीवता हुआ भी मृतक के समान हो जाय ७८ जब प्रतिष्ठा के योग्य मनुष्य को प्रतिष्ठा प्राप्त होती है तभी वह इस जीवलोक में जीवता रहता है और जब प्रतिष्ठित पुरुष अपमान को पाता है तब वह जीवता हुआ भी मृतक के समान कहा जाता है ७९ यह राजा युधिष्ठिर सदैव से भीमसेन नकुल सहदेव और तुझसे अच्छी रीति से प्रतिष्ठा किया गया है और लोक में वृद्ध वा शूरवीर लोगों ने

भी इसकी प्रतिष्ठा की है इसी प्रकार तुम भी बातों के ही द्वारा इसका अपमान करो ८० हे कुन्ती के पुत्र! उसके साथ ऐसा कर्म करके अधर्मयुक्त कर्म को कर ८१। ८२ यह अथर्वाङ्गिरसी नाम श्रुति है कल्याण के चाहनेवाले पुरुषों को सदैव इस श्रुति को काम में लाना योग्य है ८३ यही बिना मारे हुए मारना कहा जाता है और यही समर्थ गुरुतम कहा जाता है हे धर्मज्ञ! तुम इस मेरे कहे हुए वचन को धर्मराज से कहो ८४ हे पाण्डव! यह धर्मराज तेरे हाथ से इस रीति पर मरने को अयोग्य जानता है इसके पीछे इसके चरणों को दण्डवत् करके बड़े मीठे वचनों से इससे शुभचिन्तकता की बातें कहो ८५ बुद्धिमान् तेरा भाई राजा युधिष्ठिर भी धर्म को विचारकर फिर कभी तुझ पर क्रोध न करेगा हे अर्जुन! भाई के मिथ्या मारने से अलग होकर तुम बड़े हर्ष से युक्त होके इस सूत के पुत्र कर्ण को मारो ॥ ८६ ॥

इति श्रीमहाभारते कर्णपर्वणि श्रीकृष्णार्जुनसंवादे सप्ततितमोऽध्यायः ॥ ७० ॥

इकहत्तरवाँ अध्याय

सञ्जय बोले कि श्रीकृष्णजी के इस रीति के वचन को सुनकर अपने मित्र श्रीकृष्णजी की प्रशंसा करने लगा और बड़े हठ को करके धर्मराज से ऐसे कठोर वचन बोला जैसे पूर्व कभी नहीं बोला था १ हे राजन्! तुम तो युद्ध से एक कोस दूर नियत हो तुम ऐसा मुझसे कभी मत कहो जो चाहे तो भीमसेन मेरी निन्दा करने को योग्य है कि सब लोक के शूरवीरों से लड़ता है २ वह कालरूप भीमसेन युद्ध में शत्रुओं को पीड्यमान करके बड़े-बड़े शूरवीर राजाओं को उत्तम रथों को श्रेष्ठतर हाथियों को उत्तम अश्वारूढ़ों को और असंख्य वीरों को ३ हाथियों समेत मारकर बड़े कठोर सिंहनाद को गर्जना करता है और जैसे कि मृगों को सिंह मारता है उसी प्रकार युद्धभूमि में दशहज़ार काम्बोजदेशीय और पहाड़ी शूरवीरों को मारकर वह वीर बड़े-बड़े ऐसे कठिन कर्मों को करता है जिनको तुम कभी करने को समर्थ नहीं हो सकते और रथ से कूद गदा को हाथ में लेकर उसके प्रहारों से युद्ध में घोड़े

रथ और हाथियों को मारकर सिंह के समान दहाड़ता है ४ । ५ इसके विशेष खड्ग से भी घोड़े रथ और हाथियों को अथवा रथाङ्ग और धनुष से शत्रुओं को मारकर फिर बड़े क्रोध और पराक्रम का रखनेवाला दोनों भुजाओं से पकड़कर चरणों से ही शत्रुओं को मार डालता है ६ वह कुबेर और यमराज के समान महापराक्रमी बड़े हठ करके शत्रुओं की सेना का मारनेवाला है वह भीमसेन मेरी निन्दा करने के योग्य है न कि तुम जोकि सदैव शुभचिंतकों से रक्षा किये जाते हो ७ अकेला भीमसेन ही बड़े-बड़े रथ, हाथी, घोड़े और असंख्यों पदातियों को मथ-कर धृतराष्ट्र के पुत्रों में मग्न है वह शत्रुओं का विजयी मेरी निन्दा करने के योग्य है ८ जोकि कलिङ्ग, बङ्ग, अङ्ग, निषाद और मगधदेशियों को और नीले बादल के समान मतवाले हाथियों को और शत्रुओं के मनुष्यों को सदैव मारता है वह शत्रुसंहारी भीम मेरी निन्दा करने के योग्य है ९ वह बड़ा वीर महायुद्ध में समय पर उचित रथ पर सवार होकर धनुष को चलायमान करता हुआ बाणों से पूर्ण ऐसी बाणों की वर्षा करता है जैसे जलधाराओं की वर्षा बादल करता है १० जिस भीमसेन ने अभी मुख की नोंक सूँड़ और अङ्गों समेत घायल करके आठ सौ बड़े-बड़े हाथी युद्धभूमि में मार डाले वह शत्रुओं का मारने-वाला मुझसे कठोर वचन कहने के योग्य है ११ बुद्धिमान् मनुष्य उत्तम ब्राह्मणों के वचन में पराक्रम को और बहुत से क्षत्रियों में पराक्रम को कहते हैं हे भरतवंशिन् ! तुम वचन में बली और कठोर हो और तुम्हीं मुझको जानते हो जैसा कि मैं पराक्रमी हूँ १२ जोकि मैं स्त्री पुत्र जीवन और आत्मा के साथ तेरे चित्त का प्रिय करने को सदैव प्रवृत्त रहता हूँ इस पर भी जो तू मुझको वचनरूपी बाणों से भेदकर मारता है हम तुझसे उस सुख को नहीं जानते १३ तू द्रौपदी की शय्या पर नियत होकर मेरा अपमान मत कर मैं तेरे ही निमित्त महारथियों को मारता हूँ हे भरतवंशिन् ! इस हेतु से तुम शङ्का करने-वाले होकर महानिष्ठुर प्रकृति हो मैंने तुझसे कभी सुख को नहीं पाया १४ हे नरदेव ! युद्ध में सत्यसङ्कल्प भीष्मजी ने अपने आप तेरे

ही अभीष्ट के लिये अपनी मृत्यु को तुझसे कहा द्रुपद का पुत्र शिखण्डी वीर महात्मा है उसी ने मेरे आश्रय में होकर उनको मारा १५ जो कि तुम पाँशों की बाजी में कार्यों के बिगाड़ने में प्रवृत्त हुए इस हेतु से मैं तेरे राज्य की प्रशंसा नहीं करता हूँ तुम नीचों से सेवित अपने आप पापों को करके हमारे द्वारा शत्रुओं को विजय करना चाहते हो १६ तुमने पाँशों की बाजी में धर्म के विपरीत बहुत से दोषों को जिनको कि सहदेव ने वर्णन किया तुम नीचों से सेवित उन दोषों के त्याग करने की इच्छा नहीं करते हो इसी कारण से हम सब दुःखों में पड़े हुए हैं १७ किसी प्रकार का भी सुख तुमसे हमको नहीं हुआ क्योंकि तुम पाँशों के खेल में बड़े मतवाले हो हे पाण्डव! तुम आप दुःख को उत्पन्न करके अब हमको कठोर वचन सुनाते हो १८ हमारे हाथ से अङ्ग भङ्ग मारी हुई शत्रुओं की सेना पृथ्वी पर सोती हुई पुकारती है तुमने ऐसा निर्दयकर्म किया जिसके दोष से कौरवों का मरण उत्पन्न हुआ १९ उत्तर के रहनेवाले मारे पश्चिमीय लोगों का नाश किया और पूर्वीय वा दक्षिणीय मारे गये युद्ध में हमारे और उनके शूरवीरों ने वह अपूर्व और अद्भुत कर्म किया २० तुम द्यूत के खेलनेवाले हो तुम्हारे ही कारण से राज्य का नाश हुआ हे नरेन्द्र! हमारा दुःख तुझसे पैदा होनेवाला है हे राजन्! हम लोगों को वचनरूपी चाबुकों से पीड़ा देनेवाले तुम दुर्भागी फिर हमको क्रोधयुक्त मत करना २१ सञ्जय बोले कि वह स्थिर बुद्धि धर्म से भयभीत महाज्ञानी अर्जुन इन कठोर अप्रतिष्ठित वचनों को सुनाकर कुछ पाप किया हुआ समझकर उदास हो गया अर्थात् वह इन्द्र का पुत्र वारं-वार श्वास लेता हुआ पीछे से महादुःखी हुआ और फिर खड्ग को निकाल लिया तब श्रीकृष्णजी बोले आप इस आकाशरूप खड्ग को फिर किस निमित्त म्यान से अलग करते हो २२ । २३ इसका हमको उत्तर दोगे तब मैं तुम्हारे कल्याण और प्रयोजन के सिद्ध होने को कुछ कहूँगा पुरुषोत्तमजी के इस वचन को सुनकर अर्जुन बड़ा दुःखी होकर केशवजी से बोला कि जो मैंने अप्रियरूपी पापकर्म किया है इससे अपने शरीर को नाश करूँगा धर्मधारियों में श्रेष्ठ श्रीकृष्णजी अर्जुन के इस वचन

को सुनकर यह वचन बोले कि २४ । २५ हे अर्जुन ! तुम इस राजा से ऐसे वचन कहकर घोर दुःख में क्यों प्रवृत्त हुए हे शत्रुओं के मारनेवाले अर्जुन ! जो तुम अपघात करना चाहते हो यह कर्म सत्पुरुषों का नहीं है २६ हे नरवीर ! जो तुम अब इस धर्मात्मा बड़े भाई को खड्ग से मारोगे तो तुझ धर्म से डरनेवाले की कीर्त्ति किस प्रकार की होगी इसका तुम क्या उत्तर दोगे २७ हे अर्जुन ! धर्म बड़ा सूक्ष्म होकर कठिनता से जानने के योग्य है तुम बड़े-बड़े बुद्धिमानों के कहे हुए धर्म को समझो तुम आप अपना अपघात करके वा भाई के मारने से महाघोर नरक में पड़ोगे २८ हे अर्जुन ! अब तुम यहाँ अपने वचन से अपने ही गुणों को वर्णन करो जिससे कि तुम हतात्मा हो जाओ इस वचन को इन्द्र के पुत्र अर्जुन ने पसन्द किया कि हे श्रीकृष्णजी ! ऐसा ही हो २९ फिर धनुष को लचाकर धर्मधारियों में श्रेष्ठ युधिष्ठिर से बोला कि हे राजन् ! सुनो कि महादेवजी के सिवाय मुझसा धनुषधारी कोई नहीं है ३० मैं तुझ महात्मा की आज्ञा से एक क्षण भर में ही सब स्थावर जङ्गम जीवों समेत संसार भर को मार सकता हूँ हे राजन् ! मैंने दिक्पालों समेत सब दिशाओं को विजय करके तेरे अधीन कर दीन्हीं ३१ वह पूर्ण दक्षिणायुक्त राजसूययज्ञ और आपकी वह दिव्य सभा मेरे ही पराक्रम से हुई और मेरे हाथों में तीक्ष्ण धारवाले बाण हैं और बाणों से युक्त प्रत्यञ्चावाला लम्बायमान धनुष है ३२ और मेरे चरण रथ और ध्वजा समेत हैं और युद्ध में वर्तमान होकर मुझको कोई शूरवीर विजय नहीं कर सकता है मैंने पूर्वीय, पश्चिमीय, उत्तरीय और दक्षिणीय राजा लोगों को मारा ३३ संसप्तकों का कुछ शेष बाकी है इस रीति से सब सेना का आधा भाग मार डाला हे राजन् ! देवसेना के समान यह भरतवंशियों की सेना मेरे हाथ से ही मारी हुई पृथ्वी पर सो रही है ३४ जो अस्त्रों के जाननेवाले हैं उनको मैं अस्त्रों ही से मारता हूँ इसी हेतु से यह अस्त्र लोकों के भस्म करनेवाले हैं हे श्रीकृष्णजी ! भय के उत्पन्न करनेवाले इस विजयी रथ पर सवार होकर कर्ण के मारने को चलें ३५ अब यह राजा युधिष्ठिर सुखी हो जाय मैं युद्ध में अपने बाणों से कर्ण को मारूँगा ऐसा कहकर अर्जुन

ने धर्मधारियों में श्रेष्ठ युधिष्ठिर से यह वचन कहा ३६ कि अब कर्ण की माता अपने पुत्र से रहित होगी अथवा कुन्ती मुझसे पृथक् होगी मैं सत्य-सत्य कहता हूँ कि अब युद्धभूमि में कर्ण को बाणों से मारे विना मैं अपने कवच को नहीं उतारूँगा ३७ सञ्जय बोले कि अर्जुन ने युधिष्ठिर से ऐसा कहकर फिर भी शस्त्रों को उतार धनुष छोड़ बड़ी शीघ्रता से खड्ग को म्यान में रखकर ३८ बड़ी लज्जा से नीचा शिर किये हाथ जोड़ कर युधिष्ठिर से कहा कि हे राजन्! प्रसन्न हूजिये और मेरे कहे हुए को क्षमा करिये आप समय पाकर जानेंगे अब आपको नमस्कार है ३९ इस रीति से अप्रसन्न राजा को प्रसन्न करके फिर यह वचन बोला कि इस कार्य में विलम्ब न होगी बड़ी शीघ्रतापूर्वक यह कार्य होगा मैं इस लौटते हुए के सम्मुख जाता हूँ ४० अब मैं सर्वात्मभाव से भीमसेन को युद्ध से छुटाने और कर्ण के मारने को जाता हूँ मेरा जीवन केवल आपके अभीष्ट के ही निमित्त है हे राजन्! मैं आपसे सत्य-सत्य कहता हूँ आप मुझको आज्ञा दीजिये ४१ यह कहकर बड़ा तेजस्वी अर्जुन चलने के समय भाई के चरणों को पकड़कर उठा फिर पाण्डव धर्मराज ने अपने भाई अर्जुन के इस कठोर वचन को सुनकर ४२ महादुःखी हो अपने उस शयनस्थान से उठकर अर्जुन से कहा हे अर्जुन! मैंने वह महादुष्ट कर्म किया जिसके कारण तुमको ऐसा महाघोर दुःख प्राप्त हुआ ४३ इस कारण से मुझ कुल के नाशक महापापी दुःखों से युक्त अज्ञानबुद्धि आलसी भयभीत वृद्धों के अपमान करनेवाले इस नीच पुरुष के शिर को काट डालो तेरे रूखे-रूखे वचनों के सुनने से मेरा कोई प्रयोजन नहीं है अब मैं महापापी वन के ही जाने के योग्य हूँ मैं अवश्य वन ही को जाऊँगा और आप मुझसे पृथक् होकर सुख से राज्य को करो ४४ । ४५ महात्मा भीमसेन राजा होने के योग्य है मुझ नपुंसक का राज्य में क्या काम है और तुझ क्रोधयुक्त के इन कठोर वचनों के सहने को भी मैं समर्थ नहीं हूँ ४६ हे वीर! मुझ अपमानवाले के जीवन के कारण से फिर भीमसेन राजा करने के योग्य न होगा इस रीति के वचनों को कहकर राजा युधिष्ठिर अपने शयनस्थान को छोड़-

कर उछला ४७ और वन के जाने की इच्छा करी तब तो वासुदेवजी ने बड़े नम्र होकर युधिष्ठिर से कहा हे राजन् ! यह आप समझिये ४८ कि जैसे सत्यप्रतिज्ञ गाण्डीव धनुषधारी की प्रतिज्ञा सुनी गई अर्थात् जो कोई ऐसा कहे कि गाण्डीव धनुष दूसरे के देने के योग्य है वह पुरुष लोक में उसके हाथ से मारने के योग्य है और यह तुमने उससे कहा इस हेतु से अर्जुन ने उस अपनी सत्य प्रतिज्ञा की रक्षा करी है ४९। ५० हे राजन्! यह तेरा अपमान मेरी इच्छा से किया गया क्योंकि गुरुओं का अपमान ही मारने के समान कहा जाता है ५१ हे महाबाहो, राजन्, युधिष्ठिर! इस हेतु से सत्य की रक्षा के निमित्त मेरी और अर्जुन की अनम्रता को आप क्षमा करिये ५२ हे महाराज! हम दोनों आपकी शरण में वर्तमान हैं हे राजन्! मुझ प्रणत-रूप प्रार्थना करनेवाले का अपराध क्षमा करिये ५३ अब यह पृथ्वी उस पापात्मा कर्ण के रुधिर को पान करेगी यह मैं तुमसे सत्यप्रतिज्ञा करता हूँ कि अब तुम कर्ण को मरा हुआ ही जानो ५४ जिसका तू मरना चाहता है अब उसकी अवस्था जीवन की भी समाप्त हुई तब श्रीकृष्णजी के वचन को सुनकर धर्मराज युधिष्ठिर ने ५५ भ्रान्ति से युक्त झुके हुए श्रीकृष्णजी को उठाकर हाथ जोड़कर श्रीकृष्णजी से यह वचन कहा ५६ कि हे श्रीकृष्णजी ! जैसा आपने कहा है वैसा ही है कि इसमें मेरी अमर्यादा होय हे माधव, गोविन्दजी ! मैं आपके समझाने से समझ गया हूँ ५७ हे अविनाशिन् ! अब हम तुम्हारे कारण से घोर दुःख से छूटे और अपनी अज्ञानता से अचेत हम दोनों आपरूप स्वामी को पाकर इस घोररूप दुःख समुद्र से पार हुए ५८ हम सब अपने मन्त्रियों समेत आपकी बुद्धिरूपी नौका को पाकर दुःख और शोकरूपी नदी से पार हुए हे अविनाशिन् ! हम तुमसे सनाथ हैं ॥ ५९ ॥

इति श्रीमहाभारते कर्णपर्वणि युधिष्ठिरप्रबोधनयेकसप्ततितमोऽध्यायः ॥ ७१ ॥

बहत्तरवाँ अध्याय

सञ्जय बोले कि इसके पीछे धर्मात्मा यदुनन्दन गोविन्दजी धर्मराज के इस प्रीतियुक्त वचनों को सुनकर अर्जुन से बोले १ और अर्जुन इस

रीति से श्रीकृष्णजी के वचन से युधिष्ठिर को कठोर वचन कहकर उदास हुआ जैसे कि कुछ पाप को करके उदास होते हैं २ तब हँसते हुए वासुदेवजी उस पाण्डव से बोले कि हे अर्जुन ! यह कैसे हो सकता है जो उस धर्मनिष्ठ धर्म के पुत्र को तीक्ष्ण धारवाले खड्ग से मारे तुम राजा से यह कहकर एक पाप में पड़े ३ । ४ हे अर्जुन ! राजा को मारकर पीछे से तुम क्या करते इस रीति से अल्पबुद्धियों से बड़ी कठिनतापूर्वक धर्म जानने के योग्य है ५ सो आप धर्म के भय से बड़े भाई के मारने के द्वारा बहुत बड़े घोर नरक में अवश्य पड़े ६ सो तुम धर्मधारियों में श्रेष्ठ धर्म के समूह कौरवों में श्रेष्ठ राजा युधिष्ठिर को प्रसन्न करो यही मेरा मत है ७ अपनी भक्ति से राजा को प्रसन्न करो फिर उस युधिष्ठिर के प्रसन्न होने पर शीघ्र ही युद्ध के निमित्त कर्ण के रथ के समीप चलेंगे ८ हे बड़ाई देनेवाले ! अब तुम युद्ध में अपने तीक्ष्ण धारवाले बाणों से कर्ण को मारकर धर्मराज की बड़ी प्रसन्नता को प्राप्त करो ९ हे महाबाहो ! यहाँ पर यह वार्त्ता समय के अनुसार है यह मेरा मत है ऐसा करने पर तेरा किया हुआ कार्य सिद्ध होगा १० हे महाराज ! इसके पीछे लज्जायुक्त अर्जुन धर्मराज के दोनों चरणों को पकड़कर शिर से झुक गया ११ और उस भरतर्षभ से वारंवार विनय करने लगा कि हे राजन् ! जो मुझ सब कामों से डरे हुए ने आपके सम्मुख असभ्य वचन कहे उनको आप क्षमा करिये १२ हे भरतर्षभ, धृतराष्ट्र ! तब तो धर्मराज युधिष्ठिर ने उस शत्रुसंहारी रोते हुए और गिरे हुए अर्जुन को देखकर १३ उस संसार की लक्ष्मी के विजय करनेवाले भाई को उठाकर बड़ी प्रीति से हृदय से लगाकर अति रोदन किया १४ हे महाराज ! वह महातेजस्वी शुद्ध अन्तःकरणवाले दोनों भाई बहुत विलम्ब तक रोदन करके प्रसन्न हुए १५ फिर पाण्डव धर्मराज बड़े प्रेम से मिलकर उसके मस्तक को सूँघके बड़ी प्रीतियुक्त मन्दमुसकान करते हुए उस बड़े धनुषधारी से बोले १६ हे महाबाहो ! बड़े धनुषधारी कर्ण ने युद्ध में सब सेना के देखते हुए मुझ उपाय करनेवाले को कवच, ध्वजा, धनुष, शक्ति घोड़े और बाणों को १७ अपने बाणों से काटकर पराजय किया हे अर्जुन ! सो मैं युद्ध में उसको

जान के और उसके कर्म को देखकर १८ महादुःखी होता हूँ और जो तू युद्ध में उस वीर शत्रु को नहीं मारेगा तो मुझको जीवन प्यारा न होगा १९ अर्थात् अपने प्राणों को त्याग करूँगा फिर जीने से मेरा कोई प्रयोजन नहीं है हे भरतर्षभ! इस प्रकार के युधिष्ठिर के वचनों को सुनकर अर्जुन ने उत्तर दिया २० हे नरोत्तम, महाराज! मैं आपकी सत्यता वा प्रसन्नता वा भीमसेन नकुल और सहदेव की शपथ करता हूँ २१ मैं जिस प्रकार से अब कर्ण को मारूँगा वा आप मरकर पृथ्वी पर गिरूँगा मैं सत्यता से उस शस्त्र को प्राप्त करता हूँ २२ ऐसा राजा से कहकर फिर माधवजी से बोला कि हे श्रीकृष्णजी! अब मैं निस्सन्देह युद्ध में कर्ण को मारूँगा २३ आपका कल्याण होय यह सब आपही के विचार से है उस दुरात्मा का मरण होगा हे राजाओं में श्रेष्ठ! यह वचन सुनकर केशवजी अर्जुन से बोले २४ हे भरतर्षभ! तुम बड़े पराक्रमी होकर कर्ण के मारने को समर्थ हो हे महारथिन्! मेरी भी सदैव से यही इच्छा है २५ तुम युद्ध में कैसे कर्ण को मारोगे यह कहकर वह श्रेष्ठ पुरुषोत्तम माधवजी फिर युधिष्ठिर से बोले कि २६ हे युधिष्ठिर! तुम अब दुरात्मा कर्ण के मारने के निमित्त अर्जुन को विश्वासपूर्वक आज्ञा देने को योग्य हो २७ हे पाण्डुनन्दन! आप को कर्ण के बाणों से पीड्यमान सुनकर मैं और अर्जुन वृत्तान्त निश्चय करने को यहाँ आये थे सो २८ हे राजन्! आप प्रारब्ध से जीवते हुए और उसके पकड़ने से बचे हुए हो हे निष्पाप! अब तुम इस अर्जुन को विश्वासपूर्वक विजय का आशीर्वाद दो २९ युधिष्ठिर बोले कि हे पाण्डव, अर्जुन! आओ-आओ मुझसे मिलो कहने के योग्य और चित्त के अभीष्ट को प्राप्त करनेवाला वचन कहा गया है जो तुमने मुझसे कहा वह मैंने सब क्षमा किया ३० हे अर्जुन! अब मैं तुझको आज्ञा देता हूँ कि तुम कर्ण को मारो हे अर्जुन! और जो-जो मैंने कठोर वचन कहे हैं उनसे क्रोधयुक्त मत हो ३१ सञ्जय बोले कि हे श्रेष्ठ, राजन्, धृतराष्ट्र! तब तो कमर से झुके हुए अर्जुन ने हाथों से अपने बड़े भाई के दोनों चरणों को पकड़ लिया ३२ इसके पीछे राजा युधिष्ठिर उसको

उठा के अच्छी रीति से मिलकर मस्तक को सूँघ फिर उससे कहने लगे ३३ हे महाबाहो, अर्जुन ! मेरी तैंने बड़ी प्रतिष्ठा करी है तुम फिर महत्त्वता और अविनाशी विजय को प्राप्त करोगे ३४ अर्जुन बोले कि अब मैं उस पापी और बल से अहङ्कारी कर्ण को युद्ध में पाकर बाणों से उसके भाई पुत्रों समेत मारूँगा ३५ जिसके खिंचे हुए धनुष के बाणों से तुम महापीड्यमान हुए हो वह कर्ण अब बहुत शीघ्र ही उसके फल को पावेगा ३६ हे राजन् ! अब मैं कर्ण को मारकर ही आपको सेवन करने के निमित्त देखूँगा मैं उच्चस्वर से यह तुमसे सत्य-सत्य कहता हूँ ३७ हे पृथ्वीपते, स्वामिन् ! अब मैं कर्ण को मारे विना युद्धभूमि से नहीं लौटूँगा सत्यता से आपके दोनों चरणों को छूता हूँ ३८ सञ्जय बोले कि तब तो प्रसन्नचित्त युधिष्ठिर ने इस प्रकार की बातें करनेवाले अर्जुन से बहुत बड़ा यह वचन कहा कि तेरी अविनाशी कीर्ति वा मनोभीष्ट जीवन वा विजय वा सदैव पराक्रम वा शत्रुओं का नाश ३९ और वृद्धि को देवता लोग कृपा करके दें और जैसा मैं चाहता हूँ वैसा ही तेरा अभीष्ट सिद्ध होय शीघ्र जाओ और युद्ध में कर्ण को ऐसे मारो जैसे कि इन्द्र ने अपनी वृद्धि के निमित्त वृत्रासुर को मारा था ॥४०॥

इति श्रीमहाभारते कर्णपर्वणि युधिष्ठिरवरप्रदाने द्विसप्ततितमोऽध्यायः ॥ ७२ ॥

तिहत्तरवाँ अध्याय

सञ्जय बोले कि कर्ण के मारने को उपस्थित अर्जुन अत्यन्त प्रसन्नचित्त होकर धर्मराज को प्रसन्न करके गोविन्दजी से बोला १ कि मेरा रथ फिर तैयार करिये और उत्तम घोड़ों को पूजो और उसी मेरे कल्याणरूपी रथ पर सब अस्त्रशस्त्रों को धरो २ अश्वसवारों से शिक्षित और पृथ्वी के लोटने से गत परिश्रम और रथ के सब सामानों से अलंकृत शीघ्रतायुक्त चञ्चल घोड़े बहुत शीघ्र सम्मुख लाये जायँ ३ हे गोविन्दजी ! कर्ण के मारने की इच्छा से अब शीघ्र चलो हे महाराज ! महात्मा अर्जुन के इस वचन को सुनकर ४ श्रीकृष्णजी दारुक सारथी से बोले कि वह सब करो जिस प्रकार इस भरतर्षभ और सब धनुषधारियों में श्रेष्ठ अर्जुन

ने कहा है ५ हे राजाओं में श्रेष्ठ ! इसके पीछे श्रीकृष्णजी की आज्ञा पाते ही उस दारुक ने शत्रुसन्तापी व्याघ्रचर्म से मढ़े हुए उत्तम रथ को जोड़ा और ६ रथ को तैयार करके महात्मा पाण्डव अर्जुन के आगे निवेदन किया कि रथ तैयार है तब महात्मा दारुक के तैयार किये हुए रथ को देखकर ७ धर्मराज से आज्ञा ले ब्राह्मणों से स्वस्तिवाचन कराके बड़े मङ्गल और स्वस्त्ययन के साथ रथ पर सवार हुआ उस समय बड़े ज्ञानी धर्मराज राजा युधिष्ठिर ने उसको आशीर्वाद दिया इसके पीछे वह कर्ण के रथ के पीछे चला ८। ९ हे भरतवंशिन् ! सब जीवों ने उस बड़े धनुषधारी अर्जुन को आता देखकर महात्मा पाण्डव के हाथ से कर्ण को मरा हुआ माना १० हे राजन् ! सब दिशा चारों ओर से निर्मल हुई उस समय चाप शतपत्र और क्रौञ्च नाम पक्षियों ने ११।१२ पाण्डुनन्दन अर्जुन को दक्षिण किया हे राजन् ! मङ्गल वा कल्याण-रूप और प्रसन्नरूप अर्जुन को युद्ध में प्रेरणा करते बहुत से नर पक्षी भी शब्द करने लगे १३ और हे राजन् ! भयानकरूप कङ्क, गिद्ध, बक, बाज और काक यह सब मांस खाने के लिये उसके आगे-आगे चले उन्होंने अर्जुन के मङ्गलकारी शकुनों को इस रीति से वर्णन किया १४ कि शत्रुओं की सेना का और कर्ण का नाश होगा इसके पीछे यात्रा करने-वाले अर्जुन को बड़ा खेद उत्पन्न हुआ १५ और बड़ी चिन्ता उत्पन्न हुई कि यह कैसे होगा इसके अनन्तर मधुसूदनजी गाण्डीव धनुषधारी से बोले १६ हे गाण्डीव धनुषधारिन् ! युद्ध में जो-जो तेरे धनुष से विजय किये गये उनका विजय करनेवाला दूसरा मनुष्य इस पृथ्वी पर नहीं है १७ इन्द्र के समान भी अनेक पराक्रमी देखे उन शूरों ने भी तुझको पाकर युद्ध में परमगति को प्राप्त किया १८ इन द्रोणाचार्य, भीष्म, भग-दत्त, बिन्द, अनुबिन्द, अवन्तिदेश के राजा लोग, काम्बोज, सुद-क्षिण १९ बड़े पराक्रमी श्रुतायुष और अश्रुतायुष के सम्मुख जाकर जो तेरे पास दिव्य अस्त्र वा हस्तलाघवता वा पराक्रम वा युद्धों में मोहन होता वा विज्ञानरूपी नम्रता न होती तो तेरे सिवाय किस दूसरे की सामर्थ्य थी जो इनके आगे कुशल रहता २०। २१ और वेधचिह्नयुक्त

योग भी तुझको प्राप्त है आप गन्धर्व और संसार के जड़ चैतन्यों समेत देवताओं को भी मार सकते हो हे अर्जुन ! इस पृथ्वी पर तेरे समान कोई शूरवीर पुरुष नहीं है और जो कोई क्षत्रिय युद्ध में दुर्मद बड़े धनुषधारी हैं २२ । २३ उनके मध्य में तेरे समान देवताओं तक में किसी को नहीं देखता हूँ न सुनता हूँ ब्रह्माजी ने सृष्टि की उत्पत्ति करके गाण्डीव धनुष को उत्पन्न किया है २४ हे अर्जुन ! जो कि तुम उस धनुष के द्वारा लड़ते हो इसी कारण से तुम्हारे समान कोई नहीं है हे पाण्डव ! मैं उस बात को अवश्य कहूँगा जिसमें तेरा कल्याण होगा २५ हे महाबाहो ! युद्ध के शोभा देनेवाले कर्ण को तू मत अपमान कर यह महारथी कर्ण पराक्रमी अहङ्कारी अस्त्रज्ञ २६ कर्मकर्त्ता वा अपूर्व युद्धकर्त्ता होकर देशकाल का जाननेवाला है यहाँ अब बहुत कहने से क्या लाभ है हे पाण्डव ! अब इसका संक्षेप सुनो २७ मैं महारथी कर्ण को तेरे समान वा तुझसे अधिक मानता हूँ वह तुझसे बड़े उपायपूर्वक युद्ध में स्थिर होकर मरने के योग्य है २८ तेज में अग्नि के सदृश वेग में वायु के समान क्रोध में यमराज की सूरत सिंह के समान दृढ़ शरीर महापराक्रमी २९ और शरीर की लम्बाई में आठ हाथ बड़ी भुजाओं से युक्त बृहद्वक्षस्थलवाला बड़ी कठिनता से विजय होनेवाला महाअभिमानी शूर और बड़ा वीर है अपूर्वदर्शन ३० सब शूरवीरों के समूहों से युक्त मित्रों को निर्भय करनेवाला सदैव पाण्डवों का शत्रु दुर्योधन के मनोरथ सिद्ध करने में तत्पर ३१ तेरे सिवाय इन्द्र समेत सब देवताओं से भी मारने के अयोग्य है यह मेरा मत है कि तुम इस सूतपुत्र को मारो ३२ सावधान रुधिर मांस के धारण करनेवाले मनुष्यों समेत युद्धाभिलाषी सब देवताओं से भी वह महारथी कर्ण विजय करने के योग्य नहीं है ३३ उस दुरात्मा पाप से अहङ्कारी निर्दयी सदैव पाण्डवों से दुष्टबुद्धि रखनेवाले और पाण्डवों से निरर्थक विरोध करनेवाले कर्ण को मारकर अब तुम अपने अभीष्ट को सिद्ध करो ३४ अर्थात् अब तुम उस रथियों में श्रेष्ठ अजेय सूतपुत्र को काल के वश में करो और रथियों में श्रेष्ठ सूतपुत्र को मारकर धर्मराज में प्रीति करो ३५ हे अर्जुन ! देवता और

असुरों से अजेय तेरे पराक्रम को मैं ठीक-ठीक जानता हूँ यह दुरात्मा सूतपुत्र अहङ्कार से सदैव पाण्डवों का अपमान करता चला आता है ३६ और जिसके द्वारा पापी दुर्योधन अपने को वीर मानता है हे अर्जुन! अब उस पापों के मूलरूप सूतपुत्र को मारो ३७ हे अर्जुन! खड्ग के समान जिह्वा धनुष के समान मुख और बाणरूप डाढ़ रखनेवाले उस वेगवान् अहङ्कारी पुरुषोत्तम कर्ण को मारो ३८ मैं तुझको आज्ञा देता हूँ कि युद्ध में उस शूरवीर कर्ण को ऐसे मारो जिस प्रकार केसरी सिंह हाथी को मारता है ३९ दुर्योधन जिसके पराक्रम से तेरे पराक्रम को अपमान करता है हे अर्जुन! उस कवच और कुण्डल के उखाड़ देने-वाले कर्ण को अब युद्ध में मारो ॥ ४० ॥

इति श्रीमहाभारते कर्णपर्वणि कर्णवधार्थार्जुनगमने त्रिसप्ततितमोऽध्यायः ॥ ७३ ॥

चौहत्तरवाँ अध्याय

हे भरतवंशिन्! इसके पीछे बड़े बुद्धिमान् केशवजी कर्ण के मारने में संकल्प करके यात्रा करनेवाले अर्जुन से फिर बोले १ हे भरतवंशिन्! अब मनुष्य घोड़े हाथी आदि के घोर नाश के होने को सत्रह दिन व्यतीत हुए २ हे राजन्! शत्रुओं के समूहों से आपके शूरवीरों की सेना बड़ी होकर परस्पर युद्ध करती हुई कुछ बाकी रह गई है ३ हे अर्जुन! निश्चय करके कौरव लोग बहुत हाथी घोड़ेवाले होकर तुझ शत्रु को पाकर सेना के मुख पर नाशवान् हो गये ४ वह राजा लोग और सृञ्जय इकट्ठे हैं और सब पाण्डव लोग भी तुझ अजेय को पाकर वर्तमान हैं ५ तुझसे रक्षित शत्रुओं के मारनेवाले पाञ्चाल, पाण्डव, मत्स्य और कारुष्यदेशियों ने चन्देरीदेशियों समेत शत्रुओं के समूहों का नाश किया ६ हे तात! युद्ध में तुझसे रक्षित महारथी पाण्डवों के सिवाय कौन मनुष्य युद्ध में कौरवों के विजय करने को समर्थ हो सकता है ७ तुम युद्ध में देवता असुर और मनुष्यों समेत, युद्ध में तत्पर होकर, तीनों लोकों के विजय करने को समर्थ हो फिर कौरवीय सेना के विजय करने को क्यों न होगे ८ हे पुरुषोत्तम! तेरे विना दूसरा कौन मनुष्य इन्द्र के समान

बलपराक्रमी भी राजा भगदत्त के विजय करने को समर्थ है ९ हे निष्पाप, अर्जुन ! इसी प्रकार सब राजा लोग भी तुझसे रक्षित इस बड़ी सेना के देखने को भी समर्थ नहीं हैं १० हे अर्जुन ! इसी प्रकार युद्ध में तुझसे सदैव रक्षित धृष्टद्युम्न और शिखण्डी के हाथों से द्रोणाचार्य और भीष्म मारे गये ११ हे अर्जुन ! कौन मनुष्य युद्ध में इन्द्र के समान पराक्रमी और भरतवंशियों के महारथी भीष्म और द्रोणाचार्य को लड़ाई में विजय करने को समर्थ था १२ हे पुरुषोत्तम ! इस लोक में तेरे सिवाय कौन पुरुष युद्ध में मुख न मोड़नेवाले महाअस्त्रज्ञ अक्षौहिणी सेनाओं के स्वामी अति उग्र परस्पर मिले हुए युद्ध में दुर्मद इन भीष्म, द्रोणाचार्य, कृपाचार्य, सोमदत्त, अश्वत्थामा, कृतवर्मा, जयद्रथ, शल्य, और राजा दुर्योधन के विजय करने को समर्थ है १३ । १५ बहुत से सेनाओं के समूह तो नाश हुए घोड़े रथ वा हाथी पराजित और मारे गये हे भरतवंशिन् ! क्रोधयुक्त नाना देशों के क्षत्रिय और गोपालदास, मीयान, वशाती, पूर्वीय राजा लोग, बाढ़धान, अभिमानी भोजवंशीय और ब्राह्मण क्षत्रियों की बड़ी सेना घोड़े हाथी और नाना देशों के वासी यह सब महाउग्ररूप तुमको और भीमसेन को पाकर नाश हो गये १६।१८ महाउग्र भयकारी कर्म करनेवाले तुषार, यवन, खश, दार्व, अभिसार, दरद, बड़े समर्थ मोठर, तङ्गण, आन्धक, पुलिन्द और उग्रपराक्रमी किरात, म्लेच्छ, पहाड़ी, सागर और अनूप देश के रहनेवाले १९ । २० यह सब वेगवान् युद्ध में कुशल पराक्रमी हाथ में दण्ड रखनेवाले कौरवों समेत दुर्योधन के साथ क्रोधयुक्त २१ युद्ध में तेरे सिवाय दूसरे से विजय करने के योग्य नहीं हे शत्रुओं के तपानेवाले ! जिसके तुम रक्षक न हो वैसा कौनसा मनुष्य दुर्योधन की उस बड़ी अलंकृत सेना को देखकर सम्मुख हो सकता है २२ हे समर्थ ! वह समुद्र के समान उठी हुई धूलि से युक्त सेना २३ तुझसे रक्षित क्रोधयुक्त पाण्डवों से चीरकर मारी गई अब सात दिन हुए कि मगधदेशियों का राजा बड़ा पराक्रमी जयत्सेन २४ युद्ध में अभिमन्यु के हाथ से मारा गया उसके पीछे भीमसेन ने भयभीत कर्म करनेवाले दश हज़ार हाथियों को अपनी गदा से ही मार डाला २५

और जो कुछ राजा के घोड़े आदि थे उनको भी मार डाला इसके पीछे अपने पराक्रम से ही अन्य सैकड़ों हाथी और रथियों को मारा २६ हे पाण्डव अर्जुन ! इस रीति से उस बड़े भयकारी युद्ध के वर्तमान होने पर कौरव लोग भीमसेन और तुझको पाकर २७ घोड़े रथ और हाथियों समेत यहाँ से मर-मरकर यमपुर को गये हे अर्जुन ! इसी प्रकार वहाँ पाण्डव के हाथ से सेनामुख के मरने पर २८ परम अस्त्रज्ञ ने बाणों से ढककर सबका नाश कर दिया उसके धनुष से निकले हुए शत्रुओं के शरीरों के चीरनेवाले २९ । ३० सुनहरी पुङ्खयुक्त सीधे जानेवाले बाणों से आकाश व्याप्त हो गया वह भीमसेन एक-एक घूँसे से हज़ारों रथियों को मारता था ३१ उसने बड़े पराक्रमी इकट्ठे हुए एक लाख मनुष्य और हाथियों को मारकर दशवीं गति से उन हाथी घोड़े और रथों को पाकर मारा ३२ दोषों से पूर्ण नव गतियों को त्याग करते उसने युद्ध में बाणों को छोड़ा और आपकी सेना को मारते हुए भीष्मजी ने दश दिन तक ३३ । ३४ रथ के आसन खाली करके घोड़े वा हाथियों को मारा इसने युद्ध में रुद्र और विष्णु के समान अपने रूप को दिखाकर और पाण्डवों की सेना को आधीन करके मारा फिर चन्देरी पाञ्चाल और कैकयदेशीय राजाओं को मारते हुए ३५ विना नौका के नदी में डूबनेवाले अभागे दुर्योधन के निकालने के इच्छावान् भीष्म ने रथ हाथी और घोड़ों से व्याकुल पाण्डवीय सेना को भस्म किया ३६ युद्ध में उत्तम शस्त्र रखनेवाले हज़ारों कोटि पदाती वा सृञ्जय वा अन्य राजा लोग चलते हुए सूर्य के समान घूमनेवाले युद्ध में विजय से शोभायमान जिस भीष्मजी के देखने को भी समर्थ नहीं हुए ३७ । ३८ ऐसा प्रतापी भीष्म भी बड़े उपाय से पाण्डवों के सम्मुख गया वहाँ अकेले भीष्म ने पाण्डव और सृञ्जयों को भगाकर ३९ सब वीरों में प्रतिष्ठा को पाया फिर तुझसे रक्षित शिखण्डी ने उस महाव्रत नाम भीष्म को पाकर ४० गुप्तग्रन्थीवाले बाणों से मारा वह भीष्मपितामह तुझ पुरुषोत्तम को पाकर गिरा हुआ शरशय्या पर ऐसे सोता है जैसे कि इन्द्र को पाकर वृत्रासुर सोया था उग्ररूप भारद्वाज द्रोणाचार्य ने पाँच दिन तक

शत्रुओं की सेना को छिन्न-भिन्न करके ४१ । ४२ अभेद्यव्यूह को अलंकृत करके बड़े-बड़े महारथियों को गिराते हुए युद्ध में जयद्रथ की रक्षा करके उस उग्ररूप ने यमराज के समान रूप धारण करके रात्रि के युद्ध में प्रजा का नाश कर दिया फिर शूरवीरों को बाणों से मारकर ४३ । ४४ धृष्टद्युम्न को पाकर परम गति को पाया अब जो तुम कर्ण आदि रथियों को ४५ न हटाते तो द्रोणाचार्य युद्ध में न मारे जाते तुमने दुर्योधन की सब सेना रोकी उस कारण से द्रोणाचार्य युद्ध में धृष्टद्युम्न के हाथ से मारे गये हे अर्जुन ! तेरे सिवाय दूसरा कौन सा क्षत्रिय ऐसे कर्म को कर सकता है ४६ । ४७ जैसा कि तुमने जयद्रथ के मारने में किया था अर्थात् बड़ी भारी सेना को रोककर बड़े-बड़े शूरवीरों को मारके ४८ राजा जयद्रथ को तैंने अपने तेज और बल से मारा सब राजा लोग जयद्रथ के मारने को आश्चर्य और अद्भुत मानते हैं ४९ हे अर्जुन ! तुम महारथी हो इससे उसका मरना आश्चर्ययुक्त नहीं है हे भरतवंशिन्! मैं तुझको युद्ध में पाकर एक ही दिन में क्षत्रियों के समूहों का नाश होना मानता हूँ ५० यह मेरा पूर्ण विश्वास है सो हे अर्जुन ! यह दुर्योधन की घोर सेना युद्ध में ५१ सब शूरवीरों समेत मृतकरूप है जब कि भीष्म और द्रोणाचार्य सरीखे मारे गये वह भरतवंशियों की सेना जिसके अत्यन्त शूरवीर मारे गये और घोड़े रथ और हाथी भी मारे गये ५२ अब ऐसी दिखाई देती है जैसे कि सूर्य चन्द्रमा और नक्षत्रों से रहित आकाश होता है हे भयानक पराक्रमी अर्जुन ! यह सेना युद्ध में ऐसे नष्ट हो गई ५३ जैसे कि पूर्वसमय में इन्द्र के पराक्रम से असुरों की सेना नाश हो गई थी इस सेना में मरने से बाकी बचे हुए पाँच महारथी हैं ५४ अश्वत्थामा, कृतवर्मा, कर्ण, शल्य, कृपाचार्य हे नरोत्तम! अब तुम इन पाँचों महारथियों को मारकर ५५ शत्रुओं से रहित जान-कर द्वीप, नगर, आकाशतल, पाताल, पर्वत और महावनों समेत पृथ्वी को अपनी करके राजा को सुपुर्द करो ५६ अब असंख्य लक्ष्मी और पराक्रम का रखनेवाला युधिष्ठिर इस पृथ्वी को पावे जैसे कि पूर्व समय में विष्णुजी ने दैत्य और दानवों को मारकर पृथ्वी को इन्द्र के अर्थ

दी थी उसी प्रकार तुम भी इन सब कौरवादि क्षत्रियों को मारकर राजा को दो ५७ अब तेरे हाथ से शत्रुओं को मारने से पाञ्चालदेशीय ऐसे प्रसन्न होयँ जैसे कि विष्णुजी के हाथ से दैत्यों के मरने पर देवता लोग प्रसन्न हुए थे ५८ अथवा जो गुरु की महत्त्वता से द्विपादों में श्रेष्ठ गुरु द्रोणाचार्य के तुझ मारनेवाले की दया और करुणा अश्वत्थामा और कृपाचार्य पर है ५६ वह अत्यन्त पूजित भाई माता के बान्धवों को मानता हुआ कृतवर्मा को पाकर यमलोक में नहीं पहुँचावेगा ६० और हे कमलनयन ! अब जो तुम दया करके माता के भाई मद्रदेशियों के राजा शल्य को मारना नहीं चाहते हो ६१ तो हे नरोत्तम ! अब पाण्डवों के ऊपर पापबुद्धि रखनेवाले अत्यन्त नीच इस कर्ण को तीक्ष्ण धारवाले बाणों से मारो ६२ यह तेरा श्रेष्ठ और शुभ कर्म है इसमें किसी प्रकार का तुझको दोष नहीं हो सकता है और हम भी ठीक-ठीक जानते हैं कि इसमें कोई दोष नहीं है ६३ हे निष्पाप ! रात्रि के समय पुत्रों समेत तेरी माता के शोक करने में और द्यूत के निमित्त दुर्योधन ने तुम लोगों को जो-जो कष्ट दिये ६४ इन सब बातों का मूलरूप यह दुष्टात्मा कर्ण ही है दुर्योधन सदैव से ही कर्ण से अपनी रक्षा मानता है ६५ और इसी कर्ण के कारण से उसने मेरे भी पकड़ने का विचार किया हे बड़ाई देनेवाले ! इस राजा दुर्योधन को बुद्धि से दृढ़ विश्वास है कि ६६ कर्ण ही युद्ध में निस्सन्देह सब पाण्डवों को विजय करेगा हे अर्जुन ! तेरे पराक्रम के जाननेवाले दुर्योधन ने कर्ण का आश्रय लेकर तुम लोगों से शत्रुता अङ्गीकार करी वह कर्ण सदैव यही कहता है कि मैं सम्मुख आनेवाले पाण्डवों को ६७ । ६८ और महारथी यादव वासुदेव को विजय करूँगा वह अत्यन्त दुष्टात्मा दुर्योधन को उत्साह दिला-दिलाकर यह कहा करता है ६९ वह कर्ण जो युद्ध में गर्ज रहा है हे भरतवंशिन् ! अब उसको मारो निश्चय करके दुर्योधन ने जो-जो तुम्हारे साथ पाप किये ७० उन सब में यही दुष्टात्मा कर्ण ही कारण था और जो उस दुर्योधन के रखते हुए उसके निर्दयी इन छः महारथियों ने ७१ अधर्म युद्ध करके अभिमन्यु को मार डाला द्रोणाचार्य, कृपाचार्य, अश्वत्थामा

इन तीनों ने नरोत्तम वीरों के पीड्यमान करनेवाले हाथियों को मनुष्यों से रहित करनेवाले और महारथियों को रथ से विरथ करनेवाले घोड़ों को उनके सवारों से रहित करनेवाले पत्तियों को शस्त्र और जीवन से रहित करनेवाले ७२ कौरव वृष्णियों के यश के बढ़ानेवाले सेनाओं के छिन्न भिन्न करनेवाले महारथियों को पीड्यमान करनेवाले ७३। ७४ मनुष्य घोड़े और हाथियों को यमलोक में पहुँचानेवाले बाणों से सेना को भस्म करनेवाले आते हुए अभिमन्यु को जो मारा ७५ वह दुःख मेरे अङ्गों को भस्म किये डालता है हे मित्र! मैं तेरी सत्यता की शपथ खाता हूँ हे प्रभो! जो दुष्टात्मा कर्ण ने वहाँ भी शत्रुता करी ७६ वह कर्ण युद्ध में अभिमन्यु के आगे सम्मुखता करने को असमर्थ अभिमन्यु के बाणों से छिदा हुआ अचेत रुधिर में डूबा शरीर ७७ क्रोध से प्रकाशित श्वास लेता मुख फिरा शायकों से पीड्यमान भागने को चाहता जीवन से निराश ७८ अत्यन्त व्याकुल युद्ध में प्रहारों से थका हुआ नियत हुआ तदनन्तर समय के अनुसार युद्ध में द्रोणाचार्य के ७९ निर्दय वचन को सुनकर फिर कर्ण ने धनुष को काटा इसके पीछे उसके हाथ से टूटे शस्त्रवाले अभिमन्यु को छली बुद्धिवाले पाँच महारथियों ने ८० युद्ध में बाणों की वर्षा से घायल किया उस वीर के मरने पर सब लोगों में दुःख प्रवृत्त हुआ अर्थात् सबको तो बड़ा खेद हुआ परन्तु वह दुष्टात्मा कर्ण और दुर्योधन बहुत हँसे कर्ण ने निर्दय मनुष्य के समान पाण्डव और कौरवों के सम्मुख सभा के मध्य में द्रौपदी से जो यह कठोर शब्द कहे कि हे कृष्णे! पाण्डव नाशवान् होकर सनातन नरक को गये ८१। ८३ हे पृथुश्रोणि, मृदुभाषिणि, द्रौपदि! तुम दूसरे पति को वरो अथवा दासीरूप होकर दुर्योधन के महल में ८४ प्रवेश करो तेरे पति नहीं हैं हे भरतवंशिन्! उस समय महादुर्बुद्धि पापात्मा कर्ण ने तेरे सुनते हुए धर्मराज से यह पाप वचन कहा है अब पापी के उस वचन को सुवर्ण से जटित दश ८५। ८६ महातीक्ष्ण मृत्युकारी तेरे चलाये हुए बाण शान्त करेंगे उस दुष्टात्मा ने जो-जो और पाप तुझ पर किये अब उसके किये हुए पाप और तेरे चलाये हुए बाण उसके जीवन को

नाश करेंगे अब वह दुष्टात्मा कर्ण गाण्डीव से निकले हुए घोर बाणों को अपने अङ्गों से स्पर्श करेगा और द्रोणाचार्य और भीष्मजी के वचनों को स्मरण करते सुनहरी पुङ्ख शत्रुओं के मारनेवाले बिजली से प्रकाशित ८७। ८८ तेरे चलाये हुए बाण उसके कवच को काटकर रुधिर को पान करेंगे अब तेरी भुजाओं से छोड़े हुए महाउग्र वेगवान् बाण उसके बड़े कवच को काटकर ९० कर्ण को यमलोक में पहुँचावेंगे अब हाहाकार करनेवाले महादुःखी तेरे बाणों से पीड़ित होकर राजा लोग रथ से गिरते हुए कर्ण को देखेंगे और दुःखी हुए बान्धव रुधिर में भरे पृथ्वी पर पड़े सोते हुए ९१। ९२ टूटे शस्त्रवाले कर्ण को देखेंगे तेरे भल्ल से घायल हाथी की कक्षा का चिह्न रखनेवाली इसके रथ की बड़ी लम्बी ध्वजा महाकम्पित होकर पृथ्वी पर गिरे ९३ और भयभीत शल्य तेरे असंख्यों बाणों से टूटा सुवर्ण से जटित मृतक रथीवाले रथ को छोड़कर भागेगा ९४ इसके पीछे तेरा शत्रु दुर्योधन तेरे हाथ से कर्ण को मरा हुआ देखकर अपने जीवन और पृथ्वी के राज्य से निराश हो जावेगा ९५ हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ! कर्ण के तीक्ष्ण बाणों से घायल पाण्डवों की रक्षा चाहनेवाले यह पाञ्चलदेशीय जाते हैं ९६ सब पाञ्चाल और द्रौपदी के पुत्र, धृष्टद्युम्न, शिखण्डी, धृष्टद्युम्न के पुत्र, शतानीक नकुल के पुत्र ९७ नकुल, सहदेव, दुर्मुख, जनमेजय, सुधर्मा और सात्यकी को कर्ण के स्वाधीन ही वर्त्तमान जानो ९८ हे शत्रुओं के तपानेवाले! युद्ध में कर्ण के हाथ से घायल तेरे बान्धव पाञ्चालों के यह घोर शब्द सुने जाते हैं ९९ बड़े धनुषधारी पाञ्चालदेशीय किसी दशा में भी भयभीत होकर पीठ नहीं मोड़ते और बड़े युद्ध में मृत्यु को भी नहीं गिनते हैं १०० जिस अकेले ने बाणों के समूहों से पाण्डवीय सेना को ढक दिया ऐसे भीष्मजी को भी पाकर वह पाञ्चालदेशीय नहीं मुड़े १०१ हे शत्रुओं के विजय करनेवाले! इसी प्रकार युद्ध में सदैव अग्नि के समान प्रकाशित अस्त्ररूपी अग्नि रखनेवाले सब धनुषधारियों के गुरु युद्ध में अपने तेज से ही भस्म करनेवाले अजेय द्रोणाचार्य को १०२ और सब शत्रुओं के विजय करने में प्रवृत्त हुए पाञ्चालदेशीय कभी कर्ण से भयभीत और

मुख मोड़नेवाले नहीं हुए हैं १०३ उन शूरवीर पाञ्चालों के प्राणों को कर्ण ने बाणों के द्वारा ऐसे हर लिया जैसे कि पतङ्गों के प्राणों को अग्नि हर लेता है १०४ युद्ध में इस रीति से सम्मुख अपने मित्र के निमित्त जीवन का त्यागनेवाला कर्ण उन हज़ारों शूरवीर पाञ्चालों को नाश कर रहा है १०५ सो तुम हे भरतवंशिन् ! नौकारूप होकर उस कर्णरूपी नौकारहित अथाह समुद्र में डूबते हुए बड़े धनुषधारी पाञ्चालों की रक्षा करने के योग्य हो १०६ कर्ण ने जो महाघोर अस्त्र महात्मा भार्गव परशुरामजी से लिया है उसका रूप वृद्धियुक्त है १०७ वह सब सेनाओं का तपानेवाला घोररूप बड़ा भयानक बड़ी सेना को ढककर अपने तेज से प्रकाशमान है १०८ कर्ण के धनुष से निकले हुए यह बाण युद्ध में घूमते हैं और भ्रमरों के समूहों के समान उन बाणों ने आपके पुत्रों को तपाया है १०९ हे भरतवंशिन् ! यह पाञ्चाल युद्ध में अज्ञानी मनुष्यों से कष्ट से हटाने के योग्य कर्ण के अस्त्र को पाकर सब दिशाओं को भागते हैं ११० हे अर्जुन ! कठिन क्रोध में भरा चारों ओर को राजा और सृञ्जयों से घिरा हुआ यह भीमसेन कर्ण से युद्ध करता हुआ उसके तीक्ष्ण धारवाले बाणों से पीड्यमान होता है १११ हे भरतवंशिन् ! विचार न किया हुआ कर्ण पाण्डव सृञ्जय और पाञ्चालों को ऐसे मार रहा है जैसे कि उत्पन्न हुआ रोग शरीर को मार डालता है ११२ मैं युधिष्ठिर की सेना भर में तेरे सिवाय किसी दूसरे शूरवीर को नहीं देखता हूँ जो कर्ण के सम्मुख होकर जीता हुआ अपने घर को आवे ११३ हे नरोत्तम, अर्जुन ! अब तुम अपने तीक्ष्ण बाणों से उसको मारकर अपनी प्रतिज्ञा के समान कर्म को करके कीर्ति को पावो ११४ हे शूरवीरों में श्रेष्ठ ! तुमहीं युद्ध में कर्ण समेत कौरवों के विजय करने को समर्थ हो दूसरा कोई नहीं है यह तुमसे मैं सत्य-सत्य कहता हूँ ११५ हे नरोत्तम ! अर्जुन ! उस बड़े कर्म को करके और उस महारथी कर्ण को मारकर सफल अस्त्रयुक्त होकर प्रसन्न हो ॥ ११६ ॥

इति श्रीमहाभारते कर्णपर्वण्यर्जुनोपदेशे चतुःसप्ततितमोऽध्यायः ॥ ७४ ॥

पचहत्तरवाँ अध्याय

सञ्जय बोले कि हे भरतवंशिन् ! केशवजी के वचन सुनकर वह अर्जुन एक क्षणमात्र में ही शोक से रहित होकर प्रसन्न हुआ १ इसके पीछे प्रत्यञ्चा को चढ़ाकर गाण्डीव धनुष को टङ्कारा और कर्ण के मारने में चित्त को लगाकर केशवजी से बोला २ हे गोविन्दजी ! तुझ नाथ के द्वारा मेरी अवश्य विजय होगी अब सब भूत, भविष्य, वर्तमान के उत्पन्न होनेवाले सब जीव मुझ पर प्रसन्न हो जावो हे कृष्णजी ! आपके सङ्ग होकर मैं सम्मुख आनेवाले तीनों लोकों को भी परलोक में पहुँचा सकता हूँ फिर इस बड़े युद्ध में कर्ण को क्यों नहीं यमपुर पहुँचाऊँगा ३ । ४ हे जनार्दनजी ! पाञ्चालों की सेना को भगा हुआ देखता हूँ और कर्ण को युद्ध में निर्भय के समान देखता हूँ ५ हे वार्ष्णेय, श्रीकृष्णजी ! कर्ण के छोड़े हुए सब प्रकार से प्रकाशमान भार्गवास्त्र को ऐसे देखता हूँ जैसे कि इन्द्र का छोड़ा हुआ अशनि होता है ६ निश्चय करके यह वह युद्ध है जिस में मेरे हाथ से मारे हुए कर्ण को सब संसार के लोग तब तक कहेंगे जब तक कि यह पृथ्वी रहेगी ७ हे श्रीकृष्णजी ! अब गाण्डीव धनुष से छोड़े हुए मेरे हाथ से प्रेरित नाशकारी विकर्ण नाम बाण कर्ण को मृत्यु के समीप पहुँचावेंगे ८ अब राजा धृतराष्ट्र अपनी बुद्धि की निन्दा करेगा और दुर्योधन को राज्य के अयोग्य जानेगा हे महाबाहो ! अब राजा धृतराष्ट्र राज्य, सुख, लक्ष्मी, देश, पुर और पुत्रों से पृथक् होगा ९ । १० हे श्रीकृष्णजी ! अब कर्ण के मरने पर दुर्योधन राज्य और जीवन से निराश होगा यह आपसे सत्य-सत्य कहता हूँ ११ अब राजा धृतराष्ट्र मेरे बाणों से कर्ण को खण्ड खण्ड हुआ देखकर सन्धिसम्बन्धी आपके वचनों को स्मरण करेगा १२ हे श्रीकृष्णजी ! अब यह बाणों के और गाण्डीव धनुष के दाँव-घात से मेरे रथ को मण्डलाकार जानो १३ हे गोविन्दजी ! अब मैं तीक्ष्ण बाणों से कर्ण को मारकर राजा युधिष्ठिर के कठिन जागरण को दूर करूँगा १४ अब मेरे हाथ से कर्ण के मरने पर राजा युधिष्ठिर प्रसन्न चित्त होकर बहुत काल तक आनन्दों को पावेगा १५

हे केशवजी ! अब मैं ऐसे अजेय और अनुपम बाणों को छोडूँगा जो कि कर्ण को जीवन से नष्ट करके गिरावेंगे १६ निश्चय करके जिस दुरात्मा का यह व्रत मेरे मारने में है कि जब तक अर्जुन को न मार लूँगा तब तक अपने चरणों को भी न धोऊँगा १७ हे मधुसूदनजी ! उस पापी के व्रत को मिथ्या करके गुप्तग्रन्थीवाले बाणों से उसको रथ से गिराऊँगा १८ जो यह पृथ्वी पर अपने समान दूसरे को नहीं मानता है इसी से इस सूतपुत्र के रुधिर को पृथ्वी पान करेगी १९ हे कृष्णे ! तू विना पति की है इस प्रकार से अपनी प्रशंसा करते हुए कर्ण ने जो धृतराष्ट्र के मत से कहा है उसको विषैले सर्प के समान तीक्ष्ण धारवाले मेरे बाण मिथ्या करके उसके रुधिर को पियेंगे २० । २१ मुझ हस्त-लाघवीय से छोड़े गाण्डीव धनुष से निकले हुए बिजली के समान प्रकाशमान नाराच कर्ण को परमगति देंगे २२ अब वह कर्ण महादुःखी होगा जिसने पाण्डवों के निन्दक कुत्सित वचनों को कौरवों की सभा में कहा है २३ निश्चय करके जो वहाँ मिथ्यावादी और हास्य करने-वाले थे वह सब लोग भी इस सूतपुत्र के मरने पर शोकयुक्त होंगे अपनी प्रशंसा करनेवाले कर्ण ने धृतराष्ट्र के पुत्रों से जो यह वचन कहा है कि मैं तुमको पाण्डवों से बचाऊँगा २४ । २५ उसके उस वचन को भी मेरे तीक्ष्ण धारवाले बाण मिथ्या करेंगे और जिसने यह भी कहा है कि मैं पुत्रों समेत सब पाण्डवों को मारूँगा २६ उस कर्ण को अब मैं सब धनुषधारियों के देखते हुए ही मारूँगा बड़े साहसी दुरात्मा २७ दुर्बुद्धि दुर्योधन ने जिसके पराक्रम का आश्रय लेकर सदैव हमारा अपमान किया हे श्रीकृष्णजी ! अब कर्ण के मरने पर भयभीत धृतराष्ट्र के पुत्र राजाओं समेत दिशाओं को ऐसे भागेंगे जैसे कि सिंह से भयभीत होकर मृग भागते हैं २८ अब युद्ध में मेरे हाथ से पुत्र मित्र आदि समेत कर्ण के मरने पर राजा दुर्योधन अपने को शोचेगा २९ हे श्रीकृष्णजी अब अत्यन्त क्रोधयुक्त दुर्योधन कर्ण को मृतक देखकर ३० मुझको सब धनुषधारियों में श्रेष्ठ जानेगा मैं राजा धृतराष्ट्र को पुत्र, पौत्र, सुहृद्, मन्त्री और सेवकों से निराश करके राज्य पर युधिष्ठिर को नियत करूँगा हे केशवजी ! अब

अनेक प्रकार के मांसभक्षी चक्राङ्गनाम जीव मेरे बाणों से टूटे हुए कर्ण के ३१। ३२ अङ्गों को भक्षण करेंगे हे मधुसूदनजी! अब मैं युद्ध में राधा के पुत्र कर्ण के ३३ शिर को सब धनुषधारियों के देखते हुए ही काटूँगा और अब तीक्ष्ण विपाट क्षुरप्रनाम बाणों से ३४ दुरात्मा राधेय के गात्रों को रण में छेदूँगा तब राजा युधिष्ठिर बड़े दुःख को त्याग करेगा ३५ अर्थात् बड़ा वीर युधिष्ठिर बहुत काल से धारण किये हुए अपने चित्त के शोक को दूर करेगा हे केशव! अब मैं बान्धवों समेत राधा के पुत्र को मारकर ३६ धर्मपुत्र राजा युधिष्ठिर को अत्यन्त प्रसन्न करूँगा और कर्ण के दुःखी सब सहायकों को अग्नि के समान प्रकाशमान सर्प के समान बाणों से मारकर सुवर्णजटित गृध्रपक्षयुक्त सीधे चलनेवाले बाणों से ३७। ३८ पृथ्वी को राजाओं समेत तरूँगा और अभिमन्यु के सब शत्रुओं के ३९ अङ्गों और शिरों को अपने तीक्ष्णबाणों से मथन करूँगा और धृतराष्ट्र के पुत्रों से रहित इस पृथ्वी को अपने बड़े भाई को दूँगा ४० अथवा हे केशवजी! आप अर्जुन से रहित पृथ्वी पर घूमोगे हे यदुनाथ! अब मैं धनुषधारियों का ४१ वा कौरवों के क्रोध वा गाण्डीव धनुष के बाणों से अनृण हूँगा अब मैं तेरह वर्ष के इकट्ठे किये हुए दुःखों को त्यागूँगा ४२ युद्ध में कर्ण को मारकर जैसे कि इन्द्र ने सम्बर दैत्य को मारा था उसी प्रकार हे केशवजी! अब युद्ध में कर्ण के मरने पर युद्ध में अभीष्ट चाहनेवाले मित्र सोमकों के महारथीकार को प्राप्त हुआ मानो हे माधवजी! अब मेरी और सात्यकी की कैसी प्रीति ४३। ४४ होगी और कर्ण के मरने वा मेरी विजय होने पर कैसी प्रसन्नता होगी मैं युद्ध में उसके महारथी पुत्र समेत कर्ण को मारकर ४५ भीमसेन, नकुल, सहदेव और सात्यकी को प्रसन्न करूँगा हे माधवजी! अब मैं युद्ध में कर्ण को मारकर धृष्टद्युम्न शिखण्डी और पाञ्चालों की अनृणता को पाऊँगा ४६। ४७ अब युद्ध में क्रोधयुक्त कौरवों से युद्ध करनेवाले और युद्ध में कर्ण के मारनेवाले अर्जुन को देखो इसके पीछे मैं अपनी प्रशंसा आपके सम्मुख करूँगा ४८ इस पृथ्वी पर धनुर्वेद विद्या में आज मेरे समान कोई नहीं है और पराक्रम में भी मेरे समान कौन हो सकता है न मेरे समान कोई

क्षमावान् है और इसी प्रकार क्रोध में भी मेरे समान मैं ही हूँ ४६ मैं धनुषधारी अपने भुजाओं के बल से इकट्ठे होनेवाले देवता असुर और मनुष्य आदि जीवों को पराजय कर सकता हूँ मेरे पराक्रम और पुरुषार्थ को अद्वितीय जानो ५० मैं अकेला ही बाणरूप अग्नि रखनेवाले गाण्डीव धनुष से सब कौरव और बाह्लीकों को विजय करके बड़े हठ से समूहों समेत इस रीति से भस्म कर सकता हूँ जैसे कि हिमऋतु के अन्त होने पर सूखे वन को अग्नि भस्म कर देता है ५१ मेरे हाथ से पृषत्क नाम बाण वर्तमान हैं और अब यह धनुष भी बाणों समेत मण्डलाकार है और मेरे दोनों चरण रथ और ध्वजा से युक्त हैं ऐसी दशा में मुझ युद्ध में वर्तमान से युद्ध करके कौन विजय पा सकता है ५२ वह शत्रुओं का मारनेवाला रक्तनेत्र अद्वितीय वीर अर्जुन ऐसा कहकर भीमसेन के छुटाने का अभिलाषी और कर्ण के शरीर से उसके शिर के काटने का उत्सुक शीघ्र ही युद्धभूमि में गया ॥ ५३ ॥

इति श्रीमहाभारते कर्णपर्वण्यर्जुनयुद्धोत्सुके पञ्चसप्ततितमोऽध्यायः ॥ ७५ ॥

छिहत्तरवाँ अध्याय

धृतराष्ट्र बोले कि हे तात ! इसके पीछे युद्ध के निमित्त अर्जुन के जाने पर वहाँ पाण्डव सृञ्जय और मेरे शूरवीरों का महाभयकारी कर्ण के सम्मुख होनेवाला वह युद्ध कैसा हुआ १ सञ्जय बोले कि बड़े ध्वजाधारी बहुमूल्य सामानों से अलंकृत भेरी के शब्द से ऊँचा मुख रखनेवाली सम्मुख आई हुई उनकी सेना ऐसी गर्जी कि जैसे वर्षाऋतु में बादलों के समूह गर्जना करते हैं बड़े हाथीरूप बादलों से व्याप्त अस्त्ररूपी जल से पूर्ण बाजे वा रथ की नेमी और क्षुद्रघण्टिकाओं से शब्दायमान सुवर्ण-जटित अस्त्ररूप बिजली रखनेवाला बाण खड्ग नाराच आदि अस्त्रों की धाराओं से युक्त २। ३ भयानक वेगवान् रुधिरप्रवाह से बहनेवाला खड्गों से व्याकुल क्षत्रियों का मारनेवाला निर्दय और ऋतु के विना ही अप्रियवर्षा का करनेवाला प्रजानाशक बादल उत्पन्न हुआ ४ फिर बहुत से मिले हुए रथ उस अकेले रथी को घेरकर मृत्यु के पास पहुँचाते

थे उसी प्रकार एक उत्तम रथी एक-एक अकेले रथी को और कोई-कोई अकेला रथी भी बहुत से रथियों को मारता था ५ और किसी रथी ने कितने ही सारथी घोड़ों समेत रथों को मृत्युवश किया और कितने ही ने एक-एक हाथी के द्वारा बहुत से रथ और घोड़ों को मृत्यु के मुख में डाला ६ अर्जुन ने बाणों के समूहों से सब शत्रुओं को घोड़े रथ और सारथियों समेत यमपुर को भेजा और सवारों समेत घोड़े और पदातियों के समूहों को भी मारा ७ कृपाचार्य और शिखण्डी युद्ध में सम्मुख हुए सात्यकी दुर्योधन के सम्मुख गया श्रुत अश्वत्थामा के साथ और युधामन्यु चित्रसेन के साथ में युद्ध करने लगा ८ फिर रथी सृञ्जय और उत्तमौजा कर्ण के पुत्र सुषेण के सम्मुख हुआ और सहदेव राजा गान्धार के सम्मुख ऐसे दौड़ा जैसे कि क्षुधा से पीड़ित सिंह बड़े बैल की ओर दौड़ता है नकुल के पुत्र शतानीक ने कर्ण के पुत्र को सात्यकी ने वृषसेन को बाणों के समूहों से घायल किया और बड़े शूरवीर कर्ण के पुत्र ने बाणों की अति वर्षा से पाञ्चालदेशीय को घायल किया ९। १० रथियों में श्रेष्ठ युद्ध करनेवाले माद्रीनन्दन नकुल ने कृतवर्मा को मोहित किया और पाञ्चालदेशियों के राजा सेनापति धृष्टद्युम्न ने सब सेना समेत कर्ण को घायल किया हे भरतवंशिन्! दुश्शासन और भरतवंशियों की सेना और संसप्तकों की वृद्धिमान् सेना ने युद्ध में शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ असह्य वेगवाले भयकारी रूपवाले भीमसेन को मोहित किया ११। १२ वहाँ इस प्रकार से घायल शूरवीर उत्तमौजा ने बड़े हठ करके कर्ण के पुत्र को मारा और उसका शिर पृथ्वी और आकाश को शब्दायमान करता पृथ्वी पर गिर पड़ा १३ तब पीड्यमानरूप कर्ण ने सुषेण के शिर को पृथ्वी पर पड़ा हुआ देखकर क्रोधयुक्त हो पृथ्वी पर उसके घोड़े रथ और ध्वजा को अपने तीक्ष्ण धारवाले बाणों से काटा १४ फिर उस उत्तमौजा ने भी अपने प्रकाशित खड्ग से कर्ण को पीड्यमान किया तदनन्तर वह कृपाचार्य के पीछे चलनेवालों को मारकर शिखण्डी के रथ पर सवार हुआ १५ फिर रथारूढ़ शिखण्डी ने रथ से रहित कृपाचार्य को देखकर बाणों से घायल करना नहीं चाहा फिर अश्वत्थामा ने कृपाचार्य

को चारों ओर से आड़ में करके ऐसे छुटाया जैसे कि कीच में फँसी हुई गौ को निकालते हैं १६ वायु के पुत्र सुवर्णमयी कवचवाले भीमसेन ने आपके पुत्रों की सब सेना को अपने तीक्ष्ण बाणों से ऐसे सन्तप्त किया जैसे कि उष्णऋतु में आकाश में वर्तमान सूर्य सबको सन्तप्त कर देता है ॥ १७॥

इति श्रीमहाभारते कर्णपर्वणि संकुलयुद्धे षट्सप्ततितमोऽध्यायः ॥ ७६ ॥

सतहत्तरवाँ अध्याय

सञ्जय बोले कि इसके पीछे कठिन युद्ध में बहुत से शत्रुओं से घिरा हुआ अकेला भीमसेन उस युद्ध में अपने सारथी से यह वचन बोला कि अब तुम दुर्योधन की सेना में चलो १ हे सारथे! तुम घोड़ों के द्वारा बड़ी शीघ्रता से चलो मैं इन धृतराष्ट्र के पुत्रों को यमपुर पहुँचाऊँगा उसकी आज्ञा पाते ही वह बड़ा वेगवान् सारथी आपके पुत्र की सेना में भीमसेन को ले पहुँचा २ जिधर से कि भीमसेन ने उस सेना में जाना चाहा वहाँ दूसरे कौरव रथ, हाथी, घोड़े और पत्तियों समेत उसके सम्मुख गये ३ और चारों ओर से भीमसेन के बड़े दृढ़ रथ को अपने बाणों के समूहों से घायल किया तब भीमसेन ने अपने सुनहरी पुङ्खवाले बाणों से उन सबके छोड़े हुए आते हुए बाणों को काटा ४ भीमसेन के बाणों से टूटे हुए वह सुनहरी पुङ्खवाले बाण दो-दो चार-चार खण्ड होकर गिर पड़े हे राजन्! इसके पीछे उत्तम-उत्तम राजाओं के मध्य में भीमसेन के हाथ से मारे हुए हाथी, घोड़े, रथ और शूर लोगों के ५ घोर शब्द ऐसे प्रकट हुए जैसे कि वज्र से टूटे हुए पर्वतों के शब्द होते हैं भीमसेन के उत्तम बाणजालों से घायल हुए उत्तम-उत्तम राजाओं ने ६ युद्ध में भीमसेन के ऊपर चारों ओर से ऐसे चढ़ाई करी जैसे कि फूल के निमित्त पक्षी लोग वृक्ष पर चढ़ाई करते हैं इसके पीछे आपकी सेना के सम्मुख जाने पर उस अत्यन्त वेगवान् भीमसेन ने अपने वेग को ऐसा प्रकट किया ७ जैसे कि प्रलयकाल में सबके मारने का अभिलाषी दण्डधारी जीवों का नाशक काल जीवों को मारता है तब आपके सब शूरवीर युद्ध में उस वेगवान् के वेग के सहने को ऐसे समर्थ नहीं हुए ८ जैसे कि

समय पर सबके भक्षण करनेवाले काल के वेग को सब सृष्टि के जीव नहीं सह सकते हैं हे भरतवंशिन् ! इसके पीछे भरतवंशियों की सेना युद्ध में उस महात्मा भीमसेन के हाथ से भस्मीभूत ६ भयभीत और महाघायल होकर चारों दिशाओं में ऐसे विह्वल होकर भागी जैसे कि वायु से बादलों के समूह पलायमान होते हैं इसके पीछे बुद्धिमान् भीमसेन प्रसन्न होकर सारथी से फिर बोले १० हे सारथे ! तुम अपने और दूसरों के शूरवीरों के भिड़े और गिरते हुए रथ और ध्वजाओं को जानो मैं युद्ध करता हुआ कुछ भी नहीं जानता हूँ क्योंकि मैं भ्रान्ति से कहीं अपनी सेना को ही पृषत्क नाम बाणों से नहीं छाँटूँ ११ हे विशोक ! सब ओर से शत्रुओं को देखकर मेरा रथ ध्वजा की नोक को अधिक कम्पायमान करता है विदित होता है कि राजा रोग में ग्रसित हो गया है जो अब तक अर्जुन नहीं आया हे सूत ! मैंने बड़े-बड़े कष्टों को पाया है हे सारथे ! यह बड़ा दुःख है जो धर्मराज मुझको शत्रुओं के मध्य में छोड़कर चला गया अब मैं उसको वा अर्जुन को जीवता नहीं जानता हूँ मुझको यही बड़ा कष्ट है १२ । १३ सो मैं प्रसन्नचित्त उस बड़ी साहसी शत्रुओं की सेना को नाश करूँगा इससे अब मैं युद्धभूमि में सम्मुख आनेवाली सेना को मारकर तुझ समेत प्रसन्न होऊँगा १४ हे सूत ! रथ में शायकों के सब तूणीरों को देखकर और यह जानकर कहो कि शायक कितने बचे हैं और जो-जो शायक बचे हैं वह किस-किस प्रकार के और संख्या में कितने-कितने हैं १५ विशोक बोला हे वीर ! मार्गण नाम बाणों की संख्या तो साठ हज़ार है और क्षुर वा भल्लों की संख्या दश हज़ार है और हे वीर, पाण्डव ! नाराचों की संख्या दो हज़ार है और प्रवर नाम बाणों की संख्या तीन हज़ार है १६ इतने शस्त्र वर्तमान हैं जिनको छः बैलों से युक्त छकड़ा भी न ले चले हे बुद्धिमन् ! शस्त्रों को छोड़ो और हज़ारों गदा खड्ग वा भुजारूपी धन आपके पास वर्तमान है १७ प्रास, मुद्‌गर, शक्ति और तोमर भी हैं तुम शस्त्रों की न्यूनता और ख़र्च होने का भय मत करो १८ फिर भीमसेन के चलाये हुए राजाओं के छेदनेवाले बड़े वेगवान् बाणों से गुप्त होने-

वाले युद्ध में घोररूप छिपी हुई सूर्यवाली संसार की मृत्यु के समान इस युद्धभूमि को देखो १६ हे सूत! अब राजाओं के बालकों तक को भी यह मालूम होगा कि अकेला भीमसेन युद्ध में डूब गया या उसने कौरवों को विजय किया २० अब सब कौरव लोग मेरे ऊपर चढ़ाई करें और वृद्धों से बालक पर्यन्त सब लोग मेरा यश बखान करें मैं अकेला ही उन सबको मारूँगा अथवा वह सब मिलकर मुझ भीमसेन को पीड़ित करें २१ जो देवता कि मेरे उत्तम कर्म के उपदेश करनेवाले हैं वह सब केवल मेरी इतनी साधना करें कि वह शत्रुओं का मारनेवाला अर्जुन मेरे ध्यान से शीघ्र ऐसे आ जाय जैसे कि यज्ञ में बुलाया हुआ इन्द्र आता है २२ भरतवंशियों की इस सेना को छिन्न भिन्न देखो यह राजा लोग किस हेतु से भागते हैं मुझे विदित होता है कि वह बुद्धिमान् नरोत्तम अर्जुन शीघ्रता से इस सेना को ढकता चला आता है २३ हे विशोक! युद्ध में ध्वजाओं को और भागते हुए हाथी घोड़े और पत्तियों के समूहों को देखो हे सूत! बाण और शक्ति से घायल उन रथियों को और फैले हुए रथों को देखो २४ यह कौरवीय सेना भी महाघायल और वज्र के समान वेगयुक्त सुनहरी परवाले अर्जुन के बाणों से बराबर गुप्त २५ यह रथ घोड़े और हाथी पदातियों के समूहों को मर्दन करते हुए भागते हैं और सब कौरव लोग भी महामोहित हुए ऐसे भागे जाते हैं जैसे कि वनदाह से भयभीत होकर हाथी भागते हैं २६ हे विशोक! युद्ध में हाहाकार करनेवाले गजराज बड़े-बड़े भयानक शब्दों को करते हैं २७ विशोक बोला कि हे भीमसेन! क्रोधयुक्त अर्जुन के हाथ से खेंचे हुए गाण्डीव धनुष के घोर शब्दों को क्या आप नहीं सुनते हो क्या आपके दोनों कर्णों में बधिरता तो नहीं आ गई २८ हे पाण्डव! अब आपके सब मनोरथ वृद्धियुक्त हैं यह वानर हनुमान्‌जी हाथियों की सेना में दिखाई देते हैं और धनुष की प्रत्यञ्चा को ऐसे चेष्टा करती देखो जैसे कि नीले बादल से निकलती हुई प्रकाशमान बिजली चमकती है २९ यह वानर अर्जुन की ध्वजा के नोक पर चढ़ा हुआ शत्रुओं के समूहों को भयभीत करता हुआ सब ओर से दीखता है मैं आप उसको युद्ध में

देखकर भयभीत होता हूँ ३० और यह अर्जुन का विचित्र मुकुट भी अत्यन्त शोभा दे रहा है ३१ उसके पार्श्व में महाभयानक श्वेत बादल के रूप महाशब्दायमान देवदत्त नाम शङ्ख को देखो और हे वीर! बागडोर हाथ में लिये ३२ उन श्रीकृष्णजी के पार्श्ववर्ती सूर्य के समान प्रकाशमान वज्रनाभ चारों ओर छुराओं से जटित बड़े यश के बढ़ानेवाले सदैव यादवों से पूजित केशवजी के चक्र को देखो ३३ सीधे वृक्षों के समान बड़े-बड़े हाथियों की यह सूँड़ें छुरों से कटी हुई पृथ्वी पर गिरती हैं और उस अर्जुन के हाथ के बाणों से सवारों समेत हाथी ऐसे मारे गये जैसे कि वज्रों से पर्वत चूर्ण किये जाते हैं ३४ इसी प्रकार श्रीकृष्णजी के उस महा उत्तम चन्द्रमा के समान वर्णवाले बड़ों के योग्य पाञ्चजन्य शङ्ख को देखो और हृदय में शोभायमान कौस्तुभमणि और वैजयन्तीमाला को भी देखो ३५ निश्चय करके रथियों में श्रेष्ठ अर्जुन शत्रुओं की सेना को भगाता श्वेत बादलों के रङ्ग श्रीकृष्णजी से युक्त बड़ों के योग्य घोड़ों के द्वारा सम्मुख आता है ३६ देवराज के समान तेजस्वी आपके छोटे भाई के शायकों से फटे हुए रथ घोड़े और पत्तियों के समूहों को देखो कि यह ऐसे गिर रहे हैं जैसे कि गरुड़जी के परों की वायु से महावन गिरते हैं ३७ युद्ध में अर्जुन के हाथ से घोड़े और सारथियों समेत मारे हुए इन चार सौ रथों को देखो और बड़े बाणों से मरे हुए इन सात सौ हाथी पदाती अश्व सवार और अनेक रथियों को देखो ३८ यह महाबली अर्जुन कौरवों को मारता हुआ तेरे समक्ष में ऐसे आता है जैसे कि बड़ा चित्रग्रह आता है तुम अभीष्टसिद्ध हो आपके सब शत्रु मारे गये आपका बल पराक्रम और आयुर्दा चिरकाल पर्यन्त वृद्धि को पावे ३९ भीमसेन बोले हे विशोक, सारथे! मैं अत्यन्त प्रसन्न होकर तुझको चौदह गाँव सौ दासी और बीस रथ देता हूँ जो अर्जुन के विषय की प्रसन्नतावाली बातें मुझसे कहता है ॥ ४० ॥

इति श्रीमहाभारते कर्णपर्वणि भीमसेनविशोकसंवादे सप्तसप्ततितमोऽध्यायः ॥ ७७ ॥

अठहत्तरवाँ अध्याय

सञ्जय बोले कि युद्ध में सिंहनाद और रथ के शब्द को सुनकर अर्जुन गोविन्दजी से बोला कि हे गोविन्दजी ! शीघ्र ही आप घोड़ों को हाँकिये १ गोविन्दजी अर्जुन के वचन को सुनकर कहने लगे कि अब मैं वहीं पर शीघ्र पहुँचाता हूँ जहाँ पर कि भीमसेन नियत है २ तुषार और शङ्ख के रङ्गवाले सुवर्ण मोती और मणि-जटित जालों से अलंकृत घोड़ों के द्वारा जम्भ के मारने के इच्छावान् वज्रधारी क्रोधयुक्त इन्द्र जैसे जाता है उसी प्रकार जानेवाले उस अर्जुन को ३ रथ घोड़े हाथी पदातियों के समूह और बाणनेमी वा घोड़ों के शब्दों से पृथ्वी और दिशाओं को शब्दायमान करते हुए क्रोधरूप नरोत्तम ने सम्मुख पाया ४ हे श्रेष्ठ ! उन्हों का और अर्जुन का युद्ध शरीर और प्राणों के पापों का हरनेवाला ऐसा हुआ जैसे कि त्रिलोकी के निमित्त महाविजयी विष्णुजी और असुरों का हुआ था ५ अकेले अर्जुन ने उन्हों के चलाये हुए सब छोटे बड़े शस्त्रों को काटकर क्षुर अर्द्धचन्द्र और तीक्ष्ण भल्लों से उनके शिर और भुजाओं को अनेक प्रकार से काटा ६ चित्र विचित्रवाले व्यजन, ध्वजा, घोड़े, रथ, हाथी और पत्तियों के समूहों को भी काटा इसके पीछे वह अनेक प्रकार के रूपान्तर होकर पृथ्वी पर ऐसे गिर पड़े जैसे कि वायु के वेग से वन गिर पड़ते हैं ७ फिर सुनहरी जालयुक्त वैजयन्ती ध्वजाओं समेत शूरवीरों से अलंकृत बड़े हाथी सुनहरी पुङ्ख बाणों से चित्रित प्रकाशमान पर्वतों के समान प्रकाशमान हुए ८ अर्जुन इन्द्र के वज्र की समान उत्तम बाणों से हाथी घोड़े और रथों को मारकर कर्ण के मारने की इच्छा से इस रीति से शीघ्र चला जैसे कि पूर्व समय में राजा बलि के मारने में इन्द्र चला था ९ हे शत्रुसंहारी ! उसके पीछे वह महाबाहु पुरुषोत्तम ऐसे आ पहुँचा जैसे कि समुद्र में मगर घुस आता है १० हे राजन् ! रथ और पत्तियों से संयुक्त अनेक हाथी घोड़े और सवारों समेत बड़े प्रसन्न चित्त आपके शूरवीर इस पाण्डव के सम्मुख गये अर्जुन की ओर दौड़नेवाले उन लोगों के ऐसे बड़े शब्द हुए जैसे कि अपनी उन्म-

त्तता में आनेवाले समुद्र के शब्द होते हैं ११। १२ फिर व्याघ्रों के समान वह सब महारथी युद्ध में अपने प्राणों की आशा को त्यागकर उस पुरुषोत्तम के सम्मुख गये वहाँ अर्जुन ने उन बाणों की वर्षा करते हुए आनेवाले शूरवीरों की सेना को ऐसा छिन्न-भिन्न कर दिया जैसे कि बड़ा वायु बादलों को तिर्रबिर्र कर देता है १३। १४ उन प्रहार करनेवाले बड़े धनुषधारियों ने रथसमूहों समेत उसके सम्मुख जाकर तीक्ष्ण बाणों से अर्जुन को घायल किया १५ इसके पीछे अर्जुन ने विशिखों से हज़ारों रथ हाथी और घोड़ों को यमलोक में भेजा १६ युद्ध में अर्जुन के धनुष के निकले हुए बाणों से घायल वह महारथी भय के उत्पन्न होने पर जहाँ तहाँ छिप गये १७ अर्जुन ने उनके मध्य में उपाय करनेवाले चार सौ बड़े-बड़े महारथी शूरवीरों को बाणों के द्वारा यमलोक में पहुँचाया १८ नाना प्रकार के रूपवाले युद्ध में तीक्ष्ण बाणों से घायल होकर वह शूरवीर अर्जुन के सम्मुख जाकर दशों दिशाओं को भागे १९ युद्ध में से भागनेवाले उन लोगों के ऐसे महाशब्द हुए जैसे कि पर्वत को पाकर फटनेवाले बड़े नदी के प्रवाह के शब्द होते हैं २० हे श्रेष्ठ! फिर अर्जुन बाणों से उस सेना को खूब छेदकर और भगाकर कर्ण के सम्मुख गया २१ वहाँ उस शत्रुजेता अर्जुन का ऐसा महाशब्द हुआ जैसे कि पूर्व समय में सर्प के खाने को आनेवाले गरुड़ का शब्द होता है २२ अर्जुन के देखने का अभिलाषी महाबली भीमसेन उस अर्जुन के शब्द को सुनकर बहुत प्रसन्न हुआ २३ हे महाराज! उस प्रतापवान् भीमसेन ने आते हुए अर्जुन को सुनकर अपने प्राणों की आशा छोड़कर आपकी सेना का मर्दन किया २४ पराक्रम में वायु के समान शीघ्र चलने में वायु की तीव्रता के सदृश वायु का पुत्र प्रतापी भीमसेन वायु के समान घूमने लगा २५ हे महाराज, राजन्, धृतराष्ट्र! उससे घायल और पीड़ित होकर आपकी सेना ऐसे गिर पड़ी जैसे कि टूटी हुई नौका सागर में गिरती है २६ फिर अपनी हस्तलाघवता को दिखाते सबको यमलोक में पहुँचाते हुए उस भीमसेन ने वारंवार उग्र बाणों की वर्षा करके उस सेना को काटा २७ हे भरतवंशिन्! उस युद्ध में महाबली भीमसेन के अद्भुत

आश्चर्यकारी पराक्रम को देखकर सब लोग ऐसे चक्कर मारने लगे जैसे कि प्रलयकाल में काल के पराक्रम को देखकर सब भयभीत होकर फिरते हैं २८ हे भरतवंशिन् ! इस प्रकार भीमसेन के हाथ से पीड्यमान भयानक पराक्रमवाले बड़े-बड़े शूरवीरों को देखकर राजा दुर्योधन इस वचन को बोला २९ कि हे महाबली, शूरवीर लोगो ! तुम भीमसेन को मारो ३० इसी भीमसेन के मरने पर मैं सब पाण्डवों की सेना को भी मृतकरूप ही मानता हूँ तब तो सब राजाओं ने आपके पुत्र की आज्ञा को अङ्गीकार किया ३१ और भीमसेन को चारों ओर से बाणों की वर्षा से आच्छादित कर दिया हे राजन् ! बहुत से हाथी घोड़े और विजयाभिलाषी रथारूढ़ मनुष्यों ने ३२ भीमसेन को घेर लिया तब उन शूरों से चारों ओर को घिरा हुआ वह पराक्रमी भीमसेन ३३ महाशोभायमान हुआ हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ ! जैसे कि नक्षत्रों में शोभायमान चन्द्रमा पूर्णमासी के दिन अपने मण्डल से युक्त होकर शोभित होता है ३४ उसी प्रकार वह दर्शनीय नरोत्तम भीमसेन भी युद्ध में शोभायमान हुआ हे महाराज ! जैसा अर्जुन है वैसा ही यह भी है इसमें भेद नहीं है ३५ क्रोध से रक्तनेत्र भीमसेन के मारने के उत्सुक उन सब शूरवीर राजाओं ने बाणों की वर्षा उसके ऊपर करी ३६ भीमसेन टेढ़े पर्ववाले बाणों से उस बड़ी सेना को चीर कर युद्धभूमि से ऐसे निकल गया जैसे कि जल की मछली जल के जाल में से निकल जाती हैं ३७ । ३८ हे भरतवंशिन् ! भीमसेन ने मुख न मोड़नेवाले दश हज़ार हाथी दो लाख दो सौ मनुष्य पाँच हज़ार घोड़े और सौ रथियों को मार कर रुधिर के प्रवाहवाली नदी को जारी किया ३९ जिसमें रुधिररूप जल रथरूप भ्रमर चक्र हाथीरूप ग्राहों से भयानक मनुष्यरूप मछली घोड़ेरूप नक्र और बालरूप शैवल और शाद्वल थे ४० और बहुत रत्नों की हरनेवाली सूँड़ कटे हाथियों से व्याप्त जङ्घारूप ग्राहों से भयानक मज्जारूपी पङ्क और शिररूप पत्थरों से संयुक्त थी ४१ धनुष, चाबुक, तूणीर, गदा, परिघ, ध्वजा, छत्ररूपी हंसों से युक्त और उष्णीष अर्थात् पगड़ीरूप झागवाली ४२ हाररूपी कमलों के वन रखनेवाली और

पृथ्वी की धूलिरूप तरङ्गों की रखनेवाली युद्ध में उत्तम पुरुषों के चलन रखनेवाले पुरुषों से सुगमता से पार होने के योग्य भयभीतों को दुर्गम ४३ शूरवीररूप ग्राहों से पूर्ण युद्ध में पितृलोक की ओर को बहनेवाली थी ऐसी उग्र अद्भुत नदी को इस पुरुषोत्तम भीमसेन ने एक क्षणमात्र ही में जारी कर दिया ४४ जैसे कि अशुद्ध अन्तःकरणवाले पुरुषों से महा-दुस्तररूप वैतरणी कहाती है उसी प्रकार इसको भी महाघोर दुःख और भय की करनेवाली कहा ४५ वह रथियों में श्रेष्ठ पाण्डव जिस-जिस ओर होकर निकला उस-उस ओर के लाखों ही शूरवीरों को मारा ४६ हे महाराज ! इस रीति से युद्ध में भीमसेन के किये हुए कर्म को देखकर दुर्योधन शकुनी से यह वचन बोला ४७ कि हे मामाजी ! इस बड़े पराक्रमी भीमसेन को युद्ध में तुम विजय करो इसके विजय हो जाने पर मैं सब पाण्डवीय सेना को विजय किया हुआ ही मानता हूँ ४८ हे महाराज ! इसके अनन्तर भाइयों समेत बड़े भारी युद्ध करने को उत्सुक प्रतापवान् शकुनी चला ४९ उस वीर ने युद्ध में भयानक पराक्रमी भीमसेन को पाकर उसको ऐसे रोका जैसे कि समुद्र की मर्यादा समुद्र को रोक लेती है ५० तीक्ष्ण बाणों से रोका हुआ भीमसेन उसकी ओर को लौटा और शकुनी ने उसके हाथ और छाती पर ५१ सुनहरी पुङ्ख-वाले तीक्ष्णधार नाराचों को चलाया फिर वह कङ्कपक्ष से जटित घोर-बाण महात्मा पाण्डव भीमसेन के कवच को काटकर ५२ शरीर में घुस गये फिर युद्ध में अत्यन्त घायल उस भीमसेन ने क्रोधयुक्त होकर सुवर्ण-जटित बाण को ५३ शकुनी के ऊपर चलाया हे राजन् ! शत्रुसन्तापी हस्तलाघवीय महाबली शकुनी ने उस आते हुए घोर बाण को सात खण्ड कर दिया ५४ हे राजन् ! उस बाण के पृथ्वी में गिरने पर क्रोध-युक्त हँसते हुए भीमसेन ने भल्ल से शकुनी के धनुष को काटा फिर प्रताप-वान् शकुनी ने उस धनुष को डालकर ५५ । ५६ वेग से दूसरे धनुष और सोलह भल्लों को लेकर उन टेढ़े भल्लों में से दो भल्लों से उसके सारथी को और सात भल्लों से भीमसेन को घायल किया फिर एक से ध्वजा को और दो भल्लों से छत्र को काटकर ५७ । ५८ सौबल के पुत्र शकुनी ने

चार बाणों से चारों घोड़ों को घायल किया इसके पीछे क्रोधयुक्त प्रतापी भीमसेन ने युद्ध में सुनहरी दण्डवाली शक्ति को फेंका ५९ भीमसेन की भुजा से छोड़ी हुई वह सर्प की जिह्वा के समान चञ्चल शक्ति युद्ध में शीघ्र ही महात्मा शकुनी के ऊपर गिरी ६० इसके पीछे क्रोधरूप शकुनी ने उस सुवर्ण से अलंकृत शक्ति को लेकर ६१ भीमसेन के ऊपर फेंका तब वह महात्मा पाण्डव की वामभुजा को छेदकर पृथ्वी पर ऐसे गिर पड़ी ६२ जैसे कि आकाश से गिरी हुई बिजली होती है इसके पीछे धृतराष्ट्र के लड़कों ने चारों ओर से बड़ा शब्द किया ६३ फिर उन वीरों के सिंहनाद को न सहकर बड़े भारी अलंकृत धनुष को लेकर ६४ अपने जीवन की आशा को त्याग करके युद्ध में एक मुहूर्त्त में ही शकुनी की सेना को शायकों से ढक दिया ६५ हे राजन् ! फिर शीघ्रता करनेवाले पराक्रमी भीमसेन ने उसको चारों घोड़ों समेत सारथी को मारकर भल्ल से उसकी ध्वजा को भी काटा ६६ फिर यह नरोत्तम भी शीघ्रता करके मृतक घोड़ों के रथ को त्यागकर धनुष को टङ्कार क्रोध से लाल नेत्र करके सम्मुख नियत हुआ ६७ और भीमसेन को चारों ओर से बाणों के द्वारा मोहित किया फिर अत्यन्त प्रतापवान् भीमसेन ने बड़े वेग से उनको निष्फल करके ६८ धनुष को काटकर तीक्ष्ण धारवाले बाणों से महापीड़ित किया पराक्रमी शत्रु से अत्यन्त घायल हुआ वह श ु विजयी शकुनी ६९ कुछ प्राणशेष होकर पृथ्वी पर गिर पड़ा हे राजन् ! इसके पीछे से आपका पुत्र उसको अचेत जानकर ७० भीमसेन के देखते हुए युद्धभूमि से रथ की सवारी में बैठाकर हटा ले गया फिर उस नरोत्तम के रथ पर सवार होने और भीमसेन का बड़ा भय उत्पन्न होने पर और धनुषधारी भीमसेन के हाथ से शकुनी के विजय होने पर धृतराष्ट्र के पुत्र मुख मोड़-मोड़कर भयभीत होकर दशों दिशाओं को भागे ७१ । ७२ बड़े भय से पूर्ण अपने मामा का चाहनेवाला आपका पुत्र दुर्योधन शीघ्रगामी घोड़ों के द्वारा हट गया ७३ हे भरतवंशिन् ! सेना के सब लोग राजा को मुख फेरकर हटा हुआ देखकर चारों ओर से द्वैरथियों को छोड़कर भागे ७४ तब भीमसेन उन घायल

भयभीत मुख मोड़कर भागनेवाले धृतराष्ट्र के पुत्रों को देखकर सैकड़ों बाणों की वर्षा करता हुआ वेग से उन सबके सम्मुख दौड़ा ७५ हे राजन् ! भीमसेन के हाथ से घायल चारों ओर से मुख मोड़नेवाले वह धृतराष्ट्र के पुत्र कर्ण को पाकर युद्ध में नियत हुए ७६ वह बड़ा पराक्रमी बलवान् कर्ण उनका ऐसे रक्षक हुआ जैसे कि टूटी हुई नौका टापू को पाकर नियत हो जाती है ७७ हे पुरुषोत्तम ! समय के लौट पौट होने पर जैसी दशावाली पतवार होती है वैसे ही आपके शूरवीर लोग भी पुरुषोत्तम कर्ण को पाकर उसी दशावाले हुए ७८ हे राजन् ! वह परस्पर में विश्वासयुक्त अत्यन्त प्रसन्न नियत हुए और मृत्यु को हथेली पर रखकर युद्ध के निमित्त गये ॥ ७९ ॥

इति श्रीमहाभारते कर्णपर्वणि भीमसेनयुद्धेऽष्टसप्ततितमोऽध्यायः ॥ ७८ ॥

उन्नासीवाँ अध्याय

धृतराष्ट्र बोले कि, हे सञ्जय ! तब युद्ध में भीमसेन के हाथ से सेना के पराजय होने पर दुर्योधन ने वा शकुनी ने क्या कहा १ विजय करनेवालों में श्रेष्ठ कर्ण वा मेरे शूरवीर कृपाचार्य कृतवर्मा अश्वत्थामा और दुश्शासन इन सबने युद्ध में क्या-क्या कहा २ मैं पाण्डव भीमसेन के पराक्रम को अत्यन्त अद्भुत और अपूर्व मानता हूँ कि उस अकेले ने ही युद्ध में मेरे सब शूरवीरों से युद्ध किया ३ और राधा के पुत्र शत्रुहन्ता कर्ण ने अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार सब शूरवीरों समेत कौरवों को कल्याण रक्षा स्थिरता वा जीवन की आशा को नियत किया ४ हे सञ्जय ! बड़े तेजस्वी भीमसेन के हाथ से छिन्न-भिन्न होजानेवाली उस सेना को देखकर ५ आधिरथी कर्ण मेरे पराजित पुत्र और बड़े महारथी राजाओं ने युद्ध में क्या-क्या किया यह सब मुझसे कहो क्योंकि तुम बड़े चतुर और सावधान हो ६ सञ्जय बोले कि हे महाराज ! प्रतापवान् कर्ण ने तीसरे पाश में भीमसेन के देखते हुए सब सोमकों को मारा ७ और भीमसेन ने भी दुर्योधन की बड़ी पराक्रमी सेना को सबके देखते हुए मारा इसके पीछे कर्ण ने शल्य से कहा कि मुझको पाञ्चालों के समीप

पहुँचाओ ८ अर्थात् बुद्धिमान् पराक्रमी भीमसेन के हाथ से सेना को भागा हुआ देखकर कर्ण ने अपने सारथी शल्य से कहा कि मुझको पाञ्चालों के सम्मुख ले चलो ९ इसके पीछे बड़े बलवान् मद्रदेश के राजा शल्य ने बड़े शीघ्रगामी श्वेत घोड़ों को चन्देरी पाञ्चाल और कारुष्यदेशियों के सम्मुख पहुँचाया १० शत्रु की सेना के मर्दन करनेवाले शल्य ने उस बड़ी सेना में प्रवेश करके घोड़ों को वहाँ-वहाँ पर चलाया जहाँ-जहाँ उस सेनापति कर्ण ने चाहा था ११ हे राजन्! पाण्डव और पाञ्चाल उस बादल के रूप व्याघ्रचर्म से मढ़े हुए रथ को देखकर भयभीत हुए १२ इसके अनन्तर उस बड़े युद्ध में उस रथ का शब्द बादल के गर्जने के समान ऐसा प्रकट हुआ जैसे कि फटते हुए पर्वत का शब्द होता है १३ इसके पीछे कर्ण ने कान तक खैंचे हुए धनुष के छोड़े हुए बाणसमूहों से पाण्डवीय सेना के हजारों मनुष्यों को मारा १४ पाण्डवों के महारथी बड़े-बड़े धनुषधारियों ने युद्ध में ऐसे कर्म करनेवाले उस अजेय कर्ण को घेर लिया १५ शिखण्डी, भीमसेन, धृष्टद्युम्न, नकुल, सहदेव द्रौपदी के पुत्र और सात्यकी १६ बाणों की वर्षा से कर्ण के मारने के अभिलाषी इन सब शूरवीरों ने जब कर्ण को घेर लिया तब नरोत्तम शूर सात्यकी ने तीक्ष्ण धारवाले बीस बाणों से कर्ण को युद्ध में जत्रस्थान पर घायल किया १७। १८ शिखण्डी ने पच्चीस बाणों से धृष्टद्युम्न ने सात बाणों से द्रौपदी के पुत्रों ने चौंसठ बाणों से सहदेव ने सात बाणों से नकुल ने सौ बाणों से उस कर्ण को पीड्यमान किया १९ और बड़े पराक्रमी क्रोधयुक्त भीमसेन ने युद्ध में टेढ़े पर्ववाले नब्बे बाणों से कर्ण को जत्रु आदि अङ्गों पर पीड़ित किया २० इसके पीछे बड़े बली कर्ण ने बहुत हँसकर अपने धनुष को टङ्कारकर बाणों को छोड़ा २१ हे भरतर्षभ! कर्ण ने उन सबको पाँच-पाँच बाणों से व्यथित किया २२ और सात्यकी के धनुष ध्वजा को काटकर नौ बाणों से उसको छाती पर घायल किया फिर उस क्रोधयुक्त ने तीनसौ बाणों से भीमसेन को पीड्यमान किया २३ और भल्ल से सहदेव की ध्वजा को काट उस शत्रुसन्तापी ने तीन बाणों से उसके सारथी को मारा २४ और एक पलमात्र में ही द्रौपदी के पुत्रों को विरथ

कर दिया यह बड़ा आश्चर्य सा हुआ २५ टेढ़े पर्ववाले बाणों से उन सबका मुख मोड़कर पाञ्चाल और चन्देरी देश के बड़े-बड़े महारथी शूरवीरों को मारा २६ हे राजन्! युद्ध में घायल उन चन्देरीदेशियों ने अकेले कर्ण के सम्मुख जाकर उसको बाणों के समूहों से घायल किया २७ हे महाराज! जो अकेले प्रतापी कर्ण ने युद्ध में बड़ी सामर्थ्य से उपाय करनेवाले धनुषधारी शूर युद्धकर्ता पाण्डवों को बाणों से रोका वहाँ महात्मा कर्ण की हस्तलाघवता से २८। २९ सिद्ध चारणों समेत सब देवता प्रसन्न हुए और बड़े धनुषधारी धृतराष्ट्र के पुत्रों ने उस महारथियों में श्रेष्ठ नरोत्तम सब धनुषधारियों में श्रेष्ठ कर्ण की प्रशंसा करी हे महाराज! इसके पीछे कर्ण ने शत्रुओं की सेना का ऐसा नाश कर दिया ३०। ३१ जैसे कि उष्ण ऋतु में बड़ा वृद्धिमान् प्रचण्ड अग्नि वन को जलाता है उस प्रचण्ड अग्नि के समान कर्ण से घायल हुए वह सब पाण्डव महारथी कर्ण को देखकर इधर उधर भयभीत होकर भागे ३२। ३३ वहाँ उस बड़े युद्ध में कर्ण के उत्तम धनुष से निकले हुए तीक्ष्ण शायकों से घायल पाञ्चाल लोगों के बड़े भारी शब्द हुए उन शब्दों से पाण्डवों की बड़ी सेना अत्यन्त भयभीत हुई ३४। ३५ वहाँ शत्रुओं के मनुष्यों ने युद्ध में अकेले कर्ण को ही शूरवीर युद्धकर्ता माना तब शत्रुओं के पीड़ा करनेवाले कर्ण ने फिर भी अद्भुत कर्म किया कि ३६ कोई पाण्डव उसकी ओर देखने को भी समर्थ नहीं हुआ जैसे कि जल का प्रवाह उत्तम पर्व को पाकर रुक जाता है ३७ उसी प्रकार वह पाण्डवीय सेना कर्ण को पाकर छिन्न-भिन्न हो गई हे राजन्! युद्ध में महाबाहु कर्ण भी निर्धूम अग्नि के समान प्रकाशमान ३८ पाण्डवों की बड़ी सेना को भस्म करता हुआ नियत होकर उस शूरवीर ने युद्ध करनेवाले वीरों के कुण्डल धारण किये हुए ३९ शिरों को और भुजाओं को बड़ी तीव्रता से अपने बाणों के द्वारा काट डाला हे राजन्! युद्धव्रतधारी कर्ण ने हाथीदाँत के कब्जा रखनेवाले खड्ग ध्वजा और शक्तियों को घोड़े हाथी ४० वा अनेक प्रकार के रथ, पताका, व्यजन, अक्षयुग, योक्त्र और बहुत रूप के चक्रों को ४१ बहुत प्रकारों से

काटा हे भरतवंशिन् ! वहाँ कर्ण के हाथ से मारे हुए हाथी घोड़ों के कारण से ४२ वह पृथ्वी रुधिर मांस की पङ्कवाली होकर महा अगम्य हो गई मृतक घोड़े पदाती रथ और हाथियों के हेतु से पृथ्वी की समता और असमता नहीं जानी गई अपने और दूसरों के शूरवीर भी परस्पर में नहीं जाने गये ४३ । ४४ हे महाराज ! कर्ण के अस्त्र और बाणों से घोर अन्धकार हो जाने पर उसके धनुष से छूटे हुए सुवर्णजटित बाणों से ४५ पाण्डवों के महारथी ढक गये और वह सब कर्ण से लड़नेवाले पाण्डवों के महारथी वारंवार कर्ण से पराजित हुए और जैसे कि वन में मृगों के समूहों को सिंह भगाता है ४६ । ४७ उसी प्रकार पाञ्चालों के उत्तम रथी और शत्रुओं के मनुष्यों को भगाते और युद्ध में शूरवीरों को डराते बड़े यशस्वी कर्ण ने ४८ उस सेना को ऐसे भगाया जैसे कि भेड़िया पशुओं के समूहों को भगाता है फिर बड़े धनुषधारी धृतराष्ट्र के पुत्र पाण्डवीय सेना को मुख मुड़ा हुआ देखकर ४९ भयानक शब्दों को करते हुए वहाँ आये और अत्यन्त प्रसन्नचित्त दुर्योधन ने ५० अनेक प्रकार के सब बाजों को बजवाया वहाँ पर पराजित हुए नरोत्तम पाञ्चालदेशीय भी ५१ शरीर की आशा छोड़कर शूरों के समान लौटे हे महाराज ! फिर कर्ण ने उन लौटे हुए शूरवीरों को ५२ बहुत प्रकार से पराजय किया उस युद्ध में क्रोधयुक्त कर्ण के बाणों से पाञ्चालों के बीस रथी ५३ और सैकड़ों चन्देरी के वासी मारे गये फिर वह शत्रुसन्तापी कर्ण रथों को रथ की बैठक और उत्तम घोड़ों से रहित करके ५४ हाथियों के कन्धों को सवारों से रहित कर पदातियों को भगाता मध्याह्न के सूर्य के समान कठिनता से दर्शन के योग्य ५५ मृत्यु वा काल के समान शरीर को धारण किये शोभायमान हुआ हे महाराज ! इस रीति से शत्रुओं के समूहों को मारनेवाला बड़ा धनुषधारी कर्ण मनुष्य, घोड़े, रथ और हाथियों को मारकर ऐसे नियत हुआ जैसे कि बड़ा पराक्रमी काल जीवों के समूहों को मारकर नियत होता है ५६ । ५७ इसी प्रकार वह अकेला महारथी सोमकों को मारकर नियत हुआ वहाँ पर हमने पाञ्चालों के अद्भुत पराक्रम को देखा ५८ कि सेना मुख पर घायल होनेवालों ने

भी कर्ण से मुख न मोड़कर सम्मुखता करी राजा दुर्योधन दुश्शासन वा शार्दूल कृपाचार्य ५९ अश्वत्थामा कृतवर्मा और महाबली शकुनी ने पाण्डवों के हज़ारों मनुष्यों को मारा ६० हे राजेन्द्र ! फिर सत्यपराक्रमी और क्रोधयुक्त दोनों भाई कर्ण के पुत्रों ने इधर उधर से पाण्डवों की सेना को मारा ६१ वहाँ बड़ा भारी नाशकारी घोर युद्ध हुआ इसी प्रकार शूरवीर पाण्डव, धृष्टद्युम्न ६२ और अत्यन्त रोषभरे द्रौपदी के पुत्रों ने आपकी सेना को मारा इस प्रकार से जहाँ तहाँ स्थानों में पाण्डवी सेना का बहुत नाश हुआ ६३ और युद्ध में बड़े पराक्रमी भीमसेन को पाकर आपके भी शूरों का नाश हुआ ॥ ६४ ॥

इति श्रीमहाभारते कर्णपर्वणि संकुलयुद्धयेकोनाशीतितमोऽध्यायः ॥ ७९ ॥

अस्सीवाँ अध्याय

सञ्जय बोले कि हे महाराज ! फिर अर्जुन ने चारों प्रकार की सेना को मार के युद्ध में महाक्रोधरूप कर्ण को देखकर १ पृथ्वी को मांस रुधिर मज्जा हाड़ से व्याप्त कर नदी के रूप बनाया जिसमें रुधिर जल वा मांस मज्जा हाड़रूप कीच और मनुष्यों के शिररूप पत्थर और हाथी और घोड़ेरूप किनारे २ शूरवीरों के अस्थिसमूहों से पूर्ण काक और गृध्रों से शब्दायमान छत्ररूप धनुष और नौका से युक्त वीररूप वृक्षों की बहानेवाली ३ धाररूप कमलिनी वा हस्तत्राणरूप उत्तम फेनों की रखनेवाली धनुष बाण और ध्वजा से संयुक्त मनुष्यों के घुटे हुए कपालों से व्याप्त ४ ढाल वा कवचरूप भ्रमणों से युक्त रथरूप नौका से व्याकुल विजयाभिलाषी शूरवीर लोगों को सुखपूर्वक तरने के योग्य और भयभीतों को अत्यन्त अगम्य ५ ऐसी नदी को जारी करके फिर शत्रुओं के वीरों के मारनेवाले अर्जुन ने वासुदेवजी से यह वचन कहा ६ कि हे श्रीकृष्णजी ! युद्ध में यह कर्ण की ध्वजा दिखाई देती है और यह भीमसेन आदि महारथी कर्ण से लड़ रहे हैं ७ हे जनार्दनजी ! कर्ण से भयभीत हो होकर यह पाञ्चाल लोग भागते हैं और श्वेतछत्रधारी यह राजा दुर्योधन ८ कर्ण से पराजित हुए पाञ्चालों को भगाता हुआ बड़ा शोभित हो रहा

है महारथी अश्वत्थामा, कृतवर्मा, कृपाचार्य ९ यह सब भी कर्ण से रक्षित होकर राजा की रक्षा करते हैं वह हम सबसे अबध्य सोमकों को मारेंगे १० और हे श्रीकृष्णजी! रथवानों में कुशल यह शल्य रथ के ऊपर बैठा हुआ कर्ण के रथ को अत्यन्त शोभित कर रहा है ११ वहाँ मैं चाहता हूँ कि आप मेरे रथ को ले चलो मैं युद्ध में कर्ण को मारे बिना किसी प्रकार से नहीं लौटूँगा १२ हे जनार्दनजी! दूसरी दशा में यह कर्ण हमारे देखते हुए महारथी पाण्डव और सृञ्जयों का नाश करेगा १३ इसके पीछे केशवजी अर्जुन समेत रथ की सवारी के द्वारा १४ शीघ्र ही द्वैरथ युद्ध में बड़े धनुषधारी कर्ण और आपकी सेना के सम्मुख गये महाबाहु श्रीकृष्णजी अर्जुन के कहने से सब पाण्डवीय सेना को रथपर से ही विश्वासयुक्त करते हुए चले १५ उस शुभकारी युद्ध में अर्जुन के रथ का शब्द ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि इन्द्र वज्र के समान बड़े जल के वेग का शब्द होता है १६ सत्यपराक्रमी महासाहसी पाण्डव अर्जुन रथ के बड़े शब्दसमेत आपकी सेना को विजय करता हुआ सम्मुख गया १७ मद्र का राजा शल्य श्वेत घोड़ोंसमेत श्रीकृष्णजी के साथ आते हुए अर्जुन को और उस महात्मा की ध्वजा को देखकर कर्ण से बोला १८ हे कर्ण! श्वेत घोड़े और श्रीकृष्ण को सारथी रखनेवाला यह द्वैरथ जिसको कि तुम पूछते हो युद्ध में सबको मारता हुआ आता है १९ यह अर्जुन गाण्डीव धनुष को लिये हुए वर्तमान है जो तू इसको मारेगा तब हमारा कल्याण होगा २० हे राधा के पुत्र, कर्ण! यह अकेला भरतवंशी अर्जुन उत्तम रथियों को मारता हुआ तुमको चाहता चला आता है अब तुम इसके सम्मुख जाओ २१ देखो यह दुर्योधन की सेना शीघ्रता से शत्रुओं के मारनेवाले अर्जुन के भय से चारों ओर अलग-अलग हुई जाती है २२ अर्जुन सब सेनाओं को छोड़ता हुआ तेरे ही निमित्त शीघ्रता करता है मैं यह मानता और जानता हूँ और उसके शरीर से भी विदित होता है २३ वह अर्जुन तेरे सिवाय किसी के साथ युद्ध करने का अभिलाषी होकर स्थिर नहीं होता है जो कि भीमसेन के पीड़ित होने से क्रोध में भरा

हुआ है २४ अत्यन्त घायल और विरथ धर्मराज को वा शिखण्डी, सात्यकी, धृष्टद्युम्न २५ द्रौपदी के पुत्र, युधामन्यु, उत्तमौजा और नकुल सहदेव इन दोनों वीर भाइयों को घायल देखकर शत्रुओं का तपानेवाला अकेला रथी अर्जुन अकस्मात् तेरे सम्मुख आता है वह क्रोध से रक्तनेत्र रोष में भरा सब राजाओं के मारने का अभिलाषी शीघ्रता से सेनाओं को त्यागता हुआ निस्सन्देह हमारे सम्मुख आता है २६ । २७ हे कर्ण ! तुम शीघ्र ही उसके सम्मुख चलो तेरे सिवाय इस लोक में दूसरे ऐसे धनुषधारी को नहीं देखता हूँ २८ जो कि युद्ध में क्रोधयुक्त अर्जुन को मर्यादा के समान रोककर धारण करे मैं पीछे और दोनों दायें बायें उसकी रक्षा को नहीं देखता हूँ वह अकेला ही तेरे सम्मुख आता है तुम अपने स्थान को देखो २९ । ३० हे राधा के पुत्र ! तुम्हीं युद्ध में श्रीकृष्ण और अर्जुन को अपने स्वाधीन करने को समर्थ हो यह तेरा ही भाररूप कार्य है तू अर्जुन के सम्मुख चल ३१ तुम भीष्म द्रोणाचार्य और अश्वत्थामा और कृपाचार्य के समान हो इस हेतु से महायुद्ध में इस आते हुए अर्जुन को रोको ३२ हे कर्ण ! सर्प की समान होठों के चाबनेवाले वृषभ के समान गर्जनेवाले वनवासी व्याघ्र के समान अर्जुन को मारो ३३ यह महारथी धृतराष्ट्र के पुत्र और अन्य राजा लोग युद्ध में अर्जुन के भय से बड़ी शीघ्रता से भागते हैं ३४ हे सूतनन्दन, वीर, कर्ण ! तेरे सिवाय अब दूसरा कोई ऐसा मनुष्य नहीं है जो कि उन भागे हुओं के भय को निवृत्त करे हे पुरुषोत्तम ! यह सब कौरव युद्ध में तुझ रक्षक को पाकर ३५ तेरी रक्षा में आश्रित होने की इच्छा से नियत हैं वैदेह, काम्बोज, अम्बष्ठ, नग्नजित ३६ और युद्ध में बड़ी कठिनता से विजय होनेवाले गान्धारदेशीय जिस तेरे धैर्य से विजय किये गये हे राधा के पुत्र ! उस धैर्य को करके फिर पाण्डवों के सम्मुख चल ३७ हे महाबाहो ! बड़ी शूरता में नियत होकर उन यादव वासुदेवजी के सम्मुख चलो जो कि अर्जुन के साथ अत्यन्त प्रीति रखनेवाले हैं ३८ कर्ण बोला कि हे शल्य ! तुम अपने स्वभाव में नियत हो जाओ हे महाबाहो ! अब तुम मुझको

अङ्गीकृत विदित होते हो तुम अर्जुन से भयभीत मत हो ३९ अब मेरे भुजाओं के बल को और पाई हुई शिक्षा को देखो मैं अकेला ही इस पाण्डवों की बड़ी सेना को मारूँगा ४० इसके अनन्तर पुरुषोत्तम श्रीकृष्ण और अर्जुन को मारूँगा यह तुमसे सत्य ही सत्य कहता हूँ कि इन दोनों वीरों को विना मारे हुए कभी न हटूँगा अथवा चाहे उन्हीं के हाथ से मरकर शयन करूँगा क्योंकि युद्ध में सदैव ही विजय नहीं हुआ करती है ४१ अब मैं उनको मारकर वा उनके हाथ से मरकर अपने मनोरथ को सिद्ध करूँगा शल्य बोला कि हे कर्ण ! महारथी लोग युद्ध में इस रथियों में बड़े वीर अर्जुन को सबसे अजेय कहते हैं फिर हे कर्ण ! ऐसा कौन सा मनुष्य है जो इस श्रीकृष्ण से रक्षित अर्जुन को विजय करने का उत्साह करे ४२ कर्ण बोला कि लोक में ऐसा उत्तम रथी जहाँ तक हमने सुना कभी कोई नहीं हुआ ऐसे प्रतापी प्रसिद्ध कीर्तिवाले अर्जुन के सम्मुख होकर युद्ध को करूँगा उस महायुद्ध में मेरी वीरता को देखो ४३ यह रथियों में बड़ा वीर कौरवराज का पुत्र युद्धभूमि में श्वेत घोड़ों के द्वारा घूमता है अब वह मुझको बड़े दुःख से मिलता है और कहता है कि कर्ण के ही विजय में मेरी विजय और कर्ण के ही नाश में मेरा भी नाश है ४४ राजकुमार के प्रस्वेद और कम्प से रहित दोनों हाथ चिह्नों से युक्त होकर वृद्धिमान् हैं वह दृढ़शस्त्र अर्जुन बड़ा कर्मी और हस्तलाघवीय है इस पाण्डव के समान कोई युद्धकर्ता नहीं है ४५ बहुत बाणों को भी लेता है और उन सबको एक ही बाण के समान धनुष पर चढ़ाकर छोड़ता है फिर सकल बाण एक कोस पर गिरते हैं उसके समान इस पृथ्वी पर कौन शूरवीर है ४६ श्रीकृष्ण को साथ रखनेवाले जिस वेगवान् अधिरथी अर्जुन ने खाण्डव वन में अग्नि को तृप्त किया वहाँ ही महात्मा श्रीकृष्णजी ने चक्र को और पाण्डव अर्जुन ने गाण्डीव धनुष को पाया ४७ अर्थात् बड़े पराक्रमी महाबाहु ने अग्नि से ही महाशब्दायमान श्वेत घोड़ों से युक्त रथ को वा दो अक्षय तूणीरों को और दिव्य शस्त्रों को पाया ४८ इसी प्रकार इन्द्रलोक में युद्ध करके असंख्य कालकेय नाम दैत्यों को मारा और देवदत्त नाम

शङ्ख को पाया इस पृथ्वी पर उससे अधिक कौन हो सकता है ४९ इस महानुभाव ने उत्तम युद्ध से अस्त्रों के द्वारा साक्षात् महादेवजी को प्रसन्न किया और उनसे तीनों लोकों का नाश करनेवाला बड़ा घोर पाशुपत नाम महाअद्‌भुत अस्त्र पाया ५० सब लोकपालों ने इकट्ठे होकर युद्ध में पृथक्-पृथक् बड़े-बड़े अस्त्रों को दिया जिन अस्त्रों के द्वारा इस नरोत्तम ने युद्ध में इकट्ठे होनेवाले कालकेय नाम असुरों को बड़ी शीघ्रता से मारा ५१ इसी प्रकार इस अकेले अर्जुन ने राजा विराट के पुर में कौरवों समेत हम सब मिले हुओं को एक ही रथ के द्वारा विजय कर युद्धभूमि में उस गोधन को हरण करके उन सब महारथियों के वस्त्रों को भी छीन लिया ५२ हे शल्य ! इस प्रकार के पराक्रमी और गुणवाले श्रीकृष्ण को साथ में रखनेवाले सब लोक और राजाओं में श्रेष्ठ इस अर्जुन को अपने साहस से बुलाता हूँ ५३ वह महापराक्रमी ब्रह्मा विष्णु और महेशजी के भी कँपानेवाले नारायण से रक्षित है सब संसार इकट्ठा होकर हज़ारों वर्ष तक भी जिसके गुणों का वर्णन न कर सके ५४ ऐसे शङ्ख, चक्र, गदा, पद्मधारी वसुदेवजी के पुत्र महात्मा श्रीकृष्ण और अर्जुन के गुणों के कहने को कोई समर्थ नहीं है एक रथ पर बैठे हुए श्रीकृष्ण और अर्जुन को देखकर मुझको महाभय उत्पन्न होता है ५५ अर्जुन युद्ध में सब धनुषधारियों से श्रेष्ठतर है और नारायणजी भी युद्ध में अद्वितीय हैं ऐसे अर्जुन और वासुदेवजी हैं हे शल्य ! चाहे हिमाचल अपने स्थान से चलायमान हो जाय परन्तु अर्जुन और श्रीकृष्ण चलायमान नहीं हो सकते ५६ यह दोनों दृढ़ शस्त्रधारी शूरवीर महारथी बड़े कठोर शरीरवाले हैं हे शल्य ! ऐसे दोनों अर्जुन और वासुदेवजी के सम्मुख मेरे सिवाय दूसरा कौन जा सकता है यह अत्यन्त अद्‌भुत वा अद्वितीय उनका और मेरा युद्ध शीघ्र ही होगा ५७ । ५८ मैं युद्ध में इन दोनों को गिराऊँगा वा श्रीकृष्ण समेत अर्जुन ही मुझको गिरावेंगे शत्रुओं का मारनेवाला कर्ण युद्ध में शल्य से ऐसे-ऐसे वचनों को कहता हुआ बादल के समान गर्जा ५९ फिर आपके पुत्र के पास जाकर बड़े प्रेम से मिला उसने भी इसको अनेक प्रकार से प्रसन्न किया

फिर वहाँ प्रसन्न होकर कौरवों में बड़े वीर दुर्योधन, कृपाचार्य, कृतवर्मा, राजा गान्धार समेत उसके छोटे भाई इन सबसे ६० वा अश्वत्थामा वा अपने पुत्र और उन पदाती हाथी और अश्वसवारों से बोला कि श्रीकृष्ण और अर्जुन को रोको प्रथम उनके सम्मुख जाकर शीघ्र ही उनको सब प्रकार से थकाओ ६१ जिससे कि हे राजा लोगो! आप लोगों से अत्यन्त घायल हुए इन दोनों को मैं सुखपूर्वक मारूं वह बड़े-बड़े सब महावीर बहुत अच्छा ऐसा कहकर अर्जुन के मारने के अभिलाषी होकर बड़ी शीघ्रता से उनके सम्मुख गये ६२ कर्ण के आज्ञाकारी महारथियों ने बाणों से उस अर्जुन को घायल किया फिर अर्जुन ने युद्ध में उनको ऐसा निगला जैसे कि बड़ा जल समूह रखनेवाला समुद्र नद नदियों को निगल जाता है ६३ वह अर्जुन अपने उत्तम बाणों को चढ़ाता और छोड़ता हुआ शत्रुओं को दिखाई भी नहीं पड़ा फिर अर्जुन के चलाये हुए बाणों से घायल और मृतक हुए सब मनुष्य हाथी और घोड़े पृथ्वी पर गिर पड़े ६४ सब कौरव उस बाणरूप अग्नि और गाण्डीव-रूप सुन्दर मण्डल रखनेवाले प्रलयकालीन सूर्य के समान महातेजस्वी अर्जुन की ओर देखने को ऐसे समर्थ नहीं हुए जैसे कि नेत्र रोगी मनुष्य सूर्य के दर्शन करने को असमर्थ होता है ६५ हँसते हुए गाण्डीव धनुषरूप पूर्ण मण्डलवाले अर्जुन ने उन महारथियों के चलाये हुए बाणजालों को ऐसे काटा जैसे कि ज्येष्ठ आषाढ़ में उग्र किरण रखने-वाला सूर्य जलसमूहों को सुखपूर्वक सोख लेता है हे महाराज! फिर अर्जुन ने बाणों के समूहों को छोड़कर आपकी सेना को भस्म कर दिया ६६। ६७ फिर कृपाचार्यजी बाणों को छोड़ते हुए उसके सम्मुख गये उसी प्रकार कृतवर्मा और आपका पुत्र दुर्योधन भी दौड़ा और महारथी अश्वत्थामा ने शायकों से ऐसे ढक दिया जैसे कि बादल पहाड़ को ढक देता है ६८ उस समय कुशल बुद्धि शीघ्रता करनेवाले पाण्डव अर्जुन ने उस बड़े युद्ध में बड़े उपाय से मारने के इच्छावान् वीरों के चलाये हुए उत्तम बाणों को अपने बाणों से काटकर तीन-तीन बाणों करके उनको छाती पर घायल किया ६९ गाण्डीवरूप बड़े पूर्ण मण्डल-

वाला बाणरूपी उग्र किरणों से युक्त अर्जुनरूपी सूर्य शत्रुओं को सन्तप्त करता हुआ ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि ज्येष्ठ आषाढ़ में पार्श्व-मण्डल से युक्त सूर्य वर्तमान होता है ७० इसके पीछे अश्वत्थामा ने दश उत्तम बाणों से अर्जुन को तीन बाणों से श्रीकृष्णजी को चार बाणों से चारों घोड़ों को घायल करके नाराच नाम उत्तम बाणों से ध्वजास्थ हनुमान्जी को ढक दिया ७१ तौ भी अर्जुन ने उस धनुषधारी अश्वत्थामा को तीन ही बाणों से कम्पायमान करके क्षुरप्र से सारथी के शिर को चार बाणों से घोड़ों को और तीन बाणों से अश्वत्थामा की ध्वजा को रथ से गिराया ७२ फिर क्रोधयुक्त अश्वत्थामा ने हीरे मणि और सुवर्ण से जटित तक्षक के फण के समान प्रकाशित बड़े मूल्य के दूसरे धनुष को ऐसे उठाया जैसे कि अत्यन्त उत्तम बड़े सर्प को पर्वत के किनारे से कोई उठा लेवे ७३ उस बड़े गुणी अश्वत्थामा ने अपने शस्त्र को निकालकर घोड़े और सारथी से रहित पृथ्वी के समान रथ पर अपने धनुष को प्रत्यञ्चा समेत करके समीप से आकर उन दोनों अजेय नरोत्तमों को उत्तम बाणों के द्वारा पीड्यमान किया ७४ युद्ध के शिर पर नियत वह महारथी कृपाचार्य कृतवर्मा और आपका पुत्र दुर्योधन युद्ध में अनेक बाणों समेत अर्जुन के ऊपर ऐसे आनकर गिरे जैसे कि बादल सूर्य को घेर लेते हैं ७५ फिर सहस्राबाहु के समान पराक्रमी अर्जुन ने कृपाचार्य के धनुष, बाण, घोड़े, ध्वजा और सारथी को बाणों से ऐसे घायल कर दिया जैसे कि पूर्व समय में राजा बलि को वज्रधारी इन्द्र ने घायल किया था ७६ वह कृपाचार्य अर्जुन के बाणों से अस्त्रों से रहित हो गये और उस बड़े युद्ध में ध्वजा के टूटने पर हज़ारों बाणों से ऐसे छेदे गये जैसे कि पूर्व में अर्जुन के हाथ से भीष्मजी छेदे गये थे ७७ इसके पीछे प्रतापवान् अर्जुन ने गर्जते हुए आपके पुत्र की ध्वजा और धनुष को बाणों से काटकर कृतवर्मा के उत्तम घोड़ों को मार ध्वजा को भी काट डाला फिर शीघ्रता करनेवाले उस अर्जुन ने घोड़े, हाथी, रथ, ध्वजा और धनुष को विध्वंसन कर दिया इसके पीछे आपकी बड़ी सेना पृथक्-पृथक् होकर ऐसे छिन्न-भिन्न हो गई जैसे कि जल के वेग

से टूटा हुआ पुल छिन्न-भिन्न होकर बह जाता है ७८। ७९ तदनन्तर केशवजी ने शीघ्र ही रथ के द्वारा अर्जुन के महादुःखी शत्रुओं को दक्षिण किया और जैसे इन्द्र के मारने की इच्छा से वृत्रासुर आदि दैत्य चले थे उसी प्रकार दूसरे युद्धाभिलाषी ऊँची ध्वजाधारी सुन्दर रत्नजटित रथों के द्वारा शीघ्र जानेवाले अर्जुन के ऊपर दौड़े इसके पीछे महारथी शिखण्डी सात्यकी नकुल और सहदेव समीप जाके उन अर्जुन के सम्मुख आनेवाले शत्रुओं को रोककर ८०। ८१ तीक्ष्ण बाणों से घायल करके बड़े भयानक शब्दों से गर्जे और सृञ्जयों समेत क्रोधयुक्त कौरवीय वीरों ने सीधे चलनेवाले सुन्दर वेतयुक्त बाणों से परस्पर में ऐसे मारा जैसे कि पूर्वसमय में असुरों ने देवताओं के गणों समेत युद्ध में परस्पर मारा था हे शत्रुसंतापिन्, धृतराष्ट्र ! वह विजयाभिलाषी स्वर्ग जाने के उत्सुक हाथी घोड़े और रथ गिरते थे ८२। ८३ और ऊँचे स्वरों से गर्जते थे फिर अच्छी रीति से छोड़े हुए बाणों से पृथक्-पृथक् होकर परस्पर में अत्यन्त घायल किया हे राजन् ! उस महायुद्ध में शूरवीरों में श्रेष्ठ महात्माओं के कर्म से परस्पर बाणों का अन्धकार उत्पन्न करने पर ८४ चारों दिशा विदिशा और सूर्य की किरणें भी अन्धकार हो जाने से गुप्त हो गईं ॥ ८५ ॥

इति श्रीमहाभारते कर्णपर्वणि संकुलयुद्धेऽशीतितमोऽध्यायः ॥ ८० ॥

इक्यासीवाँ अध्याय

सञ्जय बोले कि, हे राजन् ! कौरवों की अत्यन्त उत्तम सेनाओं से घिरे हुए और डूबे हुए पाण्डव भीमसेन को निकालने के अभिलाषी अर्जुन ने १ शायकों से कर्ण की सेना को मर्दन करके शत्रुओं के वीरों को मृत्युलोक में भेजा २ इसके पीछे इसके बाणजाल क्रम-क्रम से आकाश में जाकर दिखाई दिये इस रीति से औरों ने भी आपकी सेना को मारा ३ वह महाबाहु अर्जुन पक्षीगणों से सेवित आकाश को अपने बाणों से पूर्ण करता कौरवों का नाश करनेवाला हुआ ४ फिर अर्जुन ने निर्मल भल्ल क्षुरप्र और नाराचों से अङ्गों को छेद-छेदकर शिरों को

काटा ५ कटे हुए अङ्ग और कवचों से रहित वह शिर चारों ओर से गिरे उन गिरनेवाले शूरवीरों से पृथ्वी अच्छादित हो गई ६ अर्जुन के बाणों से मृतक अङ्गभङ्ग चूर्ण २ नाश हुए अङ्गों से रहित हाथी, घोड़े, रथी और रथों से पृथ्वी व्याप्त हो गई ७ हे राजन्! युद्धभूमि बड़ी दुर्गम विषम महाघोर दुःख से देखने के योग्य वैतरणी नदी के समान हो गई ८ शूरवीरों के घोर सारथी रखनेवाले मृतक घोड़े वा सारथी समेत रथों से और ईशा, रथ, चक्र, अक्ष और भल्लों से पृथ्वी महाचित्रित सी हो गई ९ कवचों से अलंकृत सेना के सेनाधिप सुनहरी कवच सुनहरी भूषण रखने-वाले शूरवीरों समेत नियत हुए १० कठोर प्रकृतिवाले सवारों की एँड़ी और अंगुष्ठों से प्रेरित क्रोधयुक्त चार सौ हाथी अर्जुन के बाणों से ऐसे गिर पड़े ११ जैसे कि वज्र से बड़े पर्वतों के शिखर गिर पड़ते हैं रत्नों से पूर्ण पृथ्वी पर अर्जुन के बाणों से नाश होकर गिरे हुए उत्तम हाथियों से पृथ्वी आच्छादित हो गई १२ अर्जुन के रथ ने बादल के रूप मद डालनेवाले हाथियों को चारों ओर से ऐसे प्राप्त किया जैसे कि सूर्य बादलों को प्राप्त करता है १३ मृतक हाथी घोड़े मनुष्य अनेक प्रकार के टूटे रथ शस्त्र सारथी वा कवचों से रहित युद्ध में मतवाले मृतक मनुष्यों से १४ और बड़े भयानक शब्दवाले गाण्डीव धनुष को टङ्कारते अर्जुन के हाथ से टूटे हुए शस्त्रों से युद्धभूमि का मार्ग आच्छादित हो गया १५ जैसे कि आकाश में घोर वज्र से विनिष्पेष मेघ होता है उसी प्रकार-वाला धनुष का शब्द था उसके पीछे अर्जुन के बाणों से घायल होकर सेना ऐसे पृथक् होकर छिन्नभिन्न हो गई १६ जैसे कि समुद्र में बड़े वायु के वेग से चलायमान नौका होती है नाना प्रकार के रूपवाले प्राणों के हरनेवाले गाण्डीव धनुष से छोड़े हुए १७ उल्का और बिजली के रूप-वाले बाणों ने आपकी सेना को ऐसे भस्म कर दिया जैसे कि सायङ्काल के समय बड़े पर्वत पर प्रचण्ड अग्नि बाँसों के वन को भस्म कर देता है १८ इसी प्रकार बाणों से पीड़ित आपकी बड़ी सेना भी महाव्याकुल होकर चलायमान हुई और अर्जुन के हाथ से मर्दित और भस्मीभूत करी हुई सेना नाश को प्राप्त हुई १९ बाणों से कटी हुई वा घायल

होकर वह सेना सब ओर को ऐसे भागी जैसे कि दावानल अग्नि से भयभीत होकर बड़े मृगों के समूह भागते हैं २० इसी प्रकार अर्जुन के हाथ से भस्म हुए कौरव उस महाबाहु भीमसेन को छोड़कर चारों ओर को भागे २१ इस रीति से कौरवों की सब सेना व्याकुल होकर मुख मोड़-मोड़कर भागी इसके पीछे कौरवों के छिन्न भिन्न होने पर वह अजेय अर्जुन भीमसेन को पाकर २२ एक मुहूर्त पर्यन्त समीप वर्तमान रहा वहाँ भीमसेन से युधिष्ठिर का सब वृत्तान्त और आनन्द से होने का समाचार कहकर भीमसेन से आज्ञा लेकर अर्जुन फिर चला गया २३ । २४ हे भरतवंशिन्! वह रथ के शब्द से पृथ्वी और आकाश को शब्दायमान करता हुआ गया इसके पीछे शूरवीरों में श्रेष्ठ प्रतापी अर्जुन २५ दुश्शासन से छोटे आपके दश पुत्रों से घेरा गया उन्होंने भी उसको बाणों से ऐसे पीड्यमान किया जैसे कि उल्काओं से हाथी को पीड़ित करते हैं २६ हे भरतवंशिन्! धनुष को मण्डलाकार करनेवाले शूरवीर नर्तकों के समान दिखाई दिये उनको मधुसूदनजी ने अपने रथ के द्वारा दक्षिण किया २७ और अर्जुन के हाथ से मरकर उनको यमराज के पास जानेवाला अनुमान किया उसके पीछे अर्जुन के रथ के मुड़ने पर उन शूरों ने चढ़ाई करी २८ अर्जुन ने उन सम्मुख आनेवालों के घोड़े रथ सारथी और ध्वजा समेत धनुष और शायकों को शीघ्र ही अपने नाराच और अर्द्धचन्द्र नाम बाणों से गिराया २९ पीछे से दूसरे दश भल्लों से उनके उन शिरों को पृथ्वी पर गिराया जो कि बहुत काल से रक्त नेत्र कर-कर ओठों को काटते थे ३० वह बहुत से कमलरूपी मुखों समेत शिर बड़े शोभायमान हुए फिर वह शत्रुओं का मारनेवाला सुनहरी बाजूबन्द रखनेवाला सुनहरी पुङ्खवाले दशभल्लों से बड़े वेगवान् दशों कौरवों को मारकर चल दिया ॥ ३१ ॥

इति श्रीमहाभारते कर्णपर्वणि संकुलयुद्धयेकाशीतितमोऽध्यायः ॥ ८१ ॥

बयासीवाँ अध्याय

सञ्जय बोले कि कौरवों के बड़े वेगवान् नब्बे रथी घोड़ों के द्वारा उस आनेवाले कपिध्वज अर्जुन के सम्मुख गये १ और नरोत्तम संसप्तकों ने परलोक-सम्बन्धी घोर शपथ को खाकर युद्ध में पुरुषोत्तम अर्जुन को घेर लिया २ और श्रीकृष्णजी ने बड़े वेगवान् सुवर्ण भूषणों से अलंकृत मोतियों के जालों से ढके हुए श्वेत घोड़ों को कर्ण के रथ पर हाँका ३ इसके पीछे संसप्तकों के रथ बाणों की वर्षा से प्रहार करते कर्ण की ओर को जानेवाले उस अर्जुन के सम्मुख गये ४ अर्जुन ने अपने तीक्ष्ण बाणों से शीघ्रता करनेवाले उन सब नब्बे वीरों को सारथी धनुष और ध्वजा समेत मारा ५ अर्जुन के नानारूप के बाणों से घायल होकर वह शूरवीर ऐसे गिर पड़े जैसे कि तप के क्षीण होने पर सिद्ध लोग अपने विमान समेत स्वर्ग से गिरते हैं इसके पीछे कौरव लोग बड़ी निर्भयता से रथ हाथी और घोड़ों समेत उस वीर अर्जुन के सम्मुख आये ६ । ७ तीव्रतायुक्त मनुष्य घोड़े और उत्तम हाथीवाली उस आपकी बड़ी सेना ने अर्जुन को घेर लिया ८ वहाँ बड़े धनुषधारी कौरवों ने शक्ति, दुधारा-खड्ग, तोमर, प्रास, गदा, खड्ग और शायकों से कौरवनन्दन अर्जुन को ढक दिया ९ फिर अर्जुन ने चारों ओर से अन्तरिक्ष में फैली हुई उस बाणों की वर्षा को अपने बाणों से ऐसे छिन्न-भिन्न कर दिया जैसे कि सूर्य अपनी किरणों से अँधेरे को तिर्र-बिर्र कर देता है १० इसके पीछे मतवाले तेरह सौ हाथियों समेत नियत हुए म्लेच्छों ने आपके पुत्रों की आज्ञा से अर्जुन को पार्श्वभाग की ओर से घायल किया ११ और कर्ण ने नालीक, नाराच, तोमर, प्रास, शक्ति, मुसल और भिन्दिपालों से रथ में सवार अर्जुन को पीड्यमान किया १२ अर्जुन ने उन हाथी के सवारों से छोड़े हुए बड़े बाणजालों को अपने तीक्ष्णधार भल्ल और अर्द्धचन्द्र बाणों से काटा १३ इसके पीछे नानारूप के उत्तम बाणों से उन सब हाथियों को पताका ध्वजा और सवारों समेत ऐसे मारा जैसे कि वज्रों से पर्वतों को मारते हैं १४ वह स्वर्णमय मालाधारी बड़े-बड़े हाथी

सुनहरी पुङ्खवाले बाणों से पीड़ित और मृतक होकर ऐसे गिर पड़े जैसे कि ज्वालामुखी पर्वत गिर पड़ते हैं १५ हे राजन् ! इसके पीछे हाथी घोड़े समेत मनुष्यों को पुकारते और चिङ्घाड़ते हुए गाण्डीव धनुष का बड़ा शब्द हुआ १६ और वह घायल हाथी चारों ओर मृतक सवारों समेत भागे १७ हे महाराज ! रथियों और घोड़ों से रहित हज़ारों रथ गन्धर्व नगर के रूप दिखाई पड़े १८ और इधर उधर से दौड़नेवाले अश्वसवार जहाँ तहाँ अर्जुन के शायकों से मृतक दिखाई दिये १९ उस युद्ध में पाण्डव अर्जुन की भुजाओं का पराक्रम देखा गया जो अकेले ने ही युद्ध में अश्वसवार हाथी और रथों को विजय किया २० हे भरतर्षभ, राजन्, धृतराष्ट्र! इसके पीछे भीमसेन तीन अङ्ग रखनेवाली बड़ी सेना से घिरा हुआ अर्जुन को देखकर २१ मरने से शेष बचे हुए आपके थोड़े रथियों को छोड़कर वेग से अर्जुन के रथ की ओर को दौड़ा २२ इसके पीछे बहुत मृतक और दुःखी सेना भागी तब भीमसेन अपने भाई अर्जुन के पास गये बड़े युद्ध में थकावट से रहित गदा को लिये हुए भीमसेन ने अर्जुन से बचे हुए शेष पराक्रमी घोड़ों को मारा २३ । २४ इसके पीछे भीमसेन ने कालरात्रि के समान बड़े उग्र हाथी घोड़े और मनुष्यों की खानेवाली नगर के कोटों की तोड़नेवाली महाभयानक गदा को २५ मनुष्य हाथी और घोड़ों पर छोड़ा हे राजन् ! उस गदा ने बहुत से हाथी घोड़े और अश्वसवारों को मारकर लोहे के कवचधारी मनुष्य और घोड़ों को मारा और वह मनुष्य मृतक होकर शब्द करते हुए पृथ्वी पर गिर पड़े २६ । २७ दाँतों से पृथ्वी को काटते रुधिर में भरे टूटे मस्तक हाड़ और चरण होकर मांसभक्षी जीवों के भक्षणार्थ मृत्युवश हुए २८ तब गदा ने भी रुधिर मांस और मज्जा से तृप्त होकर शीतलता को पाया कालरात्रि के समान दुःख से देखने के योग्य हाड़ों को भी खाती हुई नियत हुई २९ अत्यन्त क्रोधयुक्त गदा हाथ में लिये भीमसेन दश हज़ार घोड़े और अनेक पत्तियों को मारकर इधर उधर को दौड़ा ३० हे भरतवंशिन् ! इसके पीछे आपके शूरवीरों ने गदाधारी भीमसेन को देखकर कालदण्ड के उठानेवाले यमराज को ही सम्मुख आया हुआ माना ३१

मतवाले हाथी के समान अत्यन्त क्रोधयुक्त वह पाण्डुनन्दन हाथियों की सेना में ऐसे पहुँचा जैसे कि समुद्र में मगर पहुँचता है ३२ वहाँ अत्यन्त क्रोध भरे भीमसेन ने बड़ी गदा को लेकर हाथियों की सेना को मँझाकर वा मथकर क्षणमात्र में ही यमलोक में पहुँचाया ३३ घंटों समेत वा ध्वजा पताकाधारी सवारों से युक्त मतवाले हाथियों को ऐसे गिरता हुआ देखा जैसे कि पक्षधारी पर्वत गिरते हैं ३४ बड़े पराक्रमी भीमसेन उस हाथियों की सेना को मारकर अपने रथ पर सवार होकर अर्जुन के पीछे चले ३५ हे महाराज ! शत्रुओं की बहुत सी सेना मारी गई और बहुधा सेना के लोग मुख फेरे हुए निरुत्साह और बहुतेरे शस्त्रों से ढके हुए शरण में आये ३६ अर्जुन ने उस शरण में आई हुई अचेत सेना को देखकर प्राणों के तपानेवाले बाणों से ढक दिया ३७ उस युद्ध में गाण्डीव धनुषधारी के बाणों से छिदे हुए मनुष्य घोड़े रथ और हाथी ऐसे शोभायमान हुए जैसे कि केशरों करके कदम्ब का वृक्ष शोभित होता है ३८ हे राजन् ! इसके पीछे मनुष्य घोड़े और हाथियों के प्राणों के हरनेवाले अर्जुन के बाणों से घायल हुए कौरवों के बड़े पीड़ावान् शब्द हुए ३९ तब हाय-हाय करनेवाली आपकी सेना अत्यन्त भयभीत होकर परस्पर में गुप्त होनेवाले अलातचक्र अर्थात् बनेठी के समान भ्रमण करने लगी ४० इसके अनन्तर वह कौरवों का युद्ध बड़े पराक्रमियों के साथ हुआ जहाँ रथ अश्वसवार घोड़े और हाथियों में कोई भी विना घायल हुए नहीं रहा ४१ वह सेना चारों ओर से अग्निरूप बाणों से विदीर्ण रुधिर और चर्म से भरे शरीर फूले हुए अशोक वृक्ष के वन के समान हो गई ४२ वहाँ सब कौरव इस पराक्रमी अर्जुन को देखकर कर्ण के जीवन में निराशायुक्त हुए ४३ गाण्डीव धनुषधारी से मारे हुए कौरव युद्ध में अर्जुन के बाणों की वर्षा को असह्य मानकर लौटे ४४ शायकों से घायल हुए वह कौरव कर्ण को त्याग कर भयभीत होकर चारों ओर को भागे और कर्ण को भी पुकारे ४५ उस समय अर्जुन हज़ारों बाणों को छोड़ता हुआ और भीमसेन आदि युद्धकर्त्ता पाण्डवों को प्रसन्न करता हुआ उनके सम्मुख गया ४६ हे महाराज ! फिर आपके पुत्र कर्ण के रथ के पास गये तब

उन अथाह समुद्र में डूबे हुए आपके पुत्रादिकों को आश्रयरूप टापू हो गया ४७ हे राजन्! निर्विष सर्प के समान सब कौरव अर्जुन के भय से कर्ण के पास गुप्त होकर छिप गये ४८ जैसे कि कर्मकर्ता लोग मृत्यु से भयभीत होकर अपने ही धर्म में आश्रित होते हैं उसी प्रकार आपके पुत्र भी महात्मा पाण्डव अर्जुन के भय से बड़े धनुषधारी कर्ण के पास शरणागतरूप हुए ४९।५० उन रुधिर से भरे बाणों से पीड्यमान बड़ी आपत्ति में फँसे हुए लोगों को देखकर कर्ण ने कहा कि भय मत करो और मेरे ही पास नियत रहो ५१ फिर अर्जुन के पराक्रम से अत्यन्त छिन्न-भिन्न और व्याकुल आपकी सेना को देखकर वह कर्ण शत्रुओं के मारने की इच्छा से धनुष टङ्कारता हुआ नियत हुआ ५२ उस शस्त्र-धारियों में श्रेष्ठ श्वास लेनेवाले कर्ण ने उन भागे हुए कौरवों को देख-कर चिन्तापूर्वक अर्जुन के मारने में चित्त किया ५३ इसके पीछे अधि-रथी कर्ण बहुत बड़े भारी धनुष को टङ्कारकर अर्जुन के देखते हुए फिर पाञ्चालों की ओर को दौड़ा ५४ उस समय रक्तनेत्र राजाओं ने एक क्षण भर में ही कर्ण के ऊपर ऐसी बाण वर्षा करी जैसे कि पर्वत पर बादल वर्षा करते हैं ५५ हे जीवधारियों में श्रेष्ठ, धृतराष्ट्र! इसके पीछे कर्ण के छोड़े हुए हज़ारों बाणों ने पाञ्चालों को प्राणों से रहित कर दिया ५६ हे बड़े ज्ञानिन्! वहाँ मित्र को चाहनेवाले कर्ण के हाथ से मित्रों के ही निमित्त घायल होनेवाले पाञ्चालों के बड़े शब्द हुए ॥५७॥

इति श्रीमहाभारते कर्णपर्वणि संकुलयुद्धे द्व्यशीतितमोऽध्यायः ॥ ८२ ॥

तिरासीवाँ अध्याय

सञ्जय बोले कि, हे राजन्! इसके अनन्तर कवच और श्वेत घोड़े-वाले अर्जुन के हाथ से कौरवों के भाग जाने पर सूत के पुत्र कर्ण ने बड़े बाणों से राजा पाञ्चाल के पुत्रों को ऐसे छिन्न-भिन्न कर दिया जैसे कि बादलों के समूहों को वायु तिर्र-बिर्र कर देता है १ अञ्जलिक नाम बाणों के द्वारा रथ से सारथी को गिराकर घायल किये हुए घोड़ों को मारा और शतानीक वा श्रुतसोम को भल्लों से ढककर उनके धनुषों को

भी काटा २ इसके पीछे छः बाणों से धृष्टद्युम्न को छेदके बड़े वेग से उसके घोड़ों को भी मारा फिर सूतपुत्र ने सात्यकी के घोड़ों को मारकर कैकेय के विशोक नाम पुत्र को मारा ३ कुमार के मरने पर कैकेय का सेनापति जो कि महाभयानक कर्म करनेवाला था वह अपने उग्र बाणों से सेना को छिन्न-भिन्न करता हुआ उसके सम्मुख दौड़ा और कर्ण के पुत्र प्रसेन को घायल किया ४ कर्ण ने हँसकर तीन अर्द्धचन्द्र बाणों से उसकी भुजा और शिर को काटा तब वह मृतक होकर रथ से पृथ्वी पर ऐसे गिर पड़ा जैसे कि फरसे से काटा हुआ साल का वृक्ष होता है ५ कर्ण का पुत्र प्रसेन मृतक घोड़ेवाले सात्यकी को अपने कान तक खैंचे हुए पृषत्क नाम बाणों से ढककर नाचता हुआ सात्यकी के हाथ से घायल होकर गिर पड़ा ६ पुत्र के मरने से क्रोधयुक्त चित्त करके सात्यकी के मारने की इच्छा करते हुए मारा है इस प्रकार बोलते हुए कर्ण ने सात्यकी के ऊपर शत्रुघाती बाण को छोड़ा ७ उसके उस बाण को शिखण्डी ने काटकर तीन बाणों से कर्ण को पीड़ित किया फिर शिखण्डी के बाण कर्ण की ध्वजा और धनुष को काटकर पृथ्वी में गिर पड़े ८ तब उग्ररूप महात्मा अधिरथी कर्ण ने शिखण्डी को छः बाणों से घायल करके धृष्टद्युम्न के लड़के के शिर को काटा और इसी प्रकार बड़े तीक्ष्ण बाणों से श्रुतसोम को घायल किया ९ हे राजाओं में श्रेष्ठ! वहाँ प्रबल शूरवीर के वर्तमान होने और धृष्टद्युम्न के पुत्र के मरने पर श्रीकृष्णजी ने अर्जुन से कहा कि यह कर्ण इस लोक को पाञ्चालों से रहित किये देता है हे अर्जुन! अब से चलकर कर्ण को मार १० उसके पीछे नरों में बड़े वीर सुन्दर भुजावाले भय के स्थान में महारथी से घायल इन लोगों की रक्षा करने के इच्छावान् अर्जुन ने हँसकर शीघ्र ही रथ के द्वारा कर्ण के रथ को पाया ११ और महाकठोर उग्र गाण्डीव धनुष को चढ़ाकर हथेली पर प्रत्यञ्चा का शब्द करके अकस्मात् बाणों का अन्धकार उत्पन्न करके ध्वजा रथ घोड़े और हाथियों को मारा अन्तरिक्ष में बहुत से शब्द घूमने लगे और पक्षी लोग पर्वतों की गुफाओं में गिरे जो कि जीवों के मण्डल से जँभाई लेता अर्जुन रुद्रमुहूर्त में सम्मुख

गया १२ । १३ और एक वीर भीमसेन रथ के द्वारा अर्जुन को पीछे की ओर से रक्षा करता हुआ चला शत्रुओं से घिरे हुए वह दोनों राजकुमार रथों के द्वारा शीघ्र ही कर्ण के सम्मुख गये १४ वहाँ पर अन्तरिक्ष में कर्ण के सोमक लोगों को घेरकर उस महायुद्ध के नियत रथ घोड़े और हाथियों के समूहों को मारा और बाणों से सब दिशाओं को ढक दिया १५ उत्तमौजा, जनमेजय, क्रोधयुक्त युधामन्यु, शिखण्डी और धृष्टद्युम्न इन सबने अपने-अपने पृषत्कों से कर्ण को छेदा वह पाञ्चालदेशीय रथियों में बड़े वीर पाँचों कर्ण के सम्मुख दौड़े धैर्य से बड़े सावधान कर्ण को यह सब लोग रथ से गिराने को ऐसे समर्थ नहीं हुए जैसे कि शान्त और जितेन्द्रिय पुरुष को इन्द्रियों के विषय नहीं गिरा सकते १६ । १७ कर्ण ने बाणों से उनके धनुष, ध्वजा, घोड़े, सारथी और पताकाओं को शीघ्रता से काटकर पाँच पृषत्कों से उनको घायल करके सिंहनाद किया १८ उन बाणों को छोड़ते और चारों ओर से मारते उस प्रत्यञ्चा और बाण रखनेवाले कर्ण के धनुष के घोर शब्द से पर्वत वा वृक्षादि समेत पृथ्वी कम्पायमान हो गई ऐसा जानकर मनुष्यों के समूह पीड्यमान हुए १९ वह कर्ण इन्द्रधनुष के समान अपने बड़े धनुष से बाणों को छोड़ता युद्ध में ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि प्रकाशित ज्योतियों का मण्डल और किरणों के समूहों का रखनेवाला पार्ष मण्डल से घिरा हुआ सूर्य होता है २० शिखण्डी को तीक्ष्ण बारह बाणों से उत्तमौजा को छः बाणों से युधामन्यु को शीघ्रगामी तीन बाणों से और सोमक धृष्टद्युम्न के पुत्रों को तीन-तीन बाणों से छेदा २१ हे श्रेष्ठ ! फिर युद्ध में कर्ण के हाथ से पराजित शत्रुओं के प्रसन्न करनेवाले पाँचों महारथी कर्मरहित होकर ऐसे नियत हुए जैसे कि ज्ञानी से जीते हुए इन्द्रियों के विषय होते हैं २२ जैसे कि नौका से रहित व्यापारी लोग समुद्र में डूबते हैं इसी प्रकार कर्णरूपी समुद्र में डूबनेवाले उन अपने मामाओं को द्रौपदी के पुत्रों ने अच्छे अलंकृत रथरूप नौकाओं के द्वारा उस समुद्र से निकाला २३ उसके पीछे सात्यकी ने कर्ण के चलाये हुए बहुत बाणों को अपने तीक्ष्ण बाणों से काटकर और तीक्ष्ण

लोहे के बाणों से कर्ण को घायल करके आठ बाणों से आपके बड़े पुत्र को छेदा २४ इसके पीछे कृपाचार्य, कृतवर्मा, दुर्योधन और आप कर्ण ने तीक्ष्ण बाणों से घायल किया वह श्रेष्ठ यादव इन चारों के साथ ऐसे युद्ध करने लगा जैसे कि दैत्यों का स्वामी दिक्पालों के साथ लड़ता है २५ बड़े उच्च शब्दवाले बहुत लम्बे असंख्य बाण वर्षानेवाले बड़े धनुष से वह सात्यकी उन पर ऐसा प्रबल हुआ जैसे कि शरद् ऋतु में आकाश में वर्तमान सूर्य प्रबल होता है २६ शत्रुसन्तापी बड़े अलंकृत शस्त्रधारी पाञ्चालदेशीय महारथियों ने फिर रथों पर सवार होके सात्यकी को ऐसे रक्षित किया जैसे कि शत्रुओं के मारने में मरुद्गण लोग इन्द्र को रक्षित करते हैं २७ इसके पीछे आपकी सेनाओं के साथ शत्रुओं का वह युद्ध महा भयकारी हुआ जो कि उन रथ घोड़े और हाथियों का विनाशकारी था जैसे कि पूर्व समय में देवताओं का युद्ध दैत्यों के साथ हुआ २८ उसी प्रकार रथ, हाथी, घोड़े और पदातियों समेत सब सेना शस्त्रों से ढक गई और परस्पर शब्दों को करते हुए मृतक होकर गिर पड़े २९ उस दशा में राजा दुर्योधन से छोटा आपका पुत्र दुश्शासन बाणों से भीमसेन को ढकता सम्मुख गया भीमसेन भी बड़ी शीघ्रता से उसके सम्मुख गया और उसको ऐसे सम्मुख पाया जैसे कि सिंह बड़े रुरु को सम्मुख पाता है ३० इसके पीछे प्राणों का द्यूतखेलनेवाले परस्पर क्रोध भरे हुए उन दोनों का ऐसा महा भारी युद्ध हुआ जैसे कि बड़े साहसी शम्बरदैत्य और इन्द्र का हुआ था ३१ उन दोनों ने शरीर को पीड़ित करनेवाले सुन्दर बेतवाले बाणों से परस्पर में ऐसा कठिन घायल किया जैसे कि हथिनियों के मध्य में कामदेव से प्रवृत्तचित्त वारंवार घायल हुए दो बड़े हाथी लड़ते हैं ३२ इसके पीछे शीघ्रता करनेवाले भीमसेन ने आपके पुत्र के ध्वजा और धनुष को दो क्षुरप्रों से काटा और उसके ललाट को बाण से छेदकर सारथी के शिर को शरीर से पृथक् कर दिया ३३ उस राजकुमार ने दूसरे धनुष को लेकर भीमसेन को बारह बाणों से छेदा और आप ही घोड़ों को चलाता हुआ भीमसेन पर बाणों की वर्षा करने लगा ३४ इसके पीछे सूर्य की किरण के समान

प्रकाशमान सुवर्ण हीरे आदि उत्तम रत्नों से अलंकृत महेन्द्र के वज्ररूप बिजली के गिरने के समान कठिनता से सहने के योग्य भीमसेन से अङ्गों के चीरनेवाले बाण को छोड़ा ३५ उस बाण से घायल शरीर व्यथितरूप भीमसेन निर्जीव के समान गिरा और दोनों भुजाओं को फैलाकर उत्तम रथ पर आश्रित हुआ और थोड़े ही काल में सचेत होकर गर्जा ॥ ३६ ॥

इति श्रीमहाभारते कर्णपर्वणि दुश्शासनभीमसेनयुद्धे त्र्यशीतितमोऽध्यायः ॥८३॥

चौरासीवाँ अध्याय

सञ्जय बोले कि, उस युद्ध में कठिन युद्ध करनेवाले राजकुमार दुश्शासन ने ऐसा कठिन कर्म किया कि एक बाण से तो भीमसेन के धनुष को काटा और सात बाणों से सारथी को छेदा १ उस वेगवान् राजकुमार ने उस कर्म को करके भीमसेन को नब्बे पृषत्कों से पीड़ित किया इसके पीछे बड़ी शीघ्रता करके उत्तम बाणों से फिर भीमसेन को छेदा २ फिर महा क्रोधरूप भीमसेन ने आपके पुत्र पर उग्र शक्ति को चलाया तब आपके पुत्र ने उस जलती हुई उग्र शक्ति को अकस्मात् आते हुए देखकर ३ कान तक खैंचे हुए दश पृषत्क बाणों से काटा उस समय सब शूरवीरों ने प्रसन्न चित्त होकर उसकी प्रशंसा करी ४ इसके अनन्तर शीघ्र ही आपके पुत्र ने भीमसेन को फिर कठिन पीड़ित किया तब भीमसेन उस पर अत्यन्त क्रोधित हुआ और उसको देखकर क्रोध से अत्यन्त कोपयुक्त होकर ५ कहने लगा कि हे वीर! मैं तेरे बाण से घायल हूँ अब तुम मेरी गदा को सहो तब क्रोधयुक्त भीमसेन ने बड़े शब्द से यह कहकर उस भयानकरूप गदा को मारने के निमित्त लिया ६ और कहा कि अरे दुरात्मा! अब मैं इस युद्धभूमि में ही तेरे रुधिर को पान करूँगा यह वचन सुनकर आपके पुत्र ने मृत्युरूप उग्र शक्ति को अकस्मात् फेंका तब क्रोध में पूर्ण भीमसेन ने भी बड़ी उग्र रूप गदा को घुमाकर फेंका उस गदा ने उसकी शक्ति को अकस्मात् तोड़कर आपके पुत्र को मस्तक पर घायल किया ७। ८ मद झाड़नेवाले हाथी के समान रुधिर को गिराते

हुए उस दुश्शासन पर फिर भीमसेन ने उस कठिन गदा को चलाया उस गदा के द्वारा भीमसेन ने बड़े हठपूर्वक दुश्शासन को दश धनुष की दूरी पर डाला ९ अर्थात् उस वेगवान् गदा से घायल और कम्पित होकर दुश्शासन गिर पड़ा हे महाराज! गिरती हुई गदा से सारथी समेत घोड़े मारे गये और उसका रथ भी चूर्ण-चूर्ण हो गया १० टूटे कवच भूषण और पोशाकवाला फड़कता हुआ दुश्शासन कठिन पीड़ा से दुःखी हुआ और सब पाण्डव और पाञ्चालों ने दुश्शासन को देखकर बड़ी प्रसन्नतापूर्वक सिंहनादों को किया इसके पीछे भीमसेन इसको गिराकर बड़ी खुशी से दिशाओं को शब्दायमान करता हुआ गर्जा हे अजमीढ़-वंशिन्! सब पार्श्ववर्त्ती नियत मनुष्य भी उस शब्द से मूर्च्छित होकर गिर पड़े वेगवान् भीमसेन भी बड़े वेगपूर्वक रथ से उतरकर दुश्शासन की ओर दौड़ा और वह शत्रुता जो ११ । १२ आपके पुत्रों की ओर से की गई थी उसको स्मरण करके हे राजन्! चारों ओर से उत्तम पुरुषों समेत उस घोर और कठिन युद्ध के वर्तमान होने पर वहाँ बुद्धि से बाहर कर्म-वाला महाबाहु भीमसेन दुश्शासन को देखकर १४ देवी द्रौपदी के केशों का पकड़ना और उसी रजस्वला के वस्त्रों का पृथक् करना इन दोनों बातों को स्मरण करता हुआ उस निरपराधिनी पतियों से जुदी हुई को दुःखों के देने को शोचकर १५ फिर भीमसेन क्रोध से ऐसा अग्निरूप हो गया जैसे कि घृत सींचा हुआ अग्नि प्रज्वलित होता है ऐसा होकर उसने उस स्थान पर खड़ा होकर कर्ण, दुर्योधन, कृपाचार्य, अश्वत्थामा और कृतवर्मा से कहा १६ कि अब मैं इस पापी दुश्शासन को मारता हूँ अब सब युद्ध करनेवाले शूरवीर इसकी रक्षा करने को आओ ऐसा कहकर मारने को उत्सुक महापराक्रमी और वेगवान् भीम-सेन सम्मुख दौड़ा १७ इस रीति से भीमसेन ने युद्ध में पराक्रम करके जैसे कि केशरी सिंह हाथी को पकड़ना चाहता है उसी प्रकार वह अकेला भीमसेन वीर दुर्योधन और कर्ण के समक्ष में दुश्शासन को पकड़ने की इच्छा करके १८ बड़े उपाय से उसमें दृष्टि को लगा रथ से कूद पृथ्वी पर गया और सुन्दर धारवाले उत्तम खड्ग को उठाकर उस

कँपते हुए पृथ्वी पर पड़े हुए कण्ठ को दबाय छाती को और जङ्घा को काटकर थोड़ा सा गरम-गरम रुधिर पिया उसके पीछे गिराकर उसके शिर को भी काटने की इच्छा से अपनी प्रतिज्ञा पूरी करने के लिये उस बुद्धिमान् भीमसेन ने फिर थोड़ा सा गरम लोहू पिया और उस रुधिर के स्वादु को लेकर महाक्रोधित होकर सबके सम्मुख यह वचन कहा १६।२१ कि माता के स्तन्य मधु घृत अच्छी बनी हुई दिव्य माध्वी मदिरा अथवा दुग्ध दधि वा दुग्ध दधि को मथकर जो तक्र होता है इनके सिवाय जो इस संसार में सुधा और अमृत के स्वादुयुक्त पान करनेवाले रस हैं उन सब पदार्थों से अब इस शत्रु के रुधिर में मुझको अधिक स्वाद आता है २२।२३ तदनन्तर उसको कुछेक सचेत देखकर भीमसेन ने कहा कि हे दुष्ट! सभा के मध्य में जो हमने तेरे रुधिर पीने की प्रतिज्ञा करी थी उसको हमने सत्य किया अब तुमको कौनसा शूरवीर बचा सकता है हे राजन्! भीमसेन के इस वचन को सुनकर आपके पुत्र दुश्शासन ने उत्तर दिया कि ॥

चौ० ये मम कर करि कुम्भविदारन। देनहार गो बाजि हजारन ॥
इनके बल तुम सर्वस हारे। वर्ष त्रयोदश विपिन विहारे ॥
शरपञ्जर विरचन बलभारे। पीन पयोधर मर्दनहारे ॥
अति सुकुमार सुगन्धन मीजे। राजसूय के जल सों भीजे ॥
केश द्रौपदी को त्यहि कर्षण। करणहार मम भुज अरिधर्षण ॥
तुम सब लखत रहे त्यहि छन में। तब न रह्यो कछु विक्रम तन में ॥
अब हम परे समर में ऐसे। मन में रुचै करो सो तैसे ॥
शोणित पान कियो मम सोऊ। या में मम नहिं अमरष कोऊ ॥
क्षात्रधर्म पालन करि रण में। हम इमि परे मरे भटगण में ॥
काक शृगाल पियें मम शोणित। कै तुम पियो करनिकर द्रोणित ॥
यह सुनि भीम क्रोध अतिगहिकै। फिर वहि भाँति भटनसों कहिकै ॥
गहि तो सुत की भुजा उपारी। सोई तासु गात में मारी ॥
लागो पियन रुधिर पुनि तातो। वीर विभित्स रौद्र रसशातो ॥
पियै वारिग्रीषम को प्यासो। तिमि सो रुधिर पियत तहँ भासो ॥

दो० भरि अञ्जलि पीवत रुधिर, उमँगि गात पै जात।
गिराधार धर शिलासम, लसौ भीम को गात॥
कुम्भकरण सम गरजिकै, फिर सब भटन प्रचारि।
कण्ठ काटि पीवन लगो, शोणित कर्म विचारि॥
कहि कहि कहि ताके किये, कर्म आदि ते सर्व।
डकरि डकरि पीवत भयो, शोणित भीम सगर्व॥

इसके पीछे महाघोर कर्मी क्रोध में भरा हुआ भीमसेन बड़े शब्द से हँसा और दुश्शासन को निर्जीव देखकर यह वचन बोला कि मैं क्या करूँ तू मृत्यु से रक्षित है २४ उस समय जिन-जिन लोगों ने इस प्रकार से बोलनेवाले वा दौड़नेवाले स्वादु लेनेवाले अत्यन्त प्रसन्न होनेवाले उस भीमसेन को देखा वह सब महा भयभीत होकर भागे २५ और जो लोग कि दृढ़ता से नहीं भागे उनके हाथों से शस्त्र गिर पड़े और बहुतेरे आँखों को बन्द करके भय के कारण धीरे से पुकारे और चारों ओर को देखकर २६ । २७ कहने लगे कि यह मनुष्य नहीं है कोई उग्र राक्षस है इस प्रकार कहकर भयभीत होकर भागे २८ और राजपुत्र युधामन्यु अपनी सेना समेत उस भागे हुए चित्रसेन के सम्मुख गया और बड़ी निर्भयता से तीक्ष्ण धारवाले साठ पृषत्कों से उसको पीड्यमान किया २९ ऊँचा फल करनेवाले जिह्वा के चाटनेवाले क्रोधरूप विष के छोड़ने को अभिलाषी बड़े सर्प के समान चित्रसेन ने लौटकर उस युधामन्यु को तीन बाणों से और उसके सारथी को छः बाणों से छेदा ३० इसके पीछे शूरवीर युधामन्यु ने सुन्दर पुङ्ख और नोकवाले अच्छे प्रकार धनुष पर चढ़ाये हुए कान तक खैंचे हुए बाण से उसके शिर को काटा ३१ उस भाई चित्रसेन के मरने पर बड़े तेजस्वी शूरता को दिखलाते क्रोधयुक्त कर्ण ने पाण्डवीय सेना को भगाया और नकुल के सम्मुख गया ३२ वहाँ पर भीमसेन भी दुश्शासन को मारकर बड़ा क्रोधयुक्त कठोर शब्द करता अपनी रुधिर की अञ्जली को पूजकर ३३ सब लोकों के वीरों को सुनाकर यह वचन बोला कि हे नीच पुरुष! मैं इस तेरे रुधिर को कण्ठ से पीता हूँ ३४ अब तुम अत्यन्त प्रसन्न होकर फिर कहो कि

हे गौ ! हे गौ ! उस समय जो-जो लोग हमको देखकर नाचते थे वह हे गौ ! हे गौ ! इस शब्द को फिर कहें ३५ हम उनके सम्मुख नाचते हैं वह फिर कहें कि हे गौ ! हे गौ ! प्रमाणकोटी नाम स्थान में सोना कालकूट नाम विष का भोजन काले सर्पों से काटना लाक्षागृह में भस्म होना द्यूतविद्या से राज्य का हरना वन में निवास ३६ । ३७ द्रौपदी के केशों का भयानक पकड़ना और युद्ध में बाण, अस्त्र और स्थान पर अत्यन्त दुःख ३८ विराट भवन में नवीन प्रकार के दुःख जो हमको हुए और जो दुःख कि शकुनी दुर्योधन और कर्ण के मत से हुए ३९ उन सब कारणों का हेतुरूप तुही है हमने इन दुःखों के सिवाय कभी सुख को नहीं पाया ४० पुत्र समेत धृतराष्ट्र की दुर्बुद्धि से हम लोग सदैव दुःखी हुए हे महाराज, राजन्, धृतराष्ट्र ! यह कहकर विजय को पाकर ४१ फिर मन्द मुसकान करता वेगवान् रुधिर में भरा लाल मुख और क्रोध में भरा हुआ भीमसेन अर्जुन और केशवजी से बोला कि हे वीरो ! युद्ध में दुश्शासन के साथ जो प्रतिज्ञा करी थी उसे यहाँ अब मैंने सत्य-सत्य करके पूरी करी इस स्थान पर यज्ञ पशुरूप दुर्योधन को मारकर मैं अपनी दूसरी प्रतिज्ञा को भी पूरी करूँगा ४२ । ४३ जब कौरवों के समक्ष में इसके शिर को काटूँगा तभी मैं शान्ति को पाऊँगा फिर वह रुधिर में डूबा हुआ अत्यन्त प्रसन्नचित्त भीमसेन इस वचन को कहकर बड़े शब्द से ऐसा गर्जा जैसे कि सहस्राक्ष इन्द्र वृत्रासुर को मारकर प्रसन्नता से गर्जा था ॥ ४४ । ४५ ॥

इति श्रीमहाभारते कर्णपर्वणि दुश्शासनवधे चतुरशीतितमोऽध्यायः ॥ ८४ ॥

पचासीवाँ अध्याय

सञ्जय बोले कि हे राजन् ! फिर दुश्शासन के मरने पर क्रोधरूपी बड़े विष के रखनेवाले युद्धों में मुख न फेरनेवाले महापराक्रमी आपके शूरवीर दश पुत्रों ने बाणों से भीमसेन को ढक दिया उनके नाम यह हैं निषङ्गी, कवची, पाशी, दण्डधार, धनुर्द्धर, १ । २ अलोलुप, सहखण्ड, वातवेग, सुवर्चस भाई के दुःख से पीड्यमान इन दशों ने मिलकर ३

महाबाहु भीमसेन को रोका फिर चारों ओर से उन महारथियों के बाणों से रोका हुआ ४ क्रोधाग्नि से रक्तनेत्र वह भीमसेन क्रोध भरा हुआ काल के समान शोभायमान हुआ उस समय पाण्डव भीमसेन ने सुनहरी पुङ्खवाले दश भल्लों से उन सुनहरी बाजूबन्द रखनेवाले दशों भाई भरतवंशियों को यमलोक में पहुँचाया उन वीरों के मरने पर ५ । ६ भीमसेन के भय से पीड़ित आपकी सेना कर्ण के देखते हुए भागी हे महाराज ! इसके अनन्तर कर्ण ७ प्रजाओं पर पराक्रम करनेवाले कालमृत्यु के समान भीमसेन के पराक्रम को देखकर बड़ा भयभीत हुआ उसके रूपान्तर सूरत से वृत्तान्त के जाननेवाले युद्ध में शोभायमान राजा शल्य ने ८ उस शत्रुविजयी कर्ण से समय के अनुसार यह वचन कहा कि हे राधा के पुत्र ! पीड़ा मत कर तुझको ऐसी पीड़ा करना उचित नहीं है ९ भीमसेन के भय से पीड्यमान होकर यह राजा लोग भागते हैं और भाई के दुःख से पीड्यमान दुर्योधन अचेत हो रहा है १० बड़े साहसी से दुश्शासन का रुधिर पीने पर अचेत और शोक से घायल चित्त ११ कृपाचार्य आदि यह मरने से बाकी बचे हुए सगे भाई चारों ओर से दुर्योधन के पास बैठे नियत हैं १२ और लक्ष्यभेदी शूरवीर पाण्डव जिनमें अग्रगामी अर्जुन है वह युद्ध के लिये तेरे सम्मुख वर्तमान है १३ हे पुरुषोत्तम ! इससे अब तुम शूरवीरता से नियत होकर क्षत्रियधर्म को आगे करके अर्जुन के सम्मुख जावो १४ राजा दुर्योधन ने सब युद्ध का भार तुझी पर नियत किया है हे महाबाहो ! उस भार को तुम अपने बल और पराक्रम से उठावो १५ विजय करने में तो अतुल कीर्ति होगी और पराजय में निश्चय स्वर्ग है हे राधा के पुत्र ! अत्यन्त क्रोधयुक्त तेरा पुत्र १६ तेरे मोहित होने पर पाण्डवों के सम्मुख दौड़ता है बड़े तेजस्वी शल्य के इस वचन को सुनकर १७ कर्ण ने युद्ध करने का दृढ़ विचार अपने हृदय में नियत किया उसके पीछे क्रोधयुक्त वृषसेन उस सम्मुख वर्तमान भीमसेन के सम्मुख दौड़ा १८ जो कि दण्डधारी काल के समान गदा धारण करनेवाला आपके शूरों से युद्ध कर रहा था और बड़ा भारी नकुल पृषत्कों से शत्रुओं को पीड्यमान करता

दौड़ा १६ युद्ध में प्रसन्नचित्त उस कर्ण के पुत्र वृषसेन के सम्मुख ऐसे गया जैसे कि पूर्व समय में जम्भ के मारने की इच्छा से इन्द्र उसके सम्मुख गया था वहाँ पहुँच कर वीर नकुल ने क्षुरप्र से उसकी उस ध्वजा को काटा जो कि श्वेतरङ्ग के अपूर्व कवचवाली थी २० और सुनहरी चित्रों से चित्रित अत्यन्त अद्भुत वृषसेन के धनुष को काटा तब तो कर्ण के पुत्र ने शीघ्र ही दूसरे धनुष को लेकर नकुल को छेदा २१ दुश्शासन का बदला लेने के अभिलाषी कर्ण के पुत्र वृषसेन ने दिव्य महाअस्त्रों से नकुल को घायल किया उसके पीछे क्रोधयुक्त महात्मा नकुल ने बड़ी उल्का के समान बाणों से उसको छेदा २२ फिर अस्त्रज्ञ कर्ण का पुत्र दिव्य अस्त्रों से नकुल पर वर्षा करने लगा हे राजन् ! वह कर्ण का पुत्र बाणों के प्रहार वा क्रोध वा अपने तेज अथवा अस्त्रों के चलाने से ऐसा अत्यन्त क्रोधरूप हुआ जैसे कि घृत की आहुतियों से बढ़ी हुई अग्नि होती है हे राजन् ! कर्ण के पुत्र ने अपने उत्तम अस्त्रों से नकुल के उन सब घोड़ों को मारा २३ । २४ जो कि श्वेतरूप बड़े ऊँचे सुनहरी जालों से अलंकृत वनायुज नाम प्रकार के थे उसके पीछे मृतक घोड़ेवाले रथ से उतरकर सुवर्णमयी चन्द्रमावाली निर्मल ढाल को लेकर २५ आकाशरूप खड्ग को पकड़कर चलायमान पक्षी के समान घूमा उस समय अपूर्व युद्ध करनेवाले नकुल ने शीघ्रता से अन्तरिक्ष में रथ घोड़े और हाथियों को मारा २६ खड्ग से कटकर वह सब पृथ्वी पर ऐसे गिर पड़े जैसे कि अश्वमेधयज्ञ में मारनेवाले के हाथ से यज्ञपशु गिर पड़ता है नाना देशों में उत्पन्न होनेवाले अच्छी जीविका पानेवाले सत्यसंकल्पी दो हज़ार शूरवीर गिर पड़े २७ युद्ध में विजयाभिलाषी चन्दन से युक्त शरीर उत्तम शूरवीर लोग अकेले नकुल के हाथ से मारे गये फिर उसने सम्मुख जाकर उस आते हुए नकुल को शायकों के द्वारा चारों ओर से घायल किया २८ पृषत्कों से पीड्यमान उस नकुल ने भी उस वीर को व्यथित किया फिर वह भी व्यथित होकर महाक्रोध-युक्त हुआ बड़े भारी घोर भय में भी भाई भीमसेन से रक्षित नकुल ने यहाँ भय को नहीं किया २९ फिर क्रोधयुक्त कर्ण के पुत्र ने बहुत से

मनुष्य, घोड़े, हाथी और रथों के मर्दन करनेवाले पीड्यमान अकेले वीर नकुल को अठारह पृषत्कों से पीड्यमान किया ३० हे राजन्! उस महायुद्ध में वृषसेन से महाघायल वह बड़ा वेगवान् नरवीर नकुल कर्ण के पुत्र को मारने को युद्ध में दौड़ा ३१ जैसे कि मांस का चाहनेवाला पक्षों को फैलाकर आनेवाले बाज पक्षी को घायल करता है उसी प्रकार उस क्रोधयुक्त बड़े पराक्रमी आनेवाले नकुल को अपने तीक्ष्ण बाणों से वृषसेन ने ढक दिया ३२ वह नकुल उसके बाणों को निष्फल करता हुआ अपूर्वरूप के मार्गों में घूमा हे महाराज! इसके पीछे कर्ण के पुत्र ने खड्ग समेत उस घूमनेवाले नकुल की उस हज़ारों नक्षत्रों से चित्रित अपने बड़े बाणों से टुकड़े-टुकड़े करके उस खड्ग को भी काटा जो कि लोहे से निर्मित तीक्ष्ण धारवाला मियान से जुदा महाभयानक बड़े भार का सहनेवाला ३३ । ३४ शत्रुओं के शरीरों का नाश करनेवाला महाघोर सर्प के समान उग्ररूप था उसको उस कर्ण के पुत्र ने तीक्ष्ण धारवाले उत्तम छः बाणों से शीघ्र ही काट डाला और नकुल को छाती पर बड़े तीव्र पृषत्कों से छेदा हे राजन्! युद्ध में अन्य मनुष्य से कठिनता से करने के योग्य श्रेष्ठ मनुष्यों से सेवित कर्म को करके फिर बाणों से दुःखित महात्मा ३५ । ३६ शीघ्रता करनेवाला नकुल भीमसेन के रथ के पास गया वह मृतक घोड़ेवाला कर्णपुत्र के बाणों से व्यथित माद्रीनन्दन नकुल अर्जुन के देखते भीमसेन के रथ पर ऐसे गया जैसे कि सिंह पर्वत की नोक पर चढ़ जाता है उसके पीछे बड़ा साहसी क्रोधयुक्त वृषसेन अपने बाणों को दोनों के ऊपर बरसाने लगा ३७।३८ तब एक रथ पर मिले हुए दोनों महारथी पाण्डवों ने उसको भी बाणों से छेदा फिर शीघ्र ही विशिखों से रथ और खड्ग के खण्डित होने पर ३९ बड़े वीर मिले हुए कौरवों ने सम्मुख आकर पूजी हुई अग्नि के समान उन दोनों पाण्डवों को चारों ओर से बाणों के द्वारा घायल किया फिर क्रोधयुक्त भीमसेन और अर्जुन ने बड़े घोर बाणों की वर्षा वृषसेन पर करी इसके अनन्तर भीमसेन अर्जुन से बोले कि इस पीड्यमान नकुल को देखो ४०।४१ और यह कर्ण का पुत्र हमको

पीड़ा देता है इससे अब तुम उस कर्ण के पुत्र के सम्मुख जावो इस वचन को सुनकर वह अर्जुन भीमसेन के रथ को पाकर नियत हुआ ४२ इसके पीछे नकुल उस वीर को देखकर बोला कि शीघ्र ही इस सम्मुख आनेवाले को मारो इस प्रकार भाई के वचन को सुनकर अर्जुन ४३ कपिध्वजवाले केशवजी को सारथी रखनेवाले अपने रथ को वृषसेन के घोड़ों के समीप लाया ॥ ४४ ॥

इति श्रीमहाभारते कर्णपर्वणि वृषसेनयुद्धे नकुलपराजयो नाम पञ्चाशीतितमोऽध्यायः ॥८५॥

छियासीवाँ अध्याय

इसके पीछे नकुल को टूटा धनुष खड्गवाला रथ से रहित शत्रुओं के बाणों से घायल कर्ण के पुत्र के अस्त्र से पराजित जानकर वह वीर जिनकी पताका वायु से कम्पित और घोड़े शब्दों को करते अच्छे शीघ्रगामी थे अपने सेनापति की आज्ञा से रथों की सवारी से शीघ्र चले आये १ अर्थात् उनके नाम वरिष्ठद्रुपद के पाँचों पुत्र जिनमें छठा सात्यकी है और पाँचों द्रौपदी के पुत्र यह सब शस्त्रधारी सर्पराज के समान बाणों से आपके हाथी, रथ, मनुष्य और घोड़ों को मारते चढ़ आये २ इसके पीछे शीघ्रता करनेवाले कृपाचार्य, कृतवर्मा, अश्वत्थामा और दुर्योधन यह सब आपके उत्तम रथी उनके सम्मुख गये ३ हे राजन्! शकुनीसुत वृष, क्राथ, देवावृद्ध यह आपके वीर रथी हाथी और बादल के समान शब्दायमान रथ और धनुषों समेत उन ग्यारह वीरों के रोकनेवाले हुए अत्यन्त उत्तम बाणों से घायल करते ४ कलिङ्गदेशीय बादल और पर्वत के शिखरों के समान भयानक वेगवाले हाथियों समेत उनके सम्मुख गये और अच्छे प्रकार से अलंकृत मद से मतवाले युद्धाभिलाषी कर्मकर्ता पुरुषों से युक्त ५ सुनहरी जालों से अलंकृत हाथी ऐसे शोभायमान हुए जैसे कि आकाश में बिजली रखनेवाले बादल होते हैं वहाँ कलिङ्ग के पुत्र ने दश लोहे के बाणों से कृपाचार्य को सारथी और घोड़ों समेत अत्यन्त घायल किया ६ इसके पीछे कृपाचार्य के बाणों से वह मरा हुआ कलिङ्ग का पुत्र हाथी समेत पृथ्वी पर गिर पड़ा तब उसका छोटा भाई

सूर्य की किरण के समान प्रकाशित लोहे के तोमरों से ७ रथ को कम्पायमान करके गर्जा इसके पीछे राजा गान्धार ने इस गर्जनेवाले के शिर को काटा तदनन्तर उन कलिङ्गदेशियों के मरने पर अत्यन्त प्रसन्नरूप आपके उन महारथियों ने ८ शङ्खों को बड़ी ध्वनियों से बजाया और धनुष को हाथ में रखनेवाले होके शत्रुओं के सम्मुख गये इसके पीछे सृञ्जयों समेत पाण्डव और कौरवों का महाघोर भयकारी वह युद्ध फिर हुआ ६ जो कि बाण, खड्ग, शक्ति, दुधारे खड्ग, गदा और फरसों से मनुष्य हाथी और घोड़ों के प्राणों का हरनेवाला था इसके अनन्तर हजारों रथ घोड़े और हाथी पदातियों से परस्पर में घायल होकर पृथ्वी पर ऐसे गिर पड़े १० जैसे कि बिजली और गर्जना रखनेवाले धुवें से युक्त बादल दिशाओं से गिरे उसके पीछे सैकड़ों सेना रखनेवाले हाथी रथी और पत्तियों के समूहों को ११ और घोड़ों को भोजवंशीय कृतवर्मा ने मारा वह सब उसके बाणों से मृतक होकर एक क्षण में ही गिर पड़े उसके पीछे अश्वत्थामा के बाण से सब शस्त्र और ध्वजाओं समेत घायल शूरवीर १२ और निर्जीव अन्य बड़े-बड़े हाथी ऐसे पृथ्वी पर गिर पड़े जैसे कि वज्र से ताड़ित बड़े-बड़े पर्वत गिरते हैं १३ राजा कलिङ्ग के छोटे भाई ने उत्तम बाणों से आपके पुत्र को छाती पर घायल किया फिर आपके पुत्रों ने भी अपने तीक्ष्ण बाणों से उसके शरीर समेत हाथी को मारा १४ तब वह गजराज उस राजकुमार समेत सब ओर को रुधिर को गेरता ऐसे गिर पड़ा जैसे कि बादलों के आने में इन्द्र के वज्र से टूटा धातुवान् पर्वत जल को गिराता गिर पड़े १५ फिर कलिङ्ग के पुत्र के भेजे हुए दूसरे हाथी ने किरात को सारथी घोड़े और रथ के समेत मारा तदनन्तर बाणों से घायल हाथी अपने स्वामी समेत ऐसे गिर पड़ा जैसे कि वज्र का मारा हुआ पर्वत होता है १६ वह रथ में सवार कठिनता से विजय होनेवाला राजा किरात हाथी सारथी धनुष और ध्वजा समेत उस हाथी पर सवार पर्वतीय के बाणों से घायल ऐसे गिर पड़ा जैसे कि बड़ी वायु से ताड़ित और कम्पित होकर बड़ा वृक्ष होता है १७ वृक ने गिरिराज के रहनेवाले हाथी के सवार को बारह बाणों से अत्यन्त

घायल किया उसके पीछे उस बड़े हाथी ने बड़ी शीघ्रता से चारों पैरों से घोड़े और रथ समेत वृक को मारा १८ फिर उस बभ्रु के पुत्र के बाणों से कठिन घायल वह गज भी अपने हाथी सवार समेत गिर पड़ा सहदेव के पुत्र के हाथ से घायल और पीड्यमान वह देववृद्ध का पुत्र भी गिर पड़ा १९ उत्तम युद्धकर्ताओं के ऊपर गिरनेवाले हाथी की सवारी से राजा कलिङ्ग का विषाणगात्र नाम पुत्र भी बड़े वेग से शकुनी को बहुत कठिन पीड़ित करता हुआ उसके मारने को गया उसके पीछे गान्धार के राजा शकुनी ने उसके शिर को काटा २० उस समय उन कलिङ्गदेशियों के मरने पर अत्यन्त प्रसन्नमूर्ति आपके अन्य महारथियों ने शङ्खों को अच्छी रीति से बजाया और धनुष हाथों में लिये शत्रुओं के सम्मुख गये २१ इसके पीछे कौरवों का युद्ध पाण्डव और सृञ्जयों के साथ ऐसा हुआ जो अत्यन्त भयकारी बाण, खड्ग, शक्ति, दुधारे खड्ग, गदा और फरसों से रथ हाथी और घोड़ों के प्राणों का हरनेवाला घोररूप था २२ फिर परस्पर में घायल रथ, घोड़े, हाथी और पदाती पृथ्वी पर ऐसे गिर पड़े जैसे कि प्रचण्ड वायु से ताड़ित बिजली और गर्जना रखनेवाले बादल दिशाओं से गिरते हैं २३ इसके पीछे आपके बड़े हाथी, घोड़े, रथ और पत्तियों के समूह शतानीक के हाथ से मारे गये और अचेतता से चूर्ण-चूर्ण होकर पृथ्वी पर ऐसे गिर पड़े जैसे कि गरुड़जी के पङ्खों की वायु से घायल सर्प गिरते हैं २४ उसके पीछे मन्द मुसकान करते हुए कलिङ्ग के पुत्र ने बड़े तीक्ष्ण बाणों से नकुल के पुत्रों को छेदा फिर नकुल के पुत्र ने भी क्षुरप्र से कमलरूपी मुख रखनेवाले उसके शिर को शरीर से काटा २५ तब कर्ण के पुत्र ने तीन लोहे के बाणों से शतानीक को और तीन बाणों से अर्जुन को तीन से भीमसेन को सात से नकुल को और बारह से श्रीकृष्णजी को घायल किया २६ तदनन्तर प्रसन्नचित्त कौरवों ने बुद्धि से बाहर कर्म करनेवाले कर्ण के पुत्र के उस कर्म को देखकर बड़ी प्रशंसा करी परन्तु जो अर्जुन के पराक्रम के जाननेवाले थे उन्होंने यह माना कि अब यह अग्नि में होमा गया २७ इसके पीछे नरों में बड़ा शूरवीर शत्रुओं के वीरों का मारनेवाला अर्जुन

माद्री के पुत्र नकुल को मृतक घोड़ेवाला देखकर और लोक में श्रीकृष्णजी को अत्यन्त घायल विचार कर २८ युद्ध में वृषसेन के सम्मुख दौड़ा तब कर्ण का पुत्र उस आनेवाले नरवीर गुरुरूप महायुद्ध में हज़ारों बाण धारण करनेवाले महारथी अर्जुन के सम्मुख ऐसे गया जैसे कि पूर्व समय में नमुचि महेन्द्र के सम्मुख गया था उसके पीछे कर्ण का पुत्र शीघ्रतापूर्वक बड़े तीव्र और स्वच्छ बाणों से अर्जुन को छेदकर युद्ध में ऐसे महाशब्द से गर्जा जैसे कि वह महानुभाव वीर नमुचि इन्द्र को छेदकर गर्जा था फिर उस वृषसेन ने उग्रबाणों से अर्जुन की वाम भुजा को जड़ में छेदा २६ । ३१ और इसी प्रकार नौ बाणों से श्रीकृष्णजी को पीड्यमान किया इसके पीछे फिर भी अर्जुन को दशबाणों से घायल किया जैसे कि वृषसेन के पहले बाणों से अर्जुन घायल हुआ ३२ और कुछ क्रोधयुक्त हुआ फिर दूसरी बार के बाणों से उसके मारने का मन में विचार किया फिर अर्जुन ने युद्ध मुख पर अपने क्रोध से ललाट पर भृकुटी को तीन रेखावाली करके ३३ शीघ्र ही विशिखों को छोड़ा तब युद्ध में कर्ण के पुत्र के मारने में चित्त को प्रवृत्त करके बड़ा साहसी नेत्रों के कोणों को लाल करके अर्जुन बहुत हँसकर कर्ण, दुर्योधन और अश्वत्थामा आदि शूरवीरों से बोला ३४ हे कर्ण ! अब मैं तेरे देखते हुए तीक्ष्ण धारवाले पृषत्कों से इस उग्ररूप वृषसेन को परलोक में पहुँचाता हूँ ३५ निश्चय करके तब तक मनुष्य कहेंगे जो मुझसे पृथक् अकेला यह मेरा रथी वेगवान् पुत्र आप सबके हाथ से मारा गया इसी से मैं आप सब लोगों के समक्ष में इसको मारूँगा ३६ रथों में सवार तुम सब मिलकर इसकी अच्छी रीति से रक्षा करो यह उग्ररूप आपका वृषसेन पुत्र है इसको मैं मारूँगा इसके पीछे इसी युद्धभूमि में जो मेरा नाम अर्जुन जो तुझ महाअज्ञानी को भी इसी प्रकार से न मारूँ ३७ अब मैं युद्ध में तुझ उपद्रव के मूल दुर्योधन की आश्रयता से अहङ्कारी होने-वाले को बड़ी हठता से मारूँगा और इस नीच दुर्योधन का मारनेवाला भीमसेन है ३८ जिसके कि अन्याय से यह बड़ा भारी वीरों का नाश हुआ ऐसा कहकर उसने अपने धनुष को तैयार करके और युद्धभूमि में

वृषसेन को लक्ष्य बनाकर ३९ उस बड़े साहसी ने कर्ण के पुत्र के मारने के लिये विशिखनाम बाणों को छोड़ा हे राजन्! हँसते हुए अर्जुन ने दश पृषत्कों से वृषसेन को मर्मस्थलों में बेधा ४० और क्षुरप्रनाम तीक्ष्ण चार बाणों से धनुष समेत उसकी दोनों भुजाओं समेत शिर को काटा अर्जुन के बाणों से घायल और बेशिर होकर वह कर्ण का पुत्र रथ से पृथ्वी पर ऐसे गिर पड़ा ४१ जैसे कि बहुत लम्बा और फूला हुआ शाल का वृक्ष वायु के वेग से पर्वत के शिखर से गिर पड़े फिर शीघ्रता करनेवाले कर्ण ने बाणों से मरे हुए रथ से गिरते हुए पुत्र को देखकर ४२ शीघ्र ही पुत्र के मारने से अर्जुन पर क्रोधयुक्त होकर अपने रथ को उसके सम्मुख किया अर्थात् युद्ध में अपने नेत्रों के सम्मुख पुत्र को मरा हुआ देखकर ४३ वह महासाहसी अत्यन्त क्रोध में मूर्च्छित होकर अकस्मात् श्रीकृष्ण और अर्जुन के सम्मुख दौड़ा ॥ ४४ ॥

इति श्रीमहाभारते कर्णपर्वणि वृषसेनवधोनाम षडशीतितमोऽध्यायः ॥ ८६ ॥

सत्तासीवाँ अध्याय

सञ्जय बोले कि मर्यादा के उल्लङ्घन करनेवाले समुद्र के समान डीलडौल-युक्त उस गर्जनेवाले आये हुए कर्ण को देखकर १ पुरुषोत्तम श्रीकृष्णजी हँसकर अर्जुन से बोले कि यह श्वेत घोड़ेवाला शल्य को सारथी बनानेवाला आधिरथी आता है २ इसके साथ तुझको लड़ना चाहिये हे अर्जुन! अब दृढ़ होकर नियत हो हे पाण्डव! इस रथ को देखो जो कि अच्छे प्रकार से बना हुआ ३ श्वेत घोड़ों से युक्त राधा के पुत्र की सवारी से शोभित नाना प्रकार की ध्वजा, पताका और क्षुद्रघण्टिकाओं के जालों का रखनेवाला ४ और श्वेत घोड़ेरूप आकाश में चलनेवाला चित्रविचित्ररूप आकाश के विमान के समान है और महात्मा कर्ण के नाग की कक्षा का चिह्न रखनेवाली ध्वजा को देखो ५ और इन्द्रधनुष के समान धनुष से मानों आकाश में लिखनेवाले दुर्योधन का अभीष्ट चाहनेवाले बाणों की वर्षा से युक्त आते हुए कर्ण को ऐसे देखो जैसे कि जल की धाराओं के छोड़नेवाले बादल को देखते हैं रथ के आगे नियत यह मद्रदेश का

राजा ६।७ उस बड़े तेजस्वी कर्ण के घोड़ों को हाँकता है दुन्दुभियों और शङ्खों के भयानक शब्द ८ और नाना प्रकार के सिंहनादों को सब ओर से सुनो हे पाण्डव! बड़े तेजस्वी कर्ण के द्वारा बड़े-बड़े शब्दों को गुप्त करके ६ कठोर कम्पायमान धनुष के शब्द को सुनो यह पाञ्चालों के महारथी अपने सेनासमूहों समेत छिन्न-भिन्न होकर ऐसे पृथक् होते हैं जैसे कि महावन में क्रोधयुक्त केशरी सिंह को देखकर छिन्न-भिन्न होकर मृग पृथक् होते हैं हे अर्जुन! तुम सब उपायों से कर्ण के मारने के योग्य हो १०।११ तुम्हारे सिवाय दूसरा मनुष्य कर्ण के बाण सहने की सामर्थ्य नहीं रखता है देवता, असुर, गन्धर्व और जड़ चैतन्य जीवों समेत तीनों लोक के १२ विजय करने को तुम्हीं समर्थ हो यह मैं निश्चय जानता हूँ कि उस भीम उग्ररूप महात्मा त्रिनेत्रधारी कपर्दी प्रभु शिवजी के १३ देखने को भी कोई समर्थ नहीं हो सकता है फिर युद्ध करने की किसको सामर्थ्य हो सकती है तुमने सब जीवमात्र के कल्याणरूप साक्षात् महादेवजी की युद्ध के ही द्वारा आराधना करी १४ और देवता भी तुझको वर देनेवाले हैं हे महाबाहो, अर्जुन! उस देवताओं के भी देवता शूलधारी शिवजी की कृपा से १५ तुम कर्ण को ऐसे मारो जैसे कि इन्द्र ने नमुचि को मारा था हे अर्जुन! सदैव तेरा कल्याण होय तू युद्ध में विजय को पावेगा १६ अर्जुन ने कहा हे कृष्णजी! जो सब लोक के गुरु और स्वामी आप मेरे ऊपर प्रसन्न हैं तो निश्चय करके मेरी अवश्य विजय है इसमें किसी प्रकार का सन्देह नहीं है १७ हे महारथिन्, श्रीकृष्णजी! मेरे रथ और घोड़ों को चलायमान करो अब अर्जुन कर्ण को विना मारे हुए युद्ध से नहीं लौटेगा १८ हे गोविन्दजी! अब मेरे बाणों से कर्ण को मृतक और खण्ड-खण्ड देखोगे अथवा कर्ण के बाणों से मुझको मृतक और खण्ड-खण्ड देखोगे १६ यह तीनों लोकों का मोहनेवाला घोरयुद्ध अब वर्तमान हुआ जिसको पृथ्वी जब तक रहैगी तब तक मनुष्य वर्णन करेंगे २० तब सुगमकर्मी श्रीकृष्णजी से ऐसा कहता हुआ अर्जुन रथ की सवारी के द्वारा ऐसी शीघ्रता से सम्मुख गया जैसे कि हाथी हाथी के सम्मुख जाता है २१ तेजस्वी अर्जुन फिर

भी शत्रुसंहारी श्रीकृष्णजी से बोला कि हे हृषीकेशजी ! आप शीघ्र घोड़ों को तीव्र करो यह समय व्यतीत हुआ जाता है २२ उस महात्मा अर्जुन के इस वचन को कहते ही श्रीकृष्णजी ने उसको विजय का आशीर्वाद देकर चित्त के समान शीघ्रगामी घोड़ों को तीक्ष्ण किया २३ चित्त के समान शीघ्रगामी वह अर्जुन का रथ क्षणमात्र में ही कर्ण के रथ से आगे हो गया ॥ २४ ॥

इति श्रीमहाभारते कर्णपर्वणि कर्णवधायार्जुनप्रस्थानेसप्ताशीतितमोऽध्यायः ॥ ८७ ॥

अट्ठासीवाँ अध्याय

सञ्जय बोले कि वृषसेन को मृतक देखकर शोक सन्ताप से युक्त कर्ण ने पुत्र के शोक से उत्पन्न होनेवाले जल को नेत्रों से छोड़ा १ फिर क्रोध से रक्तनेत्र तेजस्वी कर्ण युद्ध के निमित्त अर्जुन को बुलाता रथ की सवारी के द्वारा शत्रु के सम्मुख गया २ सूर्य के समान प्रकाशमान व्याघ्रचर्म से मढ़े हुए वह दोनों और दोनों के रथ मिले हुए ऐसे दिखाई दिये जैसे कि आकाश में वर्तमान दो सूर्य होयँ ३ वह शत्रुओं के मर्दन करनेवाले दिव्य पुरुष श्वेत घोड़ेवाले दोनों महात्मा युद्धभूमि में नियत होकर ऐसे शोभायमान हुए जैसे कि स्वर्ग में चन्द्रमा और सूर्य शोभा देते हैं ४ हे श्रेष्ठ ! तीनों लोक के विजय करने में उपाय करनेवाले इन्द्र और वैरोचन असुर के समान उन दोनों को देखकर सब सेना के मनुष्यों को बड़ा आश्चर्यसा हुआ ५ रथ कवच प्रत्यञ्चा और बाणों के शब्द और इसी प्रकार सिंहनादों समेत सम्मुख दौड़नेवाले उन रथियों को देखकर ६ और मिली हुई ध्वजाओं को भी देखकर राजाओं को आश्चर्य उत्पन्न हुआ गज की कक्षा के चिह्नवाली कर्ण की ध्वजा और हनुमान्जी के रूप की धारण करनेवाली अर्जुन की ध्वजा थी ७ हे भरतवंशिन् ! फिर सब राजाओं ने उन मिले हुए रथियों को देखकर सिंहनादपूर्वक बड़ी प्रशंसा करी ८ वहाँ पर हज़ारों शूरवीरों ने उन दोनों के साथ में द्वैरथ युद्ध को देखकर भुजा के शब्द अर्थात् खम्भों को फटकार कर डुपट्टों को घुमाया ९ और कर्ण के प्रसन्न करने को कौरव लोगों ने

चारों ओर से बाजों को बजाकर सबने शङ्खों को बजाया १० इसी प्रकार अर्जुन की प्रसन्नता के लिये सब पाण्डवों ने तूरी और शङ्ख के शब्दों से सब दिशाओं को शब्दायमान किया ११ सिंहनाद तालों का ठोंकना शूरों का पुकारना और शूरों की भुजाओं के महाकठोर शब्द अर्जुन और कर्ण की सम्मुखता में सब ओर को हुए १२ हे राजन्! उन रथ पर नियत रथियों में श्रेष्ठ बड़े धनुषधारी बाण, शक्ति, ध्वजा से युक्त १३ कवच खड्गधारी श्वेत घोड़ों समेत मुखों से शोभायमान उत्तम तूणीर बाँधे सुन्दर दर्शन १४ लाल चन्दन से अलंकृत सुन्दर शरीर उत्तम मत-वाले बैलों के समान धनुष और ध्वजारूपी बिजली से युक्त घनरूपी शस्त्रों से युद्ध करनेवाले १५ चमर और व्यजनों से युक्त श्वेत छत्रों से शोभित श्रीकृष्ण और शल्य को सारथी रखनेवाले एक से रूप महारथी १६ सिंह के समान स्कन्ध लम्बी भुजा रक्तनेत्र सुवर्ण की मालाओं से भूषित सिंह के समान शरीर बड़े हृदय और पराक्रमवाले परस्पर एक दूसरे का मरण चाहनेवाले दोनों परस्पर विजयाभिलाषी, गोशाला में उत्तम बली बर्धों के तुल्य परस्पर सम्मुख दौड़नेवाले मतवाले हाथियों के और पर्वतों के समान अत्यन्त क्रोधयुक्त १७।१८ विषैले सर्प के बच्चों के समान यमराज काल और मृत्यु के समान इन्द्रवज्र के समान क्रोधी सूर्य चन्द्रमा के समान तेजस्वी १९ प्रलयकाल के लिये उठे हुए महाग्रहों के समान क्रोध में भरे देव-कुमार देवता के समान पराक्रमी रूप में भी देवरूप दैव की इच्छा से सूर्य चन्द्रमा के समान सम्मुख आनेवाले पराक्रमी युद्ध में अभिमानी लड़ने में नाना प्रकार के शस्त्रों के रखनेवाले २०।२१ शार्दूलों के समान नियत उन दोनों पुरुषोत्तमों को देखकर आपके शूरवीरों को बड़ा आनन्द हुआ २२ भिड़े हुए पुरुषोत्तम कर्ण और अर्जुन को देखकर पूरी विजय में सब जीवों को सन्देह वर्तमान हुआ २३ दोनों उत्तम शस्त्रधारी और युद्ध में परिश्रम करनेवालों ने भुजाओं के शब्दों से आकाशमण्डल को शब्दायमान किया २४ दोनों वीरता और पराक्रम से प्रसिद्धकर्मी और समर में देव-राज और शम्बर के समान थे २५ फिर दोनों सहस्राबाहु के समान वा श्रीरामचन्द्रजी के तुल्य पराक्रमी और उसी प्रकार युद्ध में शिवजी के

समान पराक्रमी थे २६ हे राजन् ! दोनों श्वेत घोड़ेवाले उत्तम रथों की सवारी रखनेवाले थे और उस बड़े युद्ध में दोनों के श्रेष्ठतर सारथी थे २७ हे महाराज ! इसके अनन्तर उन शोभायमान महारथियों को देखकर सिद्ध चारण लोगों के समूहों को भी आश्चर्य उत्पन्न हुआ २८ हे भरतर्षभ ! इसके पीछे सेना समेत आपके पुत्रों ने युद्ध को शोभा देनेवाले महात्मा कर्ण को शीघ्र ही चारों ओर से घेरकर रक्षित किया २६ इसी प्रकार प्रसन्नरूप पाण्डवों ने भी जिनका अग्रगामी धृष्टद्युम्न था उस युद्ध में अनुपम महात्मा अर्जुन को चारों ओर से रक्षित किया ३० हे राजन् ! तब युद्ध में आपके पुत्रों का रक्षक कर्ण हुआ और पाण्डवों का रक्षक अर्जुन हुआ ३१ वहाँ पर वही सब वर्तमान शूर सभासद् हुए और वही देखनेवाले हुए वहाँ इन रक्षा करनेवालों की विजय और पराजय निश्चय हुई युद्ध के अग्रभाग में वर्तमान पाण्डव और हम लोगों का विजय और पराजयवाला द्यूत उन दोनों शूरवीरों के द्वारा जारी हुआ ३२ । ३३ हे महाराज ! वह युद्धभूमि में युद्ध में प्रशंसनीय परस्पर क्रोध भरे परस्पर के मारने की इच्छा से नियत हुए ३४ हे प्रभो वह दोनों क्रोधरूप इन्द्र और वृत्रासुर के समान प्रहार करने के उत्सुक हुए और बड़े धूम्रकेतु उपग्रहों के समान भयानक रूपधारी हुए ३५ हे भरतर्षभ ! इसके पीछे कर्ण और अर्जुन के विषय में अन्तरिक्ष में जीवों के परस्पर में निन्दा स्तुति करने के शास्त्रार्थरूप वाद हुए ३६ पिशाच सर्प और राक्षस दोनों ओर को परस्पर में सुने गये ३७ उन सबों ने कर्ण और अर्जुन के पक्षपातों में चित्त को प्रवृत्त किया स्वर्ग उस कर्ण की ओर के पक्ष में नियत हुआ ३८ और पृथ्वी माता के समान अर्जुन की विजय चाहनेवाली हुई इसी प्रकार पर्वत समुद्र नदी भी जलों समेत अर्जुन के पक्षपाती हुए वृक्ष और ओषधियाँ भी अर्जुन के ही पक्ष में हुए यह सब परस्पर दोनों ओरों को सुने गये हे शत्रुसन्तापिन्, धृतराष्ट्र ! असुर, यातुधान और गुह्यक ३६ । ४० इन स्वरूपवानों ने चारों ओर से कर्ण को प्राप्त किया मुनि, चारण, सिद्ध, गरुड़ पक्षी ४१ रत्न, सब खानें, चारों वेद जिनमें पाँचवाँ इतिहास है उपवेद, उपनिषद, रहस्य और संग्रह समेत वासुकी

चित्रसेन, तक्षक, पन्नग, सब कद्रू के पुत्र सर्प ४२। ४३ और विषैले सर्प यह सब अर्जुन की ओर हुए ऐरावतवंशीय, सुरभीवंशीय, वैशाली, भोगीनाम सर्प ४४ यह सब अर्जुन की ओर हुए और नीच सर्प कर्ण की ओर हुए ईहामृग, व्यालमृग और मङ्गली पशुपक्षी यह सब ४५ अर्जुन की विजय में प्रवृत्तचित्त हुए आठों वसु, ग्यारहों रुद्र, साध्यगण, मरुद्गण, विश्वेदेवा, दोनों अश्विनीकुमार ४६ अग्नि, इन्द्र, चन्द्रमा, दशोंदिशा, वायु यह सब अर्जुन की ओर हुए और बारह सूर्य कर्ण की ओर हुए ४७ हे महाराज! तब वैश्य, शूद्र, सूत और जो-जो कि संकर जातिवाले हैं इन सबने कर्ण को सेवन किया ४८ पीछे चलनेवाले समूहों समेत पितरों से युक्त देवता यमराज और कुबेर अर्जुन की ओर हुए ४९ ब्राह्मण, क्षत्रिय, यज्ञ, दक्षिणा अर्जुन की ओर हुए प्रेत, पिशाच, मांसभक्षी, राक्षस आदि पशुपक्षी ५० और जल के जीव, श्वान, शृगाल कर्ण की ओर हुए देवर्षि ब्रह्मर्षि और राजऋषियों के समूह पाण्डवों की ओर हुए ५१ हे राजन्! और तुम्बुरु आदि गन्धर्व भी अर्जुन की ओर हुए मनु के पुत्र गन्धर्व और अप्सराओं के समूह कर्ण की ओर हुए ५२ भेड़िये आदि पशु और पक्षियों के समूह हाथी घोड़े रथ और पत्ति इसी प्रकार मेघ वायु पर आरूढ़ ऋषि लोग ५३ कर्ण और अर्जुन के युद्ध के देखने की इच्छा से आये देवता, दानव, गन्धर्व, नाग, यक्ष, गरुड़ आदि ५४ और वेदज्ञ महर्षि लोग स्वधा के भोजन करनेवाले पितर और अनेक प्रकार के रूप पराक्रमों से युक्त तप विद्या औषध ५५ हे महाराज! यह सब शब्दों को करते हुए आकाश में नियत हुए ब्रह्मर्षि और प्रजापतियों समेत ब्रह्माजी ५६ और विमान पर विराजमान शिवजी उस दिव्य देश को आये तब उन भिड़े हुए महात्मा कर्ण और अर्जुन को देखकर ५७ इन्द्र देवता बोले कि अर्जुन कर्ण को मारकर विजय करो और सूर्य देवता ने कहा कि कर्ण अर्जुन को विजय करो ५८ मेरा पुत्र कर्ण युद्ध में अर्जुन को मारकर विजय करे और इन्द्र ने कहा कि मेरा पुत्र अर्जुन कर्ण को मारकर विजय करे ५९ वहाँ देवताओं में श्रेष्ठ पक्षपात में युक्त इन दोनों सूर्य और इन्द्र का परस्पर

वाद हुआ ६० हे भरतवंशिन्! देवता और असुरों के दो पक्ष हुए भिड़े हुए उन दोनों महात्मा कर्ण और अर्जुन को देखकर देवता, सिद्ध, चारण आदिक समेत तीनों लोक कम्पायमान हुए ६१ सब देवताओं के गण और जीवमात्र जितने हैं उनमें देवता अर्जुन की ओर हुए और असुर कर्ण की ओर हुए ६२ देवताओं ने कौरव और पाण्डवों के वीर महारथियों के दोनों पक्षों को देखकर स्वयंभू ब्रह्माजी से कहा कि हे ब्रह्माजी, महाराज! इन कौरव और पाण्डवों के दोनों युद्धकर्त्ताओं में किसकी विजय होगी हे देव! इन दोनों नरोत्तमों की वारंवार विजय होय ६३। ६४ हे प्रभो, ब्रह्माजी! कर्ण और अर्जुन के विवाद युद्ध से सब जगत् सन्देहयुक्त है इन दोनों की विजय को सत्य-सत्य हमसे कहिये हे ब्रह्माजी! आप इसी वचन को कहिये जिसमें इन दोनों की विजय समान हो इन वचनों को सुनकर पितामहजी को प्रणाम करके ६५। ६६ बड़े ज्ञानी इन्द्र ने देवताओं के ईश्वर ब्रह्माजी को यह जतलाया कि प्रथम आप भगवान् ने श्रीकृष्ण और अर्जुन की पूर्ण विजय वर्णन करी वह जैसा आपने कहा है वैसे ही होय मैं आपको नमस्कार करता हूँ आप मुझपर प्रसन्न हूजिये इसके पीछे ब्रह्माजी और शिवजी इन्द्र से यह वचन बोले ६७। ६८ कि इस महात्मा अर्जुन की ही निश्चय विजय होगी जिस अर्जुन ने कि खाण्डव वन में अग्नि को प्रसन्न किया और हे इन्द्र! उसने स्वर्ग में आकर तेरी सहायता करी और कर्ण दानवों के पक्ष में है इस हेतु से वह पराजय होने के योग्य है ६९। ७० ऐसा करने से देवताओं का कार्य निश्चय होता है हे देवराज! सबका निज कार्य बड़ा है ७१ महात्मा अर्जुन भी सदैव सच्चे धर्म में प्रीति रखनेवाला है इसी की अवश्य विजय होगी इसमें किसी प्रकार का सन्देह नहीं है ७२ और जिसने भगवान् महात्मा शिवजी को प्रसन्न किया हे इन्द्र! उसकी विजय कैसे न होगी अर्थात् अवश्य होगी ७३ जगत् के प्रभु विष्णु भगवान् ने जिसकी आप रथवानी करी और जो साहसी पराक्रमी अस्त्रज्ञ तपोधन ७४ बड़ा तेजस्वी सब गुणों से युक्त अर्जुन सम्पूर्ण धनुर्वेद को धारण करता है इसी से यह

देवताओं का काम होगा ७५ पाण्डव सदैव से वनवास आदि से दुःख पाते हैं तप से युक्त वह योग्य पुरुष अर्जुन ७६ अपनी प्रतिष्ठा से वाञ्छित मनोरथों की अमर्यादाओं को उल्लङ्घन करे उसके उल्लङ्घन करने पर लोकों का अवश्य नाश हो जाय ७७ क्रोधयुक्त श्रीकृष्ण और अर्जुन की पराजय कहीं नहीं वर्तमान है यह दोनों पुरुषोत्तम सदैव से संसार के स्वामी हैं अर्थात् इन दोनों परमात्मा और आत्मा के तेज से सब जगत् प्रकट होता है ७८ यह दोनों नरनारायण पुराण पुरुष ऋषियों में श्रेष्ठ अजेय सबके ऊपर मुख्य हैं इसी हेतु से यह दोनों शत्रुओं के सन्तप्त करनेवाले हैं ७९ स्वर्ग, मर्त्य, पाताल इन तीनों लोकों में इन दोनों के समान कोई नहीं है ८० सब देवगण और जीवों के गण जितने हैं इन सब समेत सब संसार इन दोनों से मिलकर उन्हीं के प्रभाव से प्रकट होता है ८१ यह पुरुषोत्तम कर्ण उत्तम लोकों को पावे क्योंकि यह सूर्य का पुत्र और बड़ा शूरवीर है परन्तु श्रीकृष्ण और अर्जुन की विजय होय ८२ यह कर्ण वसुओं की सालोक्यता को और मरुद्गणों के स्थानों को पावे और द्रोण वा भीष्मपितामह के साथ स्वर्गलोक को पावे ८३ देवताओं के देवता ब्रह्माजी और शिवजी के इस वचन को सुनकर इन्द्र ने सब जीवमात्रों को समझाकर ब्रह्माजी और शिवजी के आज्ञारूप इस वचन को कहा ८४ कि हे सब जीवमात्रो ! आप सब लोगों ने सुना जो जगत् के हितकारी भगवान् ब्रह्माजी और शिवजी ने कहा है वह वैसा ही होगा इसमें अन्यथा कभी न होगा तुम निस्सन्देह रहो ८५ हे श्रेष्ठ राजन्, धृतराष्ट्र ! सब जीव इन्द्र के इस वचन को सुनकर आश्चर्य युक्त हुए और इन्द्र का पूजन किया और देवताओं ने प्रसन्नचित्त होकर सुगन्धित पुष्पों की वर्षा करी और नानारूप के देवताओं के बाजों को बजाया ८६ । ८७ इन दोनों नरोत्तमों को अनूपम द्वैरथ युद्ध के देखने की इच्छा से देवता दानव और गन्धर्व सब नियत हुए ८८ उन दोनों महात्माओं के वह दोनों दिव्य रथ श्वेत घोड़ों से युक्त थे जिन पर यह दोनों महात्मा सवार थे ८९ सम्मुख आये हुए लोकों के वीरों ने अपने-अपने शङ्खों को पृथक्-पृथक् बजाया हे भरतवंशिन् ! फिर

वासुदेवजी अर्जुन कर्ण और शल्य ने भी शङ्खों को बजाया ९० तब परस्पर ईर्षा करनेवाले दोनों वीरों का युद्ध भयानकों का भी भयकारी ऐसा कठिन हुआ जैसे कि इन्द्र और शम्बर दैत्य का युद्ध हुआ था ९१ उन दोनों की निर्मल भुजा रथ पर नियत होकर ऐसी शोभायमान हुईं जैसे कि संसार की प्रलय होने के समय में आकाश में उदय होनेवाले राहु और केतु होते हैं ९२ विषवाले सर्प की समान रत्नसार से जटित बड़ी दृढ़ इन्द्रधनुष के समान हाथी की कक्षा के चिह्नवाली कर्ण की ध्वजा शोभा दे रही थी ९३ और खुले मुखवाले यमराज के समान विकराल दंष्ट्रावाले हनुमान्‌जी से शोभित अर्जुन की ध्वजा ऐसी भयकारी देखने में आती थी जैसे कि सूर्य अपनी किरणों से दुःख से देखने के योग्य होता है ९४ गाण्डीव धनुषधारी की ध्वजा में से युद्धाभिलाषी हनुमान्‌जी अपने स्थान से उछलकर कर्ण की ध्वजा पर नियत हुए ९५ बड़े वेगवान् हनुमान्‌जी ने उछलकर कर्ण के ध्वजा की नागकक्षा को अपने दाँत और नखों से ऐसे घायल किया जैसे कि सर्प को गरुड़ करता है ९६ इसके पीछे क्षुद्रघण्टिका और भूषण रखनेवाली कालपाश के समान अत्यन्त क्रोधरूप वह नाग की कक्षा हनुमान्‌जी की ओर दौड़ी ९७ तब उन दोनों का अत्यन्त घोररूप द्वैरथ युद्ध होने पर उन दोनों ध्वजाओं ने प्रथम वा उत्तम युद्ध के ९८ परस्पर ईर्षा करनेवाले घोड़ों से घोड़ों को हिंसन किया और कमललोचन श्रीकृष्णजी ने नेत्ररूप बाणों से शल्य को छेदा ९९ इसी प्रकार शल्य ने भी श्रीकृष्ण-जी को देखा वहाँ वासुदेवजी ने नेत्ररूपी बाणों से शल्य को विजय किया १०० और कुन्ती के पुत्र अर्जुन ने भी कर्ण को देखकर विजय किया इसके पीछे सूतपुत्र कर्ण ने शल्य से समक्ष होकर मन्द मुसकान समेत यह वचन कहा १०१ कि अब युद्ध में किसी समय पर जो कदाचित् अर्जुन मुझको मार डाले तब हे शल्य ! तुम क्या करोगे यह सत्य-सत्य हमसे कहो १०२ शल्य ने कहा कि जो श्वेत घोड़ेवाला अर्जुन तुझको युद्ध में मार डालेगा तो मैं एक ही रथ के द्वारा उन दोनों श्रीकृष्ण और अर्जुन को मारूँगा १०३ सञ्जय बोले कि इसी

प्रकार अर्जुन ने गोविन्दजी से कहा तब श्रीकृष्णजी ने भी हँसकर उस अर्जुन से यह सत्य-सत्य वचन कहा १०४ कि हे अर्जुन! चाहे सूर्य अपने स्थान से गिर पड़े और समुद्र भी सूख जाय और अग्नि शीतलता को पावे परन्तु कर्ण तुझको नहीं मार सकता है १०५ जो यह किसी प्रकार से हो जाय और इन लोगों का निवास होय तो मैं कर्ण और शल्य को युद्ध में अपनी भुजाओं से ही मार डालूँगा १०६ श्रीकृष्णजी के इस वचन को सुनकर हँसते हुए कपिध्वज अर्जुन ने उन सुगमकर्मी श्रीकृष्णजी को यह उत्तर दिया कि १०७ हे जनार्दनजी! जब आपकी मेरे ऊपर ऐसी कृपा है तो कर्ण और शल्य मुझको युद्ध में विजय करने को असमर्थ हैं हे श्रीकृष्णजी! अब युद्ध में मेरे हाथ के बाणों से पताका, ध्वजा, शल्य, रथ, घोड़े, छत्र, कवच, शक्ति, बाण और धनुष सहित बहुत प्रकार से घायल हुए कर्ण को देखोगे १०८।१०९ अबहीं रथ, घोड़े, शक्ति, कवच और शस्त्रों समेत ऐसे अच्छी रीति से चूर्ण होगा जैसे कि वन में हाथी से वृक्षों का चूर्ण होता है ११० अब कर्ण की स्त्रियों को वैधव्यता अर्थात् विधवापना प्राप्त हुआ हे माधवजी! निश्चय करके उन स्त्रियों ने सोते हुए अशुभ स्वप्नों को देखा होगा १११ अभी आप कर्ण की स्त्रियों को विधवा देखेंगे क्योंकि वह मेरा क्रोध शान्त नहीं होता है जो इस प्रकार से हमको हँसकर और वारंवार हमारी निन्दा करके इस अज्ञानी अदीर्घदर्शी ने पूर्व समय में सभा में वर्तमान द्रौपदी को देखकर कर्म किया था ११२।११३ हे गोविन्दजी! अब मेरे हाथ से मथन किये हुए कर्ण को ऐसे देखोगे जैसे कि मतवाले हाथी से मर्दन किया हुआ पुष्पित वृक्ष होता है हे मधुसूदनजी! अब कर्ण के पछाड़ने पर उन मधुर वचनों को आप सुनेंगे कि हे श्रीकृष्णजी! आप प्रारब्ध से विजय करते हो ११४।११५ हे जनार्दनजी! अब आप अत्यन्त प्रसन्न होकर अभिमन्यु की माता को और अपनी फूफी कुन्ती को विश्वासयुक्त करोगे ११६ हे माधवजी! अब तुम अमृत के समान वचनों से अश्रुओं से पूरित मुखवाली द्रौपदी की और धर्मराज युधिष्ठिर को विश्वासयुक्त करके शान्त करोगे ११७

इति श्रीमहाभारते कर्णपर्वणि कृष्णार्जुनसंवादेद्वैरथयुद्धेऽष्टाशीतितमोऽध्यायः ॥ ८८ ॥

नवासीवाँ अध्याय

सञ्जय बोले कि आकाश देवता, नाग, असुर, सिद्ध, यक्ष, राक्षस, गन्धर्व और अप्सराओं के समूहों से और राजऋषि ब्रह्मऋषि और गरुड़ से सेवित होकर अपूर्व शोभित हुआ १ और सब मनुष्य और पक्षियों ने नाना प्रकार के बाजे, गान, प्रशंसा, नृत्य, हास और अनेक चित्तरोचक शब्दों से अन्तरिक्ष को अपूर्व रूप का शब्दायमान देखा २ तदनन्तर बाजे शङ्ख और सिंहनादों के शब्दों से पृथ्वी और दिशाओं को शब्दायमान करते अत्यन्त प्रसन्नचित्त कौरवीय और पाण्डवीय सेना के शूरवीरों ने सब शत्रुओं को मारा ३ तब युद्धभूमि मनुष्य घोड़े हाथी और रथों से व्याप्त बाण खड्ग शक्ति और दुधारे खड्गों के प्रहारों से महा असह्य और निर्भय शूरवीरों से सेवित वा मृतक योद्धाओं से पूरित होकर रक्तवर्ण को धारण किये अत्यन्त शोभायमान हुई ४ इस रीति से कौरव और पाण्डवों का ऐसा युद्ध हुआ जैसे कि असुरों का और देवताओं का हुआ था इस प्रकार महाभयकारी घोर युद्ध के जारी होने पर अर्जुन और कर्ण के महातीक्ष्ण सीधे चलनेवाले अच्छे अलंकृत उत्तम शायकों से दिशाओं समेत सम्पूर्ण सेना ढक गई तदनन्तर अन्धकार हो जाने पर आपके और पाण्डवों के युद्धकर्ताओं ने कुछ भी नहीं देखा ५। ६ रथियों में श्रेष्ठ वह दोनों कर्ण और अर्जुन भय से दुःखी होकर सम्मुख हुए फिर सब ओर से अपूर्व युद्ध हुआ अर्थात् पूर्वीय पश्चिमीय वायु के समान परस्पर में अस्त्रों से अस्त्रों को हटाकर ७ ऐसे शोभायमान हुए जैसे कि बादलों से अन्धकार हो जाने पर उदय होनेवाले सूर्य और चन्द्रमा हटना नहीं चाहते इस नियम से प्रेरित आपके और पाण्डवों के शूरवीर लोग सम्मुख नियत हुए ८ वह दोनों महारथी नरोत्तम सब ओर से घेरकर मृदङ्ग, भेरी, पणव और आनक नाम बाजों के और सिंहनादों के शब्दों के द्वारा ऐसे शब्दवाले हुए जैसे कि देवता असुर शम्बर और इन्द्र हुए थे ९ तब वह दोनों पुरुषोत्तम बड़े धनुषमण्डल में वर्तमान बड़े तेजस्वी बाणरूप हज़ारों किरणों के

रखनेवाले होकर ऐसे शोभायमान हुए जैसे कि बादलों के शब्दों से चन्द्रमा और सूर्य होते हैं १० वह दोनों प्रलयकाल के सूर्य के समान युद्ध में कठिनतापूर्वक सहने के योग्य जड़ चैतन्यों समेत संसार के भस्म करने के इच्छावान् महा अजेय शत्रुओं का नाश करनेवाले परस्पर में मारने के अभिलाषी ११ कर्ण और अर्जुन निर्भयतापूर्वक उस बड़े युद्ध में ऐसे सम्मुख हुए जैसे कि महेन्द्र और जम्भ सम्मुख हुए थे उसके पीछे बड़े धनुषधारी भय के उत्पन्न करनेवाले बाणों के द्वारा बड़े अस्त्रों को छोड़ते हुए १२ दोनों महारथियों ने बहुत से मनुष्य घोड़े और हाथियों समेत परस्पर में एक ने दूसरे को घायल किया हे राजन्! इसके पीछे उन दोनों नरोत्तमों से पीड्यमान कौरवीय और पाण्डवीय मनुष्य, हाथी, पत्ति, घोड़े और रथों से युक्त ऐसे दशों दिशाओं में भागे जैसे कि सिंह से घायल हुए वनवासी जीव भागते हैं इसके पीछे दुर्योधन, कृतवर्मा, शकुनी, कृपाचार्य और शारद्वत का पुत्र इन पाँचों महारथियों ने शरीर के छेदनेवाले बाणों से अर्जुन और श्रीकृष्णजी को पीड़ित किया तब अर्जुन ने उनके धनुष, तूणीर, ध्वजा, घोड़े, रथ और सारथियों समेत १३ । १५ चारों ओर से इन शत्रुओं को मथन करके शीघ्र ही उत्तम बारह बाणों से कर्ण को घायल किया इसके पीछे शीघ्रता करनेवाले मारने के अभिलाषी लोग सम्मुख दौड़े और अर्जुन के मारने के उत्सुक सौ रथ सौ हाथी १६ और अश्वसवार शक, तुषार, यवन, काम्बोजदेशियों समेत इन सबोंने हाथों में क्षुरप्र लेकर सब शस्त्रों को काटकर शिरों को भी काटा उस समय वहाँ अनेक शिर पृथ्वी पर गिर पड़े १७ तब उस युद्ध करनेवाले अर्जुन ने घोड़े हाथी और रथों समेत उन शत्रुओं के समूहों को काटा इसके पीछे अन्तरिक्ष में देवताओं ने इन दोनों की कीर्ति समेत बाजों से स्तुति करी १८ और आकाश से सुगन्धित पुष्पों की वर्षा होने लगी तब उस आश्चर्य को देखकर देवता और मनुष्यों के समक्ष में सब जीवमात्र अचम्भा सा करने लगे फिर उत्तम निश्चय रखनेवाले आपके पुत्र और कर्ण ने न पीड़ा करी न आश्चर्य को पाया इसके पीछे मधुरभाषी अश्वत्थामाजी हाथ से हाथ

को मलकर आपके पुत्र से बोले १६। २० हे दुर्योधन ! अब तू प्रसन्न होकर पाण्डवों से सन्धि कर लड़ना त्यागो और युद्ध को धिक्कार हो बड़े अस्त्रज्ञ ब्रह्माजी के समान गुरुजी और वैसे ही भीष्मसरीखे प्रतापी वीर मारे गये २१ मैं और मेरा मामा चिरञ्जीवी हैं पाण्डवों समेत तुम बहुत काल तक राज्य करो मुझसे निषेध किया हुआ अर्जुन सन्धि को करता है और श्रीकृष्णजी भी शत्रुता को नहीं चाहते हैं २२ युधिष्ठिर सदैव जीवधारियों के मनोरथों में प्रवृत्त हैं और इसी प्रकार भीमसेन समेत नकुल और सहदेव भी मेरे स्वाधीन हैं तेरी इच्छा से पाण्डवों से और तुझसे सन्धि होने पर प्रजा लोगों का कल्याण होगा और सुख को पावेंगे बाकी बचे हुए बान्धव लोग अपने-अपने पुरों को जायँ और सेना के मनुष्य भी युद्ध करना छोड़ें हे राजन् ! जो मेरे वचन को नहीं सुनोगे तो निश्चय जानो कि अवश्य तुम शत्रुओं से घायल और पीड़ित होकर दुःखों को पावोगे २३। २४ तेरे साथ सब जगत् ने देखा जो अकेले अर्जुन ने किया ऐसा कर्म न यमराज न इन्द्र न भगवान् ब्रह्मा और यक्षों का राजा कुबेर भी नहीं कर सक्ता है २५ अर्जुन अपने गुणों से इन सबसे भी अधिक है परन्तु वह मेरे किसी वचन को भी उल्लङ्घन नहीं करेगा अर्थात् मेरे कहने को अवश्य करेगा और सदैव तेरे पीछे चलेगा हे राजेन्द्र ! तुम प्रसन्न होकर शान्तता में युक्त हो जावो तुझमें मेरा सदैव बड़ा मन है इसी हेतु से मैं बड़ी शुभ-चिन्तकता से अर्थात् तेरे भले के लिये तुझसे कहता हूँ जब आप मृदु होगे तब मैं कर्ण को भी निषेध करूँगा २६। २७ पण्डित लोग साथ उत्पन्न होनेवाले को मित्र कहते हैं इसी प्रकार प्रीति और धन के द्वारा प्राप्त होनेवाला और अपने प्रताप से नम्रीभूत होनेवाले को मित्र कहते हैं यह चार प्रकार की मित्रता है वह तेरी चारों प्रकार की मित्रता पाण्डवों में है २८ हे प्रभो ! तेरी उत्पत्ति से तो तेरे बान्धव हैं प्रीति समेत उनको प्राप्त करो और तेरी प्रसन्नता से अर्थात् आधा राज्य देने से जो मित्र हो जायँ उस दशा में तेरे कारण से जगत् का बड़ा हित होगा उस शुभचिन्तक के ऐसे हितकारी वचनों को सुनकर वह दुःखी चित्त

दुर्योधन बहुत शोच से श्वासों को लेकर बोला हे मित्र ! जैसा आपने कहा वह सब इसी प्रकार है परन्तु मुझ जतानेवाले के भी वचनों को सुनो कि २६ । ३० इस दुर्बुद्धि भीमसेन ने शार्दूल के समान अपना हठ करके दुश्शासन को मारकर जो वचन कहा है वह मेरे हृदय में नियत है यह सब आपके समक्ष में ही हुआ है कैसे शान्ति हो सक्ती है ३१ अर्जुन भी युद्ध में कर्ण को ऐसे नहीं सह सकेगा जैसे कि कठोर पवन मेरुनाम पर्वत को नहीं सह सक्ता है कुन्ती के पुत्र हठ करके और बहुधा शत्रुता को शोचकर मेरा विश्वास नहीं करेंगे हे गुरुजी के पुत्र ! तुम अजेय होकर इस बात को कर्ण से भी कभी न कहिये कि तुम युद्ध को त्याग दो अब अर्जुन बहुत थकावट से युक्त है इसी से यह कर्ण बड़े हठ से उसको मारेगा ३२ । ३३ आपके पुत्र ने उससे ऐसा कहकर और वारंवार समझाकर अपने सेना के लोगों को आज्ञा दी कि तुम हाथों में बाणों को ले-लेकर मेरे शत्रुओं के सम्मुख जावो क्या मौन होकर नियत हो ॥ ३४ ॥

इति श्रीमहाभारते कर्णपर्वण्यश्वत्थामाहितवर्णने नवाशीतितमोऽध्यायः ॥ ८६ ॥

नब्बे का अध्याय

सञ्जय बोले कि हे राजन् ! आपके पुत्र के दुर्मन्त्रित होने वा शङ्ख और भेरी के शब्दों की आधिक्यता से श्वेत घोड़े रखनेवाला नरोत्तम अर्जुन और सूर्य का पुत्र कर्ण दोनों ऐसे सम्मुख हुए जैसे कि मद झाड़नेवाले दीर्घदन्ती हिमालय पर्वत के उत्पन्न बड़े दो हाथी हथिनी के निमित्त भिड़ते हैं १ । २ अथवा जैसे कि दैवइच्छा से महाबलाहक नाम बादल बलाहक बादल से और पर्वत पर्वत से भिड़ जायँ उसी प्रकार बाणरूपी वर्षा के करनेवाले धनुष रोदा और प्रत्यञ्चा के शब्दों समेत सम्मुख हुए ३ और परस्पर में ऐसे घायल हुए जैसे कि बड़े वृक्ष औषधी और शिखरवाले नाना झिरनों से युक्त बड़े पराक्रमी दो पर्वत आपस में घायल होते हैं उसी प्रकार वह दोनों महाअस्त्रों से परस्पर में घायल हुए ४ फिर बाणों से घायल शरीर सारथी और घोड़ेवाले उन दोनों

की वह चढ़ाई बहुत बड़ी हुई जो अन्य से दुःखपूर्वक सहने के योग्य कठोर रुधिररूप जल की ऐसी रखनेवाली थी जैसे कि पूर्व समय में देव इन्द्र और विरोचन के पुत्र बलि की चढ़ाई हुई थी जैसे कि बहुत से पद्म वा उत्पल कमल मछली कछुये रखनेवाले पक्षियों के समूहों से वेष्टित अत्यन्त समीप वायु के वेग से दो ह्रद परस्पर में भिड़ जायँ उसी प्रकार वह दोनों ध्वजाधारी रथ आपस में सम्मुख हुए ५। ६ महेन्द्र के समान पराक्रमी और रूपवाले उन दोनों महारथियों ने उसी महेन्द्र के वज्र के समान शायकों से परस्पर में ऐसे घायल किया जैसे कि महेन्द्र और वृत्रासुर ने परस्पर घायल किया था ७ हाथी पत्ति घोड़े रथ और चित्र विचित्र कवच भूषण वस्त्र और शस्त्रों की धारण करनेवाली वह अपूर्व रूपवाली दोनों विस्मित सेना कम्पायमान हुई उस अर्जुन और कर्ण के युद्ध में वस्त्र और अंगुलियों से युक्त ऊँची-ऊँची भुजा आकाश में वर्तमान हुई मतवाले हाथी के समान प्रसन्नचित्त अर्जुन तमाशा देखनेवालों के सिंहनादों समेत मारने की इच्छा से कर्ण के सम्मुख ऐसे गया जैसे कि मतवाला हाथी मतवाले हाथी के सम्मुख जाता है ८। ६ वहाँ आगे चलनेवाले सोमक लोग अर्जुन को पुकारे कि हे अर्जुन! कर्ण को छेदकर इसके मस्तक को काटो और धृतराष्ट्र के पुत्र की श्रद्धा को राज्य से पृथक् करो इसमें विलम्ब मत करो १० इसी प्रकार हमारे भी बहुत से शूरवीरों ने कर्ण को प्रेरणा करी कि चलो-चलो हे कर्ण! अत्यन्त तीक्ष्ण बाणों से अर्जुन को मारो और पाण्डव फिर बहुत काल के लिये वन को जायँ ११ इसके पीछे प्रथम तो कर्ण ने उत्तम दश बाणों से अर्जुन को छेदा और अर्जुन ने हँसकर तीक्ष्ण दश बाणों से कर्ण को कुक्षि में बेधा १२ फिर उन दोनों कर्ण और अर्जुन ने सुन्दर पुङ्खवाले बाणों से परस्पर घायल किया और बड़ी प्रसन्नता से एक ने दूसरे को छेदा और भयकारी रूपों से सम्मुख गये १३ इसके पीछे उग्र धनुषधारी अर्जुन ने दोनों भुजाओं से गाण्डीव धनुष को ठीक करके नाराच, नालीक, वराहकर्ण, क्षुरप्र, आञ्जलिक, अर्धचन्द्र इन बाणों को छोड़ा १४ हे राजन्! वह अर्जुन के छोड़े हुए

बाण रथ में प्रवेश कर गये और सब ओर से ऐसे फैल गये जैसे कि सायंकाल के समीप नीचा शिर करनेवाले पक्षियों के समूह निवास के लिये शीघ्र वृक्ष पर प्रवेश करते हैं १५ शत्रुओं के विजय करनेवाले अर्जुन ने जिन बाणों को भृकुटी के कटाक्ष से युक्त कर्ण के निमित्त छोड़ा था उन बाणों को कर्ण ने अपने शायकों से दूर किया १६ इसके पीछे इन्द्र के पुत्र अर्जुन ने शत्रु के वशीभूत करनेवाले अग्न्यस्त्र को कर्ण के ऊपर छोड़ा तब पृथ्वी अन्तरिक्ष और दिशाओं के मार्गों को ढककर उसका शरीर प्रकाशमान हुआ १७ और अग्नि से जलती हुई पोशाकवाले वा पोशाकों से अत्यन्त रहित हो जानेवाले शूरवीर बड़े व्याकुल होकर भागे और ऐसा बड़ा घोर शब्द हुआ जैसे कि बाँसों के वन में जलते हुए बाँसों के शब्द होते हैं १८ फिर उस प्रतापवान् कर्ण ने युद्ध में उठे हुए उस अग्न्यस्त्र को देखकर उसके शान्त होने के निमित्त वारुणास्त्र को छोड़ा और उसी से वह अग्नि शान्त हुई १९ फिर उस वेगवान् ने बादलों के समूहों से सब दिशाओं में अन्धकार कर दिया तब पर्वत के समान किनारा रखनेवाले कर्ण ने चारों ओर को जल की परिधि करके २० उस अत्यन्त भयानक अग्नि को शान्त कर दिया परन्तु दिशाओं के सब स्थान जो कि बादलों से युक्त थे २१ इससे कुछ दिखाई नहीं दिया तदनन्तर अर्जुन ने वायु अस्त्र से कर्ण के उन अस्त्रों के समूहों को दूर किया २२ फिर शत्रुओं से अजेय अर्जुन ने गाण्डीव धनुष प्रत्यञ्चा और विशिखों पर मन्त्रों को पढ़कर बड़े प्रभाववाले देवेन्द्र के प्यारे वज्रास्त्र को भी प्रकट किया २३ इसके पीछे क्षुरप्र, आञ्जुलिक, अर्धचन्द्र, नालीक, नाराच, वराहकर्ण नाम अत्यन्त तीक्ष्ण वज्र के समान वेगवान् हज़ारों बाण गाण्डीव धनुष से प्रकट हुए २४ वह बड़े प्रभावयुक्त सुन्दर वेत गृध्रपक्षों से जटित अच्छे वेगवान् बाण कर्ण को पाकर उसके सब अङ्ग, घोड़े, धनुष, जुये, चक्र से होकर पृथ्वी में प्रवेश कर गये तब बाणों से युक्त रुधिर से लिप्त अङ्ग क्रोध से खुले नेत्रवाले महात्मा कर्ण ने २५ । २६ दृढ़ प्रत्यञ्चावाले समुद्र के समान शब्दायमान धनुष को दबाकर भार्गव अस्त्र को प्रकट किया और महेन्द्रास्त्र

के सम्मुख छोड़े हुए अर्जुन के बाणों के समूहों को काट २७ अपने अस्त्र से उसके अस्त्र को हटाके युद्ध में रथ हाथी और पत्तियों को मारा महेन्द्र के समान कर्म करनेवाले कर्ण ने भार्गव अस्त्र के प्रताप से ऐसा कर्म किया २८ इसको करके फिर क्रोधयुक्त सूत के पुत्र कर्ण ने युद्ध में पाञ्चालों के अत्यन्त उत्तम शूरवीरों को रोककर अच्छी रीति से छोड़े हुए तीक्ष्ण धार सुनहरी पुङ्खवाले बाणों से पीड्यमान किया २९ हे राजन्! युद्धभूमि में कर्ण के बाणसमूहों से पीड़ित पाञ्चाल और सोमकों ने भी हठ करके प्रसन्नता से कर्ण को बाणों से छेदकर पीड्यमान किया ३० फिर कर्ण ने बाणों से पाञ्चालों के उन रथ हाथी और घोड़ों के समूहों को मारा और मारे बाणों के सबको पीड़ित कर डाला ३१ वह कर्ण के बाणों से निर्जीव होकर शब्दों को करते हुए ऐसे गिर पड़े जैसे कि महावन में क्रोधयुक्त भयानक सिंह से हाथियों के समूह गिर पड़ते हैं ३२ हे राजन्! इसके पीछे वह बड़ा साहसी और बड़े उत्साह का करनेवाला कर्ण अत्यन्त उत्तम-उत्तम शूरवीरों को मारकर ऐसे शोभायमान हुआ जैसे कि आकाश में तीक्ष्ण किरणों का रखनेवाला सूर्य होता है ३३ हे कौरवेन्द्र! फिर आपके शूरवीरों ने कर्ण की विजय को मानकर बड़ी प्रसन्नता मनाकर सिंहनादों को किया और सबने कर्ण के हाथ से श्रीकृष्ण और अर्जुन को निहायत घायल माना ३४ फिर वह महारथी कर्ण अपने उस पराक्रम को दूसरों से असह्यवाला जानकर और इस रीति से अर्जुन के उस अस्त्र को अपने से निष्फल हुआ देखकर ३५ क्रोध से रक्तनेत्र असह्य क्रोधयुक्त वायु का पुत्र भीमसेन श्वासों को लेता हुआ हाथ से हाथ को मलकर सत्यसंकल्प अर्जुन से बोला ३६ अब युद्ध में तेरे और विष्णुजी के सम्मुख किस प्रकार से उस पापी अधर्मी सूत के पुत्र कर्ण ने प्रबल होकर पाञ्चालों के उत्तम शूरवीरों को मारा ३७ हे अर्जुन! साक्षात् शिवजी की भुजा के स्पर्श को पाकर कालकेय नाम असुरों से अजेयरूप तुझको इस कर्ण ने प्रथम दश बाणों से कैसे छेदा ३८ और तेरे चलाये हुए बाणसमूहों को सह गया इससे यह कर्ण मुझको अपूर्व दिखाई देता है तुम द्रौपदी के उन दुःखों को स्मरण करो कि इसने कैसे-

कैसे वचन कहे थे ३९ हे अर्जुन ! इस पापबुद्धि दुर्मति दुष्टहृदय सूतपुत्र ने रूखे-रूखे अत्यन्त तीव्रवचन कहे अब तुम उन सब वचनों को स्मरण करके उस पापी कर्ण को युद्ध में शीघ्र मारो ४० हे अर्जुन ! उसको कैसे छोड़ रक्खा है ? अब यहाँ यह समय तेरे त्याग करने का नहीं है खाण्डववन में जिस धैर्यता से तैंने सब जीवों को विजय किया उसी धैर्यता से इस दुर्मति सूतपुत्र को मारो मैं उसको गदा से मारूँगा उसके पीछे वासुदेवजी भी बाणों से व्यथित देखकर अर्जुन से बोले ४१।४२ कि अब इस कर्ण ने तेरे अस्त्र को अपने अस्त्रों से सब प्रकार मर्दन किया है हे अर्जुन ! यह क्या बात है हे वीर ! तुम क्यों मोहित हो रहे हो क्यों नहीं सचेत होते हो देखो यह कौरव लोग अत्यन्त प्रसन्न होकर गर्जते हैं ४३ सबने कर्ण को आगे करके तेरे अस्त्र को अस्त्रों से गिराया हुआ जाना है जिस धैर्यता से तैंने तामस अस्त्र को दूर किया और युग-युग में भी ४४ दम्भोद्भवनाम घोर राक्षसों को युद्धों में मारा उसी धैर्य से अब तुम कर्ण को मारो अब हठ करके मेरे दिये हुए नेमियों पर छूरेवाले सुदर्शन चक्र से इस शत्रु के शिर को ऐसे काटो जैसे कि इन्द्र ने अपने शत्रु नमुचि के शिर को काटा था किरातरूपी भगवान् शिवजी भी तेरे धैर्य से प्रसन्न हुए ४५ । ४६ हे वीर ! तुम फिर उसी धैर्य को धारण करके कर्ण को उसके सब साथियों समेत मारो इसके पीछे तुम सागररूप मेखला रखनेवाली नगर ग्रामों से युक्त और धन रत्नों से पूर्ण उस पृथ्वी को ४७ जिसमें कि शत्रुओं के समूह मारे गये हैं अपने राजा युधिष्ठिर के सुपुर्द करो यह वचन सुनकर उस बड़े बुद्धिमान् महापराक्रमी महात्मा अर्जुन ने कर्ण के मारने के निमित्त बुद्धि करी ४८ भीमसेन और श्रीकृष्णजी से प्रेरणा किये हुए उस अर्जुन ने आपको ध्यान करके और सब बातों को विचार कर इस लोक के इन्द्र अपने आने में प्रयोजन को जानकर केशवजी से यह वचन कहा ४९ कि हे केशवजी ! मैं लोक के आनन्द और कर्ण के मारने के निमित्त इस उग्र महाअस्त्र को प्रकट करता हूँ सो आप ब्रह्माजी शिवजी देवता और वेदों के सब जाननेवाले ऋषिलोग मुझको आज्ञा दो ५० उस

महासाहसी अर्जुन ने इस प्रकार से कह के और ब्राह्मणों को नमस्कार करके उस उग्र महाअस्त्र को प्रकट किया जोकि असह्य और चित्त से प्रकट करने के योग्य था ५१ जैसे कि बादल शीघ्र जलधाराओं को छोड़ता है उसी प्रकार कर्ण बाणों से इसके उस अस्त्र को दूर करके शोभायमान हुआ तब क्रोधयुक्त पराक्रमी भीमसेन ने इस रीति से युद्धभूमि में कर्ण के हाथ से अर्जुन के उस अस्त्र को दूर किया हुआ देखकर सत्यसङ्कल्प अर्जुन से कहा कि निश्चय करके मनुष्यों ने तुमको बड़ा उत्तम और ब्रह्मास्त्रनाम बड़े अस्त्र का जाननेवाला कहा है ५२। ५३ हे अर्जुन! इस हेतु से अब तुम दूसरे अस्त्र को चलाओ ऐसे कहे हुए अर्जुन ने अस्त्र का प्रयोग किया तदनन्तर बड़े तेजस्वी अर्जुन ने गाण्डीव धनुष और भुजाओं से छोड़े हुए भयकारी सूर्य की किरणों के समान प्रकाशित बाणों से सब दिशा और विदिशाओं को ढक दिया उस भरतर्षभ अर्जुन के छोड़े हुए सुवर्ण पुङ्खवाले हज़ारों बाणों ने ५४। ५५ क्षण भर ही में कर्ण के रथ को ढक दिया वह बाण प्रलयकाल के सूर्य की किरणों के समान थे इसके पीछे सैकड़ों शूल फरसे चक्र और नाराच ५६ भी महाभयकारी निकले उससे बहुत से शूरवीर चारों ओर से मारे गये युद्धभूमि में किसी का शिर धड़ से कटकर गिरा ५७ और कितने ही उन गिरे हुओं को देखकर भयभीत होकर जल्दी से पृथ्वी पर गिर पड़े और किसी शूरवीर की हाथी की सूँड़ के समान भुजा टूटकर खड्ग समेत पृथ्वी पर गिर पड़ी ५८ किसी की बाईं भुजा क्षुरप्र से कटकर ढाल समेत गिरी अर्जुन ने इस रीति के शरीरों के नाश करनेवाले भयकारी बाणों से उन सब उत्तम-उत्तम शूरवीरों समेत दुर्योधन की सम्पूर्ण सेना को मारा और घायल किया इसी प्रकार कर्ण ने भी युद्धभूमि में अपने धनुष से हज़ारों बाणों को छोड़ा ५९। ६० वह शब्दायमान बाण अर्जुन के सम्मुख ऐसे गये जैसे कि पर्जन्य मेघ से छोड़ी हुई जल की धारा होती है इसके पीछे वह अनुपम प्रभाव और भयानक रूपवाला कर्ण श्रीकृष्ण अर्जुन और भीमसेन को ६१ तीन-तीन बाणों से घायल करके बड़े स्वर से घोर शब्द से गर्जा फिर अर्जुन ने

उस असह्य कर्ण के बाणों से व्यथित भीमसेन और श्रीकृष्ण को देखकर ६२ अठारह बाणों को उठाया एक बाण से तो उसकी ध्वजा को चारबाण से शल्य को और तीन बाणों से कर्ण को घायल किया ६३ फिर अच्छी रीति से छोड़ेहुए दश बाणों से सुवर्णकवच से अलंकृत सभापति को मारा वह राजकुमार शिर भुजा घोड़े सारथी धनुष और ध्वजा से रहित ६४ मृतक होकर रथ से ऐसे गिर पड़ा जैसे कि फरसों का काटा हुआ और उखड़ा हुआ शाल का वृक्ष गिरता है फिर कर्ण को तीन आठ बारह चार और दश बाणों से छेद ६५ चार सौ घोड़ों को मारकर आठ सौ शस्त्रधारी रथियों को भी मारा तब सवारों समेत हज़ारों घोड़ों को वा आठहज़ार वीर पत्तियों को ६६ मारकर सारथी घोड़े रथ और ध्वजा समेत कर्ण को सीधे चलनेवाले बाणवृष्टि से अलक्ष्य कर दिया इसके पीछे अर्जुन के हाथ से घायल होकर कौरव चारों ओर से कर्ण को पुकारे ६७ हे कर्ण ! तुम शीघ्र ही अर्जुन को छेदकर हमको छुड़ावो वह समीप से बाणों के ही द्वारा सब कौरवों को मारता है उनके वचनों को सुनकर कर्ण ने भी बहुत उपायों से बहुत से बाणों को वारंवार छोड़ा ६८ उन मर्मभेदी रुधिर धूलि से लिप्त बाणों ने पाण्डव और पाञ्चालों के समूहों को व्यथित किया सब धनुषधारियों में श्रेष्ठ बड़े पराक्रमी सब शत्रुओं के पराजय करनेवाले महाअस्त्रज्ञ उन दोनों ने ६६ महाअस्त्रों से शत्रु की उग्रसेना को और एकने दूसरे को घायल किया इसके पीछे शीघ्रता करनेवाला युद्ध के देखने का अभिलाषी वह युधिष्ठिर पास गया जोकि अत्रिकुल में उत्पन्न होनेवाले अष्टाङ्गविद्या के आसनपर बैठनेवाले अश्विनीकुमार सुरवैद्यों के मन्त्र औषधियों के द्वारा पीड़ा से रहित भालों से पृथक् शुभचिन्तक चिकित्सा करनेवाले उत्तम पुरुषों से मर्हम पट्टी बाँधाहुआ सुवर्ण के कवच को पहिरे हुए था इसी से वह सावधान ऐसा न था जैसे कि दैत्यों के हाथ से घायल शरीर देवराज इन्द्र था इस प्रकार के रूपवाले धर्मराज को युद्ध में समीप आया हुआ देखकर सब जीवमात्र बड़े प्रसन्न हुए ७०।७२ जिस प्रकार राहु से छूटे हुए निर्मल और पूर्णचन्द्रमा को देखते हैं उसी प्रकार उदय होनेवाले उन युद्धकर्ता

उत्तम श्रेष्ठ शत्रुओं के मारनेवाले दोनों पुरुषोत्तमों को देखकर देखने के इच्छावान् ७३ आकाश के देवता और पृथ्वी के मनुष्य कर्ण और अर्जुन को देखते हुए नियत हुए वहाँ बाणों के जालों से परस्पर मारने-वाले अर्जुन और कर्ण के छोड़े हुए बाणों से उस धनुष रोदा और प्रत्यञ्चा का गिरना कठिन हुआ इसके पीछे अच्छी खिंची हुई अर्जुन के धनुष की जीवा अकस्मात् शब्द करके टूटी ७४ । ७५ उसी समय सूत के पुत्र ने सौ क्षुद्रक बाणों से अर्जुन को छेदा और सर्परूप तैल से साफ गृध्रपक्ष से जटित बराबर छोड़े हुए ७६ साठबाणों से शीघ्रता करके वासुदेवजी को छेदा इसके पीछे फिर आठ बाणों से अर्जुन को छेदा तदनन्तर सूतपुत्र कर्ण ने हज़ार बाणों से भीमसेन को मर्मस्थलों पर छेदा ७७ और सोमकों को गिराते हुए उन शूरवीरों ने विशिख वा पृषत्कनाम बाणों से श्रीकृष्ण अर्जुन की ध्वजा और उनके छोटे भाइयों को बाणों से ऐसे ढक दिया जैसे कि बादलों के समूह सूर्य को ढक देते हैं ७८ फिर उस अस्त्रज्ञ कर्ण ने उन सबको विशिखनाम बाणों से रोक-कर अपने अस्त्रों से सब अस्त्रों को हटाकर उनके रथ घोड़े और हाथियों को भी मारा ७९ हे राजन् ! इसी रीति से सूतपुत्र ने बाणों से सेना के उत्तम-उत्तम शूरवीरों को पीड़ित किया फिर कर्ण के बाणों से घायल और मृतक होकर शब्दों को करते हुए पृथ्वी पर ऐसे गिर पड़े ८० जैसे कि बड़े पराक्रमी कुत्तों के समूह क्रोध भरे बड़े पराक्रमी सिंह से गिरते हैं फिर पाञ्चालदेशियों के उत्तम-उत्तम लोग और अन्य-अन्य शूरवीर इस स्थान पर कर्ण और अर्जुन के लिये ८१ चेष्टा करनेवाले उस पराक्रमी कर्ण के अच्छी रीति के छोड़े हुए बाणों से मारे गये और आपके शूरों ने बड़ी विजय को मानकर तालियाँ बजाईं और वारंवार सिंहनाद को किया उन सबों ने युद्ध में श्रीकृष्ण और अर्जुन को कर्ण की स्वाधीनता में माना फिर तो कर्ण के बाणों से अत्यन्त घायल शरीर-वाले क्रोधयुक्त अर्जुन ने धनुष की प्रत्यञ्चा को नवाकर शीघ्रता से कर्ण के उन बाणों को हटा के कौरवों को रोका ८२ । ८३ प्रत्यञ्चा को ठीक करके तल को तर में दबाया और अकस्मात् बाणों का अन्धकार उत्पन्न

किया उस समय बड़े हठ से अर्जुन ने बाणों के द्वारा कर्ण शल्य और सब कौरवों को छेदा ८४ तब महाअस्त्र से अन्धकार उत्पन्न हो जाने पर अन्तरिक्ष में पक्षी भी नहीं घूमे और आकाशवर्ती जीवों के समूहों से प्रेरित वायु ने दिव्य सुगन्धियों को फैलाया ८५ फिर हँसते हुए अर्जुन ने दशपृषत्कों से शल्य के कवच को छेदा इसके पीछे अच्छे प्रकार से छोड़े हुए ८६ बारह बाणों से कर्ण को छेदकर दुबारा भी सात बाणों से छेदा अर्जुन के धनुष से छुटे हुए महावेगवाले बाणों से अत्यन्त घायल ८७ विदीर्ण और रुधिर से भरा अङ्ग वह कर्ण जिसके कि बाण फैल रहे थे रुद्रजी के समान शोभायमान हुआ इसके पीछे श्मशानभूमि में रुद्र मुहूर्त में क्रीड़ा करनेवाले रुधिर से लिप्त शरीर आधिरथी कर्ण ने उस देवराज के समान रूपवाले अर्जुन को तीन बाणों से छेदा ८८।८९ फिर मारने की इच्छा से सर्पों के समान अग्निरूप पाँच बाणों को श्रीकृष्णजी के शरीर में प्रविष्ट किया ९० वह सुवर्णजटित अच्छी रीति से छोड़े हुए बाण पुरुषोत्तमजी के कवच को छेदकर गिर पड़े ९१ और बड़े वेग से पृथ्वी में प्रवेश कर गये और पातालगङ्गा में स्नान करके फिर कर्ण से मुख फेरकर चले गये इसके पीछे अर्जुन ने उन बाणों को अच्छी रीति से छोड़े हुए पन्द्रह भल्लों से तीन-तीन खण्ड कर दिया ९२ उन बाणों से घायल तक्षक के पुत्र के साथी बड़े सर्प पृथ्वी पर आये फिर तो अर्जुन ऐसा क्रोधयुक्त हुआ जैसे कि सूखे वन को जलाता हुआ अग्नि होता है ९३ उस अर्जुन ने कर्ण की भुजा से छोड़े हुए बाणों से इस प्रकार घायल शरीर श्रीकृष्णजी को देखकर कान तक खैंचकर शरीर के नाश करनेवाले अग्निरूप बाणों से कर्ण को ९४ मर्मस्थलों में छेदा वह दुःख से तो कम्पित हुआ परन्तु बड़ी बुद्धि से धैर्ययुक्त होकर दैवयोग से नियत रहा हे राजन्! इसके पीछे अर्जुन के क्रोधरूप होने पर ॥ ९५ ॥

दो० तजि कर्णहि तेहि क्षण भगे, तो सुत भट समुदाय।
जिमि व्याधहि लखि सुतरुतजि, भगत विहग भय पाय॥
पार्थ आधिरथी के वधन, को प्रण पूरण धारि।
पार्थ लसौ जिमि त्रिपुरदल, मध्य लसौ त्रिपुरारि॥

सो० तिमि सूतज रणधीर, प्रलय मच्यो परसेन मधि।
दोऊ तुल बलवीर, कीन्हें अद्भुत युद्ध तहँ॥

भुजंगप्रयात छन्द

महावीर दोऊ धनुर्वेद चारी। दुहूँ ओर के बाण की वृष्टि भारी॥
किये घोर संग्राम ता ठौर दोऊ। नहीं सामुहे मे दुहूँ ओर कोऊ॥
गये दूरि जे ते भये मौन ऐसे। गये सामने सिंह पशुभीत जैसे॥
दुहूँ ओर के यों कहैं जाचिबे को। नहीं आजु तो योगहै बाचिबे को॥

दो० कर्णहि वधि दल कौरवी, वधिहि पार्थ बल ऐन।
कै पार्थहि वधिकै करण, वधत पाण्डवी सैन॥

दोऊ गगन शरन भरि दीन्हे। अन्धकार आरोपित कीन्हे॥
दोउन के अति विक्रम देखी। विस्मित भे सुरगण अवरेखी॥
दोऊ क्षात्रधर्म अवतंसे। इमि कहिकहिकै दुहुन प्रशंसे॥
दोउन के कर करिकर भारी। रहे जात लखि काननबारी॥
कबहुँ पार्थ बढ़ि विक्रम कीन्हों। कबहुँ सूतसुत गुरुता लीन्हों॥
रह्यो न थिर घटि बढ़ि पद कोऊ। अतिशय प्रबल धनुर्धर दोऊ॥
भूप हुई तहँ तुमुल लराई। पृथक पृथक सब कही न जाई ९९।१००॥

इति श्रीमहाभारते कर्णपर्वणि द्वैरथकर्णार्जुनयुद्धे नवतितमोऽध्यायः॥ ९०॥

इक्यानबे का अध्याय

सञ्जय बोले कि इसके पीछे पृथक्-पृथक् सेनावाले एक वीर के अन्तर पर जाननेवाले कौरव नियत हुए और अर्जुन के प्रकट किये हुए अस्त्र को चारों ओर से बिजली के समान प्रकाशमान देखा १ तब कर्ण ने उस अर्जुन के आकाश में वर्तमान महाअस्त्र को बड़े घोर बाणों से दूर किया जो कि बड़े युद्ध में अत्यन्त क्रोधयुक्त अर्जुन ने कर्ण के मारने को छोड़ा था २ उस कौरवों के भस्म करनेवाले उदयरूप अस्त्र को सुनहरी पुङ्खवाले विशिखों से मर्दन किया फिर दृढ़ प्रत्यञ्चायुक्त सफल धनुष को उठाकर बाणों के समूहों को छोड़ते हुए कर्ण ने ३ परशुरामजी से पाये हुए शत्रुओं के नाश करनेवाले अथर्व वेद सम्बन्धी मन्त्र से

अभिमन्त्रित किये हुए तीक्ष्ण धारवाले बाण से उस भस्म करनेवाले अर्जुन के अस्त्र को दूर कर दिया ४ हे राजन्! इसके पीछे वहाँ पृषत्कों से परस्पर युद्ध करनेवाले कर्ण और अर्जुन का ऐसा घोर युद्ध हुआ जैसे कि दाँतों के कठिन प्रहारों से दो हाथी युद्ध करते होयँ ५ उस समय वहाँ सब ओर से अस्त्रों के प्रहारों से बड़ा कठिन युद्ध हुआ और दोनों ने अपने-अपने बाणसमूहों से आकाश को पूर्ण कर दिया ६ इसके पीछे सब कौरव और सोमकों ने बड़े बाणजालों को देखा और बाणों से अन्धकार होने पर अन्तरिक्ष में किसी जीवमात्र को भी नहीं देखा हे राजन् तब उन अनेक बाणों के छोड़ने और चढ़ानेवाले दोनों धनुषधारियों ने अनेक प्रकार की अपनी अस्त्रज्ञताओं के साथ युद्ध में विचित्र मार्गों को दिखलाया ७। ८ इस रीति से कभी अर्जुन कभी कर्ण प्रबल होते हुए देख के ९ अन्य सब शूरवीरों ने युद्धभूमि में परस्पर घात ढूँढ़नेवाले उन दोनों के असह्य और घोरयुद्ध को देखकर बड़ा ही आश्चर्य किया हे नरेन्द्र! इसके पीछे अन्तरिक्षवर्ती जीवों ने उन कर्ण और अर्जुन दोनों की प्रशंसा करी कि हे कर्ण! धन्य है हे अर्जुन! धन्य है धन्य है यह शब्द सब ओर से सुने जाते थे १०। ११ तब उस युद्ध में रथ घोड़े और हाथियों के प्रहारों से पृथ्वी के धसकने पर पातालतल में विश्राम करनेवाला अर्जुन का शत्रु अश्वसेन सर्प १२ जोकि खाण्डववन की अग्नि से निकल-कर क्रोधयुक्त होकर पृथ्वी में घुस गया था वह फिर ऊर्ध्वगामी होकर कर्ण और अर्जुन का युद्ध देखकर ऊपर को आया १३ हे राजन्! उसने सोचा कि इस दुष्ट अर्जुन से अपना बदला लेने का यही समय है इसी हेतु से बाणरूप बनकर कर्ण के तूणीर में आया इसके पीछे अस्त्रों के प्रहारों से संयुक्त फैले हुए बाणों के समूहरूपी किरणों से पूर्ण हुआ तब उन दोनों कर्ण और अर्जुन ने बाणों के समूहों की वर्षा से आकाश के अन्तर को निरन्तर कर दिया उस समय वह आकाश बड़ी दूर तक बाण समूहों से एक से ही रूप का था उसको देखकर सब कौरव और सोमक भयभीत हुए १४। १६ उस बाणों के बड़े अन्धकार में दूसरा कोई जीव आता हुआ नहीं देखा तदनन्तर सब लोक के धनुषधारी

महावीर वह दोनों पुरुषोत्तम युद्ध में प्राणों के त्यागनेवाले युद्ध के परिश्रम में प्रवृत्त १७ निन्दित वचनों को परस्पर कहनेवाले हुए फिर वह देखनेवालों से व्याप्त जल चन्दन से सींचे हुए दिव्य बाल-व्यजनों की रखनेवाली स्वर्गवासिनी अप्सराओं के समूहों समेत इन्द्र और सूर्य के करकमलों से स्वच्छ मुखवाले हुए १८ जब अर्जुन के बाणों से अत्यन्त पीड्यमान कर्ण अर्जुन को न मार सका तब बाणों से अत्यन्त घायल शरीरवाले उस वीर ने उस अकेले तरकस में रहनेवाले सर्परूप बाण के चलाने को चित्त किया १९ और बड़े क्रोधपूर्वक उस अच्छी रीति से प्राप्त होनेवाले बहुत काल से गुप्तरूप सर्पमुख बाण को अर्जुन के वास्ते धनुष पर चढ़ाया अर्थात् बड़े तेजस्वी कर्ण ने उस सदैव से पूजित चन्दनचूरे में रहनेवाले सुवर्ण के तूणीर में नियत बड़े प्रकाशित बाण को कान तक खैंच अर्जुन के मुख की ओर धनुष पर चढ़ाया २० । २१ अर्जुन के शिर काटने का अभिलाषी उस ऐरावत के वंश में उत्पन्न होनेवाले अत्यन्त प्रकाशमान बाण को चढ़ाते ही सब दिशा और आकाश में अग्नि ज्वलित हुई और आकाश से सैकड़ों घोर रूप उल्कापात हुए २२ धनुष में उस सर्परूप बाण के चढ़ाने पर इन्द्र समेत सब लोकपाल हाहाकार करने लगे और सूतपुत्र कर्ण ने योगबल से उस बाण में प्रवेश करनेवाले सर्प को न जाना परन्तु सहस्राक्ष इन्द्र उस कर्ण के तूणीर में प्रवेश करनेवाले सर्प को देखकर अपने पुत्र के मारे जाने के सन्देह और शोच में शिथिल अङ्ग हुआ उसको शोचग्रस्त देखकर बड़े महात्मा कमलयोनि ब्रह्माजी इन्द्र से बोले कि शोच मत करो अर्जुन ही में लक्ष्मी और विजय दोनों हैं २३ । २४ इसके पीछे मद्र के राजा महात्मा शल्य ने उस उग्रबाण के चलानेवाले कर्ण से कहा कि हे कर्ण ! यह बाण अर्जुन को नहीं पावेगा इस शिर काटनेवाले बाण को तुम अच्छी रीति से देखकर चढ़ाओ २५ इसके पीछे क्रोध से रक्त-नेत्र बड़ा वेगवान् कर्ण राजा मद्र से बोला कि हे शल्य! कर्ण दूसरी बार बाण को नहीं चढ़ाता है मुझसे मनुष्य छल से युद्ध नहीं करते हैं २६ हे राजन् ! उस शीघ्रता करनेवाले उद्युक्त कर्ण ने यह कहकर विजय के

निमित्त बड़े उपाय से उस बाण को छोड़ा और कहने लगा कि हे अर्जुन! अब तुझको मारा है २७ कर्ण की भुजा से धनुष के द्वारा छूटा हुआ वह घोर बाण प्रत्यञ्चा से पृथक् हो उग्र सूर्य के समान आकाश में जाके अग्नि के समान हो गया २८ तब तो बड़ी शीघ्रतापूर्वक माधवजी ने उस अग्निरूप बाण को देखकर बड़ी शीघ्रता से अपने चरणों से रथ को दबाकर थोड़ा सा पृथ्वी में घुसाया तब वह सुवर्ण भूषणों से अलंकृत वह घोड़े भी घुटनों से पृथ्वी पर बैठ गये २९ महापराक्रमी माधवजी ने कर्ण के हाथ से धनुष पर चढ़ाये हुए सर्प को देखकर पहियों पर बल करके उस उत्तम रथ को पृथ्वी में गड़ा दिया ३० तभी वह घोड़े पृथ्वी पर बैठ गये इसके पीछे मधुसूदन के पूजन के निमित्त अन्तरिक्ष में बड़ा भारी शब्द होकर अकस्मात् आकाशवाणी हुई और दिव्य पुष्पों की वर्षा होकर सिंहनाद हुए ३१ उस समय मधुसूदनजी के बड़े उपाय से पृथ्वी में रथ के घुसने पर उस बाण ने उस बुद्धिमान् अर्जुन के बड़े दृढ़रूप इन्द्र के दिये हुए किरीट को घायल किया इसके पीछे सूतपुत्र ने सर्पअस्त्र के छोड़ने और क्रोधयुक्त उत्तम उपायपूर्वक बाण के द्वारा से अर्जुन के शिर से मुकुट को हरण किया वह मुकुट आकाश स्वर्ग और जलों में प्रसिद्ध सूर्य चन्द्र और अग्नि के समान प्रकाशित सुवर्ण, मोती, हीरे, मणियों से जटित था जिसको कि आप समर्थ ब्रह्माजी ने तप के द्वारा बड़े उपाय से इन्द्र के लिये उत्पन्न किया था और बड़ा सुन्दर रूप शत्रुओं को भयकारी शिर पर धारण करनेवाले को महा-आनन्ददायक होकर श्रेष्ठ गन्धियों से युक्त था ३२।३३ उसी को प्रसन्न-चित्त होकर आप इन्द्र ने असुरों के मारने के अभिलाषी अर्जुन को दिया था वह मुकुट ऐसे प्रभाववाला था कि इन्द्र, वरुण, कुबेर के वज्र-पाश और उत्तम बाणों से अथवा शिवजी के पिनाक धनुष से भी ३४ मर्दन के योग्य न था ऐसे मुकुट को कर्ण ने अपनी हठ से सर्परूप बाण के द्वारा हरण कर लिया अर्थात् दुरात्मा दुष्टभाव असत्य प्रतिज्ञा-वाले ३५ वेगवान् सर्प ने अर्जुन के उस किरीट को शिर पर से हर लिया वह किरीट अत्यन्त अद्भुत बड़ों के योग्य सुवर्ण के जालों से मण्डित

प्रकाशित शब्दायमान होकर पृथ्वी पर गिर पड़ा ३६ अर्थात् उत्तम बाण से माथित विष की अग्नि से प्रकाशित वह अर्जुन का मुकुट पृथ्वी पर ऐसे गिर पड़ा जैसे कि रक्तमण्डलवाला सूर्य अस्ताचल से गिरता है ३७ उस सर्प ने बल के द्वारा रत्नों से जटित और अलंकृत मुकुट को अर्जुन के शिर से ऐसे जुदा किया जैसे कि पर्वत के अंकुर और पुष्पित वृक्षों से जटित श्रेष्ठ शिखर को इन्द्र का वज्र गिरा देता है ३८।३९ अथवा जैसे कि वायु से पृथ्वी आकाश स्वर्ग और जलों के समुद्र उत्पातयुक्त होकर कम्पित होते हैं उसी प्रकार वह उग्र मुकुट हठ करके अत्यन्त चूर्ण हुआ उस समय तीनों लोकों के बड़े शब्दों को मनुष्यों ने सुना और सुनकर सब पीड़ित होके गिर पड़े ४० विना किरीट के भी वह पार्थ ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि श्याम रङ्गवाला नवीन उत्पन्न हुआ पर्वत का ऊँचा शिखर होता है इसके अनन्तर पीड़ा से रहित अर्जुन अपने शिर के बालों को श्वेत वस्त्र से बाँधकर ऐसा प्रकाशमान हुआ जैसे कि शिर पर वर्तमान सूर्य की किरणवाला उदयाचल पर्वत होता है सूर्य के पुत्र कर्ण के भेजे हुए नेत्ररूप कान रखनेवाले दुःख से रक्षा करनेवाले सर्प के पुत्र अश्वसेन सर्प ने प्रत्यक्ष में बड़े तेजस्वी बागडोरों के समीप शिर रखनेवाले अर्जुन को देखकर भी बड़ी तीव्रता से नीचे को झुकने से असमर्थ होकर उस इन्द्र के पुत्र अर्जुन के मुकुट को जो कि अच्छी रीति से अलंकृत सूर्य के समान प्रकाशमान था हरण किया और बाण के छोड़ने से सर्प को मर्दन करनेवाला अर्जुन सर्प को न पाकर मृत्यु के आधीन नहीं हुआ ४१।४३ कर्ण की भुजा से छोड़ा हुआ अग्नि सूर्यरूप बड़े शूरवीर के योग्य वह शायक और उसमें प्रवेश करनेवाला अर्जुन का शत्रु मुकुट को घायल करके चला गया तब अर्जुन के उस सुवर्णजटित मुकुट को खैंचकर भस्म करके उसने फिर तूणीर में जाना चाहा और कर्ण से बोला कि हे कर्ण! मैं विना विचार किये हुए तेरे हाथ से छोड़ा गया था इसी से अर्जुन के शिर को न काट सका अब तू युद्ध में अर्जुन को अच्छे प्रकार से लक्ष्य करके शीघ्रता से मुझको छोड़ मैं अपने और तेरे शत्रु अर्जुन को अभी

मारूँगा यह वचन सुनते ही कर्ण उससे बोला कि हे श्रेष्ठ ! तुम कौन हो ४४ । ४५ सर्प ने कहा माता के मारने से मुझ शत्रुता करनेवाले को अर्जुन का शत्रु जानो चाहै उसका रक्षक यमराज भी हो जाय तौ भी मैं उसको यमलोक में पहुँचाऊँगा ४६ कर्ण बोला कि हे सर्प ! अब कर्ण युद्ध में दूसरे के बल से अपनी विजय को नहीं चाहता है और एक बार बाण को चढ़ाकर उसको फिर दूसरी बार नहीं चढ़ाऊँगा मैं अकेला ही एक अर्जुन नहीं जो ऐसे-ऐसे सौ अर्जुन भी होयँ उनको भी मार सकता हूँ यह कहकर ४७ सूर्य के पुत्रों में श्रेष्ठ कर्ण युद्धभूमि में फिर भी उस सर्प से बोला कि हे सर्प ! मैं अस्त्र के वा क्रोधयुक्त किसी उत्तम उपाय के द्वारा अर्जुन को मारूँगा तुम खुशी से चले जाओ कर्ण के इस वचन को उस सर्प ने क्रोधयुक्त होकर नहीं सुना और अर्जुन के मारने की इच्छा से वह सर्पराज अपने निज स्वरूप को धारण करके आपही अर्जुन के मारने को चला ४८ । ४६ तदनन्तर श्रीकृष्णजी उस युद्धभूमि में अर्जुन से बोले कि तुम इस शत्रुता करनेवाले बड़े सर्प को मारो श्रीकृष्णजी के इस वचन को सुनते ही शत्रु के बल का न सहनेवाला वह गाण्डीव धनुषधारी अर्जुन यह वचन बोला कि यह सर्प मेरा कौन है जो अपने आप गरुड़ के मुख में आया है श्रीकृष्णजी ने कहा कि खाण्डव वन में अग्नि के तृप्त करनेवाले तुझ धनुषधारी ने ५० । ५१ इस आकाश में वर्तमान अपनी माता से गुप्त शरीरवाले को एकरूप जानकर इसकी माता को मारा था उसी के कारण से उस शत्रुता को स्मरण करता निश्चय करके अपने मरने के लिये तुझको चाहता है ५२ हे शत्रुओं के हँसनेवाले ! तुम आकाश से प्रज्वलित उल्कापात के समान उस आनेवाले सर्प को देखो सञ्जय बोले कि इसके पीछे उस अर्जुन ने महाक्रोधयुक्त होकर बड़े तीक्ष्ण उत्तम छः बाणों से उस सर्प को जो आकाश से तिरछा होकर आ रहा था काट डाला ५३ फिर वह अङ्गों से कटा हुआ पृथ्वी पर गिर पड़ा अर्जुन के हाथ से उस सर्प के मरने पर आप समर्थरूप पुरुषोत्तमजी ने ५४ उस गिरे और घुसे हुए रथ को शीघ्र ही अपनी दोनों भुजाओं

से ऊपर को उठाया उसी मुहूर्त में अर्जुन को तिरछा देखनेवाले पुरुषों में बड़े वीर कर्ण ने उग्रपक्षधारी दश पृषत्कों से फिर अर्जुन को व्यथित किया तब अर्जुन ने भी अच्छे प्रकार से छोड़े हुए वराहकर्ण नाम बारह तीक्ष्ण बाणों से कर्ण को घायल करके ५५ विषवाले सर्प की समान शीघ्रगामी कान तक खैंचे हुए नाराच नाम बाण को छोड़ा वह अच्छी रीति से छोड़ा हुआ उत्तम बाण कर्ण के जड़ाऊ कवच को चीरकर मानो प्राणों को घायल करता हुआ ५६ कर्ण के रुधिर को पीकर रुधिर में लिप्त होके पृथ्वी में समा गया इसके पीछे बाण के आघात से कर्ण ऐसा क्रोधयुक्त हुआ जैसे कि दण्ड से प्रेरित होकर महासर्प क्रोधरूप होता है ५७ तब तो शीघ्रता करनेवाले कर्ण ने उत्तम बाणों को ऐसे छोड़ा जैसे कि बड़ा विषधर सर्प अपने विष को छोड़ता है उस समय कर्ण ने बारह बाणों से तो श्रीकृष्णजी को और निन्नानबे बाणों से अर्जुन को छेदा ५८ फिर कर्ण घोर बाणों से अर्जुन को घायल करके गर्जनापूर्वक हँसा तब उसके उस हास्य को न सहकर उस मर्मज्ञ अर्जुन ने उसके मर्मों को छेदा ५९ इस इन्द्र के समान पराक्रमी अर्जुन ने सैकड़ों बाणों से ऐसे वेग से छेदा जैसे कि इन्द्र ने राजा बलि को छेदा था इसके अनन्तर अर्जुन ने यमराज के दण्ड की समान नब्बे बाणों को कर्ण के ऊपर छोड़ा ६० इन अर्जुन के बाणों से विदीर्ण शरीर वह कर्ण ऐसा पीड्यमान हुआ जैसे कि वज्र से कटा हुआ पर्वत पीड़ित होता है और अर्जुन के बाणों से टूटा हुआ इसका सुवर्ण हीरों से जटित प्रकाशमान मुकुट ६१ वा दोनों कुण्डल और बड़े मूल्यवाला बड़े उपायों से अच्छे कारीगरों का बनाया हुआ कवच यह तीनों कटकर पृथ्वी पर गिरे इसके पीछे फिर क्रोधभरे अर्जुन ने उस कवचरहित खाली शरीरवाले कर्ण को चार तीक्ष्ण बाणों से छेदा ६२।६३ फिर शत्रु के हाथ से अत्यन्त घायल वह कर्ण ऐसा अत्यन्त पीड्यमान हुआ जैसे कि वात, पित्त, कफ से ग्रसित रोगी पीड़ित होता है उस समय शीघ्रता करनेवाले अर्जुन ने बड़े धनुषमण्डल से निकले हुए और बड़े उपायपूर्वक कर्म से चलाये हुए ६४ बहुत से उत्तम बाणों से घायल करके मर्मस्थलों को भी छेदा

अर्जुन के बड़े वेगवान् तीक्ष्ण नोकवाले नाना प्रकार के बाणों से अत्यन्त घायल कर्ण ६५ ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि पहाड़ी धातुओं से लालवर्ण का पर्वत वज्रों के प्रहारों से रक्तजलों को छोड़ता हुआ शोभित होता है इसके पीछे अर्जुन ने सीधे चलनेवाले बड़े दृढ़रूप सुन्दररीति से छोड़े हुए लोहे के यमराज और अग्नि के दण्ड के समान नौ बाणों से कर्ण को ऐसे छाती पर छेदा जैसे कि अग्नि के पुत्र स्वामिकार्त्तिकजी ने क्रौञ्चपर्वत को छेदा था उस समय सूतपुत्र तूणीर को और इन्द्रधनुष के समान उस धनुष को त्यागकर ६६। ६७ रथ के ऊपर अचेत होकर गिरता हुआ नियत हुआ हे प्रभो! जिसकी मुट्ठी फैल गई थी और अत्यन्त घायल था तब उत्तम पुरुषों के व्रत में नियत अर्जुन ने उस आपत्ति में पड़े हुए कर्ण के मारने को इच्छा नहीं की ६८ इसके पीछे इन्द्र के छोटे भाई विष्णुरूप श्रीकृष्णजी भ्रान्ति से आश्चर्यपूर्वक उससे बोले कि हे अर्जुन! क्या भूल करता है पण्डित लोग अपने से कम पराक्रमी शत्रु को भी कभी नहीं त्याग करते हैं मुख्यकर पण्डित लोग भी आपत्तियों में शत्रु को मारकर धर्म और यश को पाते हैं सो तुम विना विचार किये ही इस अपने प्राचीन शत्रु वीर कर्ण के मारने का उपाय करो ६९। ७० यह समर्थ कर्ण जो आगे आता है इसको तुम ऐसे छेदो जैसे कि इन्द्र ने नमुचि को छेदा था इसके पीछे सब कौरवों में श्रेष्ठ शीघ्रता करनेवाले अर्जुन ने शीघ्र ही श्रीकृष्णजी को मिलकर और पूजन करके कर्ण को ७१ उत्तम बाणों से ऐसा छेदा जैसे कि पूर्व समय में शम्बर के मारनेवाले इन्द्र ने राजा बलि को छेदा था हे भरत-वंशिन्! फिर अर्जुन ने दन्तवक्र नाम बाणों से कर्ण को घोड़े और रथ के समेत ढक दिया ७२ सब उपायों से सुनहरी पुङ्खवाले बाणों के द्वारा दिशाओं को भी ढक दिया फिर वह बड़े दीर्घ और उन्नत वक्षस्थलवाला कर्ण वत्सदन्त नाम बाणों से छिदा हुआ ऐसे शोभायमान हुआ जैसे कि अच्छे-अच्छे पुष्पवाले अशोक पलाश शाल्मलि और रक्तचन्दन के वन से युक्त पर्वत शोभायमान होता है हे राजन्! वह कर्ण शरीर में लगे हुए बहुत बाणों से ऐसा शोभायमान हुआ ७३। ७४ जैसे कि

वृक्षों से पूर्ण वन अथवा कन्दरा और प्रफुल्लित कर्णिकार के वृक्षों से युक्त गिरिराज शोभित होता है वह बाण जालरूप किरणों का रखनेवाला कर्ण बाणों के समूहों को छोड़ता हुआ ऐसा प्रकाशमान था ७५ जैसे कि अस्ताचल के सम्मुख रक्तमण्डलवाला सूर्य होता है अर्जुन की भुजाओं से छोड़े हुए तीक्ष्ण नोकवाले बाणों ने दिशाओं को पाकर कर्ण की भुजाओं से छूटे हुए सर्परूप प्रकाशित बाणों को पराजय किया इसके पीछे क्रोधयुक्त सर्पों के समान बाणों को छोड़ते हुए उस कर्ण ने धैर्य को पाकर ७६ । ७७ क्रोधयुक्त सर्प की समान दश बाणों से अर्जुन को और छः बाणों से श्रीकृष्णजी को पीड़ित किया इसके पीछे बड़ा बुद्धिमान् अर्जुन कठोर शब्दयुक्त सर्प विष और अग्नि के समान लोहे के भयङ्कर बाणों के फेंकने में प्रवृत्त हुआ हे राजन् ! फिर तो अदृष्ट गुप्त रूप काल ब्राह्मण के क्रोध से कर्ण के मरने को कहनेवाला हुआ ७८।७९ कर्ण के मरने का समय आने पर यह वचन बोला कि पृथ्वी रथ के पहिये को निगलती है इसके पीछे वह महात्मा परशुरामजी के उस दिये हुए अस्त्र को भी चित्त से भूल गया ८० हे वीर धृतराष्ट्र ! उसके मरण का समय आने पर उसके रथ के पहिये को पृथ्वी ने पकड़ा तब उस उत्तम ब्राह्मण के शाप से उसका रथ घूम गया ८१ और रथ का पहिया पृथ्वी पर गिर पड़ा तब तो वह कर्ण युद्ध में ऐसा व्याकुल चित्त हुआ जैसे कि अच्छे पुष्पवाला वेदिका समेत चैत्य नाम वृक्ष भूमि में डूब जाता है ८२ ब्राह्मण के शाप से रथ के घूमने और परशुरामजी से पाये हुए अस्त्र के विस्मरण होने पर ८३ और अर्जुन के हाथ से सर्पमुख प्रकाशित घोर बाण के गिरने पर उन दुःखों को न सहनेवाला कर्ण दोनों हाथों को कम्पायमान करके इस बात की निन्दा करने लगा कि धर्मज्ञ लोग सदैव इस बात को कहा करते हैं कि धर्म करनेवाले का धर्म उस धार्मिक पुरुष की सदैव रक्षा करता है और हम पराक्रमी लोग उनके कहने के अनुसार विश्वासपूर्वक धर्म करने में उपायों को करते हैं ८४।८५ सो मेरी बुद्धि से वह किया हुआ धर्म रक्षा नहीं करता है किन्तु अवश्य मारता है भक्तों की रक्षा कभी नहीं करता है यह मैं मानता हूँ

कि धर्म सदैव रक्षा नहीं करता है इस रीति से घोड़े और सारथी से पृथक् और अर्जुन के बाणों से अत्यन्त चेष्टावान् ८६ और मर्मस्थलों में अत्यन्त घायल होने से कर्म करने में शिथिल होकर वारंवार धर्म की निन्दा करी इसके पीछे अत्यन्त भयकारी तीन बाणों से युद्ध में श्रीकृष्णजी को हाथ पर छेदा और अर्जुन को भी सात बाणों से ८७ इसके पीछे अर्जुन ने कठिन वेगयुक्त सीधे चलनेवाले इन्द्रवज्र के समान घोर अग्नि के समान सत्तर बाणों को छोड़ा वह भयानक वेगवाले बाण उसको छेदकर पृथ्वी पर गिर पड़े ८८ तदनन्तर अपने शरीर को कम्पायमान करते हुए कर्ण ने अपनी सामर्थ्य से चेष्टा को दिखाया फिर बल से अपने को साधकर ब्रह्मास्त्र को प्रकट किया फिर अर्जुन ने भी उस अस्त्र को देखकर ऐन्द्रास्त्र के मन्त्र को पढ़ा ८९ फिर उस शत्रु के तपानेवाले ने गाण्डीव धनुष प्रत्यञ्चा और बाण पर मन्त्र को पढ़कर बाणों की ऐसी वर्षा करी जैसे कि इन्द्र जल की वृष्टि को करता है ९० इसके पीछे अर्जुन के रथ से निकले हुए तेजरूपी पराक्रमी बाण कर्ण के रथ के समीप जाकर प्रकट हुए ९१ फिर महारथी कर्ण ने अपने छोड़े हुए बाणों से उन बाणों को निष्फल कर दिया इसके पीछे उस अस्त्र के दूर होने पर वह वृष्णिवीर श्रीकृष्णजी बोले ९२ हे अर्जुन ! तू परमअस्त्र को छोड़ क्योंकि कर्ण बाणों को निष्फल करे देता है इसके पीछे ब्रह्मास्त्र के उग्र मन्त्र को पढ़कर बाण को धनुष पर चढ़ाया ९३ और कर्ण को बाणों से ढककर उस पर फिर बाणों को फेंका तब कर्ण ने सुन्दर वेतवाले तीक्ष्ण बाणों से उसकी प्रत्यञ्चा को काटकर पहली, दूसरी, तीसरी, चौथी, पाँचवीं, छठी, सातवीं, आठवीं, नौमी, दशवीं, ग्यारहवीं प्रत्यञ्चा को काटा परन्तु वह कर्ण उस हजारों प्रत्यञ्चा चढ़ानेवाले को नहीं जानता था ९४ । ९५ तदनन्तर अर्जुन ने दूसरी प्रत्यञ्चा को धनुष पर चढ़ाकर मन्त्रों से अभिमन्त्रित कर सर्पों की समान प्रकाशित बाणों से कर्ण को ढक दिया ९६ कर्ण ने उसकी प्रत्यञ्चा के टूटने और चढ़ाने को हस्तलाघवता के कारण नहीं जाना यह भी आश्चर्य सा हुआ ९७ फिर कर्ण ने अपने अस्त्रों से अर्जुन के

अस्त्रों को रोककर घायल किया और अपने पराक्रम को अच्छा दिखा-
कर उसने अर्जुन से भी अधिक कर्म किया ९८ इसके पीछे श्रीकृष्णजी
कर्ण के अस्त्र से अर्जुन को पीड्यमान देखकर बोले कि चलो अन्य-
बाणों को प्रेरित करके चलाओ ९९ इसके पीछे शत्रुसन्तापी अर्जुन
अग्नि की समान घोर सर्प के विष के समान लोहे के दिव्य बाणों को
अभिमन्त्रित करके १०० रुद्रअस्त्र को चढ़ाकर छोड़ने को उपस्थित हुआ
हे राजन्! उसी समय पृथ्वी ने कर्ण के रथ चक्र को निगला १०१
इसके पीछे उस सावधान कर्ण ने शीघ्र रथ से उतरकर दोनों भुजाओं से
चक्र को पकड़कर पृथ्वी से निकालना चाहा १०२ वह सप्तद्वीपा
वसुन्धरा रथचक्र को निगलनेवाली पृथ्वी, पर्वत, वन, नदी और समुद्रों
समेत कर्ण के हाथ से चार अंगुल ऊँची उठ आई परन्तु पहिया न
छूटा तब तो कर्ण ने क्रोध करके अश्रुपातों को डाला और अर्जुन को
क्रोधयुक्त देखकर यह वचन बोला १०३। १०४ हे बड़े धनुषधारिन्,
अर्जुन! मैं जब तक इस पृथ्वी में गड़े हुए चक्र को न निकाल लूँ
तब तक क्षण भर के लिये शस्त्र फेंकने को रोको १०५ हे अर्जुन! दैव-
योग से इस मेरे रथ के वाम चक्र को पृथ्वी में गड़ा हुआ देखकर नपुं-
सकों के युद्ध को त्याग करो १०६ हे कुन्तीनन्दन! तुम नपुंसकों के
समान अथवा नपुंसकों के मत पर चलने के योग्य नहीं हो क्योंकि
युद्धकर्म में बड़े नामी प्रसिद्ध हो १०७ हे पाण्डव! तुम गुणों से भरे
हुए कर्म करने के योग्य हो जो शूरवीर लोग कि साधुओं के व्रत में
नियत हैं वह केशों के फैलानेवाले १०८ शरणागत होनेवाले अस्त्रों के
त्यागनेवाले अथवा प्रार्थना करनेवाले वा बाण न रखनेवाले कवच से रहित
और टूटे शस्त्रवाले पर १०९ अपने शस्त्रों को नहीं छोड़ते हैं हे पाण्डव!
तुम लोक में बड़े शूरवीर साधुव्रतवाले ११० युद्ध के धर्मों को उत्तम
रीति से जाननेवाले यज्ञान्त में अमृत स्नान करनेवाले दिव्य अस्त्रों के
ज्ञाता महासाहसी युद्ध में सहस्रबाहु के समान हो १११ हे महाबाहो!
जब तक मैं इस गड़े हुए पहिये को न निकाल लूँ तब तक तुम रथ पर
सवार होकर पृथ्वी पर नियत मुझ व्याकुलचित्त के मारने को योग्य

नहीं हो ११२ हे अर्जुन ! मैं तुझसे और वासुदेवजी से नहीं डरता हूँ और तुम क्षत्रिय के पुत्र और बड़े वंश के बढ़ानेवाले हो ११३ इस हेतु से तुम से मैं कहता हूँ कि हे पाण्डव ! एक मुहूर्त तक ठहर जाओ ॥ ११४ ॥

इति श्रीमहाभारते कर्णपर्वणि कर्णरथचक्रग्रसनं नामैकनवतितमोऽध्यायः ॥ ९१ ॥

बानबे का अध्याय

चौ० समय देखि ह्वै व्याकुल मन में । रथ बिनु चले कर्ण तेहि क्षन में ॥
धनुरथ पै धरि वीर उतरिकै । चारु चक्रयुत करसों धरिकै ॥
लगो उठावन सुनु महिसाईं । अचरज कियो कर्ण तेहि ठाईं ॥
गिरि सागर कानन सह धरनी । रथ के संग उठाई अवनी ॥
अंगुल चारि प्रमाण उठायो । सुरगण के मन विस्मय छायो ॥
छुटो न रथ तब कर्ण बिलखिकै । सजलनयन भो इतउत लखिकै ॥
करि शरवृष्टि पार्थ तेहि क्षन में । बहु शर हने कर्ण के तन में ॥
तिन सों कर्ण महादुख पायो । पारथ को इमि टेरि सुनायो ॥
हे हे पार्थ कहा अघ धारो । बाण वृष्टि क्षण एक निवारो ॥
ग्रसित चक्र धरणी ते जबलों । मैं काढ़ों तू थिर रहु तबलों ॥
विना शस्त्र पहँ तजिबो शायक । उचित न तुम्हें विदित भटनायक ॥
दो० नहिं कृष्णहिं नहिं तुमहिं हम, भीति कहत ये बैन ।
तुम से क्षत्रिहि धर्म को, तजिबो सोहत है न ॥
जौं लगि चक्र छुड़ाइ हम, नहिं पकरौं धनुबान ।
पारथ तौं लगि करि क्षमा, बहुरि करौ मनमान ॥

जयकरीछन्द ॥

तहाँ कर्ण के सुनि यह बैन । कहत भये केशव मति ऐन ॥
तुम दुर्योधन शकुनि कराल । कब कीन्हे सुधरम प्रतिपाल ॥
भीमसेन कहँ जहर खवाय । साँपन सों दीन्हों कटवाय ॥
करिकै मन्त्र नाश अभिलाखि । इन कहँ लाक्षागृह में राखि ॥
निशि में दाह करायो पूर्व । तब कित रह्यो धर्म व्रत गूर्व ॥
किये सभा में कुकरम जौन । अब नहिं कहत बनत सब तौन ॥

तेरहें वर्ष बाँटि महि लेन। किये करार न चाहे देन ॥
तब कित गयो धरम को काम। अब लखि परा धरम अभिराम ॥
विरथ विधनुष अकेलो बार। पार्थसुतहि वधि षट्धनुधार ॥
अति अनन्द लहि भये अभर्म। अब चाहत करवावो धर्म ॥
अब तो वध करिबो यहि याम। है पारथ को धर्म ललाम ॥
केशव के यह वचन अनूप। सुनि सूतज है लज्जित रूप ॥
फिरि रथ पर चढ़ि गहि कोदण्ड। वर्षन लागो बाण उदण्ड ॥
भरो क्रोध लाघव दरशाय। दये पार्थ पहँ शायक छाय ॥
सो लखि के केशव अनुमानि। कहे पार्थ सों अवसर जानि ॥
दिव्य शरन सों बेधि सडौर। अब यहि शीघ्र वधौ करि गौर ॥

दो० केशव के यह वचन सुनि, पारथ धनु टङ्कारि।
वर्षन लागो कर्ण पहँ, दिव्य अस्त्र पण धारि ॥
करत भयो ब्रह्मास्त्र को, तेहि क्षण कर्ण प्रयोग।
पारथ तजि ब्रह्मास्त्र तेहि, शमित कियो करियोग ॥
ताहि क्षमित करि तजत भो, दइत अस्त्र सो वीर।
वारुणास्त्र सों तेहि शमित, कियो कर्ण रणधीर ॥
घनतम सों छादित दिशा, देखि पार्थ करि कोप।
कियो अस्त्र वायव्य सों, वारुणास्त्र को लोप ॥

सो० सो लखि कर्ण अमान, परम दिव्य शर गहत भो।
करि अद्भुत संधान, तज्यो देखि डरपे सुमन ॥
वज्र सरिस सो बान, तासु भुजा तर माधि लगो।
भिदि तासों बलवान, मोहित भो अर्जुन सुभट ॥

चौ० महाराज सुनिये तेहि क्षन में। रथ ते उतरि कर्ण गुनि मन में ॥
हर्ष विषाद क्रोध सों पागो। बलकरि सुरथ उठावन लागो ॥
कृष्णचन्द्र सो समय निरेषी। पारथ सों बोले अवरेषी ॥
रथचढ़ि गहै धनुष शर जौलौं। कर्णहिं पार्थ वधौ तुम तौलौं ॥
कृष्णचन्द्र की वाणी सुनिकै। पारथ मन्त्र यथारथ गुनिकै ॥
तीक्षण शर क्षुरप्र कर लीन्हो। तासों केतु काटि द्वै कीन्हो ॥

फिरि अमोघ आञ्जलिक सुशायक। गह्यो पार्थ भटधनुधर नायक॥
चक्र त्रिशूल वज्र सम घोरा। कालदण्ड सम कठिन कठोरा॥
प्रलयकाल के भानु समाना। वायु अग्निसम दुसह अमाना॥
भरि आङ्गिरस मन्त्र की पुरता। करि अति अगणितगौरवगुरता॥
सब दिशि हेरि क्रोध सों रातो। बोलो पार्थ वीर रस मातो॥
अब हनि यह शर गौरव भेखो। कर्णहिं वधि डारत शर देखो॥
इमि कहि पारथ तेहि शर वर सों। काट्यो शीश कर्ण के धर सों॥
मार्त्तण्ड सम परम प्रभा को। महि पर गिरो शीश कटि ताको॥
तदनु गिरो धर तजि बल गारो। सरस सुखोचित सुखमा भारो॥
मणिमयभूरि भूषणनि छाजित। महि पर भयो कर्ण भट राजित॥

दो० सब के देखत तहँ भयो, अद्भुत अति अमलीन।
तेज कर्ण की देह सों, कढ़ि भो रवि में लीन॥
इहि विधि कर्ण को वध निरखि, केशव पाण्डव सर्व।
लगे बजावन शङ्ख अति, आनँद भरे सगर्व॥
गरजि गरजि सोमक सकल, अरु पाञ्चाल समस्त।
सानँद बजवावन लगे, जय दुन्दुभी प्रशस्त॥
नृप तहँ ममदल मधिबढ़ो, हा हा धुनि गम्भीर।
भागि चले भट विकल ह्वै, तजि बल गौरव धीर॥

इन पद्यों का आशय गद्य में॥

सञ्जय बोले कि रथ पर चढ़े हुए वासुदेवजी उससे बोले कि, हे कर्ण! अब यहाँ तू धर्म को याद करता है आपत्ति में डूबे हुए नीच लोग बहुधा ईश्वर की निन्दा किया करते हैं परन्तु अपने दुष्टकर्म को नहीं कहते १ हे कर्ण! जब दुश्शासन, शकुनी, दुर्योधन और तुमने एक वस्त्र रखनेवाली द्रौपदी को सभा में बुलाया तब वहाँ तुमको धर्म नहीं दिखाई दिया २ जब शकुनी ने विद्या के द्वारा द्यूतकर्म न जाननेवाले राजा युधिष्ठिर को अधर्म से सभा में विजय किया तब तेरा धर्म कहाँ गया था ३ हे कर्ण! वनवास के व्यतीत होने पर तेरहवें वर्ष को भी पाकर आधा राज्य नहीं दिया तब तेरा धर्म कहाँ गया था ४ जब राजा दुर्योधन

ने तेरे मत से भीमसेन को सर्पों से और विषमिले अन्न खवाने से मारना चाहा तब तेरा धर्म कहाँ गया था ५ जब कि वारणावत नगर में लाक्षागृह में सोते हुए पाण्डवों को अग्नि से जलाया तब तेरा धर्म कहाँ गया था हे कर्ण ! जब सभा में बैठकर दुश्शासन के अधीन हुई द्रौपदी को हँसा तब तेरा धर्म कहाँ गया था ६ । ७ हे कर्ण ! जब पूर्व काल में नीचों से दुःखित निरपराधिनी द्रौपदी को त्याग करता था तब तेरा धर्म कहाँ गया था ८ जब द्रौपदी से तैंने यह कुत्सित अभद्र वचन कहे थे कि हे कृष्णे ! पाण्डवों का नाश हो गया और सनातन नरक में गये तुम दूसरे पति को वरो उस हाथी के समान चलनेवाली को ऐसे दुर्वाक्य कह-कहकर त्यागता था ९ तब तेरा धर्म कहाँ गया था हे कर्ण ! फिर जब तैंने शकुनी से मिलकर राज्य का लोभी होकर पाण्डवों को बुलाके बालक अभिमन्यु को मारा तब तेरा धर्म कहाँ गया था १०।११ जो यह धर्म तैंने धारण नहीं किया था तो अब गाल बजाने से क्या लाभ है हे सूत ! अब चाहै जितना तू धर्म वर्णन कर परन्तु जीते नहीं बच सकता जैसे कि द्यूत में अपने भाई पुष्कर से हारे हुए पराक्रमी नल ने भाई को विजय करके फिर राज्य को पाया १२ । १३ उसी प्रकार निर्लोभ होकर सबको जीतकर पाण्डवों ने भी अपनी भुजाओं के बल से राज्य को पाया इन पाण्डवों ने युद्ध में बड़े-बड़े बृद्धियुक्त शत्रुओं को सोमकों समेत अनेक पराक्रमों से मारकर राज्य को पाया और धर्मधारी नरोत्तमों समेत दुष्टात्मा धृतराष्ट्र के पुत्रों ने पराजय को पाया १४ सञ्जय बोले कि हे भरतवंशिन् ! वासुदेवजी के ऐसे-ऐसे वचनों को सुनकर कर्ण ने १५ लज्जा से नीचा शिर करके कुछ उत्तर नहीं दिया और क्रोध से होठों को चाट हाथ में धनुष लेकर १६ उस पराक्रमी वेगवान् ने फिर अर्जुन से युद्ध किया इसके पीछे वासुदेवजी पुरुषोत्तम अर्जुन से बोले १७ कि हे महाबलिन् ! अब इसको दिव्य अस्त्र से छेदकर गिराओ श्रीकृष्णजी के इस वचन को सुनते ही अर्जुन क्रोधयुक्त हुआ अर्थात् अर्जुन उन पूर्व बातों को स्मरण करके महाक्रोधित हुआ हे राजन् ! तब तो उस क्रोध भरे अर्जुन के सब शरीर के

छिद्रों से तेज की अग्नियाँ प्रकट हुईं १८। १९ यह बड़ा आश्चर्य सा हुआ इसके पीछे कर्ण उसको देखकर २० ब्रह्मास्त्र से बाणों की वर्षा करने लगा फिर रथ को पृथ्वी से निकालने का उपाय किया तब अर्जुन भी ब्रह्मास्त्र से उस पर बाणों की वर्षा करने लगा २१ फिर पाण्डव ने कर्ण के अस्त्र को अपने अस्त्र से रोककर दूर किया तब कुन्तीनन्दन ने अग्नि के अतिप्रिय दूसरे अस्त्र को २२ कर्ण को लक्ष्य बनाकर छोड़ा वह अस्त्र तेज से देदीप्यमान हुआ फिर कर्ण ने वारुणास्त्र से उसकी अग्नि को शान्त किया २३ और बादलों से सब दिशाओं को अन्धकार युक्त करके दिन को अशुभरूप कर दिया फिर बड़ी सावधानी से अर्जुन ने वायव्यास्त्र से २४ बादलों को कर्ण के देखते हुए दूर कर दिया इसके पीछे सूत के पुत्र ने पाण्डव के मारने की इच्छा से अग्नि के समान महाप्रज्वलित उग्र बाण को अपने हाथ में लिया तदनन्तर अपने पूजित धनुष में उस बाण के योजित करने पर २५। २६ पर्वत वन समुद्रों-समेत पृथ्वी कम्पायमान हुई और कङ्कड़ पत्थरों से मिले हुए पवन बड़े वेग से चले सब दिशा विदिशा धूलि से मण्डित हो गईं २७ और हे भरतवंशिन्! स्वर्ग में देवताओं का हाहाकार उत्पन्न हुआ हे श्रेष्ठ! कर्ण के हाथ में चढ़ाये हुए उस बाण को देखकर २८ अर्जुन ने चित्त में दुःख पाकर बड़ी व्याकुलता को पाया कर्ण की भुजा से छोड़ा हुआ वह इन्द्रवज्र की समान तीक्ष्ण नोकवाला बाण अर्जुन की भुजा में आकर ऐसे प्रवेशित हो गया जैसे कि सर्प अपनी उत्तमबामी में प्रवेश कर जाता है २९ युद्ध में वह शत्रुओं का मारनेवाला अर्जुन अत्यन्त घायल होकर बड़ा सुस्त होकर ऐसे कम्पायमान हुआ जैसे कि बड़े भूकम्प होने से उत्तम पर्वत कम्पायमान होता है उस अवकाश को पाकर पृथ्वी में गड़े हुए अपने रथ के पहिये को निकालने की इच्छा से महारथी कर्ण ने ३०। ३१ रथ से कूदकर अपने दोनों हाथों से पहिये को पकड़-कर खींचा परन्तु वह महापराक्रमी भी उसके निकालने को समर्थ नहीं हुआ उसके पीछे अर्जुन ने सचेत होकर यमराज के दण्ड की समान बाण को हाथ में लिया ३२ अर्थात् महात्मा अर्जुन ने आञ्जलिक नाम

बाण को हाथ में लिया इसके पीछे वासुदेवजी अर्जुन से बोले कि जब तक यह कर्ण रथ पर सवार न होने पावे तब तक तुम इस अपने बाण से अपने शत्रु के शिर को काटो ३३ इसके पीछे अर्जुन ने अपने प्रभु की आज्ञा पाकर महातीव्र प्रज्वलित उग्रक्षुरप्र को लेकर प्रथम तो सूर्य के समान निर्मल अत्यन्त उत्तम हाथी की कक्षा रखनेवाली सुवर्ण, हीरे, मोतियों से जटित अच्छे कारीगरों की बनाई हुई सुन्दर रूप स्वर्णमयी ३४ । ३५ सदैव आपकी सेना के विजय का स्थान शत्रुओं को भयभीत करनेवाली स्तुतिमान् लोक में सूर्य के समान प्रसिद्ध और क्रान्ति में सूर्य चन्द्रमा और अग्नि के समान ३६ लक्ष्मी से ज्वालायमान महारथी कर्ण की ध्वजा को अर्जुन ने अत्यन्त तीक्ष्ण सुनहरी पुङ्खवाले अग्नि के समान प्रकाशमान क्षुरप्र से काटा ३७ और उस ध्वजा के कटने से कौरवों के यश अभिमान और सब मन के मनोरथों सहित हृदय टूट गये और महा हाहाकार शब्द हुआ ३८ हे भरतवंशिन् ! उस समय जो-जो आपके युद्धकर्ता शूरवीर थे उन सबों ने और कौरवों के बड़े-बड़े वीरों ने अर्जुन के हाथ से काटी और गिराई ध्वजा को देखकर कर्ण के विजयी होने की आशा छोड़ दी ३९ फिर कर्ण के मारने में शीघ्रता करनेवाले पाण्डव अर्जुन ने महेन्द्र के वज्र वा अग्नि के दण्ड की समान हज़ार किरण रखनेवाले सूर्य की उत्तम किरण के समान आञ्जुलिक नाम बाण को अपने तूणीर से निकाला ४० वह मर्मभेदी रुधिर मांस से लिप्त अग्नि सूर्य के रूप बड़ों के योग्य मनुष्य घोड़े और हाथियों के प्राणों को हरनेवाला तीन अर्त्तिनी लम्बा (अर्त्तिनी किसी नाप की संज्ञा है) छःपक्ष रखनेवाला सीधा चलनेवाला महावेगयुक्त ४१ इन्द्रवज्र के समान पराक्रमी काल का भी काल अग्नि की समान बड़ा घोर पिनाक धनुष और नारायणजी के सुदर्शन चक्र की समान भयकारी और जीवमात्र का नाश करनेवाला था ४२ जो देवगणों से भी हटाने के अयोग्य महात्माओं से सदैव पूजित देवासुरों का भी विजय करनेवाला था उसको अर्जुन ने अपने हाथ में लिया ४३ युद्ध में उस अर्जुन से पकड़े हुए उस बाण को देखकर सब

जड़ चैतन्य स्थावर जङ्गम जीवों समेत सब जगत् कम्पायमान हुआ अर्जुन को उस बाण को उठाये हुए देखकर ऋषि लोग पुकारे कि संसार का कल्याण हो ४४ इसके पीछे उस गाण्डीव धनुषधारी ने उस अचिन्त्य प्रभाववाले बाण को धनुष में लगाया और उत्तम महाअस्त्र से संयुक्त कर गाण्डीव धनुष को खींचकर शीघ्रता से बोला ४५ यह महाअस्त्र से संयुक्त बड़ा बाण शत्रु के शरीर और प्राणों का हरनेवाला हो जो मैंने तपस्या करी है वा गुरुओं को प्रसन्न करके यज्ञों को किया है और शुभ-चिन्तक मित्रों की आज्ञा को माना है ४६ इस सत्यता से सेवित यह कठिन और उग्र बाण मेरे बड़े शत्रु कर्ण के शिर को काटै यह कहकर अर्जुन ने उस घोर उग्र बाण को कर्ण के मारने को छोड़ा ४७ और अत्यन्त प्रसन्नमन अर्जुन यह कहता हुआ कि यह अथर्वनगर से कृत्या के समान उग्र प्रकाशित और युद्ध में मृत्यु से भी असह्यरूप बाण मेरी विजय का करनेवाला हो ४८ कर्ण के मारने का अभिलाषी सूर्य चन्द्रमा के समान प्रभाववाला अर्जुन यह बोला कि मेरा चलाया हुआ बाण कर्ण को मारकर यमपुर को भेजे यह कहकर मारने के इच्छावान् शस्त्रधारी अत्यन्त प्रसन्नचित्त अर्जुन ने उस उत्तम विजय करनेवाले ४९ सूर्य व चन्द्रमा के समान प्रकाशित बाण से चक्र के उठाने में प्रवृत्त शत्रु को मारना चाहा तब उस छोड़े हुए सूर्य की समान प्रकाशमान बाण ने आकाश और दिशाओं को अग्निरूप किया ५० फिर इन्द्र के पुत्र अर्जुन ने दिन के समाप्त होने पर उस बाण से उसके शिर को ऐसे काटा जैसे कि महेन्द्र ने अपने वज्र से वृत्रासुर के शिर को काटा था ५१ इसके पीछे आञ्जुलिक से कटा हुआ उसका शिर गिर पड़ा तदनन्तर उसका धड़ भी गिर पड़ा वह उदयमान सूर्य के समान तेजस्वी आकाशस्थ ऐसे सूर्य के समान था ५२ उसका शिर कटकर पृथ्वी पर ऐसे गिरपड़ा जैसे कि रक्त मण्डलवाला सूर्य अस्ताचल से गिरता है तदनन्तर इस महाकर्मी के सदैव सुख के योग्य सुन्दर शिर ने अपने शरीर के रूप को बड़े कष्ट से ऐसे त्याग किया जैसे कि बड़ा धनवान् अपने धन से पूर्ण घर को बड़े दुःखों से त्यागता है उस बड़े तेजस्वी कर्ण का

उन्नत शरीर बाणों से भिदा हुआ निर्जीव होकर बाणों के घावों से रुधिर गिराता हुआ ऐसे गिर पड़ा ५३ । ५४ जैसे कि वज्र से घायल होकर पर्वत का बड़ा शिर रक्तधातु से युक्त जल को छोड़ता हुआ गिरता है उस गिरे हुए कर्ण के शरीर से निकला हुआ तेज आकाश को व्याप्त करके सूर्य में प्रवेश कर गया ५५ कर्ण के मरने पर सब शूरवीर युद्ध-कर्ता मनुष्यों ने इस आश्चर्य को देखा इसके पीछे अर्जुन के हाथ से गिराये हुए कर्ण को देखकर पाण्डवों ने ऊँचे स्वरों से शङ्खों को बजाया ५६ इसी प्रकार प्रसन्नचित्त श्रीकृष्ण और अर्जुन नकुल और सहदेव ने भी शङ्खों को बजाया फिर सोमकों ने उस मरे हुए कर्ण को पृथ्वी पर पड़ा हुआ देखकर सेनाओं समेत शङ्खों के नाद किये ५७ और अत्यन्त प्रसन्न होकर तूरी आदि अनेक बाजों को भी बजवाया और वस्त्रों को हला-हला कर अपनी भुजाओं को ठोका और अत्यन्त प्रसन्न आशीर्वादों को देते हुए अर्जुन के पास गये ५८ और अन्य-अन्य शूरवीर लोग भी अर्जुन के हाथ से मरा हुआ रथ से पृथ्वी में पड़ा हुआ कर्ण को देखकर ५९ नृत्य करने लगे और परस्पर में गर्जनापूर्वक ऐसी वार्तालापें करने लगे जैसे कि कठिन वायु के वेग से घायल पर्वत होते हैं उस समय वह कर्ण का पृथ्वी पर पड़ा हुआ शिर ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि यज्ञ के अन्त में शान्त हुई अग्नि अथवा जैसे कि अस्ताचल पर पहुँचा हुआ सूर्य का बिम्ब होता है ६० वह सूर्य के समान तेजस्वी युद्ध में पाण्डवों की सेना को अपनी बाणरूपी किरणों से अच्छी रीति से तपाकर अन्त को अर्जुनरूपी काल के द्वारा अस्त हो गया ६१ सब अङ्गों में बाणों से छिदा रुधिर में भरा हुआ कर्ण का शरीर ऐसा प्रकाशित था जैसे कि सूर्य अपनी किरणों से शोभित होता है ६२ वह कर्णरूपी सूर्य किरणों से शत्रुओं की सेना को सन्तप्त करके महापराक्रमी अर्जुनरूपी काल के वशीभूत हो गया ६३ जैसे कि सूर्य अस्त होता हुआ प्रकाश को लेकर जाता है इसी प्रकार वह बाण कर्ण के जीवन को लेकर गया ६४ हे श्रेष्ठ ! दिवस के अन्त भाग में कर्ण के मरने के दिन कर्ण का शिर शरीर समेत आञ्जुलिक बाण से जब युद्धभूमि में गिरा तब उस

बाण ने भी सेनाओं से पृथक् अर्जुन के शत्रु का वह शिर शरीर समेत शीघ्रतापूर्वक अपने वेग से हर लिया ६५ फिर उस शूर वा बाणों से छिदे हुए रुधिर से लिप्त पृथ्वी पर गिरकर शयन करनेवाले कर्ण को देखकर राजा युधिष्ठिर ध्वजावाले रथ की सवारी से चला ६६ और कर्ण के मरने पर भय से पीड़ित युद्ध में अत्यन्त घायल हुए कौरव वारंवार अर्जुन के क्रोधरूपी मुख को देखते हुए अचेत हो होकर भागे ६७ इन्द्र के समान कर्म करनेवाले कर्ण का शिर जो कि इन्द्र के ही शुभ मुख के समान था वह ऐसे पृथ्वी पर गिर पड़ा जैसे कि दिन के अन्त में सहस्रांशु सूर्य अस्त हो जाता है ॥ ६८ ॥

सो० कर्ण अग्नि की शांति, युद्धयज्ञ के अन्त लखि।
आवत भयो अकान्ति, सरथशल्य अध्वज विकल ॥
दुर्योधन क्षितिपाल, कर्ण सखा को बध निरखि।
तजत नयन जलधार, महाराज अति विकल भो ॥
पूरित मोद महान, करि करि धनुटङ्कार अति।
भीमसेन बलवान, गरजि गरजि निरतत भयो ॥
शल्य नृपति पहँ आय, सकल व्यवस्था कहत भो।
सुनि तो सुत क्षितिराय, रुदन कियो अति दीन ह्वै ॥

इति श्रीमहाभारते कर्णपर्वणि कर्णवधे द्विनवतितमोऽध्यायः ॥ ९२ ॥

तिरानबे का अध्याय

सञ्जय बोले कि अर्जुन के हाथ से कर्ण के मरने पर राजा शल्य सेना को भयभीत और पीड्यमानरूप देखकर अपने साथी आधिरथी कर्ण के मरने पर टूटे सामानवाले रथ की सवारी के द्वारा चल दिया १ अर्थात् राजा शल्य कर्ण और अर्जुन के युद्ध में बाणों से घायल और म्लान-चित्त सेनाओं को देखकर अत्यन्त क्रोधयुक्त होकर टूटे सामानवाले रथ की सवारी से चला २ जिसके रथ घोड़े और हाथी गिराये गये वह सेनापति कर्ण भी मारा गया उस सेना को देखकर अश्रुपातों से पूर्ण महादुःखित पीड्यमानरूप दुर्योधन ने बराबर श्वासों को लिया ३ फिर

पृथ्वी पर गिरे बाणों से छिदे हुए रुधिर में भरे दैवइच्छा से सूर्य के समान प्रतापी पृथ्वी पर नियत कर्ण के देखने के अभिलाषी मनुष्य कर्ण को चारों ओर से घेरे हुए ४ अत्यन्त भयभीत व्याकुलचित्त आश्चर्ययुक्त होकर शोक से पीड्यमान हुए इनके सिवाय आपके और सब शूरवीर भी परस्पर में वैसी ही दशा को प्राप्त हुए जैसे प्रकार का कि उनका स्वभाव था ५ कौरव लोग बड़े तेजस्वी कर्ण को अर्जुन के हाथ से टूटे कवच भूषण वस्त्र और शस्त्रों से रहित देखकर और मृतक सुनकर ऐसे भागे जैसे कि निर्जन वन में मृतक बैलवाली गौवें भागती हैं ६ तब भीमसेन भयानक शब्दों से गर्जना करके पृथ्वी और आकाश को कम्पायमान करता भुजाओं को ठोकता हुआ गर्ज-गर्जकर उछला और कर्ण के मरने पर धृतराष्ट्र के पुत्रों को भयभीत करता नृत्य करने लगा ७ हे राजन् ! इसी प्रकार सब सोमक और सृञ्जयों ने शङ्खों को बजाकर एक-एक से प्रीतिपूर्वक मेलन किया और अन्य क्षत्रिय लोग भी कर्ण के मरने पर परस्पर में प्रसन्नरूप हुए ८ सूतपुत्र कर्ण अर्जुन से महा-घोर युद्ध करके ऐसे मारा गया जैसे कि केसरी सिंह के हाथ से हाथी मारा जाता है पुरुषोत्तम अर्जुन ने अपनी प्रतिज्ञा को पूर्ण करके शत्रुता के अन्त को पाया ९ हे राजन् ! फिर व्याकुलचित्त मद्रदेश के राजा शल्य ने भी शीघ्र ही ध्वजारहित रथ की सवारी के द्वारा दुर्योधन के पास जाकर अश्रुपात डालकर यह वचन कहा १० कि आपकी सेना परस्पर में सम्मुख होकर गिरे हुए हाथी रथ घोड़े वा बड़े-बड़े शूरवीरोंवाली यमराज के देश की समान और बड़े-बड़े मनुष्य और घोड़े पर्वत के शिखर के समान हाथियों से मारे गये ११ हे भरतवंशिन् ! यह सब तो लड़े और मरे परन्तु ऐसा युद्ध कोई नहीं हुआ जैसा कि कर्ण और अर्जुन का हुआ है कर्ण ने सम्मुख होकर श्रीकृष्ण अर्जुन को और अन्य बड़े-बड़े तेरे शत्रुओं को अपने स्वाधीन किया १२ निश्चय करके पांडवों की रक्षा करनेवाला दैव ही अर्जुन के अधीन होकर कर्मकर्त्ता है जो पाण्डवों को बचा-बचाकर हम लोगों को मारता है तेरे मनोरथ सिद्ध करनेवाले सब शूरवीर युद्ध करके शत्रुओं के हाथ से मारे गये १३ हे

राजन्! वह उत्तम वीर कुबेर यमराज और इन्द्र के समान प्रभाववाले और पराक्रम बल और तेज में भी इन्हीं देवताओं के समान नाना प्रकारों के गुणों से युक्त होकर अवध्यों के समान तेरे अभीष्टों के चाहनेवाले राजा लोग युद्ध में पाण्डवों के हाथ से मारे गये १४ हे भरतवंशिन्! सो तुम अब शोच मत करो यह होनहार है निश्चय समझो कि सदैव किसी की विजय नहीं होती राजा शल्य के इस वचन को सुनकर और अपने अन्याय को विचार १५ महादुःखी चित्त अचेत और पीड़ित रूप दुर्योधन ने वारंवार श्वासाओं को लिया॥ १६ ॥

इति॥

चौ० नृप धृतराष्ट्र वचन यह सुनिकै। सञ्जय सों बूझै शिर धुनिकै॥
सञ्जय कहौ दशा लहि ऐसी। मम सुत भूप गही गति कैसी॥
सञ्जय कह्यो सुनो नरनायक। तेहि पल तो भट भये अचायक॥
पार्थ धनुर्द्धर कर्णहि वधिकै। अब हम सब कहँ वधब वरधिकै॥
भीमसेन बिनु बधे न छाँड़िहि। को अस सुभट ताहि जो आड़िहि॥
यह विचार अतिशय भय पागे। साहस छोड़ि भूरि भट भागे॥
नृप तेहि क्षण मम भट भे तैसे। बूड़े नाव वणिक जन जैसे॥
लखि यह दशा भूप दुर्योधन। निजचखजलकोकरिअवरोधन॥
गुणि दुख गहे हारि यहि क्षन में। तो सुत भूप धीर धरि मन में॥

इति श्रीमहाभारते कर्णपर्वणि कर्णवधे त्रिनवतितमोऽध्यायः॥ ९३॥

चौरानबे का अध्याय

धृतराष्ट्र बोले कि, रुद्ररूप कर्ण और अर्जुन के युद्ध में दग्धरूप बाणों से मथित और भागे हुए कौरव और सृञ्जयों की सेना के लोगों का रूप कैसा हो गया १ सञ्जय बोले कि, हे राजन्! सावधान होकर सुनो जैसे कि युद्धभूमि में मनुष्यों के शरीरों का अत्यन्त घोर नाश वा राजाओं की हानि हो जाने और कर्ण के मरने पर पाण्डवों ने सिंहनाद किये तब आपके पुत्रों में बड़ा भारी भय उत्पन्न हुआ २। ३ कर्ण के मरने पर आपके किसी शूरवीर की भी सेनाओं की चढ़ाई और शीघ्र पराक्रम

करने के साहस की बुद्धि नहीं हुई ४ जैसे कि नौकारहित अथाह जल में नौका के टूटने पर व्यापारी लोग अपार जल के पार होने की इच्छा रखनेवाले होते हैं उसी प्रकार अर्जुन के हाथ से सेनापति कर्ण के मरने पर आपके लोग रक्षा के चाहनेवाले हुए ५ हे राजन् ! सूतपुत्र के मरने पर भयभीत शस्त्रों से घायल आपके अनाथ लोग नाथ के ऐसे चाहनेवाले हुए जैसे कि सिंहों से पीड्यमान मृग टूटी शाखावाली बेल और टूटी डाढ़वाला सर्प रक्षा को चाहते हैं ६ सायङ्काल के समय अर्जुन से पराजित मृतकवीरवाले तीक्ष्ण बाणों से घायल होकर लोग हट आये ७ हे राजन् ! कर्ण के मरते ही यन्त्र वा कवचों से रहित अचेत भयभीत ८ और परस्पर में मर्दन करनेवाले और भय से व्याकुल होकर देखनेवाले आपके पुत्र महाभयातुर होकर भागे और यह निश्चय जानकर कि अर्जुन हमारे ही सम्मुख आता है वा भीमसेन हमारे ही मारने को सूला है ९ यह मानते हुए महाव्याकुलता से गिरकर मृतकप्राय हो गये किसी महारथी ने घोड़ों पर किसी ने हाथियों पर किसी ने रथों पर १० चढ़कर बड़े वेग से भयभीत होकर अपने-अपने पदातियों को त्याग किया हाथियों से रथ महारथियों से अश्वसवार ११ और भय से व्याकुल भागनेवाले घोड़ों से पदातियों के समूह मारे गये जैसे कि सर्प और चोरों से भरे हुए वन में अपने सङ्ग के लोगों से पृथक् होकर मनुष्यों की जो दशा होती है १२ हे राजन् ! उसी प्रकार कर्ण के मरने पर आपके शूरवीरों की भी वही दशा हुई अथवा जैसे कि मृतक सवारवाले हाथी और टूटे हाथवाले मनुष्य होते हैं १३ इसी प्रकार आपके सब मनुष्य संसार भरे को ही अर्जुनरूप देखते हुए भय से पीड्यमान हुए भीमसेन के भय से पीड़ित होकर भागता हुआ सबको देखकर १४ और उन हज़ारों शूरों को भी भागते देखकर दुर्योधन ने बड़ा हाहाकार करके फिर अपने सारथी से यह वचन कहा १५ कि अर्जुन सब सेना के मारने को मुझ धनुषधारी के होते हुए नहीं आ सकता है इससे तुम लोग अपने-अपने घोड़ों को रोको १६ मैं निस्सन्देह उस युद्ध करनेवाले अर्जुन को अवश्य मारूँगा वह मुझको ऐसे उल्लङ्घन नहीं कर सकता है जैसे कि महासमुद्र

अपनी मर्याद नहीं उल्लङ्घन कर सकता है १७ अब मैं श्रीकृष्णजी समेत अर्जुन को वा बड़े अहङ्कारी भीमसेन को और इसी प्रकार सब बाकी बचे हुए शत्रुओं को मारकर कर्ण के ऋण से उद्धार हूँगा १८ सारथी ने कौरवों के राजा दुर्योधन के उस वचन को जो कि शूर और श्रेष्ठ लोगों के कहने के समान था सुनकर सुवर्ण के सामानों से आच्छादित घोड़ों को बड़े धीरेपने से चलायमान किया १९ हे श्रेष्ठ! फिर रथ घोड़े और हाथियों से रहित आपके पच्चीस हज़ार पदाती युद्ध के निमित्त नियत हुए २० फिर अत्यन्त क्रोधयुक्त भीमसेन और धृष्टद्युम्न ने चतुरङ्गिणी सेना समेत उन पदातियों को घेरकर मारा २१ वह सब भीमसेन और धृष्टद्युम्न के सम्मुख होकर युद्ध करने लगे और किसी-किसी ने पाण्डव और धृष्टद्युम्न के नामों को लेकर पुकारा २२ तब उन सम्मुख आये हुए पदातियों से युद्ध में भीमसेन क्रोधरूप हुए और बड़ी शीघ्रता से अपने रथ से उतर हाथ में गदा लेकर युद्ध करने लगा २३ अपने भुजबल में दृढ़रूप धर्म को चाहनेवाले रथ में सवार कुन्ती के पुत्र भीमसेन ने रथ पर चढ़कर उन पदातियों से युद्ध नहीं किया २४ हाथ में दण्डधारी यमराज के समान भीमसेन ने सुवर्ण से मण्डित अपनी गदा को हाथ में लेकर पदाती होकर आपके सब पदातियों को मारा फिर वह सब पदाती भी अपने प्यारे जीवन को त्याग करके २५ युद्ध में भीमसेन के सम्मुख ऐसे गये जैसे कि अग्नि में पतङ्ग जाते हैं वह सब लोग युद्ध में क्रोधयुक्त युद्धदुर्मद भीमसेन को पाकर २६ अकस्मात् ऐसे नाश हो गये जैसे कि जीवों के समूह मृत्यु को देखकर नाश हो जाते हैं फिर बाज की समान गदा हाथ में लिये घूमनेवाले भीमसेन ने २७ आपके पच्चीस हज़ार पदातियों को मारा फिर वह महापराक्रमी अतुलबल भीमसेन उस पदातियों की सेना को मारकर २८ धृष्टद्युम्न को आगे करके वहाँ पर नियत हुआ २९ और महारथी नकुल सहदेव और सात्यकी शकुनी के सम्मुख हुए और बड़े प्रसन्नचित्त होकर दुर्योधन की सेना को मारते हुए बड़ी शीघ्रता से सम्मुख दौड़े ३० अर्थात् वह अपने तीक्ष्ण बाणों से बहुत से सवारों को मारकर शीघ्रता से उसके सम्मुख दौड़े और बड़ा युद्ध

हुआ ३१ हे प्रभो ! फिर अर्जुन ने भी आपकी रथवाली सेना के सम्मुख जाकर तीनों लोकों में प्रसिद्ध अपने गाण्डीव धनुष को टङ्कारा आपके युद्धकर्ता शूरवीर उस रथ को जिसमें कि श्रीकृष्णजी सारथी और श्वेत घोड़ों से युक्त था देखकर और युद्ध करनेवाले अर्जुन को भी देखकर भागे ३२।३३ रथों से रहित और बाणों से पीड्यमान पच्चीस हज़ार पदातियों ने काल को पाया ३४ पाञ्चालों का महारथी अत्यन्त साहसी पुरुषोत्तम श्रीमान् धृष्टद्युम्न उनको मारकर ३५ थोड़े ही काल में भीमसेन को आगे करके दिखाई दिया ३६ तब आपके शूरवीर उस कपोतवर्ण घोड़े और कोविदाररूपी ध्वजाधारी धृष्टद्युम्न को युद्ध में देखकर भयभीत होकर भागे ३७ और यशस्वी नकुल और सहदेव उस शीघ्र अस्त्रों के चलानेवाले गान्धारपति को स्मरण करके सात्यकी समेत थोड़ी ही देर में दृष्टि पड़े ३८ हे श्रेष्ठ ! इसी प्रकार चेकितान शिखण्डी और द्रौपदी के पुत्रों ने आपकी बड़ी सेना को मारकर बड़े शङ्खों को बजाया ३९ फिर वह आपके शूरवीरों को मुख मोड़कर भागते हुए देखकर ऐसे सम्मुख आकर वर्तमान हुए जैसे कि बैलों को विजय करके क्रोधयुक्त बैल वर्तमान होते हैं ४० हे राजन् ! इसके पीछे महापराक्रमी पाण्डव अर्जुन आपकी बाकी बची हुई सेना को देखकर क्रोधयुक्त हुआ ४१ और आपकी रथ की सेना के सम्मुख वर्तमान हुआ और अपने विख्यात गाण्डीव धनुष को सन्नद्ध किया ४२ बाणों की वर्षा करके उस सेना को ढक दिया फिर अन्धकार हो जाने पर कुछ दिखाई नहीं दिया ४३ हे महाराज ! लोक के हततेज होने और पृथ्वी को धूलियुक्त होने पर आपके सब शूरवीर भयभीत होकर भागे ४४ हे राजन् ! सेना के छिन्न-भिन्न होने पर आपका पुत्र दुर्योधन सम्मुख आनेवाले शत्रुओं की ओर को दौड़ा ४५ इसके पीछे दुर्योधन ने सब पाण्डवों को युद्ध के लिये ऐसे बुलाया जैसे कि हे भरतर्षभ ! पूर्व समय में राजा बलि ने देवताओं को बुलाया था ४६ नाना प्रकार के शस्त्रों से युक्त क्रोधयुक्त वारंवार घुड़की देते और गर्जना करते हुए एक साथ ही उसके सम्मुख गये ४७ इसके पीछे वहाँ भय से व्याकुलचित्त क्रोधयुक्त दुर्योधन ने युद्ध में अपने

तीक्ष्ण बाणों से हज़ारों सेना के लोगों को मारा ४८ और सब ओर को पाण्डवों की सेना से युद्ध करने लगा उस स्थान पर हमने आपके पुत्र की अपूर्व वीरता को देखा ४९ कि अकेला ही उन सब इकट्ठे होने-वाले पाण्डवों से युद्ध करने लगा इसके पीछे उस महात्मा ने अपनी सेना को अत्यन्त दुःखी देखा ५० हे राजन्! उस समय आपका बुद्धि-मान् पुत्र उन दुःखी शूरवीरों को खड़ा करके उनको प्रसन्न करता हुआ यह वचन बोला ५१ कि मैं उस देश को नहीं देखता हूँ जहाँ पर तुम भय से पीड़ित होकर जाओ और वहाँ पाण्डवों के हाथ से बचने पाओ तुमको भागने से क्या लाभ है ५२ उनकी सेना बहुत कम रह गई है और श्रीकृष्ण अर्जुन अत्यन्त घायल हैं इससे मैं उन सबको निश्चय मारूँगा अब मेरी पूरी विजय है ५३ जो तुम भागोगे या पृथक् होगे तो पाण्डव लोग अपराधी जानकर तुम लोगों को पीछा करके मारेंगे इससे हमारा और तुम्हारा युद्ध में ही मरना श्रेष्ठ है ५४ क्षत्रियधर्म से युद्ध में लड़ने-वालों की मृत्यु का होना सुखरूप है क्योंकि मरने के दुःखों को नहीं भोगता है शीघ्र ही मरकर अविनाशी गति को पाता है ५५ तुम जितने क्षत्रिय अब इकट्ठे हुए हो सब चित्त लगाकर सुनो कि जब नाश करने-वाला महाबली यमराज ही भयभीत लोगों को मारता है ५६ तो फिर मेरे समान क्षत्रियव्रत का रखनेवाला कौन अज्ञानी युद्ध को नहीं करेगा देखो भागने से एक तो क्रोधरूप हमारे शत्रु भीमसेन के अधीन होंगे दूसरे इस संसार में अपकीर्त्ति पाकर स्वर्गवासी न होगे इस हेतु से तुम लोगों को अपने पूर्वजों के किये हुए धर्म का त्यागना उचित नहीं है भागने से अधिक और कोई पापरूप क्षत्रिय का धर्म नहीं है ५७। ५८ हे कौरव लोगो! युद्ध से बढ़कर क्षत्रियों का कोई उत्तम धर्म नहीं है हे शूरवीरो! जो मर भी जाओगे तो थोड़े ही दिनों में शीघ्र लोकों को भोगोगे ५९ आपके पुत्र के इस रीति के वचनों को सुनकर भी सेना के लोग उस वचन का विचार न कर सके सब दिशाओं को भागे ॥६०॥

चौ० बिचले भटन टेरि अनखायो। क्षात्र धर्म बहुभाँति सुनायो॥
सो सुनि ते सब फिरे न कैसे। रुकै न बहुत सरित जल जैसे॥

सो लखि तोसुत सुभट अतोलो। सुहित सारथी सों इमि बोलो॥
संशय त्यागि चपल करि घोरे। सादर चलो पार्थ के धोरे॥

इति श्रीमहाभारते कर्णपर्वणि कौरवसेनपलायने चतुर्णवतितमोऽध्यायः॥ ९४॥

पंचानबे का अध्याय

सञ्जय बोले कि इसके पीछे आपके पुत्र से युद्ध हुआ और सेना को देखकर अज्ञानचित्त रूपान्तर चेष्टा किये मद्रदेश के राजा शल्य ने दुर्योधन से यह वचन कहा १ कि मनुष्य हाथी घोड़े और हज़ारों पर्वताकार शूरवीर वारंवार बाणों से घायल होकर पराजित टूटे अङ्ग पृथ्वी पर गिरे हुओं से और मरे हुए हाथियों से व्याप्त इस घोर उग्ररूप युद्धभूमि को देखो २ इन व्याकुल निर्जीव टूटे कवच शस्त्र ढाल खड्ग-वाले शूरवीरों से व्याप्त पृथ्वी ऐसी दिखाई देती है जैसे कि अत्यन्त टूटे पत्थर बड़े-बड़े वृक्ष और ओषधवाले वज्र से ताड़ित पहाड़ों से व्याप्त होकर दीखती है ३ टूटे घण्टे अंकुश तोमर ध्वजा और सुवर्ण के जालों से अलंकृत रुधिर से लिप्त बाणों से टूटे अङ्ग श्वासा लेनेवाले रुधिर को वमन करनेवाले पीड्यमान पड़े हुए घोड़ों से भी भरी हुई पृथ्वी को देखो कष्टित शब्दों को करते भग्न नेत्र पृथ्वी को काटनेवाले महादुःखी गर्जते हुए हाथी घोड़े शूरवीर मनुष्य और सेना ही से घायल वीरों के समूहों से युक्त इस युद्धभूमि को देखो ४। ५ निश्चय करके इस घोर युद्ध में यह पृथ्वी मन्द प्राणवाले युद्धकर्ताओं से वैतरणी नदी के समान शोभायमान हो रही है ६ कटे हुए हाथी कम्पायमान और टूटे हुए दाँत रुधिर के वमन करनेवाले फड़कते पीड़ित शब्दों से दुःख भोगते पृथ्वी पर पड़े हुए मनुष्य वा हाथियों के शरीरों से पृथ्वी पूर्ण हो रही है ७ टूटे पहिये, बान, जुये, योक्तर, वा छिदे हुए तूणीर, पताका, ध्वजा, अथवा सुवर्ण के जालों से युक्त अत्यन्त टूटे हुए बड़े-बड़े रथों के समूहों से ऐसी भरी हुई है जैसे कि बादलों से भरी हुई होती है ८ जिनके कवच स्वर्णभूषण और शस्त्र टूटकर गिर पड़े उन सम्मुख होकर शत्रुओं के हाथ से मरे उत्तम नामी हाथी घोड़े और शूरवीर

लड़नेवालों से पृथ्वी ऐसी व्याप्त है जैसे कि शान्तरूप अग्नियों से व्याप्त होती है ९ बाणों के प्रहारों से घायल देखनेवाले और गिरे हुए हज़ारों पराक्रमियों से ऐसी संयुक्त है जैसे कि रात्रि के समय स्वर्ग से गिरे हुए अत्यन्त प्रकाशित स्वच्छ और देदीप्यमान ग्रहों से संयुक्त पृथ्वी और आकाश होते हैं १० कर्ण और अर्जुन के बाणों से टूटे अङ्ग अचेतरूप वारंवार श्वासें लेनेवाले मृतक हुए कौरव और सृञ्जय वीरों से पृथ्वी उस प्रकार की हो गई जैसे कि समीपवर्त्ती प्रज्वलित अग्नियों के समूहों से व्याप्त होती है ११ कर्ण और अर्जुन की भुजाओं से छोड़े हुए बाण हाथी घोड़े और मनुष्यों के शरीरों को चीर प्राणों को निकालकर शीघ्रता से ऐसे पृथ्वी पर गये जैसे कि झुके हुए बड़े बड़े सर्प विवरों में घुसते हैं १२ हे नरेन्द्र, अर्जुन ! और कर्ण के बाणों से युद्ध में घायल और मरे हुए मनुष्य और हाथियों से पृथ्वी अगम्य हो गई १३ शूरवीर वा उत्तम धनुष आदि शस्त्रों से भुजबल करके अच्छे मथे हुए सुन्दर अलंकृत रथ और पड़े हुए योक्तर टूटे बन्धन चूर्णित रथ चक्र अंकुश त्रिबेणु और जिनसे शस्त्र निषङ्ग बन्धन जुदे हो गये वा अनुकर्ष टूटे उन मणि सुवर्ण से अलंकृत खण्डित नीड़वाले रथों से ऐसी आच्छादित हो गई जैसे कि शरदृऋतु के बादलों से आकाश व्याप्त होता है १४ । १५ जिनके स्वामी मारे गये और शीघ्र-गामी घोड़े जिनको खैंचते थे उन सुन्दर अलंकृत राजरथ हाथी घोड़े और मनुष्यों के समूहों से शीघ्र चलनेवाले लोग अनेक प्रकार से चूर्ण हो गये १६ स्वर्णनिर्मित वस्त्रधारी परिघ फरसे तीक्ष्ण शूल मुद्गर मियान से निकले हुए सुन्दर खड्ग और स्वर्णमयी वस्त्रों से मढ़ी हुई गदा गिर पड़ीं १७ सुवर्ण के बाजूबन्दों से अलंकृत धनुष स्वर्णपुङ्खी बाण पीतरङ्ग के निर्मल मियान से जुदे दुधारा खड्ग उत्तम दण्डवाले प्रास १८ छत्र बालव्यजन शङ्ख टूटी और बिखरी हुई माला कुथा पताका वस्त्र आभूषण किरीट माला और उत्तम मुकुट १९ हे राजन् ! बहुत से गिरे और विना गिरे हुए मूँगे मोतीवाले हार आपीड़ केयूर उत्तम बाजूबन्द और स्वर्णसूत्रों से पुहे हुए गुलूबन्द और निष्क नाम आभूषण थे २० उत्तम मणि

हीरा सुवर्ण मोती छोटे बड़े रत्न और मङ्गलीक वस्तु बड़े सुख भोगने के योग्य शरीर चन्द्रमा के समान मुख रखनेवाले शिर २१ शरीर के भोगनेवाले सामान और यथेप्सित सुखों को त्याग करके अपने धर्म की बड़ी निष्ठा को पाकर लोकों को कीर्ति से व्याप्त करके वह सब युद्धकर्ता शूरवीर चले गये २२ हे बड़ाई देनेवाले, राजन्, दुर्योधन ! लौट जाओ सेना के मनुष्य भी अपने-अपने डेरों में जायँ हे प्रभो ! अब सूर्य भी अस्त होता है अब चलना ही योग्य है हे नरेन्द्र, दुर्योधन ! इस स्थान में तुम्हीं कारणरूप हो २३ शोक से दुःखी मन राजा शल्य हा कर्ण ! हा कर्ण !इस रीति से कहनेवाले पीड्यमान अत्यन्त अचेत अश्रुपातयुक्त दुर्योधन से यह वचन कहकर मौन हो गया २४ फिर अश्वत्थामा आदिक वह सब राजा लोग अर्जुन की यश कीर्तिवाली प्रज्वलित ध्वजा को वारंवार देखते और दुर्योधन को आश्वासन करते हुए चले २५ हे राजन् ! इसी प्रकार मनुष्य घोड़े हाथी और मनुष्यों के शरीरों से उत्पन्न हुए रुधिर से सींची हुई लाल पोशाक माला आदि स्वर्ण भूषणधारी निर्लज्ज वेश्याओं के समान रुधिर से आच्छादित भूमि को देखकर देव-लोक के निमित्त संन्यास धारण करनेवाले सब कौरव उस अत्यन्त शोभायमान रुद्र मुहूर्त में नियत नहीं हुए २६ । २७ हे राजन् ! वह मारने से दुःखी हा कर्ण ! हा कर्ण ! यही उच्चारण करते हुए शीघ ही अपने डेरों में गये २८ और युद्ध में गाण्डीवधनुष से छोड़े सुनहरी पुङ्ख-वाले तीक्ष्ण धारवाले रुधिरभरे पैने बाणों से युक्त शरीरवाला मृतक कर्ण भी किरणमण्डल रखनेवाले सूर्य के समान प्रकाशमान था २६ भक्तों पर दया करनेवाले रक्तवर्ण भगवान् सूर्य कर्ण के रुधिरभरे शरीर को अपनी किरणों से स्पर्श करके स्नान करने के निमित्त पश्चिमीय समुद्र को जाते हैं ३० और देवता ऋषियों के समूह भी इसका शोच करते हुए यात्रायुक्त होकर अपने-अपने स्थानों को जाते हैं जीवों के समूह भी विचार करते सुखपूर्वक आकाश और पृथ्वी को गये ३१ तब कौरवीय वीरों में श्रेष्ठ अर्जुन और कर्ण के सब जीवों के महाभयकारी घोर युद्ध को देखकर बड़े आश्चर्ययुक्त होकर उनकी प्रशंसाओं को करते

हुए मनुष्य भी चले ३२ बाणों से टूटे कवच रुधिर से सींचे हुए वस्त्रों से युक्त निर्जीव कर्ण को भी शोभा नहीं छोड़ती है सन्तप्त सुवर्ण अग्नि और सूर्य के समान प्रकाशमान ३३ उस शूरवीर को सब जीवों ने जीवते हुए के समान ही माना हे महाराज ! युद्ध में उस मरे हुए कर्ण से भी ३४ युद्धकर्ता लोग सब ओर से ऐसे भयभीत हुए जैसे कि दूसरे मृग सिंह से भयभीत होते हैं क्योंकि वह मृतक हुआ भी पुरुषोत्तम जीवते के समान दिखाई देता था ३५ इस निमित्त कि मरने पर भी उस महात्मा के रूप में अन्तर नहीं हुआ इसी से उस सुन्दर पोशाक मुकुट और ग्रीवा धारण करनेवाले वीर पुरुष को जीवते के ही समान माना ३६ कर्ण का वह मुख पूर्ण चन्द्रमा के समान प्रकाशमान नाना-भूषण तप्त काञ्चनमयी बाजूबन्द धारण किये महाप्रकाशित होकर शोभा से युक्त ३७।३८ वह सूर्य का पुत्र ऐसे मृतक होकर सोंता है जैसे कि अंकुर रखनेवाला वृक्ष उत्तम सूर्य के समान प्रकाशमान हो ३९ वह पुरुषोत्तम कर्ण अर्जुन के शायकरूपी जल से ऐसे शान्त हो गया जैसे कि प्रकाशमान देदीप्यमान अग्नि जल को पाकर शान्त हो जाता है ४० इसी प्रकार कर्णरूप अग्नि युद्ध में अर्जुनरूप बादल से शान्त की हुई पृथ्वी पर उत्तम युद्ध में अपने प्रकाशित यश को प्राप्त करके ४१ बाणों की वर्षा को छोड़ दशों दिशाओं को तपाती हुई अर्जुन के तेज से शान्त हुई ४२ वह सूर्य का पुत्र कर्ण अस्त्रों के तेज से सब पाण्डव और पाञ्चालों को तपाकर बाणों की वर्षा से शत्रुओं की सेना को व्यथित कर ४३ श्रीमान् सूर्य के समान सब संसार को तपाता हुआ पुत्र और सवारी समेत मारा गया ४४ यह कर्ण आकांक्षा करनेवाले मनुष्य और पक्षियों का कल्पवृक्ष था जो कि आकांक्षा करनेवाले सत्पुरुषों को सदैव यथेप्सित दान दिया करता था कभी किसी प्रकार के भी याचना करनेवाले से यह वस्तु नहीं है इस वचन को नहीं कहा ४५ ऐसा सत्पुरुष कर्ण द्वैरथ युद्ध में मारा गया जिस महात्मा का सब धन ब्राह्मणों के ही देने के योग्य हुआ जिसका सब जीवन ब्राह्मणों को किसी वस्तु का अदेयरूप नहीं हुआ ४६ सदैव स्त्रियों के प्यारे दानी अर्जुन

के अस्त्र से मरे हुए उस महारथी ने परमगति को पाया जिसके आश्रय में होकर आपके पुत्र ने शत्रुता करी थी ४७ वह आपके पुत्रों की विजय की आशा प्रसन्नता और रक्षा को साथ लेकर स्वर्ग को गया कर्ण के मरने पर नदियों ने चलना बंद किया और सब संसार का प्रकाशक सूर्य भी अस्त हो गया ४८ तिर्यग् ग्रह और अग्नि सूर्य के वर्णसमान हुए और चन्द्रमा का पुत्र बुध उदय होने के निमित्त तिरछा हो गया आकाश चलायमान हुआ पृथ्वी शब्दायमान हुई सूक्ष्म महा-भयकारी वायु चली दिशा ज्वलित रूप हुईं और महासमुद्र धूम और शब्द से युक्त होकर चलायमान हुआ ४९ काननों समेत सब पर्वतों के समूह कम्पा-यमान हुए और सब जीवों के समूह पीड्यमान हुए और हे राजन्! बृहस्पतिजी रोहिणी को घेरकर चन्द्रमा और सूर्य के समान हुए ५० कर्ण के मरने पर विदिशा भी प्रज्वलित हो गईं आकाश अन्धकार से युक्त हुआ अग्नि के समान प्रकाशमान उल्कापात हुए राक्षस भी अत्यन्त प्रसन्न हुए ५१ जब अर्जुन ने चन्द्रमुखवाले प्रकाशमान कर्ण के शिर को अपने क्षुरप्र से काटा तब आकाश में देवता लोग अकस्मात् हाय हाय ऐसा शब्द करने लगे ५२ वह अर्जुन देव गन्धर्व और मनुष्यों से पूजित अपने शत्रु कर्ण को युद्ध में मारकर बड़े तेज से ऐसा शोभा-यमान हुआ जैसे कि पूर्वसमय में वृत्रासुर को मारकर इन्द्र शोभायमान हुआ था ५३ इसके पीछे महेन्द्र के समान पराक्रम करनेवाले वह दोनों श्रीकृष्ण और अर्जुन बादलों के समूह के समान शब्दायमान आकाशस्थ मध्याह्न के सूर्य के समान प्रकाशित पताका और भयानक शब्दवाली ध्वजा रखनेवाले हिम चन्द्रमा और शङ्ख के समान श्वेत उज्ज्वल महेन्द्र रथ के तुल्य अनुपम सवारी में बैठे हुए युद्ध में विष्णु और इन्द्र के समान शोभायमान हुए अर्थात् सुवर्णमणि हीरे मोती और मूँगों से अलंकृत अग्नि और सूर्य के समान तेजस्वी दोनों नरोत्तम केशवजी और पाण्डव अर्जुन थे इसके पीछे उन गरुड़ध्वज और वानरध्वज श्रीकृष्ण और अर्जुन ने हठ करके धनुष प्रत्यञ्चा और बाणों के शब्दों से शत्रुओं को प्रभारहित करके ५४ । ५७ कौरवों को उत्तम बाणों से

ढककर उन प्रसन्नचित्त अतुल प्रभाववाले शत्रुओं के मन को सन्देह करनेवाले नरोत्तमों ने ५८ सुवर्णजाल से युक्त बड़े शब्दवाले उत्तम शङ्खों को हाथ में लेकर मुख से चुम्बन कर ५९ अकस्मात् अपने मुखों से बजाया उन पाञ्चजन्य और देवदत्तनाम दोनों शङ्खों के शब्दों ने ६० पृथ्वी दिशा विदिशाओं समेत आकाश को शब्दायमान किया हे राजाओं में श्रेष्ठ! अर्जुन और माधवजी के उन शङ्खों के शब्दों से सब कौरव लोग भयभीत हुए ६१ शङ्खों के शब्दों से वन, पर्वत, नदी और पर्वतों की कन्दराओं को शब्दायमान करनेवाले उन दोनों पुरुषोत्तमों ने आपके पुत्र की सेना को भयभीत करके राजा युधिष्ठिर को प्रसन्न किया ६२ हे भरतवंशिन्! इसके अनन्तर उनके शङ्खों के शब्दों को सुनकर सब कौरव लोग भरतवंशियों के राजा दुर्योधन को और राजा मद्र को छोड़कर बड़े वेग से भागे ६३ तब जीवों के भागनेवाले बड़े समूहों ने उस बड़े युद्ध में बड़े तेजस्वी श्रीकृष्ण और अर्जुन को ऐसे प्रसन्न किया जैसे कि उदय होनेवाले दो सूर्य को सब प्रसन्न करते हैं ६४ उस युद्ध में कर्ण के बाणों से चिते हुए शत्रुओं के सन्तप्त करनेवाले दोनों श्रीकृष्ण और अर्जुन ऐसे प्रकाशमान हुए जैसे कि किरणसमूहों के रखनेवाले निर्मल चन्द्रमा और सूर्य उदय होकर अन्धकार को दूर करके प्रकाशमान होते हैं वह अनुपमपराक्रमी दोनों ईश्वर उन बाण-समूहों को छोड़कर मित्रों को साथ में लिये हुए सुखपूर्वक अपने डेरों में ऐसे पहुँचे जैसे कि सदस्यों के बुलाये हुए विष्णु और इन्द्र जाते हैं ६५। ६६ तब कर्ण के मरने पर उस बड़े युद्ध में वह दोनों श्रीकृष्ण और अर्जुन देवता, गन्धर्व, मनुष्य, चारण, महर्षि, यक्ष, राक्षस और महासर्पों के भी अपूर्व उत्तम विजय के आशीर्वादों से पूजित हुए ६७ फिर वह योग्य आशीर्वादों से युक्त दोनों अपने गुणों से स्तूयमान होकर अपने मित्रों समेत ऐसे प्रसन्न हुए जैसे कि राजा बलि को विजय करके देवगणों समेत इन्द्र और विष्णु प्रसन्न हुए थे ॥ ६८ ॥

इति श्रीमहाभारते कर्णपर्वणि कर्णवधानन्तरसर्वैस्स्तूयमानश्रीकृष्णार्जुन पञ्चनवतितमोऽध्यायः ॥ ९५ ॥

छानबे का अध्याय

सञ्जय बोले कि हे राजन् ! कर्ण के मरने पर भय से पीड़ित हो सब दिशाओं को देखते हुए कौरव लोग भागे १ अर्थात् घोरयुद्ध में अर्जुन के हाथ से कर्ण को मरा हुआ देखकर आपके सब शूरवीर घायल और भयभीत होकर दिशाओं में छिन्न भिन्न हुए २ इसके पीछे चारों ओर से रोके हुए व्याकुल और महादुःखी होकर आपके उन सब शूरों ने विश्राम किया हे राजन् ! इसके पीछे आपके पुत्र दुर्योधन ने उन सबके उस मत को जानकर शल्य के मत से विश्राम किया ३। ४ हे भरतवंशिन् ! आपके शीघ्रगामी रथ और शेष बची हुई नारायणी सेना से युक्त कृतवर्मा डेरे की ओर को चला ५ और हज़ारों गान्धारदेशियों से व्याप्त शकुनी भी कर्ण को मृतक देखकर डेरे की ओर चला ६ हे भरतवंशिन्, राजन्, धृतराष्ट्र ! शारद्वत कृपाचार्यजी भी बड़े-बड़े बादलों के समान हाथियों की सेना को साथ लिये डेरे की ओर को चले ७ फिर बड़े शूरवीर अश्वत्थामा वारंवार श्वास ले ले पाण्डवों की विजय को देखकर डेरे की ओर को चले ८ हे राजन् ! शेष बची हुई संसप्तकों की सेना को साथ लिये हुए सुशर्मा भी भय से पीड़ित चारों ओर को देखता हुआ चल दिया ९ फिर जिसके सब बान्धव मारे गये वह शोक में डूबा हुआ अप्रसन्नचित्त राजा दुर्योधन भी बड़ी-बड़ी चिन्ताओं को करता हुआ चल दिया १० रथियों में श्रेष्ठ शल्य भी दशों दिशाओं को देखता टूटी ध्वजावाले रथ की सवारी से डेरे की ओर को चला ११ इसके पीछे भरतवंशियों के बहुत से अन्य महारथी भी भय से पीड़ित लज्जा से युक्त उदासचित्त होकर भागे १२ इसी प्रकार रुधिर टपकते व्याकुल कम्पित महादुःखी सब कौरव कर्ण को गिरा हुआ देखकर भागे १३ हे कौरव्य ! कोई कौरव तो महारथी अर्जुन की और कोई कर्ण की प्रशंसा करते हुए दिशाओं को भागे १४ फिर वहाँ बड़े युद्ध में आपके हज़ारों शूरवीरों के मध्य में कोई ऐसा मनुष्य नहीं रहा जिसने कि फिर युद्ध के निमित्त चित्त किया हो १५ हे महाराज ! कर्ण के मरने से कौरव लोग जीवन राज्य और स्त्री की

आशा से भी निराश हो गये १६ दुःख-शोक से युक्त आपके समर्थ पुत्र ने बड़े-बड़े उपायों से उनको इकट्ठा करके निवास के लिये चित्त किया फिर वह रूपान्तर दशावाले महारथी शूरवीर उसकी आज्ञा को शिर से अङ्गीकार करके ठहरे ॥ १७ । १८ ॥

इति श्रीमहाभारते कर्णपर्वणि कौरवपलायने षरणवतितमोऽध्यायः ॥ ६६ ॥

सत्तानबे का अध्याय

सञ्जय बोले कि इस प्रकार से कर्ण के गिरने और शत्रुओं की सेना के भागने पर श्रीकृष्णजी अर्जुन से प्रीतिपूर्वक मिलकर बड़े आनन्द से इस वचन को बोले १ हे अर्जुन ! जैसे इन्द्र के हाथ से वृत्रासुर मारा गया वैसे ही तेरे हाथ से कर्ण मारा गया सब मनुष्य कर्ण और वृत्रासुर के घोर मरण को सदैव कहेंगे २ युद्ध में बड़ा तेजस्वी वृत्रासुर जैसे वज्र से मारा गया उसी प्रकार तुम्हारे धनुष से छूटे हुए तीक्ष्ण बाणों से कर्ण मारा गया ३ हे कुन्ती के पुत्र, लोक में विख्यात यश करनेवाले, अर्जुन! तेरे इस पराक्रम को उस बुद्धिमान् राजा युधिष्ठिर से वर्णन करें ४ युद्ध में कर्ण के मारने को बहुत दिन से कहनेवाले धर्मराज राजा युधिष्ठिर से यह वचन कहकर तुम उसके ऋण से अऋण होगे ५ तेरे और कर्ण के बड़े घोर और अपूर्व युद्ध होने पर धर्मनन्दन राजा युधिष्ठिर पूर्व ही युद्ध-भूमि देखने को आये ६ फिर अत्यन्त घायल होने से युद्ध में नियत होने को समर्थ न होकर वह पुरुषोत्तम अपने डेरे में पहुँचकर नियत हुए ७ अर्जुन से बहुत अच्छा कहे हुए बड़े सावधान यादवेन्द्र केशवजी ने उस उत्तम रथी के श्रेष्ठ रथ को लौटाया ८ श्रीकृष्णजी अर्जुन से इस प्रकार की बात कहकर सेना के मनुष्यों से बोले कि हे उत्तम शूरवीर लोगो ! तुम सावधान होकर शत्रुओं के सम्मुख होकर लड़ो तुम्हारा कल्याण होगा ६ गोविन्दजी, धृष्टद्युम्न, युधामन्यु, नकुल, सहदेव, भीमसेन और युयुधान से यह वचन बोले कि हम जब तक अर्जुन के हाथ से कर्ण का वध राजा युधिष्ठिर से वर्णन करें १० । ११ तब तक आप सब लोगों को राजाओं समेत निवास करना योग्य है तब उन शूरों की

आज्ञा पाकर गोविन्दजी अर्जुन को साथ लेकर डेरे को गये १२ और राजेन्द्र राजा युधिष्ठिर को सुवर्णरचित अच्छे शयन स्थान में सोता हुआ देखा १३ तब उन दोनों श्रीकृष्ण और अर्जुन ने राजा के दोनों चरणों को स्पर्श किया उस समय युधिष्ठिर ने उन दोनों को प्रसन्न देखकर बड़ी प्रसन्नता के अश्रुपातों को डाला १४ और कर्ण को मृतक मानकर महाबाहु शत्रुञ्जय राजा युधिष्ठिर उठकर वारंवार १५ दोनों अर्जुन और वासुदेवजी को अत्यन्त प्रेम से मिले फिर यादवों में श्रेष्ठ वासुदेवजी ने जैसे कि अर्जुन ने युद्ध करके उस कर्ण का वध किया वह सब वृत्तान्त उससे वर्णन किया फिर मन्द मुसकान करते अविनाशी श्रीकृष्णजी हाथ जोड़कर अजातशत्रु राजा युधिष्ठिर से यह वचन बोले हे राजन् ! प्रारब्ध से गाण्डीव धनुषधारी अर्जुन, भीमसेन १६ । १७ नकुल, सहदेव और तुम कुशलपूर्वक हो अब तुम इन वीरों के नाश करनेवाले और रोमाञ्च खड़े करनेवाले महाघोर युद्ध से निवृत्त हुए १८ । १९ हे पाण्डव ! अब तू बड़ी शीघ्रता से आगे करनेवाले कर्मों को करो हे राजन् ! सूत का पुत्र महारथी कर्ण मारा गया २० हे राजेन्द्र ! तुम अपने प्रारब्ध से विजय करते हो और भाग्य से ही वृद्धि पाते हो और जो नीच पापात्मा पुरुष द्यूत में हारी हुई द्रौपदी को हँसा था २१ उस सूत के पुत्र के रुधिर को अब पृथ्वी पान कर रही है हे कौरवों में श्रेष्ठ ! यह तेरा शत्रु बाणों से भरे हुए शरीर से पृथ्वी पर पड़ा हुआ सोता है २२ हे पुरुषोत्तम ! उस बहुत बाणों से टूटे अङ्गवाले कर्ण को देखो हे मृतक शत्रुवाले, महाबाहो ! तुम इस पृथ्वी पर राज्य करो और हम समेत सावधान होकर उत्तम भोगों को भोगो २३ सञ्जय बोले कि तब अत्यन्त प्रसन्न चित्त धर्मपुत्र राजा युधिष्ठिर ने इन वचनों को सुनकर उन महात्मा केशवजी से कहा २४ हे महाबाहो ! आपने जो प्रारब्ध से हुआ यह वचन कहा सो हे महाबाहो, देवकीनन्दन ! यह बात आपमें कुछ अपूर्व नहीं है, आपकी यह योग्यता सदैव से चली आई है २५ उपाय करनेवाले अर्जुन ने तुम सारथी के साथ होकर उसको मारा हे महाबाहो ! तुम्हारी स्वच्छ बुद्धि से उत्पन्न

हुई वह बात आश्चर्य की नहीं है यह कहकर वह धर्मधारी कौरवों में श्रेष्ठ युधिष्ठिर बाजूबन्द रखनेवाली दक्षिण भुजा को पकड़ कर २६ । २७ उन दोनों अर्जुन और केशवजी से बोले कि नारदजी ने तुम दोनों को धर्मात्मा महात्मा और प्राचीन ऋषियों में श्रेष्ठ नरनारायण रूप देवता मुझसे वर्णन किया है और बुद्धिमान् सिद्धान्तों के ज्ञाता व्यासदेवजी ने भी इस महाभाग की कथा को बारंवार मुझसे कहा है हे कृष्णजी ! इस पाण्डव अर्जुन ने आपकी कृपा से २८ । २६ सम्मुख होकर शत्रुओं को विजय किया और किसी स्थान पर मुख नहीं फेरा निश्चय हमारी ही विजय है हमारी पराजय नहीं होगी ३० जब आपने अर्जुन की रथवानी अङ्गीकार करी हे गोविन्दजी ! आपकी बुद्धि से कर्ण के मरने पर भीष्म, द्रोणाचार्य, कर्ण, महात्मा गौतम, कृपाचार्य ३१ और अन्य-अन्य बड़े-बड़े शूरवीर जो उनके साथ में आगे पीछे थे वह सब हर प्रकार से मारे गये ३२ तब पुरुषोत्तम महाराज धर्मराज यह कहकर श्वेत वर्ण काले बाल चित्त के अनुसार शीघ्रगामी घोड़ों से युक्त सुवर्णसूत्र से निर्मित रथ पर ३३ सवार हो अपनी सेना को साथ लेकर युद्धभूमि के देखने को प्रवृत्त हुए ३४ वीर श्रीकृष्ण और अर्जुन से पूछकर और दोनों से प्यारे-प्यारे मिष्ट वचनों को कहते हुए चल दिये ३५ वहाँ जाकर उस राजा युधिष्ठिर ने युद्धभूमि में शयन करते हुए कर्ण को ऐसा देखा जैसे कि सब ओर से केसरों से युक्त कदम्ब का फूल होता है ३६ उस धर्मराज ने हजारों बाणों से चिते हुए कर्ण वा सुगन्धित तेलों से सिंचे हुए और हजारों सुनहरी मशालों से ३७ प्रकाशमान जिसका कवच टूट-टूटकर चूर्ण हो गया वा बाणों से छिदा हुआ था उस कर्ण को देखा ३८ पुत्र समेत मरे हुए कर्ण को वारंवार देखकर निश्चय करनेवाले राजा युधिष्ठिर ने ३६ उन दोनों नरोत्तम पाण्डव अर्जुन और माधवजी की प्रशंसा करी कि हे गोविन्दजी ! अब तुझ नाथ शूरवीर और महाज्ञानी से पोषण किया हुआ मैं बड़े अहङ्कारी कर्ण को मृतक देखकर भाइयों समेत पृथ्वी पर राजा हूँ ४० । ४१ राजा धृतराष्ट्र राधा के पुत्र कर्ण के मरने पर अपने जीवन और राज्य

से निराश होंगे ४२ हे पुरुषोत्तम! हम आपकी कृपाओं से अभीष्ट मनोरथों के सिद्ध करनेवाले हैं हे गोविन्दजी! आपने प्रारब्ध से शत्रुओं को विजय किया और भाग ही से यह महाशत्रु भी मारा गया ४३ और पाण्डुनन्दन अर्जुन प्रारब्ध से विजय करनेवाला है हम लोगों ने बड़े दुःखदायी तेरह वर्ष जाग-जागकर वनों में व्यतीत किये ४४ हे महाबाहो! अब आपकी कृपा से रात्रि में नींद भरके बेखटके होकर सोवेंगे इस रीति से उस धर्मराज राजा युधिष्ठिर ने श्रीकृष्णजी और कौरव्य अर्जुन की प्रशंसा करी सञ्जय बोले कि अर्जुन के शायकों से पुत्र समेत कर्ण को मृतक देखकर ४५ । ४६ उस राजा युधिष्ठिर ने अपना पुनर्जन्म माना हे महाराज! फिर बड़ी प्रसन्नता भरे हुए महारथियों ने कुन्ती के पुत्र राजा युधिष्ठिर को मिलकर बड़ा प्रसन्न किया और पाण्डव नकुल, सहदेव, भीमसेन और वृष्णियों में बड़े श्रेष्ठ रथी सात्यकी, धृष्टद्युम्न, शिखण्डी पाञ्चाल और सृञ्जयों ने ४७ । ४६ कर्ण के मरने पर युधिष्ठिर की स्तुति की फिर वह सब धर्मात्मा राजा युधिष्ठिर की स्तुति करके ५० महाविजय से शोभायमान लक्ष्यभेदी युद्ध में कुशल सावधानी से युद्ध करनेवाले प्रशंसायुक्त उन श्रीकृष्ण और अर्जुन की कीर्ति गानेवाले ५१ प्रसन्नता में डूबे हुए सब महारथी अपने-अपने डेरों को गये हे राजन्! आपके दुर्विचारों से यह बड़ा भारी घोर रोमहर्षण करनेवाला विनाशकाल जारी हुआ ५२ अब तुम किस निमित्त शोच करते हो वैशम्पायन बोले कि अम्बिका के पुत्र राजा धृतराष्ट्र इस शोक और दुःखदायी वृत्तान्त को सुनकर ५३ अचेत और निश्चेष्ट होकर पृथ्वी पर ऐसे गिर पड़ा जैसे कि जड़समेत टूटा हुआ वृक्ष गिर पड़ता है उसी प्रकार वह दूरदर्शिनी देवी गान्धारी भी गिर पड़ी ५४ और युद्ध में कर्ण के मरने को बहुत विलाप कर करके शोचा तब विदुरजी और सञ्जय ने उस राजा को पकड़ लिया ५५ और दोनों ने राजा को विश्वासयुक्त किया और इसी प्रकार कौरवीय स्त्रियों ने गांधारी को भी उठाया फिर वह बड़ा तपस्वी राजा धृतराष्ट्र ईश्वर और होतव्यता को मुख्य मानकर ५६ महापीड़ित होकर अचेत हो गया चिन्ता-

शोक से पूर्ण चित्त मोह से पीड़ित राजा ने कुछ नहीं जाना और विश्वास देने पर भी अचेत होकर मौन हो गया ५७ हे भरतवंशिन्! जो पुरुष महात्मा कर्ण और अर्जुन के इस महाघोर युद्धरूपी यज्ञ को पढ़ेगा वह उस फल को पावेगा। जो अच्छे प्रकार से किये हुए यज्ञ का फल होता है और सुननेवालों को भी यही फल होगा ५८ अग्नि, वायु और चन्द्रमा के उत्पन्न करनेवाले सनातन भगवान् विष्णु हैं उन्हीं को यज्ञ कहते हैं इस कारण जो पुरुष दूसरे के गुणों में दोष न लगाकर पढ़ेगा वा सुनेगा वह सुखी होगा ५९ भक्त लोग सदैव धर्म की वृद्धि के हेतु से इस उत्तम संहिता को पढ़ते हैं वह मनुष्य उसके पढ़ने से धन धान्य और कीर्तिमान् होकर आनन्द करते हैं ६० इस हेतु से जो दूसरे के गुणों में दोष न लगानेवाला मनुष्य सदैव ही सुनेगा वह सब सुखों को पावेगा और भगवान् ब्रह्माजी विष्णुजी और शिवजी भी उस नरोत्तम के ऊपर प्रसन्न होते हैं ६१ इस संहिता में ब्राह्मण को वेदों की प्राप्ति और युद्ध में क्षत्रियों को पराक्रम वा विजय की प्राप्ति वैश्यों को धन की प्राप्ति और शूद्रों को नीरोगता की प्राप्ति होती है ६२ जोकि इसमें भगवान् सनातन देवता विष्णुजी का वर्णन है इस हेतु से वह मनुष्य सुखी होकर मनोऽभीष्टों को पाते हैं यह उस महामुनि ने वचन कहा है कि जो इस कर्णपर्व को सुनता है वह एक वर्ष तक सवत्सा कपिला गौ के प्रतिदिन दान करने के समान फल को पाता है।

महिस्वरीछन्द।

सुनि प्रबल अरि भट करण को बध धरम अति आनँद भरे। बहु भाँति हरिहि प्रशंसि प्रभुता कृपा की वर्णन करे॥ फिर कृष्ण पारथ भटनसह चढ़ि सुरथ पै मोदित महाँ। गे धर्म भूपति कर्ण भटमणि परो हो जेहि थल तहाँ॥ तहँ सहित सुत मरि परो कर्णहिं देखि आनँद को गहे। तुव कृपा सों मम सुजय सब थल इविधि केशव सों कहे॥ बहु जरत चारु मशाल सङ्ग उमङ्ग सों सब देखि कै। नृप धर्म डेरन गये फिरि निज सुजय ध्रुव अवरेखि कै॥